सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी

प्राच्य विद्या-संस्थान

लैटिन अमरीकी विद्या-संस्थान

विश्व अर्थतंत्र तथा अंतर्राष्ट्रीय
संबंध संस्थान

आज़ादी के दीवाने

प्रगति प्रकाशन • मास्को

सम्पादक :
इ० व० मिलोवानोव, ल० न० चेर्नोव
अनुवादक : राजवल्लभ ओझा

ЖИЗНЬ, ОТДАННАЯ БОРЬБЕ
На языке хинди

अनुक्रम

स्वतन्त्रता के अमर सैनिक

(भूमिका [illegible])

समय अपने अटूट तीव्र प्रवाह के बावजूद ऐसे अनगिनत स्मारक पीछे छोड़ता जाता है, जिनसे अपनी स्वतन्त्रता के लिए मेहनतकश लोगों के सदियों पुराने कठोरतम संघर्ष का वृत्तान्त प्रस्तुत करने में हमें सहायता प्राप्त होती है। हज़ारों वीरों ने, आज़ादी के जिनके सपने ने मेहनतकशों को विद्रोह के लिए खड़ा किया, जनता के सुख की वेदी पर अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया है।

फासिस्ट जल्लाद फ्रांको की खुफिया पुलिस उस व्यक्ति के दफनाये जाने की जगह को छिपाये रखती है, जिसकी मुखाकृति सारी दुनिया के लोगों को ज्ञात है। अनगिनत अखबारों के पृष्ठों में प्रकाशित हुए उनके चित्रों ने सदय, थकी-मांदी आंखों से लोगों की ओर देखा था। मानवजाति के शाश्वत वसन्त के लिए जीवन होम करनेवालों में वह भी थे। "दिवंगत जूलियन ग्रिमाऊ संघर्ष के प्रतीक बन गये हैं। वह आज भी हमारे बीच मौजूद हैं; वह हमारे दिलों में ज़िंदा हैं और कम्युनिज़्म की ओर प्रयाण करती हुई भावी पीढ़ियों के मन में सदैव उनकी स्मृति ताज़ी बनी रहेगी... वे ग्रिमाऊ की भांति, उन हज़ारों वीरों की भांति लड़ेंगे, जो संघर्ष में शहीद हो गए, परन्तु अन्त तक अपराजित रहे।"

जूलियन ग्रिमाऊ को गोली से उड़ाये जाने के दिन उनके देश की महान सपुत्री दोलोरेस इबारूरी ने ये प्रेरणाप्रद शब्द कहे थे। ये शब्द गहरे स्नेह, संवेदना और अपनी पार्टी के एक सदस्य के प्रति गर्व की भावना व्यक्त करते हैं, और कम्युनिस्टों, शान्ति तथा समाजवाद के लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले यूरोप और एशिया, अफ़्रीका तथा अमरीका की जनता के निर्भय और दूरदर्शी पुत्रों के

की यात्रा की; मजदूरो, किसानों और लाल सेना के सैनिकों से बातें की और इसे देखा कि अपने सुखद भविष्य के लिए स्वतंत्र लोग कितना महान काम पूरा कर सकते हैं, कितनी बडी उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। जनसमुदाय की क्रान्तिकारी उमंग के लिए उनकी सराहना ने इस विश्वास का रूप ग्रहण कर लिया कि सोवियत रूस के कम्युनिस्टों द्वारा अपनाया गया रास्ता ही सही मार्ग है। लेनिन के साथ उनकी चिरस्मरणीय बातचीत से अक्तूबर क्रान्ति के महत्व के बारे में उनका विश्वास और पक्का हो गया। स्वदेश वापस लौटने के बाद उन्होंने अपने साथी क्रान्तिकारियों को बताया: "फ़्रांस, यूरोप और सारी दुनिया में इस विजयी ऐतिहासिक आन्दोलन के दूरव्यापी और निर्णायक परिणाम होंगे।"

मार्सेल काशेन ने अपनी भविष्यवाणी को साकार रूप ग्रहण करते देखा। उनकी आखों के सामने ही विश्व समाजवादी प्रणाली अस्तित्व में आ गई और अनवरत शक्ति ग्रहण करने लगी।

अक्तूबर क्रान्ति की गर्जनकारी प्रतिध्वनि से उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों की जनता मे क्रान्तिकारी भावना जागृत हुई। लेनिन ने समाजवाद के इच्छुक मजदूरों और अपनी मुक्ति के इच्छुक "साम्राज्यवाद के अश्वेत गुलामो" के बीच-अटूट ऐतिहासिक सम्बन्ध पर जोर दिया था। और समय ने उनकी दूरदर्शिता की पुष्टि कर दी है।

यूरोप और एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका में वर्तमान गुलामी की साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक शृंखला को तोड़ने मे सक्षम निगूढ शक्तियां विकसित हो गई हैं।

उत्पीड़ित देशों के देशभक्तों का आहत राष्ट्रीय गर्व, देशी तथा विदेशी उत्पीडकों के विरुद्ध उनकी घृणा की भावना क्रान्तिकारी कार्रवाई द्वारा प्रकट हुई है। उन्होंने लेनिन की पार्टी की शिक्षा और क्रान्तिकारी अनुभव को अपना मार्गदर्शक मान लिया है।

२६ जुलाई, १६५३ को संत-यागो द-क्यूबा मे मोंकादो फ़ौजी बैरकों पर हुए धावे को दुनिया याद करती है, जब राइफ़लो से लैस होने की अपेक्षा उत्पीड़कों के विरुद्ध घोर घृणा की भावना से भरे हुए चन्द युवकों ने हजारों सैनिकों की बन्दूकों और संगीनो के विरुद्ध अपने को झोंक दिया था। इस असम युद्ध में शत्रु की निष्ठुर गोली-वर्षा से वे खून से लथपथ हो गए। जो शहीद हो गए, वे अपनी जन्मभूमि में दफ़ना दिये गए।

जो बच गए, उन पर मुकदमा चलाया गया। उनमें से एक क्रान्तिकारी के पास लेनिन की एक पुस्तक पायी गयी। जब न्यायाधीश ने पूछा कि यह पुस्तक किसकी है, तो उसने उत्तर दिया: "यह पुस्तक हमारी है; जो व्यक्ति भी ऐसी पुस्तकें नहीं पढ़ता, वह जाहिल है!"

जिस तिथि को मोंकादो की फौजी बैरकों पर धावा किया गया था, वही इतिहास मे क्यूबा की क्रान्ति की प्रारंभ तिथि मानी जाती है और जिस युवक ने उक्त निडर उत्तर दिया था, उसी का नाम फिडेल कास्ट्रो है, जो इसके नेता बने। अमरीकी साम्राज्यवादियों के किराये के टट्टुओं की पराजय के बाद उन्होंने दुनिया को बताया: "मार्क्स और एंगेल्स के विचारो की सत्यता तथा लेनिन द्वारा प्रस्तुत वैज्ञानिक समाजवाद की वास्तविक प्रतिभापूर्ण व्याख्या पर हमारा अधिकाधिक दृढ़ विश्वास होता जा रहा था..."

इस पुस्तक मे जिन क्रातिकारियों का वर्णन किया गया है, उनमें से कई की वर्गीय चेतना संघर्ष में विकसित हुई। उन्होंने सामाजिक विकास के ऐतिहासिक नियमों के अचूक ज्ञान से अपने को लैस किया। उन्होंने स्वतत्रता और समानता के नये युग के अनिवार्य प्रादुर्भाव मे विश्वास किया और मौत की परवाह किये बिना अपने पथ पर बढ़ते चले गये।

यूरोप, एशिया, अफ़्रीका और अमरीका के हजारों क्रान्तिकारियो ने रूसी मजदूर वर्ग के नेता लेनिन को पार्टी के महान ध्येय के प्रति सर्वोच्च निष्ठा का अपना आदर्श माना; उन्होने बेहतर जीवन के लिए जनता की स्वाभाविक आकांक्षा को कम्युनिज्म के वैज्ञानिक सिद्धान्त से सम्बन्धित करने का ज्ञान उन्ही से प्राप्त किया। उन्ही की शिक्षा के अनुसार उन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन की अगली पातो मे स्थान ग्रहण किया।

दुनिया के स्वाधीन राज्यों का परिवार पहले कभी भी इतना बडा नही था, जितना इस समय है। फिर भी उत्पीड़ित राष्ट्रों को आज़ाद करने का काम अभी पूरा नही हुआ है। नवोदित स्वतत्र राज्यो को अभी अपनी स्वाधीनता को सुदृढ बनाना है, विश्वसनीय आर्थिक आधारशिला रखनी है, उपनिवेशवाद की दारुण विरासत को मिटाना है और अपने को नव-उपनिवेशवाद की जंजीरो से जकड़ने के साम्राज्यवादी प्रयासों को विफल करना है।

लेनिन की शिक्षा के प्रति निष्ठावान सोवियत संघ के कम्युनिस्ट अपने अंतर्राष्ट्रीयतावादी कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन कर रहे है और साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष करनेवाले राष्ट्रो को निस्स्वार्थ सहायता प्रदान कर रहे हैं। यदि भू-मण्डल की दूसरी ओर सोवियतों के देश और अन्य समाजवादी देशों का अस्तित्त्व न होता तो स्वतंत्रताप्रेमी क्यूबा की स्थिति बहुत हो विषम हो गई होती। जब-जब आजादी के द्वीप के ऊपर हमले का ख़तरा मण्डराया है, दोस्ती का सबल हाथ क्यूबाई क्रान्ति के सम्मुख प्रस्तुत ख़तरे को दूर करता रहा है। फिडेल कास्ट्रो ने कहा है, "सोवियत सघ और क्यूबा की मैत्री मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और सर्वहारा अतर्राष्ट्रीयतावाद पर आधारित देशों के बीच सम्बन्धो का प्रभावकारी उदाहरण है। हम सोवियत संघ और अन्य सभी समाजवादी देशों से बहुमूल्य, लगभग असीमित सहायता प्राप्त कर रहे है, जिसके फलस्वरूप आर्थिक नाकेबन्दी और अकाल द्वारा हमारी क्रान्ति का गला घोटने के सभी प्रयास पूर्णतया विफल हो गये हैं।" और इस प्रकार यह नवोदित जनतत्र सफलतापूर्वक नये जीवन का निर्माण कर रहा है, जैसा कि पहले कभी भी दक्षिण, मध्य और उत्तरी अमरीका मे कही भी नही हुआ है।

अजय कुमार घोष ने कहा था कि सोवियत सघ कम्युनिज्म की ओर जो हर नया क़दम बढ़ाता है, वह प्रतिक्रान्ति के निर्यात के लिए साम्राज्यवादी प्रयासों को विफल बनाने और जिन देशों ने विदेशी जुए को उतार फेंका है तथा अपनी अर्थव्यवस्था के नवनिर्माण की दिशा में प्रयत्नशील है, उन्हे सहायता और सहयोग प्रदान करने की उसकी क्षमता को भी बढ़ाता है। साथ ही कम्युनिज्म के पथ पर सोवियत संघ की प्रगति से एशिया, अफ़्रीका और लैटिन अमरीका के देशों की राष्ट्रीय मुक्ति का ध्येय सुदृढ़ होता जाता है।

सोवियत संघ के समर्थन पर निर्भर रहते हुए मिस्र ने अपनी स्वाधीनता और आर्थिक हितों की रक्षा की, गोआ, दमन और दयू फिर भारतीय राष्ट्र के साथ जुड़े। अल्जीरिया और नवोदित यमन गणराज्य के देशभक्तों ने सोवियत जनता की प्रभावकारी और निर्णायक सहायता को सोत्साह अंगीकार किया है।

यह उल्लेखनीय उपलब्धियों का युग है और सर्वाधिक अपूर्व

उपलब्धियां कम्युनिस्ट ही प्राप्त कर रहे हैं। कम्युनिस्ट अन्तरिक्ष यात्रा के अगुआ हैं। वे कम्युनिस्ट निर्माण मे सलग्न जनसमुदाय को प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। वे स्वतंत्रता के लिए सघर्षरत राष्ट्रों के सुदृढ़तम क्रान्तिकारी दस्ते हैं। वे विश्व-शान्ति के सर्वाधिक उत्कट समर्थक हैं। यदि कभी-कभी उन्हे हथियार उठाना पडा है, तो इसका कारण केवल यही है कि उनके वर्ग शत्रुओं ने उन्हें अपने आदर्शों की रक्षा के लिए यह तरीका अपनाने को विवश किया है। "हम महसूस करते हैं कि हमने उक्त बात को पूर्णतया प्रमाणित किया है और समूचे रूस के मजदूरों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की इस सभा के सामने, करोड़ों रूसी मजदूरों और किसानो के सम्मुख हम यह घोषणा करते हैं कि भविष्य मे शान्ति कायम रखने के लिए हम अपनी शक्तिभर यथासंभव प्रयास करेंगे. ." लेनिन की यह घोषणा आज भी पावन प्रतिज्ञा समझी जाती है।

उसके बाद से सारी दुनिया के कम्युनिस्टों ने इसलिए अपने संघर्ष को जारी रखा है कि युद्ध की खंदकें धरती के मुखड़े को खराब न करने पायें और गोलियो तथा गोलों की सनसनाहट इसके निवासियो के कानों को पीडा न पहुचाने पाये।

एर्नस्ट थेलमान पूर्ण भाववेग के साथ लुटेरू युद्धों के विरुद्ध थे। आज भी ऐसे लोग जीवित हैं, जिन्हे जर्मन सर्वहारा के इस नेता द्वारा अपने देश की सीमा पर जर्मनी के मजदूरो तथा फ्रांस, डेनमार्क, हालैण्ड और पोलैण्ड के उनके भाइयों के बीच आयोजित युद्ध-विरोधी सभाओं की याद है। उन्ही के सुझाव पर फासिस्टों द्वारा सत्ता हथियाने के ठीक पहले एसेन में एक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमे कम्युनिस्ट पार्टियों और युवा कम्युनिस्ट लीग के प्रतिनिधियों ने यूरोपीय मेहनतकश जनता से उच्छृखल फासिस्ट फौजशाही के विरुद्ध एकजुट संघर्ष करने का एक घोषणा-पत्र स्वीकार किया था। उनका जुझारू नारा "जो भी शान्ति चाहता है, वह इसके लिए संघर्ष करे!" उस समय सब की जबान पर था।

व्ला० इ० लेनिन ने चेतावनी दी थी कि करोडों मनुष्यों के विनाश के लिए महान तकनीकी और वैज्ञानिक उपलब्धियों के इस्तेमाल और फौजी उद्देश्यों मे सभी उत्पादनकारी शक्तियों को लगाने से अनिवार्यतः "मानव समाज के अस्तित्त्व की शर्तों को ही क्षति." पहुचेगी।

सच्चे लेनिनवादियों की भांति कम्युनिस्ट सदा परिस्थिति के प्रति सजग रहे हैं। मानवजाति के लिए परमाणु-बम के ख़तरे के प्रति सजग रहते हुए उन्होंने इस विनाशकारी ख़तरे से दुनिया और सभी सजीव प्राणियों की रक्षा के लिये निस्स्वार्थ भाव से समस्त शान्तिप्रेमियों को एकजुट कर दिया है। उन्होंने शान्ति के संघर्ष को अपना ध्येय बना दिया है।

परन्तु संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। जब कि आज भी हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणविक हत्याकाण्ड में मरे व्यक्तियों की स्वब्ध प्रेतात्माएं मानवता के लिए चीखती हैं, तो भी वियतनाम की रक्तरंजित धरती बम-वर्षा से पुनः विदीर्ण होती जा रही है और गैस-बमों के जहरीले धुएं से स्त्रियां, वृद्ध और बच्चे फिर दम तोड़ रहे हैं। वियतनाम के देशभक्तों के न्यायोचित ध्येय का समर्थन करने के लिए कम्युनिस्ट लोगों को संगठित कर रहे हैं। दुनिया के सभी ईमानदार लोग अमरीकी आक्रमण के ख़ात्मे की मांग कर रहे हैं। वे इतिहास के उस कलंक को, मानवजाति के विरुद्ध परमाणविक बमों और ज़हरीली गैसों के इस्तेमाल को कभी विस्मृत नहीं करेंगे।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी मानवीय जीवन को पृथ्वी की सबसे बड़ी निधि मानते हैं। वे मानवोचित जीवन के लिए कम्युनिज़म का, सर्वाधिक न्यायोचित और मानवतावादी समाज का निर्माण कर रहे हैं। जीवन की रक्षा के लिए उन कम्युनिस्टों ने मृत्यु का आलिंगन किया, जिनका वृत्तान्त इस पुस्तक में दिया गया है। जीवन के निमित्त कम्युनिस्ट शान्ति के लिए संघर्ष करते हैं। शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त मानव समाज के विकास के पूरे दौर से निरूपित है। यदि लेनिनवादी अर्थ में विभिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले देशों के बीच शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को समझा जाये, तो किसी भी रूप में इसका अभिप्राय साम्राज्यवाद से समझौता अथवा क्रान्तिकारी संघर्ष में शिथिलता, या राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन का ख़ात्मा नहीं है। इसके प्रतिकूल, हाल की घटनाओं से निश्चित रूप से यह प्रकट हो चुका है कि शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का अनुसरण करने से सर्वहारा का वर्ग संघर्ष और अपनी मुक्ति के लिए उत्पीड़ित राष्ट्रों का संघर्ष आगे बढ़ा है। दोनों व्यवस्थाओं के बीच शान्तिपूर्ण आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता में समाजवादी देशों के लोग पूंजीवाद को पछाड़ रहे हैं। १९२८ में ही एर्नस्ट थेलमान ने यह कहते हुए वस्तुतः लेनिन के पहले ही व्यक्त किये

विचारो को ही दोहराया था कि "आर्थिक मोर्चे की (सोवियत सघ की–सं) हर बड़ी सफलता से विश्व के मजदूरों के सम्मुख पूजीवादी प्रणाली की तुलना मे समाजवादी प्रणाली की श्रेष्ठता का नया प्रमान प्रस्तुत हो जाता है। ऐतिहासिक महत्त्व का यह प्रश्न ही अन्तिम विश्लेषण मे हमारे और पूजीपति वर्ग के बीच चल रहे संघर्ष के नतीजे को निर्धारित करेगा..."

सच्चे क्रान्तिकारी सार्वभौमिक शान्ति आन्दोलन के साथ समस्त समाजवादी शक्तियों, साम्राज्यवादी देशों के सर्वहाराओं की क्रान्तिकारी सरगर्मी और उत्पीडित राष्ट्रों के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के समन्वय को मानवजाति के उज्ज्वल भविष्य की कुंजी मानते हैं।

समय तेजी से गुजरता जाता है और सभी चीज़ें पुरानी पड़ती जाती है। परन्तु कम्युनिज्म का विचार चिरन्तन रूप से नया बना रहता है। यह विकसित होता जाता है और व्यावहारिक क्रान्तिकारी संघर्ष से प्राप्त ताजे, सजीव तत्त्व द्वारा अनवरत रूप से नवीनता प्राप्त करता रहता है। समाज पर कम्युनिज्म का जितना अदम्य प्रभाव है, उतना इतिहास में और किसी आन्दोलन का नही पड़ा है।

रूस मे क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रारम्भ मे महान लेनिन ने कहा था: "हम दृढ़ता से एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए संहत छोटे समूह में एक ख़तरनाक और कठिन मार्ग से होते हुए आगे बढ़ रहे हैं। हम चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हुए हैं और हमें लगभग उनकी गोलियों की बौछार के बीच से ही अपना रास्ता तय करना है।"

इस समय सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के क्रान्तिकारी झंडे के तले सम्पूर्ण बहु-जातीय सोवियत जनता कम्युनिज्म की इमारत खड़ी कर रही है।

एक ही पीढ़ी के जीवनकाल में मानवजाति के एक तिहाई भाग ने पूंजीवाद की जंजीरों को तोड़ दिया है और एक ऐसे समाज के निर्माण के काम में संलग्न है, जो समता, बन्धुत्व और सुख का समाज है। इस ऐतिहासिक सिद्धि से सभी महाद्वीपों के कम्युनिस्टों को पुरानी दुनिया के अनिवार्य पतन में पूरा विश्वास हो गया है। ऐसे भी काल रहे हैं, जब कम्युनिस्टों को अपना जीवन मिटा देने को तैयार संख्या की दृष्टि से बड़े और अधिक शक्तिशाली

शत्रुओं का सामना करना पड़ा है। परन्तु मृत्यु के बाद भी वे भाईचारे की संयुक्त पांतों में बने रहे है और जो काम उन्होने शुरू किया था, उसे उनके साथियो ने पूरा किया है।

एर्नस्ट थेलमान ने कहा, "क्रान्ति का सैनिक होने का अर्थ है ध्येय के प्रति अटूट निष्ठा कायम रखना, ऐसी निष्ठा, जो जीवन और मौत की कसौटी पर खरी उतर सके... यदि हम अडिग हों और अपनी विजय मे यकीन करते हों, तभी हम अपने भविष्य को बदल सकते हैं और जिस ऐतिहासिक ध्येय को पूरा करने का दायित्व हमारे ऊपर है, उसकी पूर्ति में अपने क्रान्तिकारी कर्त्तव्य का पालन कर सकते हैं और इस प्रकार वास्तविक समाजवाद की अन्तिम विजय को भी सुनिश्चित बना सकते हैं।"

फ़ासिस्ट जेलों मे एर्नस्ट थेलमान को जो अमानुषिक यातनाएं दी गईं, उनके फलस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु समाजवादी जर्मनी का उनका सपना जर्मन जनवादी जनतंत्र मे साकार हो गया है। यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य नीकोस बेलोयानिस को मार दिया गया, परन्तु यूनान की जनवादी शक्तिया नही मर पायी। अपने जीवन और जल्लादी शासन के लिए बर्बर भय से फ़्रांको ने उत्कट क्रान्तिकारी जूलियन ग्रिमाऊ का जीवन ले लिया, परन्तु स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी कायम है और काम किये जा रही है।

कम्युनिस्ट और उनके साथ संसार के सभी ईमानदार लोग अपने सामान्य शत्रु को पराजित करने के लिए बलिदान हुए आजादी की फ़ौज के सैनिको की समुज्जवल पुण्य स्मृति मे श्रद्धा से सिर झुकाते है। उनके वीरतापूर्ण कार्य और संघर्ष विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की महान विजय में, उनके द्वारा प्रशिक्षित योद्धाओ में, उनके विचारधारात्मक और राजनीतिक अनुयायियों की जीवन-सक्रियता में जिंदा हैं।

अपने असामयिक देहावसान के ठीक पहले ईरानी जनता के वीर पुत्र **ख़ुसरो रौज़बेह** ने कहा था: "यदि सीनेट के सदस्य मेरी मौत की सजा को कार्यान्वित करने के लिए अपने अधिकारों का इस्तेमाल करें, तो भी कोई गम्भीर बात नहीं होगी। ख़ुसरो रौज़बेह को मार दिया जायेगा। परन्तु उसके विचारो का ठीक मूल्यांकन किया जायेगा और उसके लिए उसका अर्थ होगा चिरन्तन जीवन।"

केवल वही व्यक्ति, जिसे भूत, वर्तमान और भविष्य की अविच्छिन्नता का स्पष्ट ज्ञान हो, जो मानवीय मस्तिष्क की बहुत गहरी और सृजनात्मक शक्ति में विश्वास करता हो, वही इस प्रकार के विचारों को प्रकट कर सकता था।

खुसरो रोज़बेह जैसे लोगों ने अपनी मृत्यु को भी कम्युनिज़्म के उच्चादर्शों के उत्साहपूर्ण प्रचारक में रूपान्तरित कर दिया।

और अपने निकटवर्तियों के साथ अपने सम्बन्धों में वे कितने ईमानदार, स्वार्थशून्य और सरल थे!

अभी बहुत समय नहीं गुजरा, जब इराक की धरती पर एक ऐसा व्यक्ति था, जो अपने देश का एक सर्वाधिक उत्साही देशभक्त था। उसका नाम था सलाम आदिल। और यह भी कोई ज्यादा पुरानी बात नहीं है, जब आदिल ने उस महिला को, जो उसकी पत्नी होनेवाली थी, और जो अब उसकी विधवा है, खुले दिल से तथा सप्रेम और कटु सच्चाई से भरी निम्नांकित पंक्तियां लिखी थीं, "शादी के पहले एक बार फिर मैं तुम्हें याद दिला देना चाहता हूं कि मेरे पास कोई जायदाद नहीं है, कोई सम्पत्ति नहीं है, उच्च शिक्षा की कोई डिग्री नहीं है और किसी भी रूप में स्थायी काम मिलने की कोई गारंटी नहीं है। ईमानदारी से मैं बताता हूं कि मैं बिल्कुल गरीब हूं, कि मैं एक साधारण मजदूर परिवार मे जन्मा हूं, किन्तु जो अपनी ईमानदारी और नेक नाम से ज्ञात है और यह कि पार्टी के दिये कम्युनिस्ट खिताब के अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है, जो मानवजाति के सुखद भविष्य के लिए संघर्ष कर रही है। और इसी पावन ध्येय के लिए मैंने अपनी जिन्दगी समर्पित कर दी है और तुमसे शादी का अनुरोध करते हुए पूर्ववत यह बता देना मैं अपना फर्ज समझता हूं कि मेरा जीवन केवल मेरा ही नहीं है। अपने देश के सभी ईमानदार योद्धाओं की भांति मेरे लिए भी सदैव कष्ट, गिरफ़्तारी और यातनाओं की आशंका बनी रहती है। परन्तु ईमानदारी के साथ मैं तुम्हें यह पक्का वचन दे सकता हूं कि तुम्हें वह जीवन मिलेगा, जो पवित्र है, ऐसा जीवन, जिसमें उस बुराई अथवा गन्दगी के लिए कोई स्थान नहीं है, जिसमें हमारे वर्ग शत्रु निमग्न हैं..."

प्रत्येक नयी ऐतिहासिक प्रगति के साथ जनता के भविष्य के सम्बन्ध मे कम्युनिस्टों पर जो बढ़ता हुआ दायित्व है, उसे दृष्टि में रखते हुए

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर कम्युनिस्ट तथा मजदूर आन्दोलन की एकता को सुदृढ बनाने की समस्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

व्ला० इ० लेनिन ने कहा था, "पूंजी अंतर्राष्ट्रीय शक्ति है। इसकी पराजय के लिए मजदूरों की अंतर्राष्ट्रीय एकता, उनका अंतर्राष्ट्रीय बन्धुत्व अपेक्षित है।" मार्क्स और एंगेल्स द्वारा दिया गया यह महान नारा "दुनिया के मजदूरो, एक हो!" लेनिन के जीवनकाल में नये ढंग से सूत्रबद्ध किया गया और उनकी स्वीकृति से इसका रूप यह हो गया, "सभी देशों के मजदूरो और उत्पीड़ित लोगो, एक हो!"... यही नारा मानवता के महान आदर्शों की विजय के लिए संघर्ष करने के निमित्त मेहनतकश लोगों को एकजुट और अनुप्राणित कर रहा है। कम्युनिज्म के शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करने में सर्वहारा एकता मजदूर वर्ग का शक्तिशाली हथियार है। यह हथियार कम्युनिस्टों की कई पीढ़ियों के प्रयासों से गढ़ा गया है।

* * *

इस पुस्तक में जिन कम्युनिस्टो का वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है, उन्होंने लेनिनवादी क्रान्तिकारी के सर्वोत्कृष्ट गुणो को मूर्त रूप में व्यक्त किया है। उनमें से प्रत्येक कटुतम वर्ग संघर्षो की ज्वाला मे तपकर सबल और फौलादी बना था। उनके लिए केवल क्रान्तिकारी भावना ही पर्याप्त नही थी; उन्हें क्रान्तिकारी सिद्धान्त के हथियार को भी काम मे लाने की जानकारी हासिल करनी पड़ी। और इससे भी बढ़कर यह बात है कि उन्हें सुदृढ़ और अडिग भावना विकसित करनी पड़ी। वस्तुतः संघर्ष की उनसे इससे भी अधिक अपेक्षाएं थी—उन्हें केवल यही नही जानना था कि क्या करना है, बल्कि अपने लक्ष्य की अन्तिम प्राप्ति मे सक्षम होना आवश्यक था। वे असम संघर्ष मे खेत रहे, परन्तु वीरों की पांतों में कमी नही आई। ऐतिहासिक विकास के अटल नियम द्वारा दुनिया से अज्ञानता और हिंसा को मिटाने में रत युवा योद्धाओं की संख्या हर नये दिन परिपूर्ण होती जाती है।

जनहित के लिए शहीद हुए व्यक्तियों की भावना को व्यक्त करते हुए और इन योद्धाओं को सम्बोधित करते हुए नाज़िम हिकमत ने कहा था: "आप चाहे जहा भी हों... लाल चौक में, उल्लासपूर्ण प्रदर्शनों में अथवा लोहे के सीखचों के पीछे जेल में; आप चाहे प्रसूतिगृह के दरवाजे पर अपने नवजात शिशु को बाहों मे लिये अपनी पत्नी के बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे हों अथवा

2—3010

फांसी की प्रतीक्षा में जेल की कालकोठरी में यातनाएं भोग रहे हैं—यदि आपने एक कम्युनिस्ट की भांति काम किया है, एक कम्युनिस्ट की भांति चिन्तन किया है, एक कम्युनिस्ट की भांति प्यार किया है, एक कम्युनिस्ट के रूप में संघर्ष किया है और एक कम्युनिस्ट की भांति जीवन व्यतीत किया है तो निस्सन्देह आप बीसवीं सदी के सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हैं!"

स्वतंत्रता के इन अमर सैनिकों का जीवन और संघर्ष दुनिया भर के युवा कम्युनिस्टों के लिए समुज्ज्वल आदर्श बना रहे।

अल्जीरियाई मुक्ति-संघर्ष के शहीद

अल्जीरिया का हाल का इतिहास अपनी स्वतंत्रता और राष्ट्रीय आजादी के लिए अल्जीरियाई जनता के कठोर संघर्ष का इतिहास है। १३२ वर्ष के फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन के फलस्वरूप इस देश का सम्पूर्ण जीवन तबाह हो गया था। उपनिवेशवादियों ने अधिक उपजाऊ जमीनों को हथिया लिया था; इस देश, के उद्योग-धन्धों पर उनका नियंत्रण कायम था। फ़्रांसीसी इजारेदारियां और बैंक अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं में पैठ गये थे। बर्बर ढंग से शोषित अल्जीरियाई जनता भिखमंगों की तरह जैसे-तैसे जीवन व्यतीत करती थी। आर्थिक शोषण और दरिद्रीकरण के अलावा अल्जीरियाइयों को राष्ट्रीय तथा जातीय भेदभाव भी बर्दाश्त करना पड़ता था। अपने ही देश में वे अपने को परदेशियों की भांति महसूस करने के लिए विवश हो गये थे। अल्जीरिया पर विजय प्राप्त करने के फ़ौरन बाद फ़्रांसीसी सम्राट ने उसे एक "फ़्रांसीसी रियासत" घोषित कर दिया, जहां अरब लोग महज खेत-मजदूरों, राजों और मोचियों के रूप में उपनिवेशवादियों की सेवा करने के लिए उपयुक्त तथा "तालीम के लिए अनुपयुक्त नीची नसल" के निवासी माने जाते थे।

इस "फ़्रांसीसी रियासत" में वहां के मूल निवासियों को सभी राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया, उन्हें एक विशेष "देशी विधि-संहिता" का नियंत्रण स्वीकार करना पड़ा। उनकी किस्मत फ़्रांसीसी औपनिवेशिक अधिकारियों की सनक पर आश्रित थी, जिनकी अनुमति के बिना वे अपने ही देश में स्वतंत्रतापूर्वक इधर-उधर आ-जा भी नहीं सकते थे।

यदि वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जरा भी प्रयास करते, तो उसे पाशविक ढंग से कुचल दिया जाता था। परन्तु इसके बावजूद

औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध उनका संघर्ष एक दिन के लिए भी रुका नहीं। कभी यह तीव्र, तो कभी धीमा पड़ जाता था, कभी भड़क उठता था और कभी सुलगता रहता था और रूस मे १९१७ की महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद, जब राष्ट्रीय स्वाधीनता के लक्ष्य के प्रति समर्पित देशभक्त सगठनो का जाल सारे देश मे फैल गया तो इसने अभूतपूर्व व्यापकता ग्रहण कर ली।

१९२० में देश में प्रथम कम्युनिस्ट संगठन कायम हुए। १९३६ मे फ्रास मे जनवादी मोर्चे की विजय के साथ अल्जीरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने सगठनात्मक एकता कायम की और कानूनी तौर पर इसे काम करने की अनुमति प्राप्त हुई।

कम्युनिस्ट पार्टी मेहनतकश जनता के अधिकारों की सबसे उत्कट समर्थक साबित हुई। इसने सामाजिक सुधारो के लिए तथा नसली भेदभाव और राजनीतिक अधिकारहीनता के विरुद्ध सघर्ष का नेतृत्व किया। जिस एक मुख्य लक्ष्य को इसने सामने रखा, वह था राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति।

दूसरे विश्वयुद्ध मे फासिस्टवाद की पराजय और विश्व समाजवादी प्रणाली की स्थापना से राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन के विकास को और प्रेरणा प्राप्त हुई।

१९६० के नवम्बर मे हुए कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों के सम्मेलन के वक्तव्य में बताया गया था कि "विश्व समाजवादी प्रणाली के अस्तित्व मे आने और साम्राज्यवाद की स्थितियों के कमज़ोर होने से उत्पीड़ित राष्ट्रों के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने की नई संभावनाओं का द्वार उन्मुक्त हो गया है।"

दूसरे विश्वयुद्ध के अन्त तक अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव काफ़ी बढ गया था। १९३९ की अपेक्षा १९४५ मे इसके सदस्यों की संख्या तीन गुना हो गई थी। अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के मुखपत्र «Liberté» की ११५ हज़ार प्रतियां छपती थी और इसके नियमित ग्राहकों की संख्या २५ हज़ार थी।

पार्टी के सदस्यों ने उपनिवेशवादियों के विरुद्ध अदम्य प्रतिरोध की भावना पैदा करते हुए और जनता को धीरे-धीरे आज़ादी तथा स्वाधीनता की आनेवाली लड़ाइयों के लिए तैयार करते हुए पार्टी का सन्देश मेहनतकशों तक पहुंचाया।

अल्जीरियाई मुक्ति-आन्दोलन का चरम बिन्दु १६५४ का नवम्बर विद्रोह था, जो फ़ांसीसी उपनिवेशवादियों के विरुद्ध कई साल तक चलनेवाले जन युद्ध में विकसित हो गया और इवियन समझौते के साथ १६६२ के मार्च में समाप्त हुआ। अल्जीरिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने इस संघर्ष और इसकी तैयारी मे प्रमुख भाग लिया।

१६५४ के सशस्त्र विद्रोह की तैयारी की पूरी अवधि में अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी ने राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन मे तेजी लाने के लिए बहुत कुछ किया। जन समुदाय पर इसका बड़ा असर था और इसने उनके कई उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्षों का नेतृत्व किया था। मजदूरो और किसानो के बीच जोरदार राजनीतिक प्रचार करते हुए इसने उनकी संगठनात्मक एकता और क्रियाशीलता को विकसित करने में सहायता पहुंचाई। जनता ने इसे अपने सच्चे समर्थक के रूप मे स्वीकार किया और इस पर भरोसा किया। १६५० के म्युनिसिपल चुनावो और संसद के १६५१ के चुनावों मे इसने कई नगरों और गांवों में अन्य किसी भी राष्ट्रीय पार्टी की अपेक्षा अधिक वोट प्राप्त किए।

किन्तु कुछ वस्तुगत ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण १६५४ में जनता द्वारा शुरू किये गए सशस्त्र संग्राम का नेतृत्व राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चा नाम से ज्ञात राजनीतिक संगठन ने किया। कम्युनिस्ट पार्टी ने फ़ौरन विद्रोह के औचित्य की उद्घोषणा की और विद्रोही क्षेत्रों में अपने सदस्यों को छापेमारों का साथ देने तथा उपनिवेशवादियों के विरुद्ध संघर्ष का हर प्रकार से समर्थन करने की हिदायत दी। विद्रोह के पहले साल के दौरान विद्रोहियों के लिए जन समुदाय का व्यापक राजनीतिक और व्यावहारिक समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से इसने अपनी सीमित कानूनी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग किया। इस दिशा में इसके कार्य का असर देश के अनेक शहरी केन्द्रों में हड़तालों का तांता लग जाने से प्रकट हुआ।

नवम्बर, १६५४ का सशस्त्र विद्रोह पूर्ववर्ती वर्षों में किये गए राजनीतिक काम की तर्कसंगत परिणति था। उसी कार्य के फलस्वरूप अल्जीरियाई जनता तत्काल विद्रोहियों की सहायता को आ गयी और उसने उपनिवेशवाद-विरोधी युद्ध में भाग लिया, जो सारे देश में फैल गया। नियमित फ़ौजों अथवा मुजाहिदों के साथ मुसब्बल

स्वयंसेवक भी सैनिक कार्रवाइयों में भाग लेने लगे। अल्जीरियाई देशभक्तों के छोटे दस्ते छापेमार नीति का इस्तेमाल करते हुए फ़ांसीसी फौज पर आकस्मिक और जोरदार प्रहार करते रहे।

छापेमारो मे कम्युनिस्टो के शामिल होने के मार्ग में बाधाएं खड़ी की गई। राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे के नेताओं ने अन्य अल्जीरियाई देशभक्तों की बराबरी के स्तर पर इन दस्तों में कम्युनिस्टो को स्वीकार करने से इनकार किया। जिन्हे शामिल भी किया जाता था, उन पर हर प्रकार के अकुश लगाये जाते थे और उनके साथ भेदभाव की नीति बरती जाती थी। राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे के नेताओ ने अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी को भंग कर देने की भी माग की; वे चाहते थे कि पार्टी के जिन सदस्यों को इसके सैन्यदलो मे शामिल कर लिया गया है, वे अपने विचारो और राजनीतिक विश्वास का परित्याग कर दें।

कम्युनिस्ट पार्टी ने महीनो राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे के नेताओं से सम्पर्क स्थापित करने और अपने सदस्यों को इस लड़ाई में भाग लेने की सुविधा दिलाने की कोशिश की। परन्तु राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे ने पार्टी के सुझावों को ठुकरा दिया।

इस परिस्थिति में अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने "मुक्ति-योद्धा" के नाम से ज्ञात अपना ही कम्युनिस्ट फौजी संगठन क़ायम करने का निर्णय किया। १९५५ में स्थापित इस संगठन ने राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे द्वारा संचालित लड़ाई के साथ-साथ उपनिवेशवादियों की सेना के विरुद्ध प्रबल फौजी कार्रवाई शुरू की।

इस बीच कम्युनिस्ट पार्टी ने राष्ट्रीय स्वाधीनता की इच्छुक राष्ट्र की सभी शक्तियों को एकजुट करने की जोरदार कोशिश की। १९३६ के अक्तूबर मे अपनी स्थापना के बाद से ही इसने इस पर जोर दिया था कि अल्जीरिया की राष्ट्रीय स्वाधीनता का ध्येय किसी एक वर्ग अथवा एक पार्टी का नही, बल्कि बिना किसी अपवाद के देश की सभी राष्ट्रीय और जनवादी शक्तियों का संयुक्त ध्येय है। इसके प्रयास व्यर्थ नही गए। १९५६ के अप्रैल के अन्त में अन्ततः अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी और राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे के नेताओं के बीच सम्पर्क स्थापित हुआ और बातचीत शुरू हुई। १९५६ के जून मे युद्ध मे कम्युनिस्टों के सहयोग और सामान्य संघर्ष में भाग लेने के प्रश्न पर दोनों पक्षों में समझौता हो गया। इस समझौते

के अन्तर्गत कम्युनिस्टों के "मुक्ति योद्धाओ" की टुकड़िया राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे द्वारा नियंत्रित राष्ट्रीय मुक्ति-सेना के कमान मे कर दी गयीं। राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे के नियंत्रणाधीन राष्ट्रीय यमुक्ति-सेना के सैन्यदल मे शामिल होनेवाले कम्युनिस्टों ने यह वचन दिया कि अपने राजनीतिक विचारों पर कायम रहते हुए वे युद्ध का अन्त होने तक कम्युनिस्ट पार्टी से संगठनात्मक और राजनीतिक सम्बन्ध नही रखेंगे।

एकता की अपनी इच्छा को दृष्टि में रखते हुए अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी ने कम्युनिस्टों और अल्जीरियाई मजदूरों की आम यूनियन से सम्बद्ध हमदर्दों से अल्जीरियाई आम श्रमिक महासंघ में शामिल हो जाने का अनुरोध किया। इस कदम के फलस्वरूप ट्रेड-यूनियन आन्दोलन की एकता सुनिश्चित हुई और राष्ट्रीय स्वाधीनता के संघर्ष में सारे राष्ट्र की एकजुटता को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

१९५५ के सितम्बर में अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी पर रोक लगा दी गई। औपनिवेशिक अधिकारियों ने पार्टी के नेताओं पर प्रतिशोध की भावना से बर्बर जुल्म ढाये। इसकी केन्द्रीय समिति के राजनीतिक ब्यूरो के बारह मे से आठ सदस्यो को गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हें जेलों तथा नज़रबन्दी शिविरों में झोंक दिया गया। परन्तु राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य और केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी बशीर हज्ज-आली के नेतृत्व में पार्टी के शेष नेताओ ने देश नहीं छोडा। वे वही बने रहे और उन्होंने देशभर में कम्युनिस्टों के कार्य का निर्देशन किया। लड़ाई में भाग लेने के अलावा कम्युनिस्टों ने राष्ट्रीय-मुक्ति सेना के सैनिकों, आबादी, ट्रेड-यूनियनो और अन्य सार्वजनिक संगठनों मे भी शैक्षिक और राजनीतिक काम किया। अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र «Liberté» – "अल-हुरियत" और कई पुस्तिकाओं और परचो का प्रकाशन भी गुप्त रूप से होता रहा। १९५७ मे पार्टी ने सैद्धातिक पत्रिका «Realités Algeriennes et Marxisme» (अल्जीरियाई वास्तविकता और मार्क्सवाद) और "अल-जजाइर अल-मुजाहिदत" (संघर्षरत अल्जीरिया) नामक पत्रिका का प्रकाशन भी शुरु किया।

सभी देशभक्तों के साथ राष्ट्रीय मुक्ति-सेना मे अपनी मातृभूमि के सुख और स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए अल्जीरियाई कम्युनिस्टों ने फ्रांसीसी उपनिवेशवादियो के विरुद्ध जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष के इतिहास में शानदार

परिच्छेद का प्रणयन किया। परन्तु, दोनों पक्षों में बराबर की टक्कर नहीं थी, और शत्रु की तुलना मे अल्जीरियाई देशभक्तों की फ़ौजों की संख्या बहुत ही कम होने के कारण उन्हे भारी क्षति उठानी पड़ी। प्रचुर रूप मे अत्यंत आधुनिक हथियारों से लैस तथा संख्या की दृष्टि से बड़ी और सुप्रशिक्षित फ़ासीसी औपनिवेशिक सेना राष्ट्रीय मुक्ति-सेना की उन टुकड़ियों के विरुद्ध झोक दी गई थी, जिनका निर्माण लड़ाई के दौरान हुआ था और जो केवल हल्की बन्दूकों से लैस थी। १९५५ के मार्च में अल्जीरिया मे फ़ासीसी सेना के सैनिकों की सख्या दो लाख तक और १९५६ की गरमी में चार लाख तक पहुंच गई थी। १९५८ की पतझड़ से फ़्रास के आठ लाख अफसर और सैनिक, उसकी नभसेना का दो-तिहाई हिस्सा और आधी नौसेना अल्जीरिया मे थी।

इसके अतिरिक्त, आक्रामक नाटो गुट मे शामिल अन्य देश, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमरीका, जर्मन सघात्मक गणराज्य, ब्रिटेन और इटली अल्जीरियाई जनता के विरुद्ध फ़्रास के घिनौने युद्ध में सक्रिय रूप से उसकी सहायता कर रहे थे।

इस प्रकार अपनी आज़ादी के लिए सशस्त्र सघर्ष का रास्ता ग्रहण करनेवाली अल्जीरियाई जनता ने देखा कि साम्राज्यवादी राष्ट्रों के पूरे संघट की संयुक्त फौजे उसके विरुद्ध खड़ी कर दी गई हैं। केवल असीम साहस और अपने ध्येय के औचित्य मे विश्वास तथा इसके साथ ही समाजवादी देशों और दुनिया की सभी प्रगतिशील ताकतों की सहायता से उपनिवेशवादियों के विरुद्ध संघर्ष मे अल्जीरियाई जनता विजय प्राप्त करने मे समर्थ हो सकी। यह विजय अकथनीय यातनाओ और त्याग तथा बलिदान की बदौलत ही प्राप्त की जा सकी।

सशस्त्र विद्रोह के दौरान और लड़ाइयों के पूर्ववर्ती काल में अनेक अल्जीरियाई कम्युनिस्टों ने अपना जीवन न्योछावर कर दिया। शहीद होनेवालो मे अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी और इसके राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य कादिर बेलकैयूम, जिन्हे कारावास भोगते समय फ़ांसीसी-उपनिवेशवादियो ने मार डाला था, और केन्द्रीय समिति के सदस्य अबूआली तालिब, मोहम्मद गिराफ़, लैयद लम्रानी और ताहिर हमरी शामिल थे, जिन्होंने औपनिवेशिक सेना के विरुद्ध लडते हुए रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की।

क़ादिर बेलक़ैयूम

अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी के एक संस्थापक और नेता कादिर बेलकैयूम का जीवन और कार्य अल्जीरियाई जनता को पूर्णतया समर्पित था। वह १६०८ में ओरान के एक ग़रीब मज़दूर परिवार में पैदा हुये थे। फ़्रांसीसी औपनिवेशिक शासन की उत्पीड़क परिस्थितियों के कारण उनके बचपन का समय बहुत कष्टप्रद था।

जिस साल कादिर बेलकैयूम पैदा हुए, उसी वर्ष अल्जीरियाई उपनिवेश में बसे यूरोपियनों ने एक कांग्रेस आयोजित की, जिसमें उन्होंने माग की कि देशी आबादी को प्रारम्भिक शिक्षा देना बन्द कर दिया जाये। तर्क यह था कि अल्जीरिया के मूल निवासियों मे शिक्षा के प्रसार से "अर्थव्यवस्था ख़तरे में पड़ जायेगी और फ़्रांसीसी निवासियों के हितों के लिए संकट पैदा हो जायेगा।"

फ्रांसीसी औपनिवेशिक अधिकारियों ने उनकी मांग पर ध्यान दिया। अल्जीरियाई बच्चो को यदा-कदा ही स्कूल जाने की इजाजत दी जाती थी। जिन्हे स्कूल में दाखिला पाने का सौभाग्य प्राप्त भी हो जाता था, उन्हें भी फ्रांसीसी भाषा मे ही शिक्षा प्राप्त होती थी, जबकि उनकी मातृभाषा अरबी को विदेशी भाषा के रूप में पढाया जाता था।

इन्ही कष्टदायक परिस्थितियों में बालक कादिर के भाग्य का निर्माण हुआ। यद्यपि वह प्रतिभासम्पन्न और पढने-लिखने के लिए बहुत उत्सुक थे, परन्तु माध्यमिक स्कूल मे दाखिल होने की भी आशा नही कर सकते थे। उन्हे अभी लिखना-पढना आया ही था कि उन्हें काम पर जाने और अपने मा-बाप की सहायता करने को विवश होना पड़ा। कई प्रकार के कड़े अस्थिर काम करने और हरकारे के रूप मे इधर-उधर का चक्कर काटने के बाद बारह अथवा तेरह वर्ष की उम्र में वह एक बूचड़ के नौकर के रूप मे काम करने लगे जहां उन्हे सुबह से शाम तक बहुत ही कम मजदूरी पर कठोर परिश्रम करना पड़ता था।

यह वह समय था जब रूस की अक्तूबर क्रांति की प्रतिध्वनि अल्जीरिया में पहुची और वहां उसने राष्ट्रीय मुक्ति-संघर्ष को प्रोत्साहन प्रदान किया और अल्जीरियाई मजदूरों की वर्गीय चेतना को जागृत किया।

फ्रांस मे प्रवास करनेवाले अल्जीरियाई मजदूरों ने १९२६ मे अपना प्रथम राजनीतिक संगठन 'उत्तर अफ्रीकी नक्षत्र' कायम किया। इसके एक संस्थापक कम्युनिस्ट मोहम्मद मारूफ थे, जो बाद मे अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य थे। १९३३ मे 'उत्तर अफ्रीकी नक्षत्र' ने अल्जीरिया की स्वतंत्रता की माग की।

१९३१ मे ट्यूनिस और काहिरा के विश्वविद्यालयों में शिक्षाप्राप्त मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने उलमा सुधारक संघ कायम किया। इस्लाम का पुनरुद्धार और अरबी भाषा तथा संस्कृति को कायम रखना इस संगठन का लक्ष्य था। इसके सदस्य सांस्कृतिक क्षेत्र मे बहुत ही सक्रिय थे, उन्होंने ऐसे स्कूलों की स्थापना की, जहां आधुनिक अरबी भाषा मे शिक्षा प्रदान की जाती थी और स्वाभाविक रूप से उन्होंने औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष में भाग लिया।

अल्जीरियाई मजदूर वर्ग अपना सघर्ष तीव्र करता जा रहा था। मेहनतकशों के लिए काम की बेहतर शर्तें प्राप्त करने के उद्देश्य से देश भर

में हड़तालों की लहर फैल गई थी। युवा बेलकैयूम इन घटनाओं से विलग नही रहे। उन्होंने अपने अधिकारों के लिए अल्जीरियाई मजदूरों के संघर्ष मे, फ़ांसीसी औपनिवेशिक शासन के पंजे से अपने देश को मुक्त करने के संघर्ष में सक्रिय भाग लिया।

फ़ांस मे जनवादी मोर्चे की विजय के वर्ष, १९३६ तक राजनीतिक पार्टियों की वात तो छोड़िए, अल्जीरिया मे ट्रेड-यूनियनों पर भी प्रतिवन्ध लगा हुआ था। ट्रेड-यूनियन मे शामिल होने पर ६ महीने की सज़ा मिलती थी। इसके बावजूद, १९३६ तक अल्जीरियाई ट्रेड-यूनियनें गैरकानूनी रीति से काम करती रही थीं और चौथे दशक के शुरू में कादिर बेलकैयूम एक ऐसी ही यूनियन मे शामिल हो गए। उसी समय वह युवा कम्युनिस्ट लीग के भी सदस्य हो गये। उसी समय मजदूर वर्ग की पांतों मे उनका सचेत कार्य शुरू हुआ। परन्तु काम के पूर्णतया लायक होने के लिए उन्हे काफी अध्ययन और ज्ञान प्राप्त करना पड़ा।

युवा कम्युनिस्ट लीग के सगठनों ने, जिनके प्रमुख केन्द्र अल्जियर्स, ओरान, कोंस्तातान, ब्लीद, त्लेम्सान और बौन नामक नगरों मे स्थित थे, युवाजन के बीच व्यापक प्रचार-कार्य चलाया, औपनिवेशिक दमन के पीड़ितों के साथ एकजुटता का आन्दोलन चलाया और गिरफ़्तार कम्युनिस्टों के परिवारों को सहायता प्रदान की।

१९३४ मे, २६ वर्ष की उम्र में कादिर बेलकैयूम ओरान में गुप्त कम्युनिस्ट संगठन मे शामिल हो गए।

उस समय तक अल्जीरिया के सभी बड़े नगरों और कुछ गांवों तथा वस्तियो में भी कम्युनिस्ट पार्टी की शाखाएं क़ायम हो गई थी।

चौथे दशक में किसानों, खेत-मजदूरों, राजों और खनिकों के अधिकारों, जीवन-निर्वाह की वेहतर स्थितियों, धार्मिक उपासना की स्वतत्रता और शिक्षा पाने के अधिकार के लिए संघर्ष को प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्य से कम्युनिस्टो ने उनके बीच महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। १९३४ मे अनेक कम्युनिस्ट गिरफ्तार कर लिये गए और उन्हे देश के दक्षिणी इलाको में निर्वासित कर दिया गया, जहा उन्हें सहारा रेगिस्तान में स्थित विनी अब्बास वन्दी-शिविर में डाल दिया गया था।

इन पाशविक अत्याचारो से युवा कम्युनिस्ट कादिर बेलकैयूम आतंकित नहीं हुए। उन्होंने निर्वासन और गिरफ्तारी के कारण संघर्ष से दूर पड़ गए

साथियों के स्थान की पूर्ति करने, उनके काम को संभालने और मेहनतकश लोगों के व्यापक समुदाय पर कम्युनिस्टों के प्रभाव को क़ायम रखने का यथासभव प्रयास किया।

फ़्रांसीसी उपनिवेशवादी नीति पर बहुत प्रभाव डालनेवाले बड़े फ़्रासीसी जमीन्दार अल्जीरिया मे अपने हितों को कायम रखने का तरीका निकालने के लिए व्यग्र थे। उन्होंने सोचा कि देश में फासिस्ट शासन कायम होने पर उनका यह उद्देश्य पूरा हो सकता है। १६३४ मे उन्होंने फासिस्ट संगठनो को वित्तीय सहायता देनी शुरू की और वे मुसोलिनी तथा हिटलर के कार्यकलाप का व्यापक प्रचार करने लगे।

अल्जीरियाई कम्युनिस्टों ने अपने देश मे फ़ासिस्टवाद के प्रचार को रोकने के लिए पूरा प्रयास किया। कादिर बेलकैयूम भी इस काम में बडे जोश के साथ जुट गए। वह अपना अधिक समय और शक्ति पार्टी के काम में लगाने लगे, उन्होंने शीघ्र ही अपने साथी कम्युनिस्टों का सम्मान प्राप्त कर लिया और वह पार्टी की ओरान शाखा के सेक्रेटरी बनाये गए।

१६३५ के अन्त में वह ओरान प्रादेशिक पार्टी ब्यूरो में चुन लिये गए। उसके बाद से पेशेवर क्रान्तिकारी की भांति वह सारे समय केवल पार्टी का काम करने लगे। उन्होंने मेहनतकश लोगों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखा, उनकी ज़रूरतों पर ध्यान दिया और उनकी आर्थिक स्थितियो मे सुधार के लिए संघर्ष किया।

अल्जीरियाई मेहनतकश लोगों के सघर्ष को संगठित करने और साम्राज्यवाद-विरोधी तथा राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन को विकसित करने मे कादिर बेलकैयूम की भूमिका असाधारण थी। यह भली भांति समझते हुए कि उपनिवेशवाद के विरुद्ध सघर्ष की सफलता के लिए राष्ट्रीय शक्तियों की एकता अनिवार्य है, उन्होंने सभी देशभक्त तत्त्वों की मैत्री के आन्दोलन को प्रोत्साहन प्रदान किया।

१६३६ के जून में अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी, उलमा सुधारक संघ, 'उत्तर अफ़्रीकी नक्षत्र' और अन्य राष्ट्रीय सगठनों के प्रतिनिधियों की एक मुस्लिम कांग्रेस हुई, जो बाद में एक स्थायी संस्था बन गई। मुस्लिम कांग्रेस ने अल्जीरियाइयों के लिए व्यापक जनवादी अधिकारो, औपनिवेशिक प्रशासन मे मुस्लिम धर्म की स्वतंत्रता और अल्जीरियाइयों तथा यूरोपियनों के लिए समान मजदूरी की माग की। इन मागों के समर्थन मे विराट प्रदर्शन हुए और प्रतिनिधिमण्डल पेरिस भेजे गए।

मुस्लिम कांग्रेस का आयोजन और फ्रांस मे जनवादी मोर्चे की विजय एक ही समय हुई। इस विजय से अल्जीरियाई जन समुदाय मे आशा का सचार हुआ, क्योंकि इसके साथ ही उन्हें अपनी राजनीतिक पार्टिया और सगठन कायम करने का अवसर प्राप्त हुआ।

मुस्लिम काग्रेस में अल्जीरिया की राष्ट्रीय पार्टियों तथा संगठनों का एकीकरण हो जाने के साथ ही अल्जीरिया मे रहनेवाले प्रगतिशील यूरोपियनों ने राष्ट्रीय मोर्चे की समितिया क़ायम की।

बेलकैयूम ने मुस्लिम काग्रेस और राष्ट्रीय मोर्चे की उक्त समितियों की कारंवाइयो मे समरूपता लाने की कोशिश की, जिन के सयुक्त प्रयास से फासिस्ट संघों के विरुद्ध और जनवादी सुधारों के लिए उनका सघर्ष तीव्र रूप ग्रहण कर लेता।

युवा अल्जीरियाइयों का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से कादिर बेलकैयूम, स्वतंत्र विचारों के अख़बार «La Défence» के निदेशक लामीन लमोदी और भूतपूर्व गणतंत्रीय सैनिकों की यूनियन के सेक्रेटरी-जनरल हमीद हमीदा ने मुस्लिम काग्रेस की एक युवक शाखा क़ायम की। परन्तु काग्रेस के आपसी मतभेदों के कारण वास्तविक राष्ट्रीय कार्यक्रम स्वीकृत न हो सका और आन्तरिक असंगतियों के कारण कुछ अर्से बाद मुस्लिम काग्रेस तथा उसकी युवक शाखा का विघटन हो गया।

कादिर बेलकैयूम ने जन समुदाय को कम्युनिस्टों के पक्ष में करने की बहुत कोशिशें की। उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष के विविध पहलुओं, मेहनतकश लोगो के अधिकारों के लिए संघर्ष तथा मजदूरो और किसानों की मागों की पूर्ति के सम्बन्ध मे कम्युनिस्टों के कार्यक्रम को समझाने के लिए कठिन परिश्रम किया। उन्होंने बतलाया कि कम्युनिस्टों का अंतिम लक्ष्य समाज के सर्वाधिक जनवादी और प्रगतिशील रूप—कम्युनिज्म का निर्माण है। उन्होंने तथा उनके साथी कम्युनिस्टों ने व्यापक जन समुदाय के बीच जो शैक्षिक काम किया, उसका सुफल प्राप्त हुआ। जनता ने कम्युनिस्टों को अपना विश्वास और समर्थन प्रदान किया। १९३६ में नगरपालिकाओं के चुनावों में उन्होंने बड़ी विजय हासिल की। एक स्थानीय कम्युनिस्ट नेता अल-हज्ज अमारत फर्तेशौक़ नगरपालिका के सदस्य चुन लिये गए।

कम्युनिस्टों द्वारा अदा की गई भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण थी कि राष्ट्रवादी पूंजीपति वर्ग के नेताओं को भी इसे स्वीकार करना पड़ा।

शहरी सर्वहाराओं के बीच अनेक समर्थकों को प्राप्त करने के साथ-साथ अल्जीरियाई कम्युनिस्टों ने इसी अवधि मे गावों मे अपने काम को तेज कर दिया। उन्होंने खेत-मजदूरों की ग्रामीण यूनियनें सगठित की और जीवन-निर्वाह की बेहतर स्थितियों के लिए उनके सघर्ष को निर्देशित और प्रोत्साहित किया। कादिर बेलकैयूम ने इस काम मे भी अपना काफी समय लगाया। १६३६ में देश भर मे हड़तालो की लहर व्याप्त हो गई। रहन-सहन की स्थितियो में सुधार, हडताल करने के अधिकार, मजदूरों के प्रतिनिधियों की स्वीकृति, आठ घंटे के कार्य-दिवस और सवेतन छुट्टियों के लिए गोदी मजदूरों, धातुकर्मियों और राजों के साथ खेत-मजदूरों ने भी हड़तालें की। उन्होंने कुछ गांवों में फ़ासीसी ज़मीदारों के फार्मों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया।

१६३६ और १६३७ के वर्ग सघर्षों के दौरान ट्रेड-यूनियनों मे प्रत्यक्ष काम करनेवाले प्रमुख कम्युनिस्ट नेताओं को क़ादिर बेलकैयूम की हर प्रकार की सहायता प्राप्त हुई, जिनमे ग्राम श्रमिक महासंघ के सेक्रेटरी मारूफ मोहम्मद और गोदी मजदूर यूनियन के सेक्रेटरी-जनरल सी-अल-हज्ज मोहम्मदननफ़ा भी शामिल थे।

१६३६ के अक्तूबर में अल्जीरिया के कम्युनिस्टों ने पार्टी की स्थापना कांग्रेस का आयोजन किया और क़ादिर बेलकैयूम अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य चुने गए। उन्हें ओरान प्रदेश की कई पार्टी इकाइयों के काम का संचालन सौंपा गया।

१६३७ के दिसम्बर मे हुई अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की दूसरी कांग्रेस मे क़ादिर बेलकैयूम राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य और पार्टी की केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी चुने गए और उन्हे पार्टी के संगठनात्मक कार्य के लिए जिम्मेदार बना दिया गया। उसके बाद उनका काम मुख्यतः अल्जियर्स नगर मे सकेन्द्रित हो गया, गोकि अपने काम से उन्हे अक्सर दूसरे हिस्सों, जैसे ओरान और कोस्तानतान भी जाना पड़ता था। इन यात्राओं के समय वह सगठनात्मक और राजनीतिक प्रश्नों पर स्थानीय साथियों से विस्तार के साथ बातचीत किया करते थे।

युवा श्रोता कादिर के प्रति सम्मान की भावना व्यक्त करते थे और उनसे मिलने को इच्छुक रहते थे। उनके साथ बातचीत और विचार-विमर्श के बाद अनेक युवाजन कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए।

क़ादिर बेलकैयूम ने अपने समय की अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का गहरा अनुशीलन किया। उन्होने जर्मनी और इटली में फ़ासिस्टवाद के विकास के ख़तरे को समझ लिया। उन्होंने इसे अनुभव किया कि पश्चिम मे फ़ासिस्टवाद को रियायतें देने से अल्जीरिया सहित उत्तरी अफ़ीका मे आन्तरिक राजनीतिक पेचीदगियां पैदा हो सकती हैं। अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी की हैसियत से उन्होने १६३६ मे पार्टी के सुव्यवस्थित गुप्त जाल को कायम करना शुरू किया। परन्तु इस काम को पूरा करना उनके भाग्य में नहीं बदा था।

उपनिवेशवादियो ने उनके काम में निहित खतरे को भाप लिया और उनसे छुटकारा पाने का निर्णय किया। १६३६ के अगस्त के अन्त में, दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने के ठीक पहले उन्हे गिरफ़्तार कर लिया गया और बार्बेरौस जेल मे झोक दिया गया। औपनिवेशिक अधिकारियों ने सितम्बर में अल्जीरिया की कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया और उसके सदस्यो पर जुल्म ढाना शुरू कर दिया। उसके कई नेताओ तथा क्रियाशील सदस्यों को बन्दी बना लिया गया और जेल तथा नज़रबन्दी शिविरों में डाल दिया गया। परन्तु कम्युनिस्ट पार्टी ने फ़ासिस्टवाद, प्रतिक्रिया और पुलिस के आतक के विरुद्ध संघर्ष को जारी रखने का तरीक़ा ढूढ़ निकाला। कम्युनिस्टों ने अपने संगठनों की गैरकानूनी हैसियत के बावजूद उन्हें बनाये रखा। पार्टी के गुप्त जाल को कायम करने के बेलक़ैयूम के सामयिक प्रयास इस समय बहुत उपयोगी सिद्ध हुए।

१६४० के जून में फ्रांस में फासिस्ट-समर्थक विशी मंत्रिमण्डल के सत्तारूढ़ हो जाने से अल्जीरियाई देशभक्तों के विरुद्ध दमन और भी तेज हो गया। परन्तु इसके बावजूद अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी ने अपना सक्रिय काम जारी रखा। उस समय की सभी राष्ट्रीय पार्टियों में अकेली कम्युनिस्ट पार्टी ही गुप्त आधार पर अपने संगठनों को पुनः कायम करने और छिपकर काम जारी रखने में सक्षम रही।

आजादी के सैनिक और देशभक्त क़ादिर बेलक़ैयूम ने जेल की कालकोठरी से भी अपनी लड़ाई जारी रखी। उन्होंने जेल की व्यवस्था का विरोध किया और अन्य कैदियों को कार्रवाई करने के लिए सतर्क कर दिया। उनका दृढ चरित्र जेल के अधिकारियों के विरुद्ध संघर्ष का एक [illegible] था। उन्होंने राजनीतिक क़ैदियों के अधिकारों के लिए भूख हड़ताल

घोषणा कर दी और दूसरे कैदियों से भी ऐसा ही करने का अनुरोध किया। बेलकैयूम जब तक अर्गेनिक जेल में रहे, तब तक बन्दीगृह के अधिकारी उन्हें शारीरिक क्षति पहुंचाने की हिम्मत न कर सके, क्योंकि वह बहुत ही विख्यात थे। इस कारण उन्होंने उनका तबादला फौजी जेल में कर दिया, जहां उन्हें महीनों कठोर तनहाई में रखा गया। यह उन्हें धीरे-धीरे मार डालने के समान था। पाशविक परिस्थितियों में लम्बी अवधि की तनहाई की सजा काटने के बाद बेलकैयूम को तपेदिक की बीमारी हो गई। उनकी दशा चिन्तनीय हो गई थी और १९४० के जून में उन्हें इस ख्याल से रिहा कर दिया गया कि वह अब संघर्ष जारी रखने में बिलकुल असमर्थ हैं। परन्तु जेल से बाहर आते ही उन्होंने सबसे पहले पार्टी के नेताओं से सम्पर्क स्थापित किया और तत्काल पार्टी के काम में जुट गए।

कई दिन बाद उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया तथा जेल में डाल दिया गया और इसके बाद उनकी गंभीर बीमारी के कारण उन्हें अल्जियर्स के फौजी अस्पताल में रखा गया, जहा की दशा किसी भी रूप में कम अमानवीय नहीं थी। उनकी परिचर्या के लिए एक फ्रांसीसी जेसुइट नर्स रख दी गई, जो एक अरब तथा एक कम्युनिस्ट होने के कारण उन्हें "दोहरा अपराधी" समझती थी। न उन्हें कोई दवा दी गई और न उनका कोई इलाज किया गया। वह उस अस्पताल से जीवित बचकर न निकल पायें, इसके लिए सब कुछ किया गया। उन्होंने समझ लिया कि उनके शत्रु उन्हें मार डालना चाहते हैं। अपनी पूरी शक्ति बटोरकर उन्होंने वहा से निकल भागने की योजना बनाई, परन्तु ऐन मौके पर बेहोश हो गए और इस कारण प्रयास विफल हो गया।

दिन-प्रतिदिन उनकी दशा बहुत खराब होती गई। ३० जुलाई, १९४० को ३२ वर्ष की उम्र में अल्जियर्स के फ़ौजी अस्पताल में कादिर बेलक्रैयूम का देहावसान हो गया। उनके देशवासियों ने अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रमुख नेता, अल्जीरिया में राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन के एक अगुआ और मजदूर वर्ग के ध्येय के प्रति समर्पित एक अथक योद्धा को खो दिया।

अबूआली तालिब

१० फ़रवरी, १६१६ को अल-अस्नाम के निकट ही ला-फ़ेर्म नामक गांव में अबूआली तालिब का जन्म हुआ था। उनका मनहूस बचपन परिश्रम करते-करते बीता। वह स्कूल न जा सके और अपढ़ बड़े हुए। जब वह काम की तलाश में अल्जियर्स रवाना हुए, तो उनकी उम्र केवल १३ वर्ष की थी। वहां वह नलसाज़ के शागिर्द बन गये। उन्हें एक फ़ासिस्ट-विरोधी जर्मन मजदूर ने यह काम सिखाया, जो अल्जियर्स आकर बस गया था। इस जिज्ञासु किशोर को, जो न तो कुछ पढ़ सकता था और न लिख सकता था, उसके शिक्षक ने मजदूरों के जीवन, अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व तथा वर्गीय और साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं। युवा अबूआली के लिए यह सब कुछ नयी बातें थीं। दिन-

प्रतिदिन वह अपने फासिस्ट-विरोधी बड़े साथी की कहानियां सुनते रहे और उनका मर्म ग्रहण करते गये। यह महसूस करने मे उन्हे देर न लगी कि इसे कोई अपढ़ व्यक्ति ठीक से नही समझ सकता कि अपने इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। अपने सहकर्मियों की सलाह और सहायता से अबूम्राली तालिब ने सायकालीन स्कूल में पढ़ना शुरू किया। ६ महीने में उन्होंने पढ़ना सीख लिया और जर्मन मज़दूर द्वारा दी गई राजनीतिक पुस्तकों को पढने मे वह अपना पूरा ख़ाली समय लगाने लगे।

अन्य मजदूरों से सम्पर्क, राजनीतिक पुस्तकों के अध्ययन और घटनाओं को समझने की इच्छा का शीघ्र असर हुआ—अबूम्राली तालिब ने समाज मे मज़दूर वर्ग की भूमिका और मेहनतकश जन समुदाय के अधिकारो के सघर्ष मे अपने निजी स्थान को समझ लिया। १६३४ मे वह युवा कम्युनिस्ट लीग मे शामिल हो गए। दो वर्ष बाद इस संगठन में लगन के साथ उनके काम करने को दृष्टि में रखते हुए उन्हें इसका एक सचिव बना दिया गया। १६३६ में वह अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गए और युवकों के बीच शैक्षिक काम उन्हे सौंपा गया।

१६३६ में, जब देशभर मे हड़तालों की प्रबल लहर व्याप्त हो गई, तो नलसाज तालिब ने हड़तालें करवाने और उन्हे सफल बनाने मे बहुत सक्रिय और प्रत्यक्ष भाग लिया। वह मज़दूरों से बातचीत तथा उनसे हड़ताल करने का अनुरोध करते हुए एक निर्माण-स्थल से दूसरे निर्माण-स्थल घूमने लगे।

१६३६ मे, जब औपनिवेशिक अधिकारियों ने अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो तालिब ने रोक उठाने के लिए सघर्ष किया और पार्टी के प्रकाशनों का वितरण किया। १६४० मे उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और ओरान प्रदेश के दक्षिणी भाग के एक नजरबन्द शिविर मे डाल दिया गया।

१६४२ के अन्त में उत्तरी अफ़्रीका में ब्रिटिश और अमरीकी फौजों के उतरने के फलस्वरूप अल्जीरिया से नाज़ी फ़ौजें खदेड़ दी गईं। इससे औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आन्दोलन प्रबल हो गया। अल्जीरियाई जनता ने देशी आबादी को गुलाम बनाये रखने के लिए मित्र राष्ट्रों की फ़ौजों की स्वीकृति प्राप्त करने की फ़ासीसी उपनिवेशवादियों की साजिशों का भण्डाफोड़ कर दिया। उपनिवेशवाद-विरोधी हलचल तथा इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति मे हुए आम परिवर्तनों के फलस्वरूप अल्जीरिया में

भी कुछ तवदीलियां हुईं। १६४३ के वसंत मे कम्युनिस्टों को नज़रबन्द शिविरो से रिहा कर दिया गया। १६४३ की मई मे अबूग्राली तालिब भी रिहा हो गए। नजरवन्द शिविर की यातनाग्रो से इस युवा कम्युनिस्ट की संकल्पशक्ति ज़रा भी नही टूटी थी और रिहा होते ही वह पार्टी के सक्रिय काम मे जुट गए। वह अल्जीरियाई कम्युनिस्ट युवा संगठन के प्रधान हो गए, जिस पद पर वह कई साल तक रहे।

अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी को पुनः कानूनी हैसियत प्राप्त हुई और जनता मे इसकी प्रतिष्ठा वहुत बढ़ गई। कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने को उपनिवेशवाद-विरोधी ग्रान्दोलन की सबसे कुशलतापूर्वक संगठित टुकड़ी सावित किया। उस समय अल्जीरियाई कम्युनिस्टो ने फासिस्टवाद को ध्वस्त करना अपना मुख्य कार्यभार समझा। अबूग्राली तालिब ने अपने युवा देशवासियों को पार्टी की नीति से ग्रवगत करवाया। उन्होंने राजनीतिक जीवन और फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध सघर्ष मे उनके योगदान को बढाने की कोशिश की। अपनी स्फूर्ति और मेहनतकश लोगों के ध्येय के प्रति अपनी निष्ठा से उन्हें पार्टी के प्रमुख नेताग्रों में स्थान प्राप्त हो गया। १६४६ के मार्च मे हुई पार्टी की तीसरी कांग्रेस मे वह अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति में चुने गए और इसकी अल्जियर्स शाखा के एक सचिव बना दिये गए।

दूसरे विश्वयुद्ध के खत्म होने के बाद अल्जीरिया मे राजनीतिक सुधारों का प्रश्न स्पष्ट रूप मे पुनः सामने प्रस्तुत हो गया। अल्जीरियाई सर्वहारा के अग्रणी तबके पर भरोसा करते हुए अल्जीरियाई कम्युनिस्टों ने अल्जीरियाई मेहनतकशों की पांतो को एकजुट करने तथा देश की सभी जनवादी और उपनिवेशवाद-विरोधी ताक़तो के एकीकरण मे अपनी सारी शक्ति लगा दी। अल्जीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने १६४६ की जुलाई में हुए अपने पूर्णाधिवेशन में अन्य सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों के साथ ही राष्ट्रीय मुक्ति-ग्रान्दोलन के सवाल पर काफी ध्यान दिया। पार्टी के नेताग्रों ने अपने संविधान, अपनी संसद और सरकार के साथ अल्जीरियाई जनवादी जनतंत्र की निर्माण-परियोजना का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया। नेताग्रों ने औपनिवेशिक प्रशासन के उन्मूलन और सार्विक मताधिकार के आधार पर अल्जीरियाई राष्ट्रीय विधान सभा के तत्काल चुनाव की मांग की। उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष की सफलता को सुनिश्चित बनाने के उद्देश्य

से १६४६ में ही पार्टी ने "स्वतंत्रता, जमीन और रोटी के लिए, स्वतंत्र, संयुक्त और जनवादी अल्जीरिया के लिए!" नारे के अन्तर्गत सभी अल्जीरियाई राष्ट्रवादियों और प्रगतिशील विचारों के यूरोपियनों से राष्ट्रीय जनवादी मोर्चे मे एकजुट होने की अपील की थी। उसके बाद से, राष्ट्रवादियो द्वारा संयुक्त कार्रवाई से इनकार कर देने के बावजूद कम्युनिस्ट अथक प्रयास करते हुए देश की सभी उपनिवेशवाद-विरोधी शक्तियों को एकजुट करने के काम मे जुटे रहे थे। अबूअली तालिब ने चुनाव-सम्बन्धी आन्दोलन सहित पार्टी के सभी राजनीतिक आन्दोलनों मे पूर्ववत भाग लिया। वह कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मेदवार की हैसियत से कई बार चुनावों मे खड़े हुए। उन्होंने मजदूरों के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध को कायम रखा। उनके साथ रहने और उनकी दैनिक जरूरतो को जानने के उद्देश्य से उन्होंने १६५० मे नलसाज़ी का धन्धा फिर शुरू कर दिया। १६५१ मे ट्रेड-यूनियन के सदस्यो ने उन्हें जिला राज मजदूर यूनियन में एक प्रमुख पद पर चुना और उसके बाद वह इसके सेक्रेटरी बनाये गए।

१६५४ के अगस्त में भीषण भूकम्प के कारण ओर्लियंस्विले (अब अल-अस्नाम) विनष्ट हो गया। हज़ारों व्यक्ति इस भीषण दुर्घटना मे मर गए और घायलों की सख्या तो अनगिनत थी। अबूअली तालिब ने शीघ्र ओर्लियंस्विले जाकर भूकम्प-पीड़ितों को सहायता पहुंचाई। ट्रेड-यूनियनों द्वारा वहां के निवासियों को अतिशीघ्र और प्रभावकारी सहायता पहुंचाने की व्यवस्था करनेवालो मे वह भी एक थे। सबसे पहले सहायता का प्रबन्ध करनेवाले संगठनों मे राज यूनियन भी एक थी, जिसके वह पदाधिकारी थे।

आज़ादी की लड़ाई शुरू हो जाने के बाद तालिब ने जुझारू कम्युनिस्ट टुकड़ियो के संगठन में अपनी सारी शक्ति लगा दी। उन्होंने और उनके सहकर्मी कम्युनिस्टों ने मुक्ति-योद्धाओ की टुकड़िया गठित की। राष्ट्रीय मुक्ति सेना के वहा आने तक इन टुकड़ियो ने इर्द-गिर्द के क्षेत्र मे अपनी फ़ौजी कार्रवाइयां जारी रखी। १६५६ के जून में राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच राष्ट्रीय मुक्ति सेना के साथ कम्युनिस्ट 'मुक्ति योद्धाओं' के मिल जाने के प्रश्न पर समझौता हो जाने के बाद तालिब राष्ट्रीय मुक्ति सेना मे कार्य करने लगे। १६५६ के जून मे राष्ट्रीय मुक्ति सेना के कमान ने उन्हे एक फौजी क्षेत्र के जनरल-स्टाफ का सदस्य नियुक्त

किया। लड़ाइयों के दौरान उन्होंने एक अच्छे सगठक, एक साहसी और सूझबूझवाले सैनिक के रूप मे अपनी स्वाभाविक योग्यता प्रमाणित की। उन्होंने फ़ांसीसी उपनिवेशवादियों के विरुद्ध कई फ़ौजी कार्रवाइयां की।

१९५७ की जुलाई मे, उपनिवेशवादी फौजों के साथ एक मुठभेड मे अपने हाथ में बन्दूक थामे युद्ध-क्षेत्र मे एक वीर की भांति उनकी मृत्यु हुई।

फ़हद

इराक़ी कम्युनिस्टों की प्रारम्भिक कार्रवाइयां

यूसुफ सुलेमान यूसुफ का जन्म १६०४ मे बगदाद में हुआ था। उनके मां-बाप कोई धनी तो नही थे, परन्तु उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी जरूर थी। अपने सभी बच्चों को शिक्षा देने के बारे मे उनके पिता को बड़ी चिन्ता थी। यूसुफ ने बगदाद में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त की। परन्तु उनके पिता की मृत्यु हो गई और यूसुफ हाईस्कूल की शिक्षा न प्राप्त कर सके। वह काम करने लगे।

यह १६१७ की बात है, जिस साल ब्रिटेन ने इराक में तुर्की उपनिवेशवादियों का स्थान लिया था।

बगदाद मे प्रविष्ट होने पर ब्रिटिश सेना के प्रधान सेनापति जनरल माउड ने घोषणा की कि "हम विजेता के रूप में नही, बल्कि मुक्तिदाता के रूप में आये हैं।" परन्तु इराकियों को शीघ्र मालूम हो गया कि उसका कथन केवल बकवास थी। ब्रिटिश साम्राज्यवादी इराक को बेशर्मी से अपना उपनिवेश बनाते जा रहे थे। उन्होंने अपने औपनिवेशिक प्रभुत्व पर १६२० के जून में लीग आफ नेशन्स से प्राप्त अधिदेश का आवरण डाल रखा था।

इस ख़बर से कि ब्रिटेन को इराक पर शासन करने का अधिकार प्रदान किया गया है, राष्ट्रव्यापी असंतोष की ज्वाला भडक उठी। उसी साल सशस्त्र विद्रोह की आग प्रज्वलित हो गई। निस्सन्देह, हस्तक्षेपकारियों पर नवोदित सोवियत राज्य की विजय और पड़ोसी अरब राज्यों—शाम तथा मिस्र—में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के उभार का इस विद्रोह के शुरू होने पर प्रभाव पड़ा।

ब्रिटिश हमलावरों को कई शहरों से हटना पडा। विद्रोही बगदाद के नज़दीक पहुंच गये। परन्तु उपनिवेशवादियों की सहायता के लिए कुमक पहुंच गयी और १६२० के अन्त तक उन्होंने विद्रोह को खून में डुबो दिया। ब्रिटिश हथियारों के बल पर बादशाह फ़ैसल की ताजपोशी हुई। इराक में संवैधानिक बादशाही क़ायम की गई, जिसने १६३२ तक ब्रिटिश अधिदेश की हैसियत क़ायम रखी।

यूसुफ़ सुलेमान ने अपनी चढती जवानी के दिनो से ही आज़ादी के लिए जनसंघर्ष मे सक्रिय भाग लेना शुरू कर दिया था। १६२७ में उन्होंने तथा बसरा बन्दरगाह के उनके साथी गोदी मजदूर हुस्ने-ऐयाश ने एक छोटी सी मार्क्सवादी अध्ययन गोष्ठी संगठित की। इसमें शामिल होनेवाले युवकों ने "कम्युनिस्ट घोषणापत्र", लेनिन की "क्या करें?" तथा "राज्य और क्रान्ति" पुस्तकों और जातीय समस्या के बारे में लेखों को पढ़ा।

उपनिवेशवादियों ने इराक मे सोवियत संघ के बारे में पुस्तकों और अन्य क्रान्तिकारी साहित्य के आयात पर रोक लगा दी थी। परन्तु नाविक ग़ैरक़ानूनी तरीके से यूरोप तथा लेबनान से अंग्रेज़ी मे मार्क्सवादी पुस्तकें लाते रहते थे।

१६३० मे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन संघर्ष से इराक हिल उठा। देश पर अपना पजा कसने के लिए ब्रिटेन इराक पर जो सन्धि थोपने जा रहा था, उसी के फलस्वरूप यह संघर्ष हुआ। इसके बदले मे इराकी सामतों, कबायली शेखो और ब्रिटिश पूजी के बड़े देशी दलालों को इराकी सरकार मे व्यापक अधिकार दिये जानेवाले थे।

इस साजिश के विरोध में इराक के देशप्रेमी संगठनों ने जनता से प्रदर्शन करने की अपील की। केवल बगदाद मे कम से कम १ लाख लोगो ने प्रदर्शनो मे भाग लिया। बसरा मे तीन रोज तक उपद्रव होते रहे। बसरा के मजदूर वर्ग के सर्वाधिक संगठित और बहुसंख्यक गोदी मजदूरो ने बडी दृढता प्रदर्शित की। प्रधानमत्री नूरी-अल-सैयद ने फौजे बुला ली। सड़को पर और गोदियो मे खून की धारा बह चली। संघर्ष में भाग लेनेवाले बहुत-से मजदूरों को जेल मे झोंक दिया गया। दोस्तों ने पुलिस के पंजे से बच निकलने मे यूसुफ सुलेमान को सहायता दी, परन्तु उनके साथी हुस्ने-ऐयाश को राजनीतिक पुलिस ने पकड लिया और उसके तत्काल बाद उन्हे मौत की सजा दे दी गई।

मजदूर वर्ग के विकास, ट्रेड-यूनियनों और सार्वजनिक सगठनो के प्रादुर्भाव तथा मुक्ति और वर्ग-संघर्षो के तीव्र हो जाने से इराकी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा हुई। कई शहरो मे पार्टी के कायम होने की आवश्यकता प्रकट हुई।

पार्टी को संगठित करने के व्यावहारिक काम मे जुटनेवाले सबसे पहले व्यक्ति थे यूसुफ सुलेमान। वह बसरा से हट गये और फरात नदी के निचले भाग में एक बडे कृषि क्षेत्र के केन्द्र नासिरेया नामक शहर चले गये। उस समय तक वह छिपकर काम करनेवाले एक सुयोग्य और अनुभवी कार्यकर्त्ता, व्यापक दृष्टिकोण के और जो लोग उन्हे जानते थे, उनके कथनानुसार एक पक्के मार्क्सवादी हो गये थे। इस प्रकार यूसुफ सुलेमान के नेतृत्व मे १६३२ मे नासिरेया मे इराक मे प्रथम कम्युनिस्ट इकाई अस्तित्व मे आ गई। यह छोटी सी इकाई थी, जिसमें अपने को कम्युनिस्ट कहलानेवाले कई मजदूर, स्कूली शिक्षक, क्लर्क और विद्यार्थी शामिल थे। वे इराक के सबसे पहले कम्युनिस्ट थे।

एक साल बाद बगदाद और बसरा मे इसी प्रकार की कम्युनिस्ट इकाइया अस्तित्व में आई। १६३४ के मार्च मे देश के सभी कम्युनिस्ट

गुटों और इकाइयो के प्रतिनिधियो ने संयुक्त कार्रवाई के प्रश्न पर विचार करने के लिए बैठक आयोजित की। इस बैठक मे इराक की कम्युनिस्ट पार्टी क़ायम करने का निर्णय किया गया। इसने "साम्राज्यवाद और शोषण के विरुद्ध संघर्ष समिति" के नाम से ज्ञात केन्द्रीय समिति का चुनाव किया। इस प्रकार इराक के इतिहास में १९३४ का वर्ष इराकी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के वर्ष के रूप में विख्यात है।

पार्टी के संस्थापको ने इस बैठक मे पार्टी के राजनीतिक कार्यक्रम और उसकी नियमावली सहित एक परचा जारी किया। यूसुफ सुलेमान पार्टी की प्रथम केन्द्रीय समिति के सदस्य चुने गये और तब से फहद के छद्म नाम से ज्ञात एक पेशेवर क्रांतिकारी बन गये।

२५ वर्ष बाद "इत्तिहाद अल-शअ्ब" नामक अख़बार ने ३१ मार्च, १९५९ के अपने अंक मे गर्व के साथ पार्टी की प्रगति का सिंहावलोकन किया। उसने लिखा था: "इराक की कम्युनिस्ट पार्टी ने भीषण राष्ट्रीय संघर्ष की ज्वाला में तपकर अपना अस्तित्व ग्रहण किया। इसने भारी कठिनाइयों को पार किया और बड़ी क्षतियां उठाई... पार्टी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सदा सबसे आगे प्रयाण किया है, क्योंकि यह एक क्रान्तिकारी पार्टी है, जो थकावट और विश्राम नही जानती... ऐसे भी काल रहे है, जब संघर्ष को जारी रखनेवाली यही एकमात्र पार्टी थी। अक्सर इसने अन्य राजनीतिक ताकतों के साथ संयुक्त कार्रवाई की है। परन्तु इसने कभी भी अपने हथियार नही डाले और जनता के हितों की किस प्रकार रक्षा करनी चाहिये, इस प्रसंग मे इसने सदा उदाहरण प्रस्तुत किया।"

१९३५ की जुलाई से पार्टी का प्रथम मुद्रित अख़बार "किफ़ाह-अल-शअ्ब" (जन संघर्ष) निकलने लगा। प्रथम पृष्ठ पर अख़बार के नाम के नीचे "इराक की कम्युनिस्ट पार्टी का मुखपत्र" शब्द और ये दो नारे भी प्रकाशित किये जाते थे: "इराक के मज़दूरो, एक हो!" और "दुनिया के मज़दूरो, एक हो!" गैरकानूनी रीति से इसकी ५०० से अधिक प्रतियां नही छापी जाती थी। पाच अंक प्रकाशित होने के बाद ही पुलिस ने छापेख़ाने का पता लगा लिया और उसी साल नवम्बर में इसे नष्ट कर दिया।

इराकी कम्युनिस्ट आन्दोलन के पुराने कार्यकर्ताओं के प्रामाणिक आधार पर हम जानते हैं कि फहद पत्रकारिता की कला में

थे और इस अखबार के प्रकाशन को जारी रखने में उनका बहुत बड़ा हाथ था। उन्होंने इसके लिए कई लेख और टिप्पणिया लिखी। उस समय वह दक्षिणी इराक मे पार्टी के संगठक थे और बसरा, नासिरिया और दीवानिया मे पार्टी की शाखाएं स्थापित करने में संलग्न थे।

१९३५ के अंत मे पार्टी ने फ़हद को अध्ययन के लिए विदेश भेजा। इटली और फ़ास मे कुछ समय रुकने के बाद वह सोवियत संघ गये, जहां उन्होंने पूर्वी मेहनतकशों के कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय मे प्रवेश-परीक्षा पास की। उन्होंने वहा सम्मान के साथ अपना पाठ्यक्रम पूरा किया और पेरिस मे जाकर फिर ठहरे। सोवियत संघ में प्राप्त ज्ञान, फ़ासीसी कम्युनिस्ट पार्टी के काम की जानकारी तथा यूरोप और एशिया की कई पार्टियो के नेताओ से परिचय हो जाने के फलस्वरूप उनका दृष्टिकोण ज्यादा व्यापक हो गया और स्वदेश वापस लौटने के बाद इससे उनके व्यावहारिक काम मे बडी सहायता मिली। १९३८ के अन्त मे वह इराक पहुंचे, बसरा गये, और अविलम्ब पार्टी के काम में जुट गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध छिडने के ठीक पहले इराकी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थिति बहुत गभीर थी। भीषण अत्याचार के कारण वह कमजोर हो गयी थी। इसके संगठन बहुत ही गुप्त परिस्थितियों मे काम करते थे और विश्वसनीय सम्पर्कों का अभाव होने के कारण वे अक्सर एक-दूसरे से अलग-अलग पड़ गये थे। इस बात से स्थिति और भी अधिक नाजुक हो गई कि इराकी पूंजीवादी बुद्धिजीवियो, युवकों और फौज के अधिकारियों मे यह विश्वास पैदा हो गया था कि फ़ासिस्ट जर्मनी इराक़ को ब्रिटिश प्रभुत्व से मुक्त कर सकता है।

१९४१ के अप्रैल मे राजविप्लव के बाद राशिद अली गैलानी सरकार के प्रधान बने।

इस नयी सरकार को फौज का बड़ा समर्थन प्राप्त था। यह राजविप्लव ब्रिटिश-विरोधी भावना और देश मे साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन के विकास का फल था। परन्तु गैलानी मंत्रिमण्डल ने नाजी जर्मनी से सहायता प्राप्त करने की कोशिश की, जो इराक़ के घटनाक्रम से लाभ उठाने का इच्छुक था। ऐसी विषम स्थिति की उलझनों के कारण कई राष्ट्रीय देशभक्त संगठनों ने गैलानी सरकार का समर्थन करने का निर्णय लिया; राजविप्लव के प्रभाव से कम्युनिस्ट पार्टी में भी अस्थिर दृष्टिकोण पैदा हुए। परन्तु शीघ्र ही इस

ढुलमुलपन को दूर कर दिया गया और इराकी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा प्रकाशित वक्तव्य में फासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष को देश का मुख्य कार्यभार बताया गया।

ब्रिटेन ने इराक के विरुद्ध सैनिक कार्रवाइयां शुरू की। प्रतिरोध को कुचल दिया, बगदाद पर कब्जा कर लिया और बड़े नगरों में अपनी गैरिसनें तैनात कर दी। फासिस्टवाद को कुचलने के बहाने अधिकारियों ने बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारिया कीं। पुलिस ने कुछ शहरों में कम्युनिस्ट पार्टी के सगठनों को भंग कर दिया। केन्द्रीय समिति के कई सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गये।

१९४१ की गरमी में जब फ़हद बगदाद गये तो स्थिति इसी प्रकार की थी। शीघ्र ही केन्द्रीय समिति ने उन्हें अपने राजनीतिक ब्यूरो में चुन लिया और वह पार्टी के एक मुख्य नेता हो गये। उन्होंने आन्दोलन के मुख्य कार्यभार के रूप में पार्टी की संगठनात्मक सुदृढ़ता और अवसरवादियों तथा गुटबाज़ों की विचारधारात्मक पराजय पर ध्यान सकेन्द्रित करते हुए सदा की भाति अपनी पूरी शक्ति और लगन के साथ भंग कर दिये गये संगठनो का पुनर्गठन करने और पार्टी की पातों को सुदृढ बनाने का काम शुरू किया। १९४३ के शुरू मे केन्द्रीय समिति ने उन्हे इराक़ी कम्युनिस्ट पार्टी का जनरल सेक्रेटरी चुना।

पार्टी के नेता

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इराकी मेहनतकशों की दशा बहुत ही खराब हो गई। मजदूरी चीजों की बढ़ती हुई क़ीमतों के अनुरूप नही थी।

इसके साथ ही ब्रिटिश शासन ने इराक में अपने लिए समर्थन प्राप्त करने की आवश्यकता महसूस की और चाहे नाम को ही, परन्तु वह इराकी स्वतंत्रता के निमित्त लड़नेवालों के विरुद्ध अपने दमन को कम करने के लिये विवश हो गया। ब्रिटिश सरकार ने युद्ध समाप्त होने के बाद १९३० की सन्धि पर फिर से विचार करने का वचन दिया। फ़ासिस्ट जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में सोवियत संघ का साथी होने के कारण ब्रिटेन इराकी समाचारपत्रों में सोवियत सघ के बारे में सच्ची ख़बरों के प्रकाशन को पूर्णतया नहीं रोक सकता था। इराक़ में सोवियत सेना की विजय सम्बन्धी सूचनाओं

लोग बहुत खुशी मनाते थे और विदेशी उत्पीड़न से अपनी मुक्ति की सन्निकटता में जनता के विश्वास को बल प्राप्त हुआ। लोगों की राजनीतिक चेतना और क्रियाशीलता में बहुत तेजी से वृद्धि हुई। इससे यह पता चल जाता है कि इराकी सरकार ने सोवियत संघ से राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने का निर्णय क्यों किया। सोवियत सरकार तैयार हो गयी और १९४४ में दोनों देशों के बीच राजदूतों की अदला-बदली हुई।

युद्ध के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी में भर्ती होनेवाले नये सदस्यों की संख्या काफी बढ़ी; इसकी पांतों में कारखानों के मजदूर, दफ्तरी कर्मचारी, शिक्षक और विद्यार्थी शामिल हो गये। पार्टी की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी और लोग अधिक विश्वास के साथ इसकी ओर देखने लगे।

उस समय कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा इराक में ऐसे अनेक दल थे, जो अपने को मार्क्सवादी अथवा कम्युनिस्ट कहते थे। उनके अस्तित्व से कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता को क्षति पहुंच रही थी। फहद ने अपने एक लेख में कहा, "ये हमारी पार्टी के टुकड़े-टुकड़े करने, मतभेद के बीज बोने और पार्टी के नेताओं मे जनता के विश्वास को घटाने की कोशिश कर रहे हैं।"

पार्टी के मुखपत्र "अल-शरारा" (चिनगारी) पर भी गुटबाजों का प्रभाव कायम हो गया। जब उनके नियंत्रण मे इसे मुक्त करना असंभव हो गया, तो केन्द्रीय समिति ने अपने दो सदस्यो हुसैन अशावीवी और जकी बासिम को दूसरे अखबार का प्रकाशन शुरू करने की हिदायत दी। इस अखबार का नाम "अल-कायदा" रखा गया और यह १९४३ से प्रकाशित होने लगा तथा इराक मे कम्युनिस्ट आन्दोलन के विकास में इसने अपरिमित भूमिका अदा की। इसमे फहद और इराकी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य नेताओ के कई लेख प्रकाशित हुए। लोग शीघ्र ही इस अखबार को बहुत पसंद करने लगे।

पुलिस ने कई बार इसके सम्पादकों को गिरफ्तार किया और इसके टाइप तथा मुद्रणालय को जब्त कर लिया। परन्तु हर बार कम्युनिस्ट पुनः इसका प्रकाशन फिर शुरू कर देते। बीच-बीच में कुछ समय बन्द रहने के बावजूद, यह पत्र १९५५ तक प्रकाशित होता रहा और उसके बाद इसका स्थान "इत्तिहाद-अल-शअब" नामक अखबार ने ले लिया।

"अल-कायदा" मे प्रकाशित फहद के "सामाजिक-जनवादी नही, कम्युनिस्ट पार्टी" शीर्षक लेख में गुटबाज़ो के विरुद्ध संघर्ष मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की, जिसमें उन्होंने पार्टी-नेतृत्व और पार्टी-जनवाद के बारे मे लेनिनवादी सिद्धान्त का समर्थन किया। लेख में जनवादी केन्द्रीयतावाद और सख़्त पार्टी अनुशासन की आवश्यकता से इनकार करनेवाले अराजकतावाद और सामाजिक-जनवादी अस्थिरता के पोषकों की धज्जियां उडा दी गई थी।

इराकी कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता के लिए फहद के नेतृत्व मे केन्द्रीय समिति का संघर्ष सफल हुआ। एक के बाद दूसरे गुट और दल भंग होते गये अथवा स्वतः विसर्जित होते गये। १९४७ में अन्तिम गुट विलुप्त हो गया।

गुटबाज़ों पर विजय प्राप्त कर लेने तथा अपनी पांतो को सुदृढ करने के बाद इराकी कम्युनिस्ट पार्टी अपना प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की स्थिति में हो गई। अस्तित्व में आने के बाद से ही गुप्त रूप से काम करनेवाली इराकी कम्युनिस्ट पार्टी के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। यह सम्मेलन १९४४ की फरवरी मे बगदाद मे हुआ और देश के अधिकाश पार्टी-संगठनों का प्रतिनिधित्व करनेवाले ४० प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया।

फहद ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा कि "संघर्षरत इराकी जनता के लिए अब मुख्य बात युद्ध की समाप्ति को सन्निकट लाना और देश की सच्ची आजादी प्राप्त करना है। इसके बिना सामाजिक और सास्कृतिक समस्याओं के समाधान और जनवादी सुधारो के कार्यान्वयन की बात सोची भी नही जा सकती। अपने देश के स्वाधीन होने, विदेशी उत्पीडन से अपनी धरती के मुक्त होने के बाद ही जनता ख़ुश हो सकती है।"

फहद ने सम्मेलन के एक बाद के अधिवेशन मे इराकी कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय कार्यक्रम का मसौदा प्रस्तुत किया, जिसमे मजदूरों, किसानो, दस्तकारो, राष्ट्रीय पूजीपति वर्ग और सेना के हितों का समर्थन किया गया था तथा इराकी महिलाओ और इराक के सभी राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से कुर्दों के लिए समानाधिकार की मांग की गई थी। कार्यक्रम

के पहले अनुच्छेद में कहा गया था कि "हम अपने देश की प्रभुसत्ता के लिए संघर्ष कर रहे हैं और केवल कथनी में नहीं, बल्कि वास्तविक अर्थों मे इसे स्वाधीन बनाना चाहते हैं।"

पार्टी के कार्यक्रम का आदर्श-वाक्य था: "स्वतंत्र देश–सुखी लोग!" इराक़ी कम्युनिस्ट पार्टी का आज भी यही आदर्श-वाक्य है। पार्टी के दस्तावेजों, अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं और परचों तथा पुस्तिकाओं में शीर्ष स्थान पर यही नारा छपा रहता है।

इस सम्मेलन के प्रायः एक साल बाद, १९४५ के अप्रैल में इराक़ी कम्युनिस्ट पार्टी की पहली कांग्रेस निम्नांकित नारे के अन्तर्गत हुई: "कम्युनिस्ट पार्टी की संगठनात्मक सुदृढ़ता और राष्ट्रीय आन्दोलन के विस्तार के लिए!" कांग्रेस ने पार्टी का कार्यक्रम और नियमावली मंजूर की।

फ़हद ने कांग्रेस का उद्‌घाटन किया और केन्द्रीय समिति की ओर से रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने अपने भाषण में देश में अर्ध-औपनिवेशिक शासन के उन्मूलन, तानाशाही का तख़्ता उलटने और जनवादी स्वतन्त्रताओं को प्राप्त करने के संघर्ष मे इराकी जनता की राष्ट्रीय शक्तियों की एकजुटता पर मुख्य रूप से ज़ोर दिया था।

प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा, "साथियो, आपको इसे याद रखना चाहिये कि हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं, जब साम्राज्यवादी देशों के मुट्ठी भर थैलीशाह हम सभी पर अपनी वर्गीय तानाशाही थोपना चाहते हैं। फासिस्टवाद के रूप मे जो बर्बर निरंकुश शासन अस्तित्व में आया, वह जनवादी संगठनों की फूट और कमज़ोरी के कारण ही हमला करने में सफल हुआ। सर्वप्रथम अपने देशों से शुरू करके इसने दुनिया को अपराधों, हत्याओं तथा विनाश के गर्त में झोंक दिया है... साथियो, आपको याद रखना चाहिये कि स्वदेश मे जनता के संगठनों, विशेष रूप से मजदूर वर्ग के संगठनों को ध्वस्त करके, मजदूर वर्ग को आत्मरक्षा के हथियारों से वंचित करके ही यह घोर प्रतिक्रियावादी ताकत अपनी अमानुषिक योजनाएं शुरू कर सकी।

"आपको याद रखना चाहिए कि हमारे यहां भी प्रतिक्रिया साम्राज्यवाद के साथ पूर्णतया सांठगांठ कायम करके वर्त्तमान पार्टियों को भंग करने तथा अपने संगठनों को स्थापित करने के जनता के अधिकारों को कुचलने

की नीति बरत रही है। जन शक्तियों को छिन्न-भिन्न करने में इसे काफी हद तक सफलता मिल चुकी है।"

फ़हद ने औपनिवेशिक अधीनता से मुक्ति और इराकी जनता की आर्थिक और मानसिक प्रगति के संघर्ष के नारे के तहत सभी देशप्रेमी शक्तियों के राष्ट्रीय मोर्चे की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने देश के भावी विकास का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करनेवाले राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधार पर जन-समुदाय को एकजुट करने की पार्टी से अपील की। उन्होंने कांग्रेस के प्रतिनिधियों से कहा, "यहा अपना काम पूरा करने के बाद आप एक ओर राष्ट्रीय कार्यक्रम तथा दूसरी ओर कांग्रेस के नारों के साथ अपने साथियो तथा सभी देशवासियों के बीच जाइए। कांग्रेस की ओर से उन्हे अपने साथियों और देशवासियों के लिए अभिवादन का रूप प्रदान कीजिये।"

कांग्रेस ने नाज़ी जर्मनी के आत्म-समर्पण के कई दिन पहले अपना काम पूरा किया। फासिस्टवाद की पूर्ण पराजय की खबर से इराक में महान देशभक्तिपूर्ण उभार आ गया। इराकियों को आशा थी कि फासिस्टवाद पर विजय से, जिसे प्राप्त करने में उन्होंने भी योगदान प्रस्तुत किया था, ब्रिटिश उत्पीड़न और गरीबी से उन्हें चिरप्रतिक्षित मुक्ति मिलेगी। देश की जनवादी शक्तियो के ज़ोर देने पर नूरी-अल-सैयद ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। नया मंत्रिमण्डल कई ट्रेड-यूनियनों को काम करने तथा अनेक जनवादी अख़बारों और रिसालो के प्रकाशन की अनुमति प्रदान करने पर विवश हो गया। १६४६ के वसंत मे राजनीतिक पार्टियों की हैसियत को कानूनी रूप प्रदान करते हुए कानून पास किया गया।

वह कानून कम्युनिस्ट पार्टी के प्रसंग मे लागू नही हुआ, परन्तु पार्टी के नेताओं ने अनुकूल परिस्थितियों का काफी उपयोग किया।

फ़हद ने यह विचार प्रकट किया कि तत्कालीन परिस्थितियों में पार्टी काम के कानूनी और ग़ैरकानूनी दोनों तरीकों का इस्तेमाल कर सकती है। केन्द्रीय समिति ने राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य ज़की बासिम को 'दर अल-हिकमत' प्रकाशनगृह का निजी संस्थापक बनने की हिदायत दी, जहां से मार्क्सवाद-लेनिनवाद को लोकगम्य बनाने के लिए कई पुस्तिकाएं और सोवियत संघ के जीवन के बारे में रूसी पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित हुए।

हुसैन अश्शाबीबी, मोहम्मद हुसैन अबुल्लिस और कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य कई नेताओ ने राष्ट्रीय मुक्ति पार्टी की संघटक परिपद कायम की

प्रतिभा को लगाया। पार्टी ने ग्रामीण क्षेत्रों में अपने प्रभाव को सुदृढ करने की आवश्यकता, इराकी आबादी के एक बड़े समुदाय–किसानों–के अधिकारों के लिए संघर्ष और कृषि सुधार का मसौदा करने पर भी बहुत ध्यान दिया। १९४५ मे लिखित फ़हद का परचा "किसान भाइयो, संघर्ष में शामिल हो!" इसी दृष्टि से उल्लेखनीय है। उन्होंने इस सरल और सुबोध परचे मे लिखा :

"हम संघर्ष कर रहे हैं और चाहते हैं कि प्रत्येक किसान को जमीन, श्रम के औजार और बीजो को दिलाने तथा क़बायली शेखो और ज़मीदारो से मुक्ति दिलाने में आप भी हमारे साथ संघर्ष करे। हम चाहते हैं कि स्वाधीन देश में आपका जीवन सुखी हो। हम एक ऐसी सरकार चाहते हैं, जिसके मामले मे विदेशी हस्तक्षेप न करें। हम संघर्ष कर रहे हैं और चाहते हैं कि जनवादी अधिकारों के लिए आप भी हमारे साथ मिलकर संघर्ष करें, जो किसानों को उनके हितों का प्रतिनिधित्व और उनकी रक्षा करनेवाली सरकार, और उन शेखो और सामंतो के बिना संसद को चुनने का अवसर देने की गारंटी प्रदान करेंगे, जिनके हित किसानों और संपूर्ण जनता के हितों के विपरीत हैं।"

१९४६ के वसंत मे देश की आन्तरिक परिस्थिति और अधिक ख़राब हो गई। प्रतिक्रिया ने इराकी जनता के जनवादी अधिकारों पर हमला शुरू किया। देश की राष्ट्रीय शक्तियों मे एकता न होने से प्रतिक्रिया का काम अधिक आसान हो गया। जनवादी आन्दोलन के विकास से भयभीत पूंजीपति वर्ग के कुछ दल सत्तारूढ सामंती गुट के साथ जनता के विरुद्ध साज़िश मे शामिल हो गए।

२८ जून, १९४६ को पुलिस ने ब्रिटिश दूतावास के सामनेवाले चौक मे जमा प्रदर्शनकारियों पर गोली-वर्षा की। प्रदर्शनकारियों ने १९३० की आंग्ल-इराकी सन्धि रद्द करने और इराक तथा फिलस्तीन से ब्रिटिश फौजों को हटाने की माग की थी। १२ जुलाई को किरकुक के तेल मजदूर तेल कम्पनी के नाम अपने मांग-पत्र को तैयार करने के उद्देश्य से सभा मे इकट्ठे हुए। पुलिस की टुकड़ियों ने मज़दूरों को घेर लिया और सिपाही उन्हें पीटने लगे। पाच मज़दूर मर गए और चौदह बुरी तरह घायल हुए। कई सौ मजदूर गिरफ्तार कर लिये गए और कम्पनी ने उन्हें नौकरी से हटा दिया।

मज़दूरों के ख़िलाफ इराकी सरकार को उकसाने और उसके दण्डात्मक

क़दमों का समर्थन करनेवाले ब्रिटिश अधिकारी अब इराक में अतिरिक्त फौजी कुमक लाने लगे।

इस काल के अपने लेखों और भाषणों में फ़हद ने राष्ट्रीय पार्टियों और संगठनों के नेताओं से एकता कायम करने की अपील की। उन्होंने पार्टी की उस समय की एक दस्तावेज में, जिसे उन्होंने स्वयं लिखा था, यह विचार प्रकट किया था: "अपने अनिवार्य कार्यभार, दूसरे शब्दों में – संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा कायम करने पर सभी मेहनतकश लोगों के प्रयासों को संकेन्द्रित करना आज हमारा मुख्य प्रश्न है... विभिन्न देशों के अनुभव से यह साबित हो चुका है कि इस प्रकार का मोर्चा ही प्रतिक्रिया और साम्राज्यवाद की शक्तियों की गति अवरुद्ध करने का एकमात्र साधन है, प्रतिक्रिया को प्रभावकारी रीति से पराजित और उत्पीड़ितों को गुलामी से मुक्त कर सकने वाला एकमात्र हथियार है... राष्ट्रीय मोर्चे से हमारे मुक्ति आन्दोलन में वास्तविक नया मोड़ आ जायेगा और वह सब कुछ सम्भव होगा जिसे छिटपुट संघर्ष से प्राप्त करना असंभव था।"

फ़हद ने चेतावनी दी कि देश के राजनीतिक संगठनों के नेताओं में फूट से केवल कम्युनिस्टों को ही नहीं, बल्कि पूरे जनवादी आन्दोलन को क्षति पहुंचेगी। इस चेतावनी का औचित्य शीघ्र साबित हो गया। अधिकारियों ने पूंजीवादी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के मुखपत्र "साव्रत अल-अहाली" सहित कई अख़बारों और पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन पर पाबन्दी लगा दी। डाक कर्मचारियों की ट्रेड-यूनियन भंग कर दी गई। छात्रों और युवकों के संगठनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। राज्य की मशीनरी से भी ऐसे व्यक्तियों को हटाने का काम शुरू हो गया, जिन पर राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन से सहानुभूति रखने का सन्देह था।

१९४६ के सितम्बर में राष्ट्रीय मुक्ति पार्टी की संघटक परिषद सहित ६ विरोधी-पार्टियों के प्रतिनिधियों की एक गुप्त बैठक आयोजित करने में फहद सफल हो गए। इसने सरकार और उसकी प्रतिक्रियावादी नीति के विरुद्ध संघर्ष के प्रश्न पर विचार किया। फ़हद ने इससे संयुक्त वक्तव्य प्रकाशित करने और आम हड़ताल के लिए आह्वान करने की अपील की। पूंजीवादी नेताओं ने जन-समुदाय से अपील और आम हड़ताल का समर्थन करने से इनकार कर दिया। संघर्ष-सम्बन्धी एकता के प्रश्न पर कोई

4*

समझौता नही हो पाया। इससे जनता के महत्त्वपूर्ण हितों के विरुद्ध हमले को तेज करने के लिए सत्तारूढ़ गुट का पथ प्रशस्त हो गया।

गिरफ़्तारी और मुक़दमा

१६४६ के अन्त में नूरी-अल-सैयद नवी वार देश का प्रधान मंत्री बना। इस अवसर पर पत्र-प्रतिनिधियो के सम्मेलन मे बोलते हुए उसने "इराक में कम्युनिज़्म की समस्या को ख़त्म कर देना" अपना फर्ज बताया। उसने आगे कहा : "हमारे देश में कम्युनिस्टों के लिए कोई स्थान नही है। औद्योगिक देशों में कम्युनिज़्म के पनपने का मौका है, परन्तु हमारा तो पिछड़ा हुआ देश है।"

कुछ ही दिनों मे सारे देश में कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य जनवादी संगठनों के विरुद्ध प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयों की लहर फैल गई। दिसम्बर के मध्य मे राष्ट्रीय मुक्ति पार्टी की संघटक परिषद के हुसैन अश्शावीबी, मोहम्मद हुसैन अबू-अल-ईस और अन्य सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गए। १७ जनवरी, १६४७ की रात मे जिस घर में फ़हद और ज़की वासिम ठहरे हुये थे, उसे पुलिस ने घेर लिया। बगदाद और अन्य नगरों में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थानीय शाखाओं पर पुलिस ने छापे मारे।

इसके बाद कुछ ही दिनों मे यह सक्षिप्त सरकारी सूचना प्रकाशित की गई कि "ख़ुफ़िया पुलिस ने गुप्त कम्युनिस्ट कार्यकलाप मे सलग्न व्यक्तियों का पता लगा लिया है। उनकी गुप्त सामग्रियों को प्रकाशित करनेवाले कई छापेख़ानों तथा इनके साथ ही "अल-क़ायदा" अख़बार को ज़ब्त कर लिया गया है। देश के अन्य प्रदेशों में भी कम्युनिस्ट पार्टी की शाखाओं का पता लगा लिया गया है।"

इराक़ में कम्युनिस्टों के विरुद्ध प्रारम्भिक दमनकारी कार्रवाइयों के बारे में जनता को केवल इतनी ही सूचना दी गई। गिरफ़्तार किये गए कम्युनिस्टों को विभिन्न जेलों मे रखा गया; उनकी ठीक सख्या आज भी अज्ञात है। जो लोग कभी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नही थे—ट्रेड-यूनियनो के सक्रिय कार्यकर्ता, छात्र, जिन्होंने सभाओं में भाषण दिये थे अथवा पत्रकार—उन्हे भी पुलिस ने कम्युनिस्ट घोषित कर दिया। शीघ्र ही ज्ञात हुआ कि पार्टी के अधिकांश संगठन नष्ट होने से बच गए। परन्तु

पार्टी की केन्द्रीय समिति को भारी क्षति उठानी पड़ी। इसके जनरल सेक्रेटरी, राजनीतिक ब्यूरो के दो सदस्य और अन्य कई प्रमुख कार्यकर्ता जेलों में झोंक दिये गये। फ़हद और उनके साथियों को बगदाद के उत्तर में क़रीब २० किलोमीटर दूर अबू-गुरैबा जेल में बन्दी बना दिया गया।

इराकी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ताओं की गिरफ़्तारी की ख़बरें देश के सभी भागों मे पहुंच गई और विदेशी अख़बारों में भी प्रकाशित हुई। इराकी वकीलों और लेखकों के एक समूह ने प्रतिशासक अब्दुल इल्लाह और सरकार से इन सामूहिक गिरफ़्तारियों का कारण बताने की मांग की। गृहमंत्री और सुरक्षा विभाग के प्रधान ने एक वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने गिरफ़्तार किये गये व्यक्तियों पर अराजकतावादी होने और उथल-पुथल की साजिश करने का आरोप लगाया।

कम्युनिस्टों की गिरफ्तारी का बहुत प्रचार हो जाने के कारण अधिकारी उन्हें गुप्त रूप से मौत के घाट न उतार सके। लोकमत के दबाव से सरकार ने घोषणा की कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के विरुद्ध खुली अदालत में मामला चलाया जायेगा। यद्यपि इस वादे को पूरा नहीं किया गया, परन्तु कुछ हद तक अभियुक्तों के साथ होनेवाली ज्यादती में कमी आई। उन्हें अपने वकील नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त हो गया। उनके सबसे नजदीकी रिश्तेदारों, पत्रकारों और राजनयिकों को मामले की सुनवाई के समय उपस्थित रहने की इजाज़त मिल गई। परन्तु सबसे बडा लाभ यह था कि प्रतिवादियों को सार्वजनिक रूप से अपने विचारों और सिद्धान्तों को बताने का मौका मिला।

मई में मुक़दमे की सुनवाई शुरू हुई। इराक तथा पड़ोसी अरब देशों की स्थिति प्रतिवादियों के लिए बहुत ही अशुभ थी। पश्चिमी यूरोप में जो कम्युनिस्ट-विरोधी उग्र भावना व्याप्त थी, वह पूर्वी अरब देशों में भी प्रतिध्वनित हो उठी। बगदाद के सरकारी अख़बार जनवादी नेताओं की गिरफ़्तारियों, वामपंथी अथवा उदारवादी रुझानों के अख़बारों के प्रकाशन पर रोक लगाने और सभी प्रकार के सार्वजनिक संगठनों के मुख्य कार्यालयों पर पुलिस के छापे की खबरे प्रायः रोज ही प्रकाशित किया करते थे।

हाथ मे हथकड़ी और पैरों में बेड़ी डालकर फहद को छोटी-सी एकान्त कोठरी में रखा जाता था। उन्हे पुस्तकें अथवा चिट्ठियां पाने की इजाज़त

फ़हद (दाईं मोर) जेल में

नहीं थी। उनका साहस भंग करने के खयाल से तफतीश करनेवाले ने मामले की सुनवाई शुरू होने के ठीक पहले का क्षण उन्हें उन कई गद्दारों की प्रारम्भिक तफतीश सम्बन्धी रिपोर्टों को दिखाने के लिए चुना, जो पुलिस की मारपीट से झुक गये थे और झूठी गवाही देने के लिए सहमत हो गये थे। परन्तु इराकी मजदूर वर्ग के नेता का साहस किसी भी बात से भंग नहीं हो सका। फ़हद ने इजलास में मामले की पूरी सुनवाई के दौरान अपना बयान देने के लिए सावधानी के साथ तैयारी की। उन्होंने अपनी निर्दोषता के प्रमाण के रूप में उतना नहीं, जितना इराक के प्रतिक्रियावादी शासन का भण्डाफोड करने के निमित्त अपनी तथा अपने साथियों की ओर से अभियोगों का उत्तर तैयार किया।

फ़हद ने अपने प्रारम्भिक बयान में कहा: "चूंकि मैं देशभक्त हूं, इसलिए मैंने कम्युनिज्म के नाम से विख्यात आन्दोलन के साथ अपने को सम्बद्ध किया। मैं १९३२ में ही कम्युनिस्ट विचारों का समर्थक हो गया था, गोकि इसके पहले मैं राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग ले चुका था। कम्युनिस्ट विचारों को अपनाने में मैंने अपनी राष्ट्रीय निष्ठा के प्रतिकूल कोई बात न तो समझी और न मैं ऐसा समझता हूं। इससे बढ़कर कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने के बाद मैंने अपने देश के प्रति अधिक ज़िम्मेदारी महसूस की... हम, कम्युनिस्ट, साम्राज्यवाद के विरोधी हैं और हम इसके विरुद्ध संघर्ष करते रहेंगे।"

दिन-प्रतिदिन फ़हद कम्युनिस्टों के विरुद्ध लगाये गये अभियोगों का प्रतिवाद करते रहे। उनके सटीक उत्तरों और अभियोग-पक्ष पर चुस्त जवाबी प्रहार से न्यायाधीश कई बार असमंजस की स्थिति में पड गए। जाली केस खड़ा करनेवाले इराकियों की सहायता के लिए लन्दन से एक ब्रिटिश "सलाहकार" को शीघ्र बुलाया गया, जो स्पष्टतः कम्युनिस्टों के विरुद्ध साजिश रचने में विशेषज्ञ माना जाता था। अक्सर अदालत में मंत्री, जनरल और सुरक्षा सेवा के प्रधान उपस्थित रहते थे। ब्रिटिश दूतावास लगातार मुकदमे पर नजर रखे हुए था।

न्यायाधीश ने फ़हद से पूछा: "गुप्त कार्य पर प्रतिबन्ध लगानेवाले कानून को आपने भंग क्यों किया?"

बड़े शान्त भाव से उन्होंने उत्तर दिया: "हम अपने विचारों और उद्देश्यों को छिपाते नहीं। हमने उन्हें पार्टी के कार्यक्रम में

है और कोई भी साक्षर व्यक्ति उन्हें पढ सकता है। हम केवल अपने संगठनों को पुलिस के छापों से बचाने के लिए गोपनीय रखते हैं। वही कानून को भंग करती है।"

मामले की सुनवाई के दौरान एक बार न्यायाधीश ने अरबों और ब्रिटिश कम्युनिस्टों के विरुद्ध काफी गाली-गलौज करना शुरू कर दिया; फ़हद ने यह कहने के लिए उन्हें बीच ही में टोका कि वह केवल अरब लोगों के साथ ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया के मेहनतकश लोगों के साथ एकता के समर्थक हैं। उन्होंने कहा, "ब्रिटिश जनता नहीं, बल्कि ब्रिटिश इजारेदार इराकियों के शत्रु हैं।"

साथियों की ओर से फ़हद ने जो अन्तिम बयान दिया, उसे बिना गहरे भावावेश में आये पढ़ना असंभव है।

उन्होने पूछा: "इराक की कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग क्यों की जाती है? क्या यह इराकी मजदूरों की माग है या उन विदेशियों की माग है, जो न केवल हमारी सम्पदा को चुरा रहे हैं, बल्कि हमारे मजदूरों तथा सारे राष्ट्र का खून चूस रहे हैं? हम अदालत के सामने खड़े हैं, परन्तु हम दया की भीख नही मांग रहे हैं। केवल दोषी ही दया की भीख मागते हैं। हम यहा अपने को बचाने के उद्देश्य से खडे नही हैं; हम किसी भी निजी दया की भीख नही माग रहे है। हम दो नारो के साथ अपना बयान समाप्त करते हैं:

"जनता जिन्दाबाद!"

"इंसाफ जिन्दाबाद!"

यद्यपि अभियोग-पत्र की सत्यता प्रमाणित नहीं की गई, परन्तु अदालत ने अभियुक्तों को कड़ी सजाएं दीं। फ़हद और बासिम को मृत्युदण्ड दिया गया और उनके १४ साथियों को चार साल से आजीवन कारावास तक की सज़ा दी गई। शाबीबी को भी कारावास दण्ड दिया गया।

बगदाद की इस अदालत के फ़ैसले के खिलाफ़ केवल इराक मे ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया मे विरोध प्रकट किया गया। सरकार के पास लगातार विरोध-सूचक तार पहुंचते रहे; कई देशों के अख़बारों ने फिर से मामले की सुनवाई की माग की। मज़दूरों, लेखकों, वकीलों, विद्यार्थियो और शिल्पकारों के अनेक ख़त प्रधान मंत्री, न्याय मंत्रालय और अख़बारों को मिले, जिनमें सजाएं रद्द करने का अनुरोध किया गया था। फिलस्तीन,

इंग्लैण्ड, लेबनान, शाम, इटली और अन्य देशों से भी इसी प्रकार के पत्र और तार मिले।

लेबनान के एक अख़बार "अल-हदफ़" ने पूछा: "इराक़ के लिए किस खतरे के कारण अदालत ने साम्राज्यवाद और प्रतिक्रिया, खलीफा हारूं-रशीद के देश के लिए घातक गुलामी सन्धियों तथा लौह नियंत्रण के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले योद्धाओं को मौत की सज़ा दी?" ब्रिटिश कामन्स सभा के एक सदस्य ने ब्रिटिश विदेश मंत्री से इस सज़ा को कार्यान्वित करने से रोकने के लिए इराकी सरकार पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने का अनुरोध किया।

इराकी सरकार को पीछे हटना पड़ा। २३ जुलाई, १९४७ को सर्वोच्च अपील-न्यायालय ने फहद की मौत की सज़ा को २० साल और बासिम के मृत्युदण्ड को १५ साल की सज़ा में परिवर्तित कर दिया। उन्हें 'अल-कुत' जेल मे रखा गया, जहां उन्होंने बगदाद और अन्य नगरों मे इसी प्रकार के मामलों मे सज़ा पाये अन्य कम्युनिस्टों के बीच अपने को पाया।

तीन छोटी कोठरियों में ४० बन्दियों को ठेल दिया गया, जिनमें अधिकांश कम्युनिस्ट थे। वे फ़र्श पर सोते थे, उन्हें बहुत ही ख़राब और कम खाना तथा पीने के लिए गन्दा पानी दिया जाता था। परन्तु फ़हद और उनके साथी हताश नहीं हुए; वे इन परिस्थितियों में भी जीवित रहने तथा काम करते जाने का दृढ निश्चय कर चुके थे और उन्हें सफलता मिली।

१९४८ की जनवरी मे, सालेह् जब्र सरकार ने ब्रिटेन के साथ मिलकर साजिश की और पोर्ट्समाउथ सन्धि के नाम से ज्ञात नयी सन्धि की। इस सन्धि की शर्तें इराक के हितों के प्रतिकूल थीं। इसके अनुसार हब्बानिया और शईबा में ब्रिटिश फौजी अड्डे बदस्तूर क़ायम रहे, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की युद्ध-सम्बन्धी जोखिमभरी योजना में इराक को भी शामिल होना पड़ा और शान्ति काल में भी ब्रिटिश फौजों के प्रवेश के लिए इसके द्वार पूर्णतया उन्मुक्त हो गए।

इराकी जनता ने इस सन्धि का जबर्दस्त विरोध किया। यह १६ जनवरी को सवेरे बगदाद के अख़बारों में छापी गयी और दोपहर तक शहर में प्रदर्शन शुरू हो गए। विद्यार्थियों ने तीन दिन की हड़ताल की घोषणा करके अपना रुख़ प्रकट कर दिया। दो रोज़ बाद क़ानूनी पूंजीवादी

राजनीतिक पार्टियों ने भी सन्धि का विरोध किया। २० जनवरी को राजधानी के निवासियों ने इन नारों के साथ प्रदर्शन किया– "सन्धि रद्द की जाये!" "साम्राज्यवाद का नाश हो!", "स्वाधीन इराक़ जिन्दाबाद!"। प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच ख़ूनी टक्करें हुईं, जिनके फलस्वरूप आठ व्यक्ति मारे गए और एक सौ से अधिक घायल हो गए। ट्रेड-यूनियनों ने आम हड़ताल करने की अपील की।

२५ जनवरी को एक लाख लोगों ने बग़दाद की सड़कों पर विराट प्रदर्शन किये, जिनकी तैयारी में कम्युनिस्टों का बड़ा हाथ था। इराकी संसद और मंत्रिमण्डल भवन के सामने तथा दजला नदी के पुलों पर प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच मुठभेड़ें हुईं। उस दिन अनेक प्रदर्शनकारी हताहत हुए, परन्तु अन्त में जनता को ही विजय प्राप्त हुई। संसद के अध्यक्ष और उसके सदस्यों के एक दल ने इस्तीफा दे दिया और उनके साथ ही दो मंत्रियों ने भी मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया। प्रधान मंत्री और सीनेट के तत्कालीन अध्यक्ष नूरी-अल-सैयद देश छोड़कर भाग खड़े हुए। ३ फरवरी को नये मंत्रिमण्डल ने सरकारी तौर पर पोर्ट्समाउथ संधि को रद्द कर दिया।

साम्राज्यवाद और प्रतिक्रिया पर इराकी जनता की यह महत्त्वपूर्ण विजय थी, परन्तु इससे कोई बड़ा नतीजा हासिल नहीं हुआ। सत्ता सामंतों, दरबार और दक्षिणपंथी गुटों के हाथों में बनी रही। उन्होंने कुछ समय के लिए अपने पंजों को पीछे खींच लिया और वे अधिक धूर्ततापूर्ण चाल चलने लगे। राष्ट्रीय शक्तियों के खेदजनक विभाजन के कारण पुनः जनता की उपलब्धियों को ठोस रूप न प्रदान किया जा सका।

परन्तु जनवरी की घटनाओं से कम्युनिस्ट पार्टी के लिए अपने काम में तेज़ी लाना संभव हो गया। "अल-कायदा" पुनः प्रकाशित होने लगा। फ़हद केन्द्रीय समिति से सम्पर्क कायम कर सके और अख़बारों के लिए अपने लेख भेजने लगे। कुछ समय तक कम्युनिस्टों ने "अल-असास" नामक कानूनी अखबार प्रकाशित किया, जो एक स्वतंत्र ग़ैर-पार्टी पत्र के रूप में प्रकाशित होता रहा और जिसमें फहद तथा उनके अन्य साथियों को दी गई सजा कम करने की अनेक अपीलें प्रकाशित की गईं।

मार्च के अंत में इराक की परिस्थिति बदलने लगी। इसराइल राज्य की उद्घोषणा की संभावना से फिलस्तीन में युद्ध की तैयारियां शुरू

हो गई थीं। जनवरी और फरवरी में जनता ने जो अधिकार प्राप्त कर लिये थे, उन पर प्रहार करके ये तैयारियां शुरू की गई थी। अप्रैल के मध्य में प्रचार विभाग के प्रधान ने तथाकथित "तोड़फोड़ की कार्रवाइयों" की भर्त्सना करते हुए एक वक्तव्य प्रकाशित किया। फिर से कई अखबारों के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई और गिरफ़्तारियां शुरू हो गई।

१९४९ की जनवरी के शुरू में नूरी-अल-सैयद प्रधान मंत्री के पद पर पुनः नियुक्त हो गया। दो साल पहले की भांति उसने फिर जनवादी विचारों के सभी समर्थकों के विरुद्ध दमनकारी नीति जारी रखी। कम्युनिज़्म-विरोधी भावना अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई। इराकी जनवाद के इस हत्यारे ने संसद को बताया – "पिछले मंत्रिमण्डल के शासन के अन्तर्गत पुलिस अधिकारियों ने कम्युनिस्ट संगठनों का पता लगाया था और काफी कम्युनिस्टों को गिरफ़्तार कर लिया था; बहुत महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ें और निर्णय मिले थे। १५०-१६० लोग पकड़े गये थे। मौजूदा सरकार कम्युनिस्टों का सफाया करने के लिए कृतसंकप है" ... इन शब्दों की अनिष्टकारी प्रतिध्वनि गूज उठी।

कम्युनिज़्म मौत से अधिक बलशाली

जनवरी के अंत में 'अल-कुत' जेल में यह अफवाह चुपके से फैल गयी कि फहद, बासिम और शाबीबी के ख़िलाफ फिर से मामला चलाया जायेगा। जब इन तीनों राजबन्दियों को पृथक कोठरी में रखा गया तो इसके विरोध में कैदियों ने भूख हड़ताल कर दी। परन्तु इसका उद्देश्य विफल हो गया, क्योंकि बेड़ियों में जकड़े कम्युनिस्ट पार्टी के इन नेताओं को बगदाद ले जाया गया।

इस बार फ़ौजी अदालत में उनके विरुद्ध मामले की सुनवाई हुई। अदालत की कार्यवाही सर्वथा गुप्त रूप से हुई। यहा तक कि तीसरे दिन प्रतिवादियों को जो फैसला सुनाया गया, उसे भी गोपनीय रखा गया। सज़ा को अमल में लाने के बाद ही इसकी सूचना जनता को दी गयी। मुख्य अभियोग पुलिस के मुखबिर और गद्दार मलिक सईफ़ के बयान पर आधारित था कि जेल में रहते समय फहद और उनके दोस्त पार्टी के काम का निर्देशन करते रहे। उन दिनों फौजी अदालत ने कई दर्जन अन्य कम्युनिस्टों को भी गुप्त रूप से सजाए दी, जिन्हे उसने पैरवी के लिए

वकील बुलाने तथा गवाहों को पेश करने के अधिकार से भी वंचित कर दिया था।

मौत की सजा प्राप्त उक्त तीन कम्युनिस्ट नेताओं के जीवन के अन्तिम दिनों का वृत्तान्त यहा दिया जा रहा है। सेन्ट्रल बगदाद जेल के एक कैदी के शब्दो मे वह इस प्रकार है:

"१४ और १५ फरवरी की राते मेरी जिन्दगी में सबसे भयावह थी। मुझे २४वे नम्बर, फहद को २७वें नम्बर, जकी को २६वे नम्बर और हुसैन को १६वे नम्बर की कोठरी में रखा गया था। १० फरवरी को निर्णय सुनाये जाने के बाद से हम आशा करते थे कि किसी अद्भुत घटना के फलस्वरूप यह सजा रद्द कर दी जायेगी। पांच वर्ग मीटर आकार की हमारी कोठरिया अंधेरी और सीलन भरी थीं। परन्तु हम हताश नही हुए और अपने जुझारू गीत गाते रहे: 'जनता नही मरती, वह अमर है', 'इराक आजाद होगा, अत्याचारी शासन ध्वस्त होगा ही'। इन गीतों के शब्द जेल के प्रस्तर निर्मित मेहराबों के तले गूंज उठते थे।

"१३ फरवरी की शाम को पाच बजे हमने गलियारे मे आवाजें सुनी और उसके बाद जोर की एक आवाज सुनाई पड़ी, जो मुझे अत्यत घृणास्पद आवाज प्रतीत हुई। घृणास्पद आवाज वाले उस व्यक्ति ने तीनों कोठरियों के पास पहुंचकर मौत की सज़ा की पुष्टि करनेवाले शाही फरमान को ज़ोर जोर से पढकर सुनाया..

"तब जल्लादों ने मौत की सजा पाये राजबन्दियो से पूछा कि मरने के पहले वे किस से मिलना चाहते हैं। फ़हद ने अपने साथी ज़की और हुसैन तथा उसी जेल में बन्द अपने भाई दाऊद से मिलने की इच्छा प्रकट की। वह अपने जुझारू साथियों से हाथ मिलाना तथा अन्तिम बार उनसे विदा लेना चाहते थे। दाऊद के जरिये उन्होंने मां को सन्देश भेजा। उन्होंने कहा, 'मां से कहना कि यूसुफ ने तुम्हारे लिए काफी परेशानिया पैदा की और तुम्हे क्लेश पहुंचाया, परन्तु उसने जो रास्ता अपनाया था–साम्राज्यवाद से मुक्ति के लिए राष्ट्रीय संघर्ष का रास्ता–उसके अलावा और कोई रास्ता उसे अपने लिए सूझ नही पडा। मां से मेरा आखिरी सलाम कहना।' अपने भाई से उन्होंने कहा, 'याद रखना कि मैंने एक कम्युनिस्ट की हैसियत से मौत का आलिंगन किया। कम्युनिज्म मौत से अधिक बलशाली है।"

अपनी मा से बासिम की अन्तिम विदाई के शब्द भी इसी प्रकार पवित्र

भावना से परिपूरित थे। "मां, रोओ मत, तुम्हें इस बात का गर्व होना चाहिए कि तुम्हारा बेटा एक कम्युनिस्ट के रूप मे मर रहा है। यदि मैं दुनिया में फिर आ सकता तो मैं फिर इसी रास्ते को चुनता।"

उन्हे भोर मे अलग-अलग चौकों मे फांसी पर लटका दिया गया, जब मार्शल-ला के कारण लोग बाहर नहीं निकल पाते। बहुत ही कम लोग उन्हे फासी पर लटकाये जाने का लोमहर्षक दृश्य देख सके।

कामरेड फहद दृढ़ता के साथ फासी के तख़्ते पर चढ़ गए। वधिक उनकी आखों पर पट्टी बांधना चाहता था, परन्तु उसके हाथ को जोरों से एक ओर हटाकर और अन्तिम बार चौक की ओर देखते हुए उन्होंने हर शब्द पर जोर देकर उच्च स्वर में कहा:

"कम्युनिज्म मौत से अधिक बलशाली है और फांसी की पहुंच के बाहर है!"

* * *

साल पर साल गुजरते गए और कम्युनिस्ट पार्टी ने पुनः शक्ति प्राप्त कर ली। नये लोगों ने शहीद योद्धाओं के स्थान को ग्रहण कर लिया। १४ जुलाई, १९५८ तक, जब बादशाही का तख़्ता उलट दिया गया, तो इराक़ की कम्युनिस्ट पार्टी देश का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन हो गई थी और ट्रेड-यूनियन, युवक तथा किसान आन्दोलनों में इसका प्रभाव सबसे अधिक हो गया था। नूरी-अल-सैयद तथा अन्य साम्राज्यवादी पिछलगुओं के घृणास्पद अपराधो से कम्युनिस्ट विचारों का प्रसार नही रुक सका।

क्रान्ति के बाद फ़हद तथा उनके जुझारू साथियों के लेखों और भाषणों का संग्रह बगदाद मे प्रकाशित हुआ।

१९५९ की जनवरी मे इराकी जनतंत्र के न्याय मंत्रालय के एक विशेष आयोग ने दस साल पहले दी गई सजाओं को रद्द कर दिया। आयोग के निर्णय में कहा गया कि "जांच से सिद्ध हो गया है कि नागरिक यूसुफ सुलेमान यूसुफ (फ़हद) और उनके सहयोगियों ने देश को साम्राज्यवादी पंजे से मुक्त करने और इसकी प्रशासकीय व्यवस्था को बदलने की कोशिश की। एक भ्रष्टाचारी सरकार ने उन्हें मौत की सजा दी। उनकी जन सेवाओं को राष्ट्रीय मान्यता दी जानी चाहिए। इसलिए कानून के अनुसार उन्हें दोष-मुक्त करने का निर्णय किया गया है।"

शहीद कब्रगाह मे एक उपेक्षित क़ब्र पायी गई। यह प्रमाणित हो गया

कि यही कब्र शहीद फहद की है। दोस्तों ने उसे श्वेत संगमरमर से मंडवा दिया। फहद और उनके साथियों की शहादत की १० वी वर्षगांठ पर बग़दाद के सभी मेहनतकश लोगों ने अपने इन महान देशवासियों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

क्रान्ति के बाद दो वर्षों में बगदाद और अन्य इराकी नगरों मे कई प्रदर्शन हुए, परन्तु इस प्रकार का कोई भी प्रदर्शन नही हुआ। १६ फ़रवरी, १९५९ को शुरू में टोलियों में, और फिर लम्बी लम्बी क़तारों मे बगदाद की जनता शहीद क़ब्रगाह की ओर गई। तेल-शोधक कारख़ाने के मज़दूर और रेलवे कर्मचारी अपने काम के पहनावे मे दिन की अपनी पाली समाप्त होने के बाद सीधे वहा पहुंचे। संगमरमर के फलक पर ताज़े फूलों, लाल फ़ीतों सहित पुष्प-मालाओं का अम्बार लग गया। बगदाद विश्वविद्यालय के छात्रों ने अपनी माला पर लिखा, "फ़हद हमारे संघर्ष के पथ को सदा प्रदीप्त रखनेवाली मशाल बने रहेंगे।"

उष्णदेशीय अन्धेरे आकाश मे तारे बहुत तेजी से चमक रहे थे, श्रद्धांजलि अर्पित करनेवाले लोगों की मौन पांते वहां आती ही रही। कारख़ानों के मजदूरो, दफ़्तरी कर्मचारियों, शिक्षकों, शिल्पकारों और पड़ोसी गांवों के प्रतिनिधिमंडलो से कतारें बढ गई थी। लोग क्षण भर के लिए रुकते धीरे से चन्द शब्द कहते और उसके बाद दूसरे लोगों को कब्र के पास पहुंचने का मौका देने के लिए अन्धेरे मे वापस चले जाते। सभाएं नहीं हुईं और भाषण नहीं हुए। परन्तु लोगों के अनकहे प्रण ने शब्दों से अधिक गहरी भावनाएं व्यक्त कर दी।

ख़ुसरो रौज़बेह

"किसी भी अवस्था में मरना कष्टदायक है, और अपने विचारों पर विश्वास करनेवाले ऐसे व्यक्ति की मौत तो बहुत ही संतापकारी होती है, जिसका हृदय ख़ुशहाल, उज्ज्वल भविष्य की आशाओं से परिपूरित होता है। परन्तु किसी भी मूल्य पर जीवन से चिपके रहना अपमानजनक है; मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा में अपने ध्येय को कभी भी आंखों से ओझल नहीं करना चाहिए। यदि सम्मान, आदर्शों, पोषित सपनों और राजनीतिक तथा सामाजिक विश्वासों को शर्मनाक और अपमानजनक मूल्य पर खोकर प्राण-रक्षा की जाये, तो मौत का आलिंगन कर लेना इससे सैंकड़ों बार श्रेष्ठतर है।"

इन सरल शब्दो से कितनी व्यथा, किन्तु फिर भी उज्ज्वल भविष्य मे कितना भव्य विश्वास प्रकट होता है! इन्हें कहनेवाले ईरानी कम्युनिस्ट ख़ुसरो रौजबेह् असाधारण साहस और संकल्प-शक्ति के व्यक्ति थे। तेहरान के अवसादकारी "किज़िल क़िला" जेल से दुनिया तक इन शब्दों के पहुचने के चार साल पहले ही उक्त पंक्तियों के लेखक की जीवन-यात्रा समाप्त हो गई थी।

ख़ुसरो रौजबेह् कौन थे और उनका अपराध क्या था? उन्हे क्यो मौत की सजा दी गई?

ख़ुसरो रौजबेह् ईरानी क्रान्तिकारी आन्दोलन के एक सर्वाधिक चित्ताकर्षक व्यक्ति थे। १५ अप्रैल, १६१५ को वह औसत हैसियत के एक परिवार मे पैदा हुए थे। उनके पिता हुसैन रौजबेह् ने बीमारी के कारण मजबूर होकर फ़ौज से अवकाश ग्रहण करने के पहले रसद विभाग के अधिकारी और बाद में मलायार जिले के सलास कसवे की राजनीतिक पुलिस के प्रधान के रूप में नौकरी की। उसके बाद उन्होंने वित्त-मंत्रालय मे एक साधारण प्रादेशिक पद पर काम किया। ख़ुसरो रौजबेह् को ज़िन्दगी मे बहुत लाड़-प्यार नही मिला; बहुत कम उम्र में ही उन्हें ग़रीबी का सामना करना पड़ा। जिस समय वह पढ़ने के लिए माध्यमिक स्कूल में दाख़िल हुए, उनके मां-बाप की आर्थिक दशा बहुत ख़राब हो गई थी। उनकी दिक़्क़तो को दूर करने के ख़याल से ख़ुसरो ने बहुत मन लगाकर अध्ययन किया और अपनी कक्षा के छात्रों से दो साल पहले ही सम्मान के साथ अंतिम परीक्षा पास कर ली। माध्यमिक स्कूल मे पढ़ते हुए उन्होंने गणित में अपनी अभिरुचि प्रकट की थी और बाद में इसी से उनकी शिक्षा की दिशा निर्धारित हुई: उन्होंने तेहरान विश्वविद्यालय के तकनीकी विभाग की प्रवेश-परीक्षा पास की और गणित का अध्ययन किया।

ख़ुसरो ने माध्यमिक स्कूल मे ही "संख्याओं के क्रमागत भाजन द्वारा चतुर्थ और उच्चतर घात समीकरणों का हल" शीर्षक निबन्ध लिखा था। विश्वविद्यालय मे उन्होंने इस विषय पर अपना काम जारी रखा। बाद में उन्होंने "ज्यामितीय समस्याओं के हल का सैद्धान्तिक आधार" शीर्षक निबन्ध लिखा। यदि वह विश्वविद्यालय में ही बने रहते तो संभवतः एक प्रमुख वैज्ञानिक हो गये होते। परन्तु अपने परिवार की कठिन आर्थिक दशा के कारण उन्हें विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़नी पड़ी और वह फ़ौजी

अकादमी में दाख़िल हो गए, जहा वह निःशुल्क अध्ययन कर सकते थे।

१९३७ में फ़ौजी अकादमी से उत्तीर्ण होकर वह विमानवेधी तोपख़ाना रेजीमेन्ट में लेफ़्टिनेन्ट की हैसियत से काम करने लगे। परन्तु उनके जैसा प्रतिभाशाली और जिज्ञासु व्यक्ति निष्प्रयोजन जीवन नही व्यतीत कर सकता था, वह विमानवेधी तोपख़ाने के विद्युतीय और प्रकाशिक उपकरणों के सैद्धान्तिक आधार के अध्ययन में संलग्न हो गए और उन्होंने इस क्षेत्र मे काफ़ी प्रगति की। इस अध्ययन के फलस्वरूप उन्होने "विमानवेधी तोपख़ाने के प्रकाशिक उपकरणों के सैद्धान्तिक नियम" शीर्षक निबन्ध लिखा। उन्होंने गोलाबारी के आंकड़ों की गणना के लिए एक यंत्र तैयार किया और लड़ाई के दौरान समय बचाने के लिए फ़ायर-परास की एक सारणी भी तैयार की। उन्होंने हल्की तोपों से गतिमान निशाने पर गोले बरसाने का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अपना ही तरीका खोज निकाला और "गतिमान निशाने पर हल्की तोपों से मार करने के सैद्धान्तिक नियम" नामक एक पुस्तक भी लिखी। उनकी पद्धति के अनुसार निशानों को ले जानेवाले विमानों के इस्तेमाल की बिल्कुल कोई आवश्यकता नही थी। इसके अलावा उन्होंने पैदल सेना के काम आनेवाले विभिन्न प्रकार के हथियारों के लिए सारणियां तैयार की।

गणित और तोपख़ाने मे उनकी असाधारण प्रतिभा तथा उनकी पुस्तकों से कमान का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हुआ। उन्हें सीनियर लेफ़्टिनेन्ट के पद पर तरक्की दी गई और फ़ौजी अकादमी के तोपख़ाना विभाग में पढ़ाने के लिए निमंत्रित किया गया। उसके बाद शीघ्र ही वह कप्तान बना दिये गए। शिक्षक और विद्वान के रूप में अकादमी में उनकी प्रतिभा उज्ज्वल रूप मे प्रस्फुटित हो गई। उन्होने 'तोपख़ाना विभाग के लिए उच्च गणित पाठ्यक्रम, नामक दो खण्डों में एक पुस्तक और आन्तरिक प्राक्षेपिकी, वाह्य प्राक्षेपिकी, तटीय तोपख़ाने की गोलाबारी तथा अन्य विषयों पर पुस्तके लिखी। सैंकड़ों तोपख़ाना अधिकारियो ने अकादमी मे उनसे शिक्षा प्राप्त की और उनकी पुस्तको का अध्ययन किया। इन सभी बातों से युवा अधिकारियों के बीच वह बहुत प्रिय हो गए।

ख़ुसरो रौजवेह असाधारण रूप से बहुमुखी प्रतिभा और व्यापक अभिरुचियों वाले व्यक्ति थे। उच्च गणित और तोपख़ाने के सिद्धान्त में दिलचस्पी

5—3040

लेने के अलावा उन्होंने साहित्य और दर्शन, शतरंज के सिद्धान्त और विदेशी भाषाओं, अर्थशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र का भी गहरा अध्ययन किया। उन्होंने "दूसरे विश्वयुद्ध का सक्षिप्त इतिहास" और "कोरिया की लड़ाई" नामक पुस्तकें लिखी; कथा-साहित्य में उनकी कृतियो के नाम हैं—"प्यार और मौत का खेल", "हिरोशिमा की वह लड़की सुमिको", "मुरझाई कलियां", "रोज-फ़ास" और "लाजुज गांव" तथा बच्चों की उनकी पाठ्यपुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं—"संगी" और "बच्चेघर तथा स्कूल में"। शतरंज के शौकीन होने के कारण उन्होंने इस विषय मे निम्नांकित पुस्तकें लिखी—"शतरंज", "शतरंज स्वयंशिक्षक", "शतरंज खेलने की कला", "शतरंज किस ढंग से नही खेलना चाहिए" और "नूतन पूर्ण शतरंज ज्ञान-कोश"। उन्होंने अनुवाद का काम भी किया; यांत्रिकी, उष्मागतिकी, उच्च गणित, भौतिकी, ज्यामिति और खगोल-विज्ञान मे दिलचस्पी ली। उन्होंने आलेखीय स्थिति-विज्ञान, विश्लेषणात्मक ज्यामितीय प्रकाशिकी, भौतिकीय प्रकाशिकी, वस्तुओं के प्रतिरोध, सैद्धांतिक यांत्रिकी, उष्मागतिकी, खगोल-विज्ञान और ब्रह्माण्डोत्पत्ति सम्बन्धी शिक्षाप्रद पुस्तकों का अनुवाद किया। उन्होंने फ़्रांसीसी से "रूसी भाषा का स्वयंशिक्षक" का भी फारसी में अनुवाद किया।

वह पुस्तकों के बहुत प्रेमी थे और अपने निजी पुस्तकालय के लिए पुस्तकें खरीदने पर अपनी आमदनी का बड़ा अंश खर्च किया करते थे। इनके अपने पुस्तकालय मे करीब तीन हज़ार पुस्तकें थी। तेहरान में उन्होंने किराये पर जो छोटा-सा कमरा ले रखा था, उसकी दीवालों के पास हर ओर किताबें रखने की अलमारियां लगी हुई थी और उनमे कई भाषाओं मे गणित, भौतिकी, यांत्रिकी, इतिहास और दर्शनशास्त्र की पुस्तकें रखी हुई थीं।

धीरे-धीरे अपनी शिक्षा और फौज में अपने अनुभव का लाभ उन्हें होने लगा। यदि वह फौज में बने रहते तो संभवतः सम्मानप्रद उच्च पद पर पहुंच जाते, महत्त्वपूर्ण ओहदों पर काम करते और आराम तथा सुख का जीवन व्यतीत करते। परन्तु यही तो वह नहीं चाहते थे। अपने मुकदमे की सुनवाई के समय उन्होंने कहा, "कैसे मैं आरामदेह जीवन और सुखद भविष्य के प्रलोभन में फंस जाता और अपने कष्टपूर्ण तथा अपमानजनक गुजरे दिनों को भूल जाता? भला कैसे मैं उन हज़ारों रोज़बेहों

को विस्मृत कर बैठता, जिनकी स्थिति मुझसे भी बदतर थी और जिन्हे उसे सुधारने की कोई आशा नही थी? भला कैसे मैं अपनी गरीबी के कारण तथाकथित भद्रजनों की अपने ऊपर पड़नेवाली अपमानजनक निगाहों को, उन निगाहों को, जो छुरी की भांति मेरे हृदय मे घुस जाती थी, भूल जाता? भला कैसे मैं इन बातों को भुला बैठता और जो सम्पन्न जीवन मुझे प्राप्त हो सकता था, उसके प्रलोभन में फंस जाता?

"यदि मै ऐसा ही कर बैठता तो भी निष्क्रिय रहकर और जिस प्रकार एक समय मुझे नफरत की निगाह से देखा गया था, उसी प्रकार दूसरे रौजबेहों के साथ अपमानजनक व्यवहार को अनदेखा करने, अपने सुखी जीवन के लिए मौन रहने का मुझे क्या हक था! मुझे ऐसा कोई अधिकार नही था और न हो ही सकता था। सत्य यह है कि मेरे विचार निजी सुख-सुविधा के खयाल से नही बने हैं। इसके प्रतिकूल, मेरा दृष्टिकोण अधिक व्यापक है।"

रौजबेह ने एक ओर अपने लाखों देशवासियो की घोर ग़रीबी, मुसीबत और दुर्दशा को देखा और दूसरी ओर उन्होने उस ऐश्वर्य और रंगरास को देखा, जिसमें पूजीपति तथा जमीदार डूबे हुए थे।

उन्होंने अदालत में कहा, "समसामयिक ईरानी समाज को दशा की छिछली जानकारी और विभिन्न वर्गों की जिन्दगी की तुलना से निश्चय ही घृणा, करुणा और दया की भावना पैदा होगी। सम्पत्तिशाली वर्गों और धनहीनों के बीच चौड़ी खाई हुई है और यह खाई निरन्तर चौड़ी होती जा रही है। यह इतनी चौड़ी खाई है कि कोई भी चिन्तनशील व्यक्ति इसे देखकर इसके कारणों पर गंभीर ध्यान दिये बिना नही रह सकता।"

जब हम इन उल्लेखनीय कथनों को पढ़ते है तो कल्पना में ख़ुसरो रौजबेह का एक ऐसा चित्र उभर आता है कि वह अपने चारों ओर की स्थिति को बहुत ध्यान से देख रहे हैं और अपनी जनता के भविष्य पर ग़ौर कर रहे हैं। वैसा ईमानदार और संवेदनशील व्यक्ति, अपनी जनता से प्यार करनेवाला व्यक्ति, ख़ुद उसी की भांति कठिनाइयों को झेलनेवाला व्यक्ति अपने इर्द-गिर्द के जीवन को उपेक्षा से नही देख सकता था।

ख़ुसरो अभी युवक थे जब उनका जीवन-दर्शन अस्तित्व ग्रहण कर रहा था। उस काल मे ईरान क्रान्तिकारी उभार के दौर में था। देश के

5*

इतिहास में पहली बार तूफानी सभाओं में भाग लेने के लिए अनेक शहरों की सडकों पर हजारों व्यक्ति निकल आये थे। ट्रेड-यूनियनें और राजनीतिक पार्टियां कायम हो रही थी, उनमें ईरान की जन पार्टी भी शामिल थी। १९४३ मे रौज़बेह इस पार्टी में शामिल हो गए। बाद मे उन्होंने बताया कि "जब मैंने अखबारो तथा पार्टी के अन्य प्रकाशनों में छपे लेखों को पढ़ा, तो मैंने महसूस किया कि मेरे लिए यही उपयुक्त संगठन है, और यह कि बहुत अर्से से जो कुछ मैं सोचता रहा हूं, उसे सक्रिय रूप से व्यक्त करने में यही मुझे सहायता प्रदान कर सकता है।"

उसके बाद से ख़ुसरो रौज़बेह ने बड़े उत्साह से मार्क्सवाद-लेनिनवाद सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन किया और मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारो के उत्कट प्रचारक हो गए। उन्होने कहा, "मैं अब केवल अपनी पुस्तकों, शोधों और अनुवादों से समाज की सेवा करने का इच्छुक नहीं रह गया था। मेरे विचार अब बिल्कुल बदल गये थे। उथल-पुथल के उस काल का मेरी कार्य-क्षमता और भावनाओं पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैंने किसी न किसी प्रकार समाज की कुछ सेवा करने का विचार त्याग दिया और मूलभूत रूप में परिस्थितियों को बदलने तथा अपने लाखों देशवासियों के आपद्ग्रस्त भाग्य को संवारने के ध्येय के प्रति अपने सारे प्रयासों को समर्पित कर देने का निर्णय किया।"

यह रास्ता कठिन था। रौज़बेह के विपरीत बहुतेरे अन्त तक इसका अनुसरण न कर सके। कुछ आधे रास्ते में ही रुक गए और विमुख हो गए। परन्तु रौज़बेह उन जैसे लोगों मे नही थे। उन्होंने कहा, "आधे रास्ते में रुकना और संघर्ष से अलग हो जाना एक सच्चे व्यक्ति के लिए अनुचित है।"

और ख़ुसरो रौज़बेह साहस के साथ संघर्ष की ज्वाला में कूद पडे तथा पूरी लगन के साथ इसमें जुट गए। ईरान की जन पार्टी में शामिल होनेवाले वह पहले ईरानी फ़ौजी अफ़सर थे। राजनीति में सक्रिय रहते हुए उन्होंने फ़ौज में प्रभावकारी प्रचार किया। ईरानी कम्युनिस्टों की पुरानी पीढी के एक प्रतिभाशाली प्रतिनिधि और ईरान के कम्युनिस्ट आन्दोलन के एक अनुभवी नेता कर्नल इज्जतुल्लाह स्यामक (जिन्होंने शीघ्र ही रौज़बेह को अपने एक सुयोग्य सहयोगी के रूप मे पहचान लिया) से अपने परिचय के फलस्वरूप इस युवा देशभक्त को मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धात का सार ठीक समझने

ग्रौर ग्रंततः ऐसा व्यक्ति बनने में सहायता मिली, जिस में बाद में वह विकसित हुए।

उन्होंने स्यामक ग्रौर ईरानी सेना के ग्रन्य ईमानदार ग्रफसरों के साथ, जो उन्हीं की भांति पार्टी के सदस्य थे, "ईरान के स्वतंत्रताप्रेमी ग्रफसरों का संगठन" क़ायम किया ग्रौर वह इसकी केन्द्रीय समिति के सदस्य चुने गए।

संगठन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए रौज़बेह् ने कहा था: "इसका लक्ष्य सत्तारूढ वर्गों के नियंत्रण से ग्रमन-क़ानून क़ायम रखनेवाली शक्तियों को ग्रलग करके उनका उपयोग जनता के बहुमत, ग्रर्थात् उन दुर्भाग्यग्रस्त, उत्पीड़ित लोगों की सेवा में करना था, जो घर के बने कपड़े ग्रौर सस्ती टोपियां पहनते हुए हैं... हमारे सभी प्रयास राष्ट्रीय सरकार को कायम करने, वास्तविक जन शासन स्थापित करने ग्रौर स्वतन्त्रता, मानवीय मर्यादा तथा इज्जत के नाम पर, ग्रपनी प्रिय मातृभूमि की प्रतिष्ठा ग्रौर ग्राजादी के नाम पर जनता के संपूर्ण ग्रधिकारों की रक्षा करने की ग्रोर लक्षित थे।"

सबसे ग्रच्छे ग्रौर सर्वाधिक देशप्रेमी ग्रधिकारियों ने जिनकी ईमानदारी ग्रौर योग्यता सर्वज्ञात थी, इस संगठन से ग्रपने को सम्बद्ध कर लिया।

१६४५ मे ईरान मे प्रतिक्रिया ने ग्रपना सिर उठाया ग्रौर जनरल स्टाफ़ ने बड़ी निर्ममता के साथ प्रगतिशील ग्रफ़सरों पर प्रहार किया। संगठन के कई सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गए ग्रौर निर्वासित कर दिये गए; ग्रनेक छिप गए। ख़ुसरो रौज़बेह् भी छिपकर गोपनीय ढंग से काम करने को विवश हो गए।

बहुत जोखिम उठाते हुए वह संगठन के कार्यकलाप को निर्देशित ग्रौर संगठन में नये सदस्यों को शामिल करते रहे। एक प्रतिभाशाली वृत्तकार होने के नाते उन्होंने फ़ौज में जो स्थिति पैदा कर दी गई थी, उसकी भर्त्सना करते हुए कई लेख लिखे। जिस शोचनीय हालत में फौज को पहुंचा दिया गया था, उसका पर्दाफाश करते हुए उन्होंने जो कई पुस्तकें लिखी *उनमे सबसे ग्रधिक विख्यात थी "ग्रन्ध ग्राज्ञापालन"।* उनकी पुस्तकें उनके साथी ग्रफसर पढ़ा करते थे ग्रौर इनका उन पर गहरा ग्रसर पड़ता था। इन पुस्तकों के प्रभाव में ग्राकर कई युवा देशप्रेमी ग्रफसरों ने ग्रपने को जनवादी ग्रान्दोलन के साथ सम्बद्ध कर लिया।

अधिकारियों ने तीन बार ख़ुसरो रौज़बेह को गिरफ़्तार किया और तीनों बार वह जेल से निकल भागे तथा अपना काम पुनः शुरू कर दिया। जेल से हर बार निकल भागने पर वह उक्त संगठन की क्रियाशीलता को बढ़ाने के लिए दुगुना प्रयास करने लगते।

१५ दिसम्बर, १६५० को तीसरे पहर "क़ासिर" जेल से उनका फ़रार होना विशेष रूप से चमत्कारपूर्ण था। उस दिन लम्बी सजा काटनेवाले पार्टी के दस नेताओं को दिन दहाड़े एक लारी में बिठाकर जेल के प्रांगण के बाहर भगा लिया गया। उनमें एक ख़ुसरो रौज़बेह भी थे। जेल से भाग निकलने की यह योजना जितनी साहसपूर्ण थी, उतने ही साहस के साथ इसे कार्यान्वित भी किया गया।

जासूस फरारों का पता लगाते लगाते थक गए, परन्तु उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। पूंजीवादी अख़बारों ने यह ख़बर फैलाई कि रौज़बेह देश से भाग गये हैं। परन्तु वह स्वदेश मे ही थे और अपना क्रांतिकारी काम करते रहे थे।

पार्टी के लिए अब विषम समय शुरू हो गया। प्रतिक्रिया अपने जहरीले दांत लगाती जा रही थी। संगठन को खण्ड-खण्ड और भंग करने पर उतारू ग़द्दार पार्टी के सुविख्यात नेताओं को सता रहे थे। हर प्रकार के अवसरवादी और पदलोलुप पार्टी को छोड़ भागे—कुछ प्रतिक्रियावादी शिविर में शामिल हो गये, तो कुछ उस अत्याचार से भयभीत होकर। और कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने जेल मे साहस खो दिया और विश्वासघात का रास्ता अख़्तियार किया। इसके फलस्वरूप "ईरान के स्वतंत्रताप्रेमी अफ़सरों का संगठन" भंग हो गया।

१६५४ के अगस्त के उत्तरार्ध में इस संगठन के सदस्यों की गिरफ्तारियां शुरू हुईं। फौज, पुलिस और राजनीतिक पुलिस के कुछ सर्वोत्कृष्ट, उच्च शिक्षाप्राप्त और ईमानदार अफसर बन्दी बना लिये गए। ईरानी अख़बारों ने इस आशय की ख़बर प्रकाशित की कि कर्नल इज़्ज़तुल्लाह हुसैन स्यामक और लेफ्टिनेण्ट-कर्नल मोहम्मद-अली अब्बास मुबाशरी सहित संगठन के सभी नेता गिरफ़्तार कर लिये गए हैं। केवल ख़ुसरो रौज़बेह चंगुल में नहीं आ पाये।

उनके साथी अफसरों ने अपने मामले की सुनवाई के समय अपूर्व साहस का परिचय दिया और वीरों की भांति मृत्यु का आलिंगन किया। ईरानी

जनता कभी भी कर्नल स्यामक, लेफ़्टिनेन्ट-कर्नल मुबाशरी, मेजर वकीली, मेजर वज़ीरियान और उनके साथियों के नामों को विस्मृत नहीं करेगी, जिन्होंने भीषण यातनाएं बर्दाश्त कीं, परन्तु ग़द्दार बनने की अपेक्षा ईमानदार व्यक्तियों की भांति मर जाना पसन्द किया। अधिकारियों ने अनुभवी क्रान्तिकारी और उत्कट ईरानी देशभक्त कर्नल स्यामक से क्रांति के ध्येय के प्रति गद्दारी करने और अपने ही मुंह से अपने को सोवियत गुप्तचर कहलाने के लिए सभी हथकंडों का इस्तेमाल किया। यदि वह इसे स्वीकार कर लेते तो इससे ईरानी सरकार और संसार की प्रतिक्रियावादी शक्तियां सोवियत विरोधी प्रचार शुरू कर देतीं। परन्तु स्यामक ने घृणा के साथ झूठे अभियोग को इनकार करते हुए कहा, "बात बिल्कुल ठीक है। हर रोज़ सुबह मैं राजनीतिक पुलिस के बारे में एक विदेशी अफ़सर के लिए पूरी रिपोर्ट तैयार किया करता था। परन्तु वह अफ़सर रूसी नहीं था। वह अमरीकी विदेश विभाग का एक जासूसी अफ़सर था, जो एक सलाहकार के रूप में ईरानी राजनीतिक पुलिस का निदेशन करता था।"

इन व्यक्तियों की अपूर्व वीरता निम्नांकित बातों से प्रकट होती है। कप्तान मर्ज़बान ने जेल की अपनी कालकोठरी की दीवाल पर लिखा: "यह मेरी जिन्दगी की आख़िरी रात है। मुझे कोई पछतावा नहीं है। मुझे आशा है कि अन्य राजबन्दियों की भावनाएं मेरी भावनाओं की ही भांति हैं।" एक अन्य राजबन्दी ने अपनी बात कोठरी की दीवाल पर लिखी, "मुख़्तारी मौत का आलिंगन करने के लिए तैयार है। साथी राजबन्दियों को मेरा सलाम!"

अभियुक्त अफसरों ने अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को जो सन्देश भेजे थे, वे उनकी हत्या के बाद ही दुनिया को ज्ञात हो सके। गोली से मारे जाने के एक घंटा पहले मेजर रहीमबेह-ज़ादा ने लिखा: "एक घंटे में मुख़्तारी, नासिरी, मर्ज़बान, मुहक्किक़, सरोशियान और मैं गोली से उड़ा दिये जायेंगे। ईरानी जनता अपने संघर्ष में विजय प्राप्त करे! मौत के पहले अपने अन्तिम क्षणों में मैं ईरानी जनता, अपनी प्रिय पार्टी, अपनी प्यारी पत्नी और अपने भाग्य के बारे में सोच रहा हूं, जो ठीक कवी* की तकदीर के समान है। ईरानी जनता के लिए मौत की सज़ा पाने और

*कवी—एक पौराणिक ईरानी योद्धा, एक लोहार, जिसने जनता के सुख के लिए अपने जीवन को न्योछावर कर दिया था।

गोली से उड़ा दिये जाने पर मुझे गर्व है।" लेफ़्टिनेन्ट-कर्नल मुबाशरी ने गोली से उड़ा दिये जाने के पूर्व रात में अपनी पत्नी को पत्र लिखते हुए यह भावना प्रकट की: "भोर मे तीन बजे मेरे साथियों को और मुझे बताया गया कि हमारी मौत की सजा अमल में लायी जायेगी। मैं तुमसे केवल यही अनुरोध करता हूं कि तुम शान्त और दृढ बने रहना... हमेशा याद करना कि तुम्हारा पति एक ईमानदार आदमी था, जो और कुछ भी नही, सिर्फ अपनी प्रिय जनता की खुशी चाहता था और इसी कारण उसे अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार की मौत पवित्र मौत है। जब मेरे बच्चे बड़े हो जायेंगे, तो उनसे कहना कि ईरानी जनता की खुशी के लिए संघर्ष करने के कारण उनके पिता को मौत के घाट उतार दिया गया था।"

कर्नल स्यामक ने अपने पत्र में अपने परिवार को लिखा: "सच्चाई यह है–और इसे आप लोगों को जानना ही चाहिए–कि मैंने अपने देश के साथ विश्वासघात नही किया और न मै गद्दार हूं और न भेदिया। आप इसपर गर्व करें कि मैंने अपनी मातृभूमि के रूपान्तरण और अपनी जनता के सुख के महान लक्ष्य को प्राप्त करने के पथ पर मृत्यु का आलिंगन किया।"

अफ़सरों के संगठन के सदस्यों ने जिस न्यायपूर्ण ध्येय के लिए संघर्ष किया और अपने जीवन न्योछावर कर दिये, उसकी विजय में इन पंक्तियों से कितना अपूर्व मनोबल और उत्साह, कितनी आशा और कितना विश्वास प्रकट होता है!

इन ईरानी कम्युनिस्टों ने मौत के सम्मुख भी जिस साहस और वीरता को प्रदर्शित किया, उन्हें केवल महान आदर्शों से अनुप्राणित व्यक्ति ही प्रदर्शित कर सकते है।

उनके इन कारनामों, जनता की भलाई के लिए किये गये उनके कार्यों से साम्राज्यवाद और प्रतिक्रिया के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए हजारों ईरानी देशभक्तों को प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी।

इस बीच खुसरो रौज़बेह की खोज होती रही। और वह भी विश्वासघात के कारण पुलिस के हाथ मे पड गये। ६ जुलाई, १९५७ को रात के ६ बजे तेहरान की एक सड़क पर एक गद्दार ने उन्हे पहचान लिया और वह ईरानी राजनीतिक पुलिस के सशस्त्र जासूसों के गिरोह द्वारा घेर लिये गये। जिस वीरता और धीरता के साथ उन्होने उनसे लोहा लिया वह वास्तव

में अविश्वसनीय प्रतीत होती है। गोलियों के तीन सख़्त घाव के बावजूद—एक बाईं कुहनी, दूसरा बायें नितंब और तीसरा पेट में, जिसके फलस्वरूप आन्तर रक्तस्राव शुरू हो गया था—वह शक्ति बटोरकर किसी प्रकार सीढ़ियों से होते हुए एक घर की छत पर पहुंच गये, अपनी नोटबुक के पन्नों पर गद्दार का नाम लिखा, उन पर अपने हस्ताक्षर किये और उन्हें आसपास फेंक दिया ताकि लोग जान सकें कि किसने उनके साथ विश्वासघात किया। उनकी शक्ति जाती रही, वह पकड़ लिये गये और "क़िज़िल किला" जेल की एकान्त कोठरी मे झोंक दिये गये, जहा वह बहुत ही भयावह परिस्थितियों में ६ महीने तक पड़ रहे।

उनके विरुद्ध मामले की सुनवाई क़ानूनी व्यवस्था के अनुसार अदालत में नही, बल्कि जेल के दफ़तर मे गुप्त रूप से हुई, जहां की अनेक कटु स्मृतियां उनके मानस-पटल पर अंकित थी। उन्हे अपनी पसन्द के वकील चुनने और अभियोग-पत्र से अवगत होने तथा पैरवी

कर्नल स्यामक फ़ौजी अदालत में अपनी पैरवी कर रहे हैं

की तैयारी करने के लिये कानून द्वारा निर्धारित समय का उपयोग करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। मामले की सुनवाई के समय अखबारों के संवाददाताओं को भी उपस्थित रहने की अनुमति नहीं दी गई।

कानूनी अधिकारों से उन्हें वंचित करके अधिकारी न्याय की व्यवस्था में उनके विश्वास को ख़त्म कर देना चाहते थे।

वे मुकदमे की इस गुप्त सुनवाई के समय, जिसमें मान्य अदालती पद्धति की उपेक्षा की गई थी, उन्हें पूर्णतया आतंकित कर देने पर उतारू थे। स्पष्टतः एक साधारण अपराधी की भांति उनके विरुद्ध मामला चलाने का उनका इरादा था। परन्तु रौज़बेह की दृढ़ता और बहादुरी से ईरानी प्रतिक्रिया का कुचक्र विफल हो गया। उन्होंने अपने मामले की पैरवी करने का काम ख़ुद अपने हाथ में ले लिया और बड़ी योग्यता के साथ इसे निभाया। उन्होंने मामले की सुनवाई के समय कहा:

"मैं पूंजीवाद से नफरत करता हूं, जो मानवजाति की सभी मुसीबतों का कारण है और जिनमें ईरानी जनता की मुसीबतें भी शामिल हैं।

"मैं दिल से पूंजीवाद से नफरत करता हूं और मैं उस व्यवस्था का कट्टर दुश्मन हूं, जो १ करोड़ ८० लाख ईरानियों के कष्टों, भूख, गरीबी और अभाव के बदले में विशेषाधिकार प्राप्त एक हजार ईरानी परिवारों को ज़िन्दगी के लिये ऐश-आराम की सभी चीजें प्रदान करती है।

"मैं पूंजीवाद का विरोधी हूं, क्योंकि अपने साथ अनगिनत मुसीबतों को लाने के अलावा वह मेरे देश की स्वतंत्रता और अखण्डता तथा इसके नागरिकों की आज़ादी और कल्याण को बड़ा नुकसान पहुंचा रहा है। पूंजीवाद के ख़िलाफ मेरी नफरत का मतलब यह नहीं है कि मैं राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के ख़िलाफ हूं। इसके प्रतिकूल, राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की स्थापना करने तथा फिर इसे सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से ही मैंने पूंजीवाद के विरुद्ध संघर्ष किया है...

"हम सदा के लिये मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण समाप्त करना चाहते हैं, जो सभी सामाजिक बुराइयों का मुख्य कारण है। हम चाहते हैं कि उत्पादन के साधनों पर जनता का अधिकार हो—किसान ज़मीन को जोतें और बोयें, जो समाज की है, दूसरे शब्दों में वह किसानों की है, और मजदूर कारख़ानों में श्रम करें, जो इसी प्रकार उन्हीं के हैं।"

रौज़बेह राजतंत्र के सख्त विरोधी थे। उन्होंने इस बात को छिपाया नहीं और अपने मामले की सुनवाई के समय उन्होंने यह घोषणा की:

"मैं सदा से राजतंत्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध रहा हूं और उन्हें ईरान के समसामयिक समाज के विकास के विरुद्ध मानता रहा हूं। मुझे पक्का विश्वास है कि वर्तमान परिस्थितियों में ईरान के लिये गणतंत्रीय व्यवस्था श्रेयस्कर है।"

उन्होंने अपने ओजपूर्ण भाषण में न केवल अपने विरुद्ध लगाये गये अभियोगों का खण्डन किया, बल्कि विश्वसनीय ढंग से यह सिद्ध कर दिया कि ईरान की शासन व्यवस्था असंवैधानिक है और यह कि ईरान में कोई सवैधानिक सरकार नही है। उन्होने कहा, "यदि हमारे देश में ऐसी सरकार होती, तो चुनाव पूर्ण स्वतंत्रता के वातावरण में होते और संसद में हमारे प्रतिनिधि जनता के सच्चे प्रवक्ता होते। वास्तविकता यह है कि ईरान मे पचास साल से 'संवैधानिक सरकार' के होते हुए भी, हमारी संसदें ऐसी नही रही हैं (अपवादस्वरूप एक अथवा दो संसदों को छोडकर), जिन्होंने ईरानी जनता की आकाक्षा को व्यक्त किया हो; इसलिये तथ्यतः, हमारे देश में कोई संवैधानिक सरकार नहीं रही है... ईरानी जनता को स्वतंत्रतापूर्वक अपने मताधिकार के इस्तेमाल का न तो कभी कोई सुयोग प्राप्त हुआ है और न अवसर।"

इसके बाद ठोस उदाहरणों के आधार पर रौज़बेह ने ईरान मे चुनाव सम्बन्धी प्रपंच और जनता के प्रवक्ता के रूप में अपने को प्रस्तुत करनेवाले सम्पत्तिशाली वर्गों के प्रतिनिधियों से गठित ईरानी संसद के वास्तविक स्वरूप का पर्दाफाश किया। उन्होंने बड़े प्रभावकारी शब्दों में अधिकारों से वंचित देश की आबादी की आधी महिलाओं की दयनीय स्थिति का उल्लेख किया और व्यक्ति तथा निजी सम्पत्ति की अलंघ्यता के सम्बन्ध में सवैधानिक गारंटियों के गंभीर उल्लंघनों का घिनौना चित्र प्रस्तुत किया। उन्होने सत्तारूढ़ तबक़ों द्वारा अपनी जन-विरोधी नीति चलाने के लिये सेना के इस्तेमाल की भर्त्सना की। उन्होंने सिद्ध किया कि सभा करने और संगठन बनाने जैसे संवैधानिक अधिकारों को पैरों तले रौंद दिया गया है और एक प्रकार से इन्हे अवैध बना दिया गया है, जनता की प्रभुसत्ता को, राज्य के मामलों पर उसके सक्रिय नियंत्रण के अधिकार को रद्द कर दिया गया है। उन्होंने ईरानी संविधान की तुलना बिना अयाल

ग्रौर पूंछ के शेर से की—सारांश यह कि यह संविधान नहीं, प्रपंच है। उन्होंने पूछा, "जब संविधान का कोई अस्तित्व ही नहीं, तो किसी व्यक्ति को उसके नियमों का उल्लघन करने का दोषी कैसे ठहराया जा सकता है?"

खुसरो रौजबेह को समाजवादी आदर्शों की पूर्ण विजय में असीम विश्वास था। उन्होंने न्यायाधीशों के सम्मुख शान्त भाव से और निडर होकर अपने विचारों को प्रस्तुत किया, जैसा कि मुकदमे की सुनवाई के समय उनके बयान के निम्नांकित उद्धरणो से प्रकट होता है:

"पूंजीवाद के पोषक पूंजीवादी समाज की आधारशिला की रक्षा को सम्मान और गौरव की बात समझते हैं। समाजवाद के समर्थक समाजवादी समाज की आधारशिला की रक्षा और समर्थन को सम्मान और गौरव की बात समझते हैं।

"मेरे दिल में जो आग लगी है और जो मुझे ईरानी जनता की सेवा के लिये अनुप्राणित करती है, उसी भावना के अनुरूप अपने हृदय की पुकार पर मैंने ईरान की जन पार्टी में शामिल होकर काम करने का निर्णय किया। मैं इसे स्वीकार करता हू कि अपने जीवन के प्रत्येक तंतु के साथ मैं इसके आदेश को पवित्र मानता हूं। मेरा अस्तित्व ही पार्टी के लिये है; मैं समाजवाद पर फिदा हूं, ईमानदारी और निष्ठा के साथ मैं इसे चाहता हू। हो सकता है कि मैं अपनी आखों से ईरान में समाजवाद की विजय को देखने के लिये जीवित न रहूं, परन्तु निश्चित रूप से मैं इसे जानता हूं कि युग बदलेगा और पूजीवाद का नाश होगा।

"...यदि मैं समाजवाद को चाहता हू और इसके लिये अपने को समर्पित कर चुका हू तो इसका कारण यह है कि मैं महसूस करता हूं, जानता हूं और मुझे पक्का विश्वास है कि किसी भी अन्य सामाजिक व्यवस्था की तुलना मे इसके सिद्धान्त अधिक श्रेष्ठ है। मैंने जो कुछ भी किया, स्पष्टतः इन्ही सिद्धान्तों से, एक नूतन ईरानी समाज के निर्माण मे सहायता प्रदान करने की इच्छा से मेरा पथ-प्रदर्शन होता रहा, जिससे मेरी प्रिय ईरानी जनता को सुख प्राप्त होगा, उसका कल्याण होगा और जो उसकी मर्यादा, सम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा करेगा।"

रौज़बेह का मुकदमा विचारो का द्वन्द्वयुद्ध बन गया जिसमें वह विजयी हुए।

पूछताछ और मुकदमे की सुनवाई के दौरान, खुसरो रौज़बेह ने गुप्त रूप से काम करनेवाले अनुभवी कार्यकर्त्ता की भाति आचरण किया, और जानबूझकर अभियोग-पक्ष को सम्भ्रमित करने तथा ईरान की जन पार्टी के कार्यकलाप के बारे मे कोई भी सूचना उसके हाथ में न पडने देने की कोशिश की। उनकी गिरफ़्तारी से पहले ही डा० यज़दी, डा० बहरामी, अमानुल्ला कुरैशी और शरमिनी सहित जन पार्टी की केन्द्रीय समिति के कुछ सदस्य जेल मे थे। अपनी पूछताछ के दौरान अपने को बचाने के ख़याल से वे गद्दारी और झूठ का पथ अपना चुके थे।

ऐसी परिस्थितियों में पार्टी की सफ़ाई पेश करने की ज़िम्मेदारी रौज़बेह के कन्धे पर आ पड़ी। उन्होंने कहा:

"ईरान की जन पार्टी एक महान पार्टी है—और यह इसके दुश्मनों तथा इसके दोस्तों दोनों का मत है; ईरान की 'संवैधानिक सरकार' के पिछले कुल पचास वर्षों में यही एकमात्र सर्वाधिक उच्च सिद्धान्तों पर आधारित और सर्वोत्कृष्ट संगठित पार्टी रही है। इसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट लक्षण यह है कि यह एक क्रान्तिकारी पार्टी है। ऐतिहासिक आवश्यकताओं के अनुरूप यह पार्टी अस्तित्व में आई। यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर कायम है और वैज्ञानिक विचारधारा तथा वैज्ञानिक विश्वदृष्टिकोण से इसका पथ-प्रदर्शन होता है। इसे इस बात का गर्व है कि यह जनता की शक्ति पर आधारित है और जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। चूंकि जनता की शक्ति अक्षय और अविनाशी है, इसलिये ईरान की जन पार्टी भी अमिट है और अपने ऐतिहासिक ध्येय को पूरा करने से इसे रोका नही जा सकता।"

उसके बाद अपने लाक्षणिक साहस और आशावादिता के साथ खसरो रौज़बेह ने उस समय का संकेत किया, जब "तूफ़ान आ जायेगा और सत्य की विजय होगी। ईरानी समाज के लिये भी वह दिन आयेगा, जब उसके लिये स्वतंत्रतापूर्वक इन समस्याओं पर विचार करना तथा अपनी राय प्रकट करना संभव होगा। वह दिन दूर नही है।"

गिरफ्तारी के बाद जेल में जो गद्दार हो गये थे, उनके बारे में रौज़बेह ने कहा: "डा० बहरामी ने अपने घृणास्पद पत्रों में जो कुछ कहा है, वह सफेद झूठ है... डा० यज़दी, इंजीनियर शरमिनी और अमानुल्ला कुरैशी जैसे व्यक्तियो के लिए, जो ईरान की जन पार्टी के सर्वाधिक प्रभावशाली

ग्रौर दवदबेवाले सदस्य थे, इस प्रकार की कमजोरी, डर ग्रौर पाखण्ड को प्रकट करना उचित नही है... इन व्यक्तियों का ग्राचरण, क्योंकि ग्रब वे साथी कहलाने के हकदार नहीं रहे, घृणास्पद है ग्रौर हम उसकी केवल निन्दा तथा तिरस्कार कर सकते हैं। हम उनके बारे में केवल इतना ही कह सकते हैं कि वे ग्रौर कुछ नही, बल्कि झूठे, ग्रधम, धोखेबाज ग्रौर धूर्त हैं।"

खुसरो रौजबेह जैसे ग्रादर्शप्रिय व्यक्तियों की महत ग्राध्यात्मिक शक्ति पर ग्रचरज किये बिना नही रहा जा सकता, जिन्होंने जिस ध्येय के लिये संघर्ष किया, उसे सब से बड़ा माना ग्रौर ग्रपने राजनीतिक ग्रादर्शों को पवित्र समझा। रौजबेह ने कहा, "मैं ग्रपने वैचारिक सिद्धान्तों का दृढ़ता से समर्थन करता हू ग्रौर कोई भी चीज मुझे उनसे विमुख नही कर सकती। राजनीतिक विश्वास मेरे लिये पवित्र है। मैं ग्रपने वचन, ग्रपने फ़र्ज़ का त्याग नही करूंगा। ईरान की जन पार्टी की सदस्यता के कार्ड पर मैंने ग्रपना जो हस्ताक्षर किया है, मैं उसका सम्मान करता हूं ग्रौर ग्रपने निजी हितों को पूरा करने ग्रथवा खतरे को टालने के उद्देश्य से मैं कभी ग़द्दारी नही करूंगा।

"यदि मुझसे कहा जाये कि वचन भंग करने के बदले मुझे स्वर्ग प्राप्त होगा, तो मैं इसे ग्रस्वीकार कर दूंगा, क्योंकि वहां भी मुझे शान्ति नही प्राप्त होगी।"

ईरान की जन पार्टी के बन्दी नेताग्रों में सबसे पहले निर्भयता के साथ इसका समर्थन करनेवाले ग्रडिग ईरानी कम्युनिस्ट नेता खुसरो ने इस प्रकार ग्रपना बयान दिया। उन्होंने कहा, "ग्रपने ऐतिहासिक फर्ज़ को पूरा करने पर मुझे गर्व है। पग-पग पर ग्रपने सम्मुख प्रस्तुत होनेवाले ख़तरों के बावजूद, मैं उस कार्य को पूरा करने के लिये ईरान में ही बना रहा, जिसे यजदी, बहरामी, कुरैशी ग्रौर शरमिनी जैसे व्यक्तियों ने विश्वासघातपूर्ण ढंग से त्याग दिया है... लड़ाई के दौरान खाई से भागकर मैंने संघर्ष का परित्याग नही किया ग्रौर ग्रब मैं सम्मान के साथ ग्रपने सभी कार्यों के बारे में जवाब दे सकता हूं।"

ख़ुसरो रौजबेह को जीवन ग्रौर उसके सौन्दर्य से प्यार था। उन्हें ग्रपनी जनता से स्नेह था ग्रौर उसकी दयनीय दशा में सुधार करने के लिये

उन्होंने यथाशक्ति सब कुछ किया। वह उसके सुखद भविष्य की आशा में जीवित रहे और उन्हें विश्वास था कि उसका भविष्य ख़ुशहाल होगा। परन्तु वह प्राण-रक्षा के लिये गद्दारी करने को प्रस्तुत नही थे।

इन आग्नेय शब्दों ने तेहरान के "क़िज़िल किला" जेल की अवसादकारी दीवारों को भेदकर ईरानी जनता के उज्ज्वल भविष्य के लिए संघर्ष को प्रज्वलित किया, जिसका रौज़बेह ने सपना देखा था। उन्हें मौत से कोई भय नहीं था; स्फटिक की भांति शुद्ध अन्तरात्मावाले इस व्यक्ति को केवल यही डर था कि यदि कहीं उसे मृत्यु-दण्ड न दिया गया तो साधारण जनता यही सन्देह करेगी कि बहरामी अथवा यज़दी की तुलना में ख़ुसरो रौज़बेह भी कोई बेहतर आदमी नही था और उन्ही को भांति उसने भी पार्टी और जनता के साथ विश्वासघात किया। इसी कारण अदालत मे उन्होंने घोषणा की: "अफ़सरों के संगठन के संस्थापक के रूप मे मैं मृत्यु का आलिंगन करना चाहता हूं।"

उन्होंने अपने तथा पहले गोली से उड़ा दिये गये अफसरो के विरुद्ध चलाये गये मुकदमे को ग़ैरक़ानूनी बताया। उन्होंने कहा: "न तो मैं और न वे अफसर तथा दूसरे व्यक्ति, जिन्हें राजनीतिक कार्यों के कारण सज़ा दी गई थी, अपराधी हैं; इसके प्रतिकूल हमने ईमानदारी के साथ अपने प्रिय देश की सेवा की है। न्यायपरायण और ईमानदार ईरानी जनता हमे दी गई सज़ा को अन्यायपूर्ण मानती है और वह अपने शहीदों को निर्दोष घोषित करेगी। आप ख़ुसरो रौज़बेह को अपराधी ठहरा सकते हैं, परन्तु मानवता, ईमानदारी, देशभक्ति, जनता के सुख के लिये निस्स्वार्थ समर्पण को लांछित नही कर सकते। ज्यो ही आप मुझे दण्डाज्ञा सुनायेंगे, मैं होंठों पर मुस्कान लिये दृढता के साथ उठूंगा तथा सम्माननीय न्यायाधीशो को धन्यवाद दूंगा..."

११ मई, १९५८ को यह ख़बर आग की तरह फैल गई कि भोर मे प्रख्यात ईरानी कम्युनिस्ट ख़ुसरो रौज़बेह को तेहरान के हशमतियह चांदमारी मैदान में गोली से उड़ा दिया गया। अपने मुकदमे की पूरी सुनवाई के समय की भांति, अपने जीवन के अन्तिम दिन भी अपने अन्य साथी अफ़सरों के समान रौज़बेह ने असाधारण साहस का परिचय दिया और अपना सर ऊंचा उठाये वीरतापूर्वक मृत्यु का आलिंगन किया। जिस दिन रौज़बेह को गोली मारी गई, उस दिन मशहूर पूंजीवादी अख़बार "इत्तिलात" ने लिखा: "मौत

ओक्ताविओ रेइज़ ओर्तिज़

चौथे दशक के अंत में ओक्ताविओ रेइज़ ओर्तिज़ नामक बारह साल का एक लड़का ग्वाटेमाला गणतंत्र की राजधानी ग्वाटेमाला नगर के एक मुद्रणालय में अप्रेंटिस के रूप में काम करने आया। उसने अभी प्राइमरी स्कूल की शिक्षा समाप्त की थी और उसके शिक्षक ने उसे अपना अध्ययन जारी रखने पर ज़ोर दिया, जिसकी दृष्टि में वह एक प्रतिभासम्पन्न और जिज्ञासु लड़का था। परन्तु यह संभव नहीं था। ओक्ताविओ के पिता, जो एक ग़रीब किसान थे और जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय ज़मीन के एक छोटे टुकड़े पर खेती करके किसी प्रकार जीवन-यापन करने में गुज़ार दिया था, घोर गरीबी के कारण गाव छोड़ने पर विवश हो गए थे।

के पहले जब ख़ुसरो रौज़बेह् से प्रचलित मजहबी रस्म पूरा करने को कहा गया, तो जिस प्रकार मामले की पूछताछ के समय उन्होंने बार-बार घोषित किया था, उसी प्रकार पुनः घोषणा की कि इस प्रकार की धार्मिक रस्मों की कोई जरूरत नही है और वह मजहब मे यकीन नही करते।"

ईरानी जनता के एक महान सपूत का इस प्रकार अन्त हुआ। अपने देश की कठिन वास्तविकताओं के बावजूद ख़ुसरो रौज़बेह् उन बुलन्दियो पर पहुच गये, जिससे वर्त्तमान युग में कम्युनिज्म के अग्रणी योद्धाओं मे उन्हे स्थान प्राप्त हो गया है।

उनके अमर पराक्रम से ईरान की भावी पीढियों को विचार उनके आदर्श के अनुरूप ढालने में सहायता प्राप्त होगी।
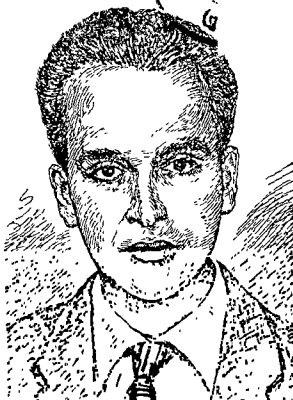
ओक्तावियो रेइज ओर्तिज

चौथे दशक के अंत में ओक्तावियो रेइज ओर्तिज नामक बारह साल का एक लड़का ग्वाटेमाला गणतंत्र की राजधानी ग्वाटेमाला नगर के एक मुद्रणालय में अप्रेंटिस के रूप में काम करने आया। उसने अभी प्राइमरी स्कूल की शिक्षा समाप्त की थी और उसके शिक्षक ने उसे अपना अध्ययन जारी रखने पर जोर दिया, जिसकी दृष्टि में वह एक प्रतिभासम्पन्न और जिज्ञासु लड़का था। परन्तु यह संभव नहीं था। ओक्तावियो के पिता, जो एक गरीब किसान थे और जिन्होंने अपने जीवन का अधिकाश समय जमीन के एक छोटे टुकडे पर खेती करके किसी प्रकार जीवन-यापन करने में गुजार दिया था, घोर गरीबी के कारण गाव छोड़ने पर विवश हो गए थे।

के पहले जब खुसरो रौजबेह् से प्रचलित मजहबी रस्म पूरा
गया, तो जिस प्रकार मामले की पूछताछ के समय उन्होंने
किया था, उसी प्रकार पुनः घोषणा की कि इस प्रकार
की कोई जरूरत नही है और वह मजहब में यकीन नही

ईरानी जनता के एक महान सपूत का इस प्रकार
देश की कठिन वास्तविकताओं के बावजूद खुसरो रौज़बे
पर पहुच गये, जिससे वर्त्तमान युग में कम्युनिज़्म के
उन्हे स्थान प्राप्त हो गया है।

उनके अमर पराक्रम से ईरान की भावी पीढियों
आदर्श के अनुरूप ढालने में सहायता प्राप्त होगी।

सरकार ने अपनी वर्गीय सीमितता के बावजूद जनसमूह के दबाव से अनेक सामाजिक सुधारों को लागू किया। श्रम संहिता स्वीकार की गई और ट्रेड-यूनियनों में मजदूरों के शामिल होने तथा हड़ताल करने का अधिकार स्वीकार किया गया।

ओक्तावियो रेइज़ उस समय 'वाइरन' नामक एक बड़े मुद्रणालय में काम कर रहे थे और उन्होंने वहां मुद्रक यूनियन संगठित करने में सहायता की। यह काम कर लेने के बाद उन्होंने तथा अन्य सक्रिय सदस्यों ने एक बड़ा मुद्रक संघ कायम करने पर ध्यान दिया। इसके फलस्वरूप १९४८ में छापेखानों में काम करनेवाले मजदूरों की यूनियन बन गयी, जो अन्य यूनियनों के साथ ग्वाटेमाला के श्रम संघ में शामिल हुई और ओक्तावियो रेइज़ इन दोनों संघों मे चुने गये।

मजदूर आन्दोलन के नेताओं ने अपने लिए जो महत्त्वपूर्ण ध्येय निर्धारित किये, उनमें एक था अपने अधिकारों के लिए संघर्ष में मेहनतकश लोगों की एकता की उपलब्धि। ओक्तावियो ने ट्रेड-यूनियन आन्दोलन मे अवसरवादी प्रवृत्तियों का जोरों से विरोध किया, जिससे अपनी पातों को एकजुट करने मे मजदूरों के सम्मुख बाधाएं प्रस्तुत होती थी।

१९४७ मे ग्वाटेमाला का जनवादी युवा संघ क़ायम हुआ, जिसकी स्थापना में ओक्तावियो का बड़ा हाथ था, जो १९५२ तक उसके नेताओं में एक थे।

जिस मुद्रणालय में ओक्तावियो काम करते थे उसके प्रबन्धकों ने इस "झंझट पैदा करनेवाले" कर्मी से मुक्त होने का निर्णय किया और अपने सहकर्मियों के विरोध के बावजूद उन्हे नौकरी से हटा दिया गया। अब उन्होंने इस आशा से किसी सरकारी कार्यालय में नौकरी की खोज शुरू की कि वहां वह प्रतिक्रियावादी मालिकों की स्वेच्छाचारिता से मुक्त होगे। अन्ततः अयस्क-खनन उद्योग के प्रशासकीय दफ़्तर में उन्हें काम मिल गया। इसके साथ ही उन्होंने ग्वाटेमाला के ट्रेड-यूनियन तथा युवाजन के आन्दोलन और क्रांतिकारी कार्यवाही पार्टी में अपना काम जारी रखा।

बात १९४९ की जुलाई की है, जब प्रतिक्रियावादी फ़ौजशाही ने फौजी विप्लव करने की कोशिश की। ग्वाटेमाला सेना के कमांडर फ़्रांसिस्को जैवियर अराना को भी इस षड्यंत्र मे फांस लिया गया था। इसके विरोध में नागरिकों की टुकड़िया उभर कर सामने आ गई और जो लड़ाई शुरू

अपने गाव से उखड़कर वह अपने बड़ परिवार के साथ राजधानी में आ गये थे। परन्तु इससे दुर्दिन का अन्त न हुआ। परिवार की सहायता के लिए ओक्तावियो को कच्ची उम्र में ही काम करना पड़ा।

अध्यवसायी और कर्त्तव्यनिष्ठ ओक्तावियो ने शीघ्र ही छपाई का काम सीख लिया और कई साल तक उन्होंने यही काम किया। चित्रकला में इस युवा श्रमिक की असाधारण योग्यता की ओर छापेखाने के साथियों का ध्यान आकृष्ट हुआ और उन्होंने उसे प्रोत्साहन प्रदान किया। बचपन में भी ओक्तावियो ने कुछ अच्छे चित्र तैयार किये थे। अब उनके चित्र समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में छपने लगे। समय गुजरने के साथ ही वह पेशेवर चित्रकार हो गए, और इस काम को वह बहुत पसंद करते थे। परन्तु बहुत दिनों तक उन्हें इसका अभ्यास करने का मौका नहीं मिला। तीव्र घटनाओं के कारण वह राजनीतिक संघर्ष में खिंच आये, और यही वह महान ध्येय बन गया, जिसमें उन्होंने इसके बाद अपने जीवन का हर दिन लगाया।

१९३१ के बाद से देश पर बहुत ही सख़्ती से शासन करनेवाले अत्याचारी जार्ज उबिको के विरुद्ध संघर्ष के लिए जनता सन्नद्ध हो रही थी। क्रांति सन्निकट थी। ओक्तावियो जनवादी आन्दोलन में शामिल हो गये और शुरू में जन मुक्ति मोर्चे और फिर क्रांतिकारी कार्यवाही पार्टी के सदस्य बन गये, जिसमें प्रगतिशील बुद्धिजीवी, क्रांतिकारी भावना रखनेवाले मजदूर, छोटे दफ़्तरी कर्मचारी और छात्र एकजुट थे।

१९४४ के जून में उबिको को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा, परन्तु शासन-प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। तानाशाह उबिको के उत्तराधिकारी जनरलों के त्रिशासक-मंडल ने उसी स्वेच्छाचारी नीति का अनुसरण किया। २० अक्तूबर, १९४४ को सशस्त्र विद्रोह के फलस्वरूप प्रतिक्रियावादी सरकार का तख़्ता उलट दिया गया।

ग्वाटेमाला के इतिहास में २० अक्तूबर, १९४४ की तिथि एक नये काल – देश के वास्तविक मुक्ति-संघर्ष के काल की शुरुआत की तिथि के रूप में मशहूर है। इस तिथि को शुरू हुआ सशस्त्र विद्रोह ग्वाटेमाला की अक्तूबर क्रान्ति के रूप में विख्यात है। ११ मार्च, १९४५ को उद्घोषित संविधान में इसके राजनीतिक अंतर्य मूर्त हुए। राष्ट्रपति आरेवालो की

सरकार ने अपनी वर्गीय सीमितता के बावजूद जनसमूह के दबाव से अनेक सामाजिक सुधारों को लागू किया। श्रम संहिता स्वीकार की गई और ट्रेड-यूनियनों में मजदूरों के शामिल होने तथा हड़ताल करने का अधिकार स्वीकार किया गया।

ओक्ताविओ रेइज़ उस समय 'बाइरन' नामक एक बड़े मुद्रणालय में काम कर रहे थे और उन्होंने वहां मुद्रक यूनियन संगठित करने में सहायता की। यह काम कर लेने के बाद उन्होंने तथा अन्य सक्रिय सदस्यों ने एक बडा मुद्रक संघ कायम करने पर ध्यान दिया। इसके फलस्वरूप १९४८ में छापेखानों में काम करनेवाले मजदूरों की यूनियन बन गयी, जो अन्य यूनियनों के साथ ग्वाटेमाला के श्रम सघ मे शामिल हुई और ओक्ताविओ रेइज़ इन दोनो संघों मे चुने गये।

मजदूर आन्दोलन के नेताओं ने अपने लिए जो महत्त्वपूर्ण ध्येय निर्धारित किये, उनमें एक था अपने अधिकारों के लिए संघर्ष मे मेहनतकश लोगों की एकता की उपलब्धि। ओक्ताविओ ने ट्रेड-यूनियन आन्दोलन में अवसरवादी प्रवृत्तियों का जोरों से विरोध किया, जिससे अपनी पातो को एकजुट करने में मजदूरों के सम्मुख बाधाएं प्रस्तुत होती थी।

१९४७ में ग्वाटेमाला का जनवादी युवा संघ कायम हुआ, जिसकी स्थापना में ओक्ताविओ का बड़ा हाथ था, जो १९५२ तक उसके नेताओं में एक थे।

जिस मुद्रणालय में ओक्ताविओ काम करते थे उसके प्रबन्धकों ने इस "झंझट पैदा करनेवाले" कर्मी से मुक्त होने का निर्णय किया और अपने सहकर्मियों के विरोध के बावजूद उन्हे नौकरी से हटा दिया गया। अब उन्होंने इस आशा से किसी सरकारी कार्यालय में नौकरी की खोज शुरू की कि वहा वह प्रतिक्रियावादी मालिकों की स्वेच्छाचारिता से मुक्त होंगे। अन्ततः अयस्क-खनन उद्योग के प्रशासकीय दफ़्तर में उन्हें काम मिल गया। इसके साथ ही उन्होंने ग्वाटेमाला के ट्रेड-यूनियन तथा युवाजन के आन्दोलन और क्रांतिकारी कार्यवाही पार्टी में अपना काम जारी रखा।

बात १९४९ की जुलाई की है, जब प्रतिक्रियावादी फौजशाही ने फ़ौजी विप्लव करने की कोशिश की। ग्वाटेमाला सेना के कमांडर फ़ासिस्को जैवियर अराना को भी इस षड्यंत्र में फास लिया गया था। इसके विरोध में नागरिकों की टुकड़ियां उभर कर सामने आ गईं और जो लड़ाई शुरू

हुई, उसमें लेफ़्टिनेंट-कर्नल कार्लोस पाज तेजादा के नेतृत्व में इन नागरिक टुकड़ियों ने विजय प्राप्त की। विद्रोह को दबा दिया गया। ओक्तावियो रेइज ने एक नागरिक टुकड़ी में शामिल होकर षड्यन्त्रकारियों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी।

१९४७ से ग्वाटेमाला के मजदूर, छात्र और प्रगतिशील बुद्धिजीवी मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के अध्ययन में गहरी अभिरुचि लेने लगे। जनवादी पार्टियों और ट्रेड-यूनियनों के सदस्यों ने मार्क्सवादी अध्ययन-गोष्ठियाँ क़ायम कीं; समाजवादी विचारों में अभिरुचि लेनेवाली मण्डलियाँ अस्तित्व में आ गईं। ओक्तावियो रेइज ने उस समय मार्क्सवादी अध्ययन-गोष्ठियों को कायम करने में हाथ बंटाया, जिन्होंने मिलकर समाजवादी संघ की स्थापना की। इसमें विश्वविद्यालय के छात्र, अध्यापक और श्रम संघ के मजदूर सदस्य शामिल थे। इसके अलावा समाजवादी संघ से वे मार्क्सवादी गोष्ठियाँ भी सम्बद्ध हो गयीं, जो क्रांतिकारी कार्यवाही पार्टी के अन्दर पैदा हुई थीं।

१९४९ के पतझड़ में रेइज और अन्य साथियों ने एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया। वे एक नयी, मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी कायम करने के लिए क्रान्तिकारी कार्यवाही पार्टी से अलग हो गए।

२८ सितम्बर, १९४९ को ग्वाटेमाला की कम्युनिस्ट पार्टी की पहली कांग्रेस शुरू हुई। ओक्तावियो रेइज इसकी केन्द्रीय समिति के एक सदस्य चुने गए और युवकों के बीच काम के इंचार्ज बनाये गए। उस समय से वह ग्वाटेमाला के युवक आन्दोलन के एक प्रमुख नेता हो गए। शीघ्र ही वह ग्वाटेमाला की युवा कम्युनिस्ट लीग की कार्य-समिति के सदस्य चुन लिये गए, जिसने कृषक और साम्राज्यवाद-विरोधी क्रान्ति के लिए देश के युवकों को एकजुट किया।

क्वेटज़ाल ने अपने पंख फैलाये

१९ जून, १९५२ को ग्वाटेमाला की जनता ने एक महान विजयोत्सव मनाया। राष्ट्रपति जाकोबो आर्बेन्ज ने कृषि सुधार सम्बन्धी "क़ानून नम्बर ९००" पर हस्ताक्षर किये जिसके फलस्वरूप किसानों को ज़मीन प्राप्त हुई। एक लाख ग़रीब किसानों और खेत-मजदूरों तथा उनके परिवारों को

जमीन के अपने-अपने टुकड़े सुलभ हो गए। सरकार ने उन्हें ९० लाख क्वेटजाल (१ क्वेटजाल=१ अमरीकी डालर) ऋण में दिये। मजदूरों की पगार में वृद्धि हुई। मेहनतकश लोग सुसंगठित हुए और उसी साल ग्वाटेमाला का ग्राम मजदूर महासंघ कायम हो गया।

ग्वाटेमाला की कम्युनिस्ट पार्टी भी इस काल में शक्ति और संख्या की दृष्टि से विकसित हुई। कृषि-सुधार को कार्यान्वित करने में तथा ग्वाटेमाला की क्रान्ति के साम्राज्यवाद-विरोधी और जनवादी अन्तर्य को पुष्ट बनाने में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बहुत ही सक्रिय थे। १९५२ के दिसम्बर में हुई दूसरी कांग्रेस में कम्युनिस्ट पार्टी का नाम ग्वाटेमाला की मजदूर पार्टी रखा गया। रेइज ने इस कांग्रेस के काम में भी भाग लिया।

देश का जनवादी शासन दस साल तक क़ायम रहा। लोगों ने कहा कि आज़ादी का उनका प्रतीक—क्वेटजाल पक्षी—गुलामी में नहीं रह सकता और संघर्ष के लिए अपने पंख फैला रहा है।

साम्राज्यवादी साज़िश

ग्वाटेमाला की सरकार की स्वतंत्र नीति से सशक्त उत्तर अमरीकी "युनाइटेड फ्रुट" कम्पनी का गुस्सा उसके विरुद्ध भड़क उठा। कृषि सुधार से इसके हितों को चोट पहुंची थी; उसकी परती जमीनें उससे ले ली गईं—निस्सन्देह, मुआवजा चुकाने के बाद। अमरीकी विदेश विभाग और केन्द्रीय गुप्तचर संगठन "युनाइटेड फ्रुट" कम्पनी की सहायता को आ गए। मिथ्या निन्दा, अपशब्द, डांट-डपट और ब्लैकमेल का इस्तेमाल करते हुए ग्वाटेमाला की सरकार के विरुद्ध कट्टर आन्दोलन शुरू किया गया। साथ ही आर्बेन्ज सरकार का तख़्ता उलट देने के उद्देश्य से हस्तक्षेप की खुली तैयारियां की गईं। संयुक्त राज्य अमरीका ने अपने फ़ौजी-राजनीतिक गुटों—अमरीकी राज्यों और मध्य-अमरीकी राज्यों के संगठनों द्वारा लैटिन अमरीका के अन्य देशों की सरकारों पर बहुत दबाव डाला। नियमित सेना में प्रतिक्रियावादी साजिश रची गई; इसके अलावा पड़ोसी देश होंडुरास में ग्वाटेमालाई फौज के एक भूतपूर्व कर्नल देशद्रोही कस्तील्यो अर्मास के नेतृत्व में भाड़े के टट्टुओं की प्रतिक्रान्तिकारी सेना को खड़ा करने के लिए साम्राज्यवादियों ने ६० लाख डालर की धन-राशि प्रदान की। १७ जून, १९५४ को

उक्त गद्दार की जरख़रीद सेना को ग्वाटेमाला पर हमला करने का आदेश दिया गया। यह हमला ग्वाटेमाला की सेना में ग़द्दार अफ़सरों के लिए राजधानी में विद्रोह करने का संकेत था।

सख्या की दृष्टि से छोटी ग्वाटेमालाई मजदूर पार्टी ने इस संकट को टालने के लिए कोई कोशिश उठा न रखी। ज्योंही इस होनेवाले आक्रमण की सूचना मिली, पार्टी की केन्द्रीय समिति ने आक्रमणकारी के विरुद्ध प्रतिरोध संगठित करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को होंडुरास की सीमा से लगे जिलों मे भेजा। पार्टी ने बड़े बन्दरगाह प्वेर्टो-बैरियस में देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन का नेतृत्व किया और आक्रमणकारियो का सामना करने के निमित्त सशस्त्र टुकड़ियां संगठित की। इन देशभक्तों ने "सियेस्ता द-त्रुजिल्यो" जलपोत से उतारे गये भाड़े के टट्टुओं की टुकड़ी को ध्वस्त किया। अन्य प्रदेशो मे भी ग्वाटेमालाई मजदूर पार्टी ने इसी प्रकार की प्रतिरोधात्मक टुकड़ियों को सगठित किया।

हस्तक्षेप शुरू होने के पूर्व ही, पार्टी के निर्देश पर ओक्ताविओ रेइज को होंडुरास की सीमा पर चित्रवीमुला प्रान्त में सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ बनाने के लिए भेजा गया था। पार्टी की स्थानीय शाखा की सहायता से उन्होंने जन फ़ौजी टुकड़िया कायम की और उन्हें गद्दार अफसरों को धोखा देकर प्राप्त किये हथियारों से लैस किया। उन्होंने इन टुकड़ियों के साथ सम्बद्ध मजदूरों और किसानों को फ़ौजी प्रशिक्षण प्रदान करने की भी व्यवस्था की। जानबूझकर सीमा से अपनी फ़ौजें हटा लेनेवाले गद्दार अफसरों की हिमायत से जब कस्तील्यो अर्मास के फ़ौजी गिरोह चिक्वीमुला पहुंचे, तो उन्हें जन फ़ौजी टुकड़ियों के जोरदार प्रतिरोध का सामना करना पडा। हथियारो और गोला-बारूद की कमी के बावजूद नगर के रक्षक जमे रहे और उन्होंने हमलावरों के सभी आक्रमणों को विफल कर दिया।

२२ जून को आक्रमणकारियों ने बमवर्षक विमानों का इस्तेमाल किया। उनका हवाई प्रतिरोध न हो सका, क्योंकि अमरीकी विदेश विभाग की बहिष्कार और नाकेबन्दी की नीति के कारण रक्षा के उद्देश्य से फ़ौजी विमानों को प्राप्त करना ग्वाटेमालाई सरकार के लिए असंभव हो गया था। अमरीकी बमवर्षक विमानों ने नगर को भूमिसात कर दिया और दूसरे दिन वह आक्रमणकारियों के हाथ में चला गया।

ओक्तावियो रेइज़ और उनके साथी पार्टी के नेताओं को इस घटनाक्रम की सूचना देने के लिए तेज़ी से राजधानी पहुंचे। लेकिन कुछ भी किया नही जा सकता था। उच्च पदस्थ फ़ौजी अफसरों की गद्दारी से राष्ट्रपति आर्बेन्ज अपदस्थ कर दिये गए और शासन-सूत्र एक फौजी गिरोह के हाथ में चला गया। ३ जुलाई, १९५४ को कस्तील्यो अर्मास का फ़ौजी गिरोह राजधानी में दाखिल हुआ।

नितान्त गोपनीय कार्य

ग्वाटेमालाई मज़दूर पार्टी को फौरन गैरकानूनी घोषित कर दिया गया; कम्युनिस्टों का बर्बरतापूर्वक पीछा किया जाने लगा। अपनी अन्तिम कांग्रेस मे ग्वाटेमालाई मज़दूर पार्टी ने जनवादी शासन की पराजय की आशंका को पहले से ही भापने और ग़ैरकानूनी परिस्थितियों में संघर्ष को जारी रखने की तैयारी न करने की अपनी भूल स्वीकार की। इस भूल का उसे भारी मूल्य चुकाना पड़ा। सैकड़ों कम्युनिस्ट कस्तील्यो अर्मास के फौजी गिरोहों और फिर से उभरी प्रतिक्रिया द्वारा शुरू की गई आतंकपूर्ण कार्रवाइयों के शिकार हो गए। अनेक देशभक्तों ने मेक्सिको के दूतावास मे शरण ग्रहण की और उन्हे देश छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। उनमें ओक्तावियो रेइज़ भी शामिल थे। उन्हें मातृभूमि छोड़ते हुए बडी ठेस लगी, परन्तु वह यथासंभव शीघ्र वापस आने का संकल्प किये हुए थे।

वास्तव मे वह बहुत समय तक बाहर नही रहे। ज्योंही उन्होंने आवश्यक सम्पर्क स्थापित कर लिया (जनवादी शासन का तख़्ता उलटे जाने के पाच महीने बाद), वह गैरकानूनी रीति से ग्वाटेमाला वापस आ गए। सीमा पर पहाड़ों को पार करने की कठिनाइयों के साथ-साथ पुलिस के हाथों में पडने का खतरा भी था। ओक्तावियो पार्टी नेताओं में वह पहले आदमी थे, जिन्होंने उत्प्रवास से वापस आकर अपना जुझारू काम शुरू किया।

पार्टी की केन्द्रीय समिति ने उन्हें संगठनात्मक काम सौंपा था। उनका एक मुख्य कार्य ग़ैरकानूनी ढंग से कम्युनिस्टों और अन्य जनवादियों के ग्वाटेमाला पहुंचने तथा बाहर से मार्क्सवादी-लेनिनवादी और प्रचारात्मक साहित्य को लाने की व्यवस्था करना था। उसके बाद से ओक्तावियो का नाम अब नही सुनाई पड़ता था। गोपनीय ढंग से काम करने के कारण

उनका नाम "कामरेड पेपे" रख दिया गया था। गैरकानूनी रूप से स्वदेश वापस आनेवाले बीसियों कम्युनिस्टों ने बड़ी कृतज्ञता के साथ अपनी वापसी की व्यवस्था करनेवाले कामरेड पेपे के प्रति आभार प्रकट किया। मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के महान विचारो से जन समुदाय को अवगत करानेवाला काफ़ी साहित्य ग़ैरकानूनी रीति से कामरेड पेपे द्वारा सोचे गए गुप्त मार्गों से ग्वाटेमाला पहुंचने लगा। कामरेड पेपे ने इस कठिन और दायित्वपूर्ण काम को पूरा करने में दिन प्रतिदिन अपने जीवन को ख़तरे मे डाला। परन्तु उनके परिश्रम और प्रयास के फलस्वरूप पार्टी ने शक्ति ग्रहण की, क्योंकि अनेक देशभक्त स्वदेश वापस लौट सके और पार्टी तथा देशभक्त युवा मजदूर संगठन, जिस नाम से उस समय ग्वाटेमालाई युवा कम्युनिस्ट लीग मशहूर थी, की पातों मे सैकड़ों नये सदस्य शामिल हो गए।

ग्वाटेमालाई "प्राव्दा" का प्रकाशन

पार्टी काम के वढ़ते जाने के कारण पार्टी के एक अख़बार को निकालना अत्यंत आवश्यक हो गया था। ग्वाटेमाला की जनता को कम्युनिस्ट जो कुछ बता सकते थे, उसकी सूचना पाने, सोवियत सघ के बारे में, साम्राज्यवाद और पूंजीवाद तथा औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध बन्धु-राष्ट्रों के सघर्ष के बारे में सच्ची बातों की जानकारी प्राप्त करने का अधिकार था।

पार्टी की केन्द्रीय समिति ने पार्टी के मुखपत्र «Verdad» का नियमित प्रकाशन शुरू करने का निर्णय किया, जिसका अर्थ रूसी शब्द "प्राव्दा" की भाति "सत्य" है। एक मुद्रक के रूप मे कामरेड पेपे का अनुभव उनके बहुत काम आया। केन्द्रीय समिति द्वारा सौंपे गए इस काम को पूरा करने मे उन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया। १९५४ के अन्त में ही मजदूर, किसान और छात्र मिमियोग्रैफ के जरिये छपे इस छोटे पत्र को पढ़कर इसे एक-दूसरे के हाथ बढ़ाते जाते, जिससे जन समुदाय ग्वाटेमाला की कम्युनिस्ट पार्टी के जुझारू विचारों की जानकारी प्राप्त होती थी। परन्तु इसकी कुछ ही प्रतिया प्रकाशित होती थी और पढने मे कठिनाई होती थी। पार्टी के मुखपत्र को सुधारना आवश्यक था। १९५६ के अक्तूबर में केन्द्रीय समिति ने कामरेड पेपे से छपा हुआ अखबार प्रकाशित करने की व्यवस्था करने को कहा।

केन्द्रीय समिति के राजनीतिक आयोग के साथियों ने यह स्वीकार किया कि "यह काम आसान नहीं है। परन्तु हमे यक़ीन है कि आप इसकी व्यवस्था कर सकते हैं।"

कामरेड पेपे ने कहा, "ठीक है, हमारा अख़बार अब छपकर ही निकलेगा।"

कई दिनों तक किसी ने भी – यहां तक कि उनके घनिष्ठ मित्रों और सम्बन्धियों तक ने भी पेपे को न तो देखा और न उनके बारे में कुछ सुना। इस सम्बन्ध में यह भी निश्चित था कि वह अपने मा-बाप के घर बहुत ही कम और यदा-कदा जाया करते थे, क्योंकि वहां पुलिस उन्हें पकड़ने की ताक में मौजूद रह सकती थी। वह जानते थे कि उनके मा-बाप की आर्थिक स्थिति बहुत ही ख़राब है, परन्तु वह अपना सारा समय पार्टी के काम में लगाते थे और इस कारण आर्थिक दृष्टि से उनकी कोई सहायता न कर सके।

बहुत दुःख से उन्होंने अपने साथियों से कहा, "मै उन्हें केवल सलाह दे सकता हूं।"

एक रात अचानक पेपे गुप्त बैठक में पहुंच गए और अपनी जैकेट के भीतर से ताजे छपे अख़बार का बंडल निकालकर उन्होंने अपने साथियों को दिखाया।

"यह रहा «Verdad», हमारा "प्राव्दा"! साथियो, इसे पढ़िए। इसकी आकृति छोटी है और सचित्र नहीं है, और हम जैसी चाहते थे, वैसी अच्छी छपाई भी नहीं है – परन्तु हैंड प्रेस से जितनी अच्छी छपाई हो सकती थी, उतना अच्छा इसे छापने की हमने कोशिश की। फिर भी प्रारम्भ के लिए यह अच्छा है। मुख्य बात यह है कि अब हम अपने अख़बार की अधिक प्रतियां छाप रहे हैं। कल हज़ारों व्यक्ति हमारे मुद्रित अखबार के प्रथम अंक को पढ़ेंगे। अब हम इसपर सोच-विचार करें कि इसे सुबह ही पार्टी-संगठनों तक कैसे पहुंचाया जाये।"

जिस दिन उन्हें यह काम सौंपा गया था, उस दिन से अब तक पेपे और उनकी सहायता करनेवाले दो कम्युनिस्ट क्षण भर के लिए भी नही सो पाये थे। सबसे पहले उन्होंने विभिन्न छापेख़ानों से थोड़ा-थोड़ा करके टाइप जमा किया। उसके बाद उन्होंने मैटर कम्पोज किया और पृष्ठों को तैयार किया, हेडिंगें भी तैयार कीं। इसके बाद प्लेटों को उठाकर एक मित्र

के घर ले जाना पड़ा जहा हैंड प्रेस के अलग-अलग किये हुए पुर्जे छिपाकर रखे गये थे। और कागज़ पाने की समस्या कैसे हल होगी? जब सभी दूकानदारों को सख्त चेतावनी दे दी गई थी कि पुलिस की अनुमति के बिना किसी भी स्थिति में न बेचा जाये तो भला अख़बारी काग़ज का स्टाक पाना कैसे सभंव था?

पेपे ने बताया, "हमने गुप्त प्रादेशिक समिति अपना काम करती रही' नामक एक रूसी पुस्तक में अपनी कुछ समस्याओं का समाधान पाया। कई दिन पहले मैंने इसे फिर पढ़ा। फ्योदोरोव का भला हो, वह कई उपयोगी बातें जानते थे! महत्त्वपूर्ण बात है किसी काम को शुरू कर देना। रूसी साथी केवल फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध युद्ध के दौरान नही, बल्कि उसके बहुत पहले जारशाही के अन्तर्गत, जब परिस्थिति बहुत अधिक विषम थी, इस प्रकार का काम कर लेने में सक्षम थे। यदि वे ऐसा कर सकते थे, तो हम भी कर सकते हैं।"

इस प्रकार गैरकानूनी रीति से हैंड प्रेस द्वारा मुद्रित «Verdad» अख़बार अस्तित्व में आया और ग्वाटेमाला के मेहनतकश लोगो का जुझारू प्रचारक और सगठक बन गया। ओक्तावियो रेइज उर्फ कामरेड पेपे इसके प्रवन्धक, कम्पोज़ीटर, मुद्रक और वितरक सभी थे। ग्वाटेमालाई मेहनतकश लोगों के संघर्ष के बारे मे सच्ची खबरें आबादी के बहुत व्यापक तबक़ों तक पहुँचने लगी।

ग्वाटेमालाई मज़दूर पार्टी ने «Verdad» के बाद «El Militante» (योद्धा) नामक संगठनात्मक बुलेटिन तथा «Experiencias» (अनुभव) नामक विचारधारात्मक पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू किया। और यद्यपि ओक्तावियो रेइज़ के नाम से लेख प्रकाशित नही होते थे, परन्तु बहुतेरे कम्युनिस्ट जानते थे कि पार्टी प्रेस को संगठित करने में उन्होंने कितनी बड़ी भूमिका अदा की थी।

१९६२ के शुरू में ग्वाटेमालाई जनता ने तानाशाही के विरुद्ध अपने संघर्ष को तीव्र बना दिया। पूरे मार्च और अप्रैल मे राजधानी में बड़े प्रदर्शन हुए: पुलिस के सिपाहियों तथा टामी और मशीन गनों से लैस सैनिकों के विरुद्ध मजदूर, कर्मचारी और अपने शिक्षकों के साथ-साथ कालेजों तथा हाई स्कूलों के छात्र निडर आगे आते-जाते थे। सड़कों पर बैरीकेड दिखाई पड़ने लगे। ग्रामीण क्षेत्रों में इसके साथ ही छापेमार

आन्दोलन शुरू हो गया। १३ नवम्बर, १६६० को कई फ़ौजी टुकड़ियों में जो विद्रोह फूट पड़ा था, उसके दिवंगत नेता के सम्मान में जिस छापेमार डिवीज़न का नाम "अलेजान्द्रो द-लियों—१३ नवम्बर छापेमार मोर्चा" रखा गया था, उसने ग्वाटेमाला के उत्तर-पूर्वी भाग में अपनी फ़ौजी कार्रवाई शुरू कर दी। १६४४ की क्रान्ति के सम्मान में एक अन्य छापेमार दस्ते का नाम "२० अक्तूबर छापेमार मोर्चा" रखा गया और इसका नेतृत्व उसी देशभक्त कर्नल कार्लोस पाज़ तेजादा ने किया, जिन्होंने १६४६ में प्रतिक्रान्तिकारी विद्रोह को कुचल दिया था। १६४६ की भांति कामरेड पेपे इसी दस्ते में शामिल होकर लड़े।

उक्त मोर्चे की ओर से प्रकाशित घोषणापत्र में प्रतिक्रियावादी इदीगोरस फुएन्तेस सरकार का तख़्ता उलट देने का आह्वान किया गया था। इसके एक अंश में कहा गया था: "धैर्यवान और दीर्घकाल से उत्पीड़ित ग्वाटेमालाई जनता ने इदीगोरस के शासन के पापाचार, उत्पीड़न, अपराध और गद्दारी को यथासंभव शान्तिपूर्ण और वैध तरीको से समाप्त करने की पूरी कोशिश की, परन्तु इस दमनकारी तानाशाह और उसके गिरोह ने जनता पर अधिकाधिक अत्याचार करने की अपनी पुरानी नीति क़ायम रखी। इस स्थिति में एकमात्र रास्ता विद्रोह है..."

"१३ नवम्बर छापेमार मोर्चे" की सहायता के लिए "२० अक्तूबर छापेमार मोर्चे" का एक देशभक्त दस्ता राजधानी से वहा भेजा गया। इस दस्ते में ओक्तावियो रेइज़ भी थे। १३ मार्च को इस दस्ते ने राजधानी से करीब ७५ किलोमीटर दूर ग्रेनादोज म्युनिसिपल सीमा के अन्तर्गत ग्वाटेमाला—कोवान मार्ग पर पड़ाव डाला। अचानक "गार्दिया द-होनोर" रेजीमेन्ट की पैदल कम्पनी ने वहा इसे घेर लिया। संख्या की दृष्टि से बड़ी और बेहतर हथियारों से लैस शत्रु ने टामी तथा मशीनगनों से गोलियों और सुरंग-बमों की बौछार कर दी, जिसके फलस्वरूप छापेमारों को भारी क्षति उठानी पडी। उन्होंने छोटे-छोटे समूहों मे घेरेबन्दी को तोड़ने की कोशिश की, परन्तु बहुतेरे भाग निकलने में असफल रहे।

अफसरों द्वारा उत्तेजित सैनिकों ने देशभक्तों पर वहशियाना प्रतिशोध ढाया। ६ छापेमार अपने छिपने के स्थान से जब बाहर निकले तो मशीनगन से उन्हें भून दिया गया और गंडासों से उनकी लाशों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गए। दूसरे दिन कोंकुआ नगर के इर्द-गिर्द

को ढूंढते हुए सैनिकों के दल ने चार अन्य छापेमारों की हत्या की। तीन पकड़े गए देशभक्त "भागने का प्रयास करते समय" मार डाले गए। उनकी लाशों को इस प्रकार टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया था कि उनके सम्बन्धी भी उन्हें पहचान न सके।

ग्वाटेमालाई जनता की स्वतंत्रता और सुख के लिए संघर्ष करनेवालों के साथ प्रतिक्रियावादियों ने इस प्रकार का नृशंस व्यवहार किया। २० मई, १९६२ को «Verdad» ने उस असम संघर्ष मे १३ और १४ मार्च को शहीद हुए देशभक्तों के पराक्रम के प्रति इन शब्दों मे श्रद्धांजलि अर्पित की थी: "जिन्होंने पहाड़ों में हमारे शानदार फरहरे को, उस फरहरे को जिसकी मर्यादा बहुतों ने बनाये रखी, ऊंचा उठाया, वे पक्के क्रान्तिकारी थे। जो लोग ग्वाटेमालाई जनता के लिए स्वतंत्रता, प्रगति और न्याय चाहते हैं, उन्हें संघर्ष में शामिल होने के लिए इन शहीदों के नामों से प्रेरणा प्राप्त होगी। «Verdad» तेरह योद्धाओं के अमर नाम प्रकाशित कर रहा है। नामों की सूची महान साथी और जनवाद तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के निष्ठावान योद्धा, पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य ओक्तावियो रेइज़ के नाम से शुरू होती है।

ग्वेटज़ाल बन्धन-मुक्त होगा

१९६२ के वसंत के संकट के बाद इदीगोरस फ़ुएन्तेस बहुत दिनों तक पदारूढ़ न रह सका। प्रतिक्रियावादियों ने उसे "बहुत कमज़ोर" समझा। ३० मार्च, १९६३ को युद्ध-मंत्री कर्नल पेरालता आसुर्दिया ने राष्ट्रपति के त्यागपत्र की घोषणा की। पेरालता आसुर्दिया के नेतृत्व मे ही जिसने जन संघर्ष को कुचल देने में अपने कारनामों की डींग मारी, एक फौजी परिषद ने शासन-सूत्र अपने हाथ में ले लिया। १९६२ के मार्च और अप्रैल में उसी के आदेश पर सेना और पुलिस ने पचास से अधिक देशभक्तों को मार डाला और कई सौ देशभक्तों को घायल कर दिया। उसकी सरकार ने ऐसे कानूनों को पास किया, जिन्हें इदीगोरस फ़ुएन्तेस की तानाशाही के दौरान कांग्रेस ने भी अस्वीकार कर दिया था। ऐसा ही एक कानून था "लोकतांत्रिक संस्थाओं की रक्षा का कानून", जो लोकतंत्र की वास्तविक धारणा पर मज़ाक था, जिसके अन्तर्गत कम्युनिस्ट संगठनों की सदस्यता के लिए दस साल तक

के कारावास दण्ड की व्यवस्था की गई थी। परन्तु ग्वाटेमाला की जनता इस प्रकार के बर्बर जुल्म से आतंकित होनेवाली नही है। वह अधिकाधिक स्पष्ट रूप मे यह समझने लगी है कि प्रबल, अथक संघर्ष के द्वारा ही लोकतंत्र को फिर स्थापित किया जा सकता है, और वह संघर्ष दिन प्रति दिन प्रबल होता जा रहा है।

पेरालता आसुर्दिया ने अनेक बार घोषणा की कि छापेमार आन्दोलन को कुचल दिया गया है। यह सर्वथा झूठी बात थी। ग्वाटेमालाई देशभक्त आज भी सक्रिय हैं और उनके छापेमार दस्ते अभी भी अपनी कार्रवाइयों में सलग्न हैं। सरकार ने इन्हें ध्वस्त करने के प्रयास मे अमरीका से प्राप्त "माउस्टांग" और "बी-२६" विमानों का इस्तेमाल किया है।

अपने अन्त को सन्निकट जानकर प्रतिक्रियावादी अपूर्व भयंकरता के साथ विद्रोहियों के विरुद्ध प्रहार कर रहे है। १९६३ के अप्रैल मे प्वेर्टो-बैरियस ज़िले के फ़ौजी अधिकारियों ने दस मज़दूरों को गोलियों से भून डाला और उनकी लाशों को छापेमारों की लाशें बताकर इस अत्याचार की ओर से ध्यान हटाने का प्रपंच रचा। १९६३ की मई मे जाकापा प्रान्त के फौजी अधिकारियों ने ऐसे पांच युवकों को गिरफ़्तार किया, जिनका छापेमारो से कोई सम्बन्ध नही था और उन्हें मौत की सजा दे दी। इस अपराध के ख़िलाफ़ जब ग्वाटेमालाई जनता का व्यापक विरोध-आन्दोलन उभर उठा, तो विवश होकर सरकार ने सज़ा रद्द कर दी।

उत्पीडन के विरुद्ध संघर्ष में कम्युनिस्ट सदैव अगली पंक्ति में रहे हैं। भारी क्षतियों के बावजूद ग्वाटेमालाई मज़दूर पार्टी के सदस्यों की संख्या और शक्ति बढ़ती जा रही है तथा इसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है और जन समुदाय पर इसका प्रभाव बढ़ा है। १९६० मे हुई तीसरी पार्टी-कांग्रेस के निर्णय में इस पर जोर दिया गया था कि "पार्टी बिना किसी अपवाद के संघर्ष के सभी तरीक़ों को अपनाये।" पूर्णतया फ़ौजी तानाशाही के समय इस सिद्धान्त का विशेष महत्त्व है।

कामरेड पेपे शहीद हो गए, परन्तु «Verdad» आज भी प्रकाशित होता है। इसकी ग्राहक-संख्या काफी बढ़ गई है और यह अब नियमित रूप से प्रकाशित होनेवाला एक साप्ताहिक पत्र है। यद्यपि दर्जनों प्रमुख मज़दूर नेताओ को जेल में झोंक दिया गया है, परन्तु ट्रेड-यूनियनों का संघर्ष जारी है।

ग्वाटेमालाई जनता की सभी प्रगतिशील ताकतों को एकजुट करने में काफी प्रगति हो चुकी है। १९६३ की जुलाई मे ग्वाटेमालाई मजदूर पार्टी सहित क्रान्तिकारी पार्टियों ने फ़ौजी तानाशाही का प्रतिरोध करने और संयुक्त प्रतिरोध मोर्चा कायम करने के लिए मिलकर काम करने का निर्णय किया। मोर्चे द्वारा प्रकाशित वक्तव्य मे इस पर ज़ोर दिया गया है कि निरकुश शासन का तख़्ता उलटना और पुनः जनवाद को क़ायम करना ग्वाटेमाला की सम्पूर्ण जनता का संयुक्त ध्येय है। राष्ट्र की बुनियादी समस्याओं का शीघ्र हल केवल इसी से हो सकता है तथा इसका आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास सुनिश्चित हो सकता है।

साहसी ग्वाटेमालाई जनता अधिकाधिक वर्ग-चेतन तथा संगठित होती जा रही है। प्रतिदिन नये योद्धा आगे आते जा रहे हैं, जो उत्तर अमरीकी इजारेदारियों और उनके चाटुकारों के पजे से राष्ट्र की मुक्ति के संघर्ष में ओक्तावियो रेइज़ की तरह अपने प्राण की परवाह किये बिना अपने को न्योछावर कर देने को प्रस्तुत है। ग्वाटेमाला की जनता को विश्वास है कि क्वेटज़ाल बन्धन-मुक्त होकर रहेगा।

एर्नस्ट थेलमान

१६ अप्रैल, १८८६ को हेम्बर्ग में जोहान्न थेलमान को एक पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। एर्नस्ट को बचपन से ही मजदूरी करनी पड़ी—सबसे पहले रोजनदार, उसके बाद फ़र्नीचर ढोनेवाले, ठेलेवाले, गोदी मजदूर और खलासी के रूप में उन्होंने काम किया।

अपनी बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप वह १९०२ में जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी की पांतों में शामिल हो गए। दो वर्ष बाद एर्नस्ट हेम्बर्ग परिवहन मजदूर यूनियन के भी सदस्य हो गए।

अपने पूंजीवादी शोषकों के विरुद्ध उस समय हेम्बर्ग के मजदूर भीषण संघर्ष कर रहे थे और इसका इस युवा मजदूर पर प्रबल क्रान्तिकारी प्रभाव पड़ा।

थेलमान ट्रेड-यूनियन की सभाग्रों में परिवहन मजदूरों की ग्रोर से ग्रौर यूनियन के पदाधिकारियों के विरुद्ध अक्सर भाषण दिया करते थे, जिन्होंने उस समय भी ग्रपने इस सख्त ग्रालोचक को एक प्रवल विद्रोही ग्रौर क्रान्तिकारी के रूप में स्वीकार कर लिया था। पार्टी ग्रौर ट्रेड-यूनियन में एर्नस्ट के साथी उनके जुझारूपन की सराहना करते थे। परिवहन मजदूरों के सम्मेलनों ग्रौर कांग्रेसों में वह वारवार उनके प्रतिनिधि चुने जाते थे ग्रौर वह पार्टी के एक पेशेवर क्रांतिकारी हो गये।

२२ वर्ष की उम्र में फ़ौज में ग्रनिवार्य सेवा के लिए थेलमान भर्ती कर लिये गए ग्रौर इससे उन्हें पूंजीवादी राज्य की सैन्यवादी नीति की निजी जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने सैन्यवाद ग्रौर युद्ध-सम्बन्धी तैयारियों में निहित खतरे को भांप लिया ग्रौर सेना की ग्रनिवार्य सेवा से हेम्बर्ग वापस लौटने के बाद वह युद्ध-विरोधी ग्रान्दोलन मे जुट गए। जब प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा, तो जर्मन सर्वहारा वर्ग के श्रेष्ठ प्रतिनिधियों के साथ थेलमान ने जर्मन सामाजिक-जनवादी नेताग्रों की ग्रंधराष्ट्रवादी नीति की भर्त्सना की, जिन्होने संसद में युद्ध सम्बन्धी ऋण के पक्ष में वोट दिया ग्रौर पूंजीवादी "पितृदेश" की रक्षा का ग्राह्वान किया था। जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी की युद्ध-सम्बन्धी नीति की ग्रालोचना करते हुए थेलमान ने कहा, "सर्वहाराग्रों के वर्ग-संघर्ष के लाल झण्डे के साथ गद्दारी की गई है ग्रौर इसे पैरों के नीचे रौंदा गया है।"

युद्ध के शुरू होने के शीघ्र ही बाद थेलमान को समय ग्राने से पहले ही फौज में भर्ती कर मोर्चे पर भजे दिया गया। वहां भी उन्होंने ग्रपने क्रान्तिकारी प्रचार को बन्द नही किया।

१६१७ की गर्मी में उन्हे घर जाने के लिए छुट्टी दी गयी। उस समय रूसी क्रांति की प्रतिध्वनि जर्मनी तक पहुंच गयी थी। रूस की फ़रवरी क्रांति के प्रभाव से जर्मन क्रान्तिकारियो ने एक स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी कायम की। थेलमान तत्काल इस नयी पार्टी में शामिल हो गए। उन्होंने ग्रौर हेम्बर्ग के उनके साथियों ने इसके वाम पक्ष को संगठित किया।

एर्नस्ट थेलमान ने बड़े उत्साह के साथ महान ग्रक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का स्वागत किया। रूस की सर्वहारा क्रान्ति से जर्मनी में प्रचलित ग्रन्धराष्ट्रवादी मनोवृत्ति को प्रखर चोट पहुंची। दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादी नेताग्रों के प्रतिरोध के बावजूद मजदूर समुदाय ग्रान्दोलित

हो उठे। कील के नाविकों का विद्रोह, जिन्होंने ३ नवम्बर, १६१८ को अपने युद्धपोतों पर लाल झण्डा फहरा दिया था, जर्मनी में क्रान्ति शुरू होने का द्योतक था। थेलमान ने इसमें बहुत ही सक्रिय भाग लिया। सामाजिक-जनवादी और ट्रेड-यूनियन के नेताओं के प्रतिबन्ध की अवहेलना करते हुए उन्होंने हेम्बर्ग के क्रान्तिकारी मजदूरो को हथियारबन्द किया और उनके नेता बन गये। जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के दक्षिणपथी नेताओं और विशेष रूप से जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी के दक्षिणपंथी नेताओं की मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ भीषण संघर्ष के दौरान एर्नस्ट थेलमान हेम्बर्ग के सर्वहारा वर्ग के नेता बन गये। १६१६ के अन्त मे वह जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी के हेम्बर्ग संगठन के अध्यक्ष हो गए।

थेलमान उन व्यक्तियों में से एक थे, जिनकी पहलकदमी पर १६२० में जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी के क्रान्तिकारी पक्ष और "स्पार्टकस लीग" का ३० दिसम्बर, १६१८ को कार्ल लीब्कनेख़्त और रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग द्वारा स्थापित जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी से विलयन हुआ था। उनके और उनके साथियों के प्रयास के फलस्वरूप जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी के दो लाख सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी मे चले गए। थेलमान इसकी केन्द्रीय समिति में चुने गए।

१६२१ की गरमी मे थेलमान ने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की तीसरी कांग्रेस की कार्यवाही मे भाग लिया और वहा उन्होंने प्रथम बार लेनिन से भेंट की। १६२१ के मार्च में जर्मनी मे हुई घटनाओं के दौरान, जिनमें थेलमान ने व्यक्तिगत रूप से भाग लिया था, जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकलाप की लेनिन की तीखी, परन्तु व्यावहारिक और युक्तिसंगत आलोचना का उनपर गहरा असर पड़ा। वह कांग्रेस के निर्णयो और "हेम्बर्ग के प्रतिनिधि" के भाषण की लेनिन द्वारा बड़ी सराहना तथा सोवियत राजधानी मे उन्होने जो कुछ देखा था उन सभी बातों से बहुत प्रभावित होकर स्वदेश लौटे। कांग्रेस में लेनिन द्वारा प्रस्तावित "जनसाधारण के साथ निकट का संबन्ध कायम करना आवश्यक है" का

---

*प्रतिक्रांतिकारियो द्वारा भड़कायी मध्य जर्मनी के मजदूरों की सशस्त्र कार्रवाई। —सं०

नारा थेलमान की समस्त क्रान्तिकारी गतिविधियों का पथप्रदर्शक आदर्श बन गया। लेनिन के तर्कों से लैस होकर उन्होंने जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी मण्डली मे जमे हुए अवसरवादियों के विरुद्ध अपने संघर्ष को तीव्र बना दिया।

१९२१ के अगस्त में येना में हुई जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की अगली कांग्रेस मे १९२१ के मार्च के संघर्षों से प्राप्त सबकों की रोशनी मे पार्टी के कार्यभार पर विचार किया गया। थेलमान ने अपनी सहज सरलता, ईमानदारी और दृढ़ विश्वास के साथ कांग्रेस को सम्बोधित किया। उन्होंने मार्च की भूलों का उल्लेख किया और लेनिन के आदेश खूब आत्मसात करके सामाजिक-जनवादी मजदूरों को कम्युनिस्ट पार्टी के पक्ष में करने और संयुक्त मोर्चे की स्थापना का प्रश्न इस कांग्रेस के सम्मुख प्रस्तुत किया। कांग्रेस ने पुनः थेलमान को पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य चुना।

थेलमान के क्रान्तिकारी कार्यकलाप के कारण प्रतिक्रियावादियों को उनसे सख्त नफरत थी। १७ जून, १९२२ को "कौंसुल" गुप्त संगठन से सम्बन्धित हेम्बर्ग के फ़ासिस्टों ने थेलमान की हत्या करने का कुप्रयास किया। सौभाग्य से, उन्होंने उनके फ्लैट मे जो बम रखा था, वह उनकी अनुपस्थिति मे ही फट गया।

जर्मनी मे क्रान्तिकारी हवा ज़ोर पकड़ती जा रही थी। हर्जाना चुकाने में जर्मनी की अनाकानी के विरुद्ध बदले की कारंवाई के रूप मे फ़ांसीसी फौजों द्वारा रूर पर कब्जा कर लिये जाने के फलस्वरूप देश को विदीर्ण करनेवाली वर्गीय असगतियां तीव्र हो गईं। औद्योगिक उत्पादन में गिरावट आ गई, बेकारी बढ गई, जर्मन मुद्रा मार्क का मूल्य गिर गया, हड़ताल-आन्दोलन फैल गया।

१९२३ में जनवरी के अन्त और फ़रवरी के शुरू मे लाइप्जिग में जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की अगली कांग्रेस हुई। एर्नस्ट थेलमान, विल्हैल्म पीक, क्लारा जेटकिन, वाल्तेर उलब्रिख़्त आदि सहित जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के क्रान्तिकारी पक्ष ने संयुक्त मोर्चे की कार्यनीति और मजदूरों की सरकारें बनाने के प्रश्न पर ब्रांदलेर और थलहाइमेर के नेतृत्व में दक्षिणपंथी अवसरवादियों को चुनौती दी। ब्रांदलेर और थलहाइमेर ने नीचे से मजदूर वर्ग का संयुक्त मोर्चा कायम करने का विरोध और संसद में सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेताओं के साथ सिद्धान्तहीन समझौता

करने का समर्थन किया। थेलमान ने जर्मन मजदूर आन्दोलन के लिए ब्रादलेर की नीति में निहित ख़तरे को भांप लिया और इस बात पर जोर दिया कि संसदीय बहसों और समझौतों के ज़रिये पूंजीपति वर्ग को पराजित नहीं किया जा सकता तथा विजय सुनिश्चित नहीं बनाई जा सकती, और यह कि सर्वहारा वर्ग के अविचल क्रान्तिकारी संघर्ष द्वारा ही विजय प्राप्त की जा सकती है।

जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की लाइप्जिग कांग्रेस के बाद घटनाओं का विकास बहुत ही तीव्र गति से हुआ। १९२३ की गरमी के अन्त तक सारा देश बहुत आन्दोलित था। अक्तूबर के मध्य मे जन साधारण के दबाव से सक्सोनी और थूरीगिया में मज़दूरों की सरकारें बनी, जिनमें "वामपंथी" सामाजिक-जनवादी, कम्युनिस्ट और निर्दल मजदूर शामिल थे। परन्तु क्रान्ति के विकास की ओर परिस्थिति का समुचित रूप से उपयोग नही किया गया। प्रस्तावित संयुक्त सर्वहारा मोर्चे के बनने मे बाधा डालनेवाले सामाजिक-जनवादी और ट्रेड-यूनियन नेता ही इसके दोषी थे। जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी में प्रमुख पदों पर आसीन ब्रांदलेर और थलहाइमेर की मुजरिमाना नीति के कारण जर्मनी मे सर्वहारा क्रान्ति के ध्येय को भारी क्षति पहुंची। सर्वहारा वर्ग को सशस्त्र संघर्ष के लिए तैयार करने की जगह उन्होंने ऐसी नीति का अनुसरण किया, जिससे जन समुदाय की क्रान्तिकारी क्रियाशीलता ठप्प हो गई।

पार्टी के स्थानीय संगठनों में ब्रांदलेरपंथियो की अवसरवादी नीति से नाराज़गी और असंतोष की भावना बढ़ती जा रही थी। एर्नस्ट थेलमान के नेतृत्व में सागर तटवर्ती क्षेत्र की शाखा विशेष रूप से ब्रादलेर की नीति के विरोध मे सक्रिय थी। वहां कम्युनिस्टों ने राजनीतिक सत्ता पर कब्ज़ा करने के लिए सशस्त्र संघर्ष की ओर फ़ौरन संक्रमण का नारा दिया।

सशस्त्र संघर्ष-सम्बन्धी थेलमान के आह्वानों से पूंजीपति वर्ग बहुत ही आतंकित हो गया और उसने उन्हें अपने रास्ते से हटाने के लिए फिर कोशिशें की। १९२३ के वसंत में हेम्बर्ग के फासिस्टों ने पुनः उनकी हत्या करने की साजिश रची। परन्तु नगर के कम्युनिस्टों को इस षड्यंत्र की भनक मिल गई और उन्होंने उनकी प्राण-रक्षा के लिए पूरी सावधानी बरतते हुए मजदूरों के इस नेता के विरुद्ध कुत्सित अपराध करने के फ़ासिस्टों के कुप्रयासों को विफल बना दिया।

हेम्बर्ग के मजदूरों ने थूरीगिया और सक्सोनी मे सर्वहारा की पराजय

को चुपचाप बर्दाश्त नहीं कर लिया। जब जर्मन सेना उन क्षेत्रों में पहुंची तो मज़दूरों ने कारख़ानों, गोदियों और जहाज़ों पर काम करना बन्द करके इसका विरोध किया। कम्युनिस्ट पार्टी की हेम्बर्ग शाखा ने क्रांति का लाल झण्डा उठा दिया। २२ अक्तूबर, १९२३ की रात में कम्युनिस्टों ने सशस्त्र विद्रोह के लिए आह्वान के परचे बांटे और २३ अक्तूबर को स्त्रियों और बच्चों के साथ नगर के सभी वृद्ध और युवा मज़दूर बैरीकेडों पर जमा हो गए।

६ हज़ार सैनिकों और पुलिसवालों ने तीन दिन और तीन रात हेम्बर्ग के मज़दूरों द्वारा खड़े किये गए बैरीकेडों पर हमले किए।

इस विद्रोह की जान हेम्बर्ग के सर्वाधिक जनप्रिय व्यक्ति, परिवहन मज़दूर एर्नस्ट थेलमान थे। उन्होंने ख़ुद सबसे महत्त्वपूर्ण कार्रवाइयों और हथियारों तथा राशन की सप्लाई को निदेशित किया।

परन्तु जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेताओं की ग़द्दारी और जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी में ब्रांदलेर नेतृत्व द्वारा अनुसरित नीति के कारण, जिसने सशस्त्र विद्रोह के स्वीकृत प्रारम्भिक निर्णय को भंग कर दिया था, संघर्षरत मज़दूरों के लिए स्थिति काफ़ी विषम हो गई।

२५ अक्तूबर को स्पष्ट हो गया कि देश के शेष भागों से अलग-थलग पड़ गए हेम्बर्ग के मज़दूर अब सफलतापूर्वक अपनी लड़ाई जारी नहीं रख सकते। थेलमान द्वारा निदेशित हेम्बर्ग के पार्टी संगठन ने लड़ाई बन्द कर देने का निर्णय किया। मज़दूर अपनी क्रान्तिकारी पांतों के केन्द्र भाग को क़ायम रखते हुए व्यवस्थापूर्वक पीछे हट गए।

जर्मन समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय समिति के राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य हर्मन मातर्न ने बाद में लिखा, "परिवहन मज़दूर एर्नस्ट थेलमान ने जर्मन जनता के लिए ऐतिहासिक महत्त्व के इन दिनों में यह सिद्ध कर दिया है कि वह जर्मन मज़दूर वर्ग के एक महान नेता हो गये हैं।"

थेलमान ने हेम्बर्ग की घटनाओं से गंभीर निष्कर्ष निकाले। सबसे प्रमुख निष्कर्ष यह था कि विजय प्राप्त करने के निमित्त मज़दूर वर्ग की "एक बहुत ही सुदृढ, पूर्णतया संगठित, एक ही विचार के आधार पर संहत और लौह अनुशासनवाली पार्टी" होनी चाहिए। उसके बाद थेलमान का सम्पूर्ण बुद्धि-कौशल, विवेक और शक्ति इस प्रकार की पार्टी के विकास में समर्पित हो गई।

१९२४ के अप्रैल में फ्रैन्कफर्ट-अम-माइन में गैरकानूनी ढंग से हुई पार्टी कांग्रेस ने जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी को एक नये प्रकार की सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी में रूपान्तरित करने में मुख्य भूमिका अदा की। इस कांग्रेस मे थेलमान ने अवसरवादी ब्रादलेर-थलहाइमेर गुट के विरोध का नेतृत्व किया। अवसरवादी पराजित हो गए और पार्टी के प्रमुख पदों पर नये व्यक्ति चुने गए — इनमे एर्नस्ट थेलमान भी थे। वह केन्द्रीय समिति और पार्टी के राजनीतिक ब्यूरो मे चुने गए।

१९२४ की गरमी में मास्को मे हुई कम्युनिस्ट इटरनेशनल की पांचवीं कांग्रेस ने एकमत से एर्नस्ट थेलमान की नीति का समर्थन किया और ब्रादलेर तथा थलहाइमेर के अवसरवाद की भर्त्सना की। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की सहायता से जर्मन कम्युनिस्ट और उनके मार्क्सवादी-लेनिनवादी पक्ष ने "उग्र वामपंथी" संकीर्णतावादी रूथ फिशर, मास्लोव और ऊर्बान्स द्वारा पार्टी की नयी नीति के कार्यान्वियन में पैदा किए प्रतिरोध को समाप्त किया। यह "उग्र वामपंथी" गुट कम्युनिस्ट पार्टी को जन समुदाय से अलग-थलग करता जा रहा था और ट्रेड-यूनियनों में इसके काम में अड़चनें पैदा कर रहा था। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के समर्थन से एर्नस्ट थेलमान ने इस गुट की सख़्त आलोचना की। १९२५ के अक्तूबर में थेलमान पार्टी के अध्यक्ष चुने गए और पीक, उलब्रिख़्त, हेकर्त और अन्य प्रमुख साथियों के साथ उन्होंने पार्टी के लेनिनवादी हरावल का निर्माण किया। १९२७ मे जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की ११वी कांग्रेस ने "उग्र वामपंथी" गुट को पूर्णतया पराजित कर दिया।

जर्मन कम्युनिस्टों का नेता होने पर थेलमान ने पार्टी के संगठनात्मक और सैद्धान्तिक सुदृढ़ीकरण पर अपना पूरा ध्यान दिया। उन्होंने क्रमश: जर्मन मजदूरों के हरावल दस्ते में सुदृढ एकता कायम की। उन्होंने मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की सैद्धान्तिक कृतियों और बोल्शेविक पार्टी तथा सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण के प्रचुर अनुभव पर जर्मनी के क्रान्तिकारियो और सम्पूर्ण मजदूर वर्ग की शिक्षा आधारित की। उनके सुझाव पर जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की ११वी कांग्रेस ने जर्मन भाषा में व्ला० इ० लेनिन की कृतियों को प्रकाशित करने का निर्णय मंजूर किया।

थेलमान ने अपने वर्गीय शत्रुओं के प्रति घृणा और सैद्धान्तिक दृढता तथा मजदूरों के ध्येय के प्रति अटूट निष्ठा की भावना में जर्मन

क्रान्तिकारियों को शिक्षित किया। वह कहते थे, "क्रांति-सैनिक होने का अर्थ है ध्येय के प्रति अटूट निष्ठा, ऐसी निष्ठा बनाये रखना है, जो जीवन और मृत्यु की कसौटी पर खरी उतरती है... यदि हम अविचल स्वभाव के होंगे और हमें अपनी विजय में विश्वास होगा तभी हम अपने भविष्य को बदल सकेंगे तथा जिस महान ऐतिहासिक मिशन को पूरा करने का हमारे ऊपर क्रांतिकारी दायित्व है, उसे पूरा कर पायेंगे, और इस प्रकार हम वास्तविक समाजवाद की अन्तिम विजय को सुनिश्चित बनायेंगे।"

क्रांति के सैनिकों को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ वह जर्मन कम्युनिस्टों के सम्मुख उस समय प्रस्तुत राजनीतिक कार्यभार के अनुरूप पार्टी के संगठनात्मक पुनर्गठन के काम मे भी संलग्न रहे।

उन्होंने पार्टी-संगठन के क्षेत्रीय सिद्धान्त के स्थान पर उत्पादन-सिद्धान्त पर संगठित प्रारम्भिक पार्टी इकाइयों का सिद्धान्त अपनाया। उन्होंने "लुक्जेमबुर्गवाद" के बुरे प्रभाव से भी पार्टी को मुक्त करने की कोशिश की, जिसने पार्टी की भूमिका को कम आंका, स्वतःस्फूर्ति के महत्त्व को अतिरंजित रूप में प्रस्तुत किया और मजदूर वर्ग के साथियों के प्रश्न की गलत व्याख्या की। पुनर्गठन के बाद कम्युनिस्ट पार्टी मजदूरों के सन्निकट हो गई और इसका वर्गीय आधार सुदृढ़ हुआ। पुनर्गठन से जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी को व्यापक सर्वहारा पार्टी के रूप मे परिवर्तित करने में बड़ी मदद मिली।

जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सेक्रेटरी वाल्तेर उलब्रिख़्त ने कहा है, "एर्नस्ट थेलमान के ऐतिहासिक योगदान के फलस्वरूप कार्ल लीब्कनेख़्त और रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग के नेतृत्व में बनी पार्टी जन समुदाय की क्रान्तिकारी पार्टी में परिवर्तित हो गई..."

थेलमान के मार्ग-निर्देशन में जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने मजदूर वर्ग के विभिन्न तबकों को संगठित करने के नये तरीकों को ढूंढ निकालने का यत्न करते हुए और प्रतिक्रियावादी वर्गों, सामाजिक-जनवादी पार्टी तथा जर्मन ट्रेड-यूनियनों के प्रधान सघ के प्रभाव में अभी भी भटकनेवाले मजदूरों को कम्युनिस्ट ध्येय के पक्ष में करते हुए बड़े परिश्रम के साथ सर्वहाराओं के जन संगठनों को खड़ा किया।

थेलमान खुद एक सक्रिय ट्रेड-यूनियन कार्यकर्ता थे और उन्होंने सभी

कम्युनिस्टों से इसी प्रकार ट्रेड-यूनियनों में काम करने को कहा। उनके सुझाव पर जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बद्ध क्रांतिकारी ट्रेड-यूनियन विरोध-पक्ष का पुनर्गठन किया गया। इससे ट्रेड-यूनियन आन्दोलन की एकता सुदृढ़ हुई, जो अन्य वातों के अतिरिक्त १९२८ और १९२९ की कई हड़तालों की सफलता से प्रकट हुई।

प्रतिक्रियावादियों ने ट्रेड-यूनियनो में कम्युनिस्ट पार्टी के बढ़ते प्रभाव का बदला लेने के लिए कम्युनिस्टों को तंग करना और उन्हें ट्रेड-यूनियनों से निकालना शुरू कर दिया। १९३१ में थेलमान को परिवहन मजदूर यूनियन से इस आधार पर निकाल बाहर करने के लिए ट्रेड-यूनियन के सुधारवादी नेताओं को विवश किया कि वह जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष हैं और क्रान्तिकारी ट्रेड-यूनियन विरोध-पक्ष का समर्थन करते हैं। और केवल दो वर्ष पूर्व हेम्बर्ग परिवहन मजदूर यूनियन ने उनकी उल्लेखनीय सेवाओं और यूनियन के प्रति उनकी निष्ठा के लिए उन्हें "सम्मान-सूचक प्रमाणपत्र" प्रेषित किया था।

संयुक्त मजदूर मोर्चे के गठन में तीसरे दशक मे जर्मन मजदूर वर्ग के एक सर्वाधिक जनप्रिय सार्वजनिक संगठन "लाल मोर्चा संघ" (रोत फ़ोत) ने बड़ी भूमिका अदा की। "लाल मोर्चा संघ" १९२४ में अस्तित्व मे आया; इसके संगठक और इसके स्थायी अध्यक्ष एर्नस्ट थेलमान थे, जिनका इसके सदस्यों पर निर्विवाद प्रभाव था। सर्वहारा योद्धाओं के उस विख्यात जुझारू सगठन का प्रतीक "रोत फ़ोत" शब्द और तना हुआ मुक्का था, जिनसे प्रतिक्रिया तथा फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध, पूजीवादी शोषण और साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध लाखों जर्मन मजदूरों का प्रचण्ड संघर्ष व्यक्त होता था।

"लाल मोर्चा संघ" शीघ्र ही मजदूर वर्ग का शक्तिशाली हरावल हो गया, जिसकी सदस्य-संख्या १९२७ तक एक लाख हो गयी थी। इसके अलावा एक लाख सदस्योंवाली युवा कम्युनिस्ट लीग, लाल महिला-संघ और अंतर्राष्ट्रीय मजदूर प्रतिरक्षा संघ की जर्मन शाखा के रूप में पार्टी के अन्य जुझारू समर्थक और विश्वसनीय सहायक भी थे। इन संगठनों ने अपनी पातों में उन सभी लोगों को खींचा, जो कम्युनिस्ट न होते-हुए भी प्रतिक्रियावाद की निरंकुशता के विरुद्ध और शान्ति तथा जनवाद के लिए संघर्ष करना चाहते थे।

"लाल मोर्चा" और इसके "लाल जनरल" थेलमान, जैसा कि अपने शत्रुओं द्वारा वह कहे जाते थे, के भय से पूंजीपति वर्ग ने सरकार से "लाल मोर्चा" पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की। १९२९ में सामाजिक-जनवादी मूलर के नेतृत्व में जर्मन सरकार ने इस पर रोक लगा दी। परन्तु काफ़ी समय तक "लाल मोर्चा" ग़ैरक़ानूनी रूप से काम करता रहा। हिटलर द्वारा सत्ता हथिया लेने के बाद भी इसके अनेक सदस्य फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और मज़दूरों के ध्येय के लिए उन्होंने जीवन होम कर दिए। आज तक जर्मन मजदूर वर्ग की पुरानी पीढ़ी "लाल मोर्चा" और इसके नेता तेदी को, जैसा कि मजदूर एर्नस्ट थेलमान को स्नेह से पुकारते थे, बड़े गर्व से याद करती है।

मेहनतकश लोगों के जन संगठनों में कम्युनिस्ट पार्टी के सफल कार्यकलाप से जर्मन सर्वहारा वर्ग तथा स्वयं कम्युनिस्ट पार्टी की क्रियाशीलता बढ़ती गयी। सामाजिक-जनवादियों, ट्रेड-यूनियनों के साधारण सदस्यों, महिला संगठनों और सहकारी समितियों में पार्टी का प्रभाव बढ़ा। १९३३ तक इसके सदस्यों की संख्या तीन लाख तक पहुंच गई, अर्थात १९२८ की तुलना में प्राय: दुगुनी हो गई।

थेलमान के नेतृत्व में कम्युनिस्ट पार्टी ने मज़दूर वर्ग की एकता और कम्युनिस्टों तथा सामाजिक-जनवादियों की संयुक्त कार्रवाई के लिए विशेषकर बहुत प्रयास किया, जो फ़ासिस्टवाद के बढ़ते हुए खतरे के विरुद्ध संयुक्त मोर्चे के निर्माण की मुख्य पूर्वापेक्षित शर्त थी।

जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी और ट्रेड-यूनियनों के दक्षिणपंथी नेताओं का भण्डाफोड़ करते हुए थेलमान ने सामाजिक-जनवादी मज़दूरों को अपने पक्ष में करने की कोशिशें की, जो अपने नेताओं की समाजवादी लफ़्फ़ाज़ी के कारण धोखे में डाल दिये गये थे। वह सदैव जर्मन कम्युनिस्टों के लिए "सामाजिक-जनवादी मजदूरों की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाने" की आवश्यकता पर ज़ोर देते रहे। थेलमान ने जर्मन कम्युनिस्टों को सिखाया कि वर्गीय बन्धुओं को संयुक्त मोर्चे के पक्ष में करने के काम में उन बातों पर अपना ध्यान आकृष्ट करना चाहिए, जो सामाजिक-जनवादियों और कम्युनिस्टों को अलग नहीं करतीं, बल्कि मज़दूरों के रूप में अपनी वर्गगत हैसियत से सामान्य है। ज़बरदस्ती नहीं, बल्कि भाईचारे की भावना से समझा-बुझाकर उन सामाजिक-जनवादियों को, जिन्होंने गलत विचार अपना लिये हैं, वर्गीय क्रान्तिकारी मोर्चे में लाना चाहिए।

थेलमान ने बड़े साहस के साथ संयुक्त मोर्चे के उतन मे पैदा हुए अवरोधों पर प्रहार किया। सामाजिक-जनवादियों के साथ मिलकर संयुक्त कार्रवाई के लिए जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी का सुदृढ़ प्रयास प्रभावकारी रहा। अनेक सामाजिक-जनवादी मजदूर अपनी पार्टी से अलग हो गए और उन्होंने सुधारवादी यूनियनों से नाता तोड़ लिया। बड़ी सख्या मे सामाजिक-जनवादी मजदूर क्रान्तिकारी ट्रेड-यूनियन विरोध-पक्ष के समर्थक होकर जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए अथवा उन्होंने कम्युनिस्टों के जन आन्दोलनों का समर्थन किया। उनमे से कुछ ने १९३२ मे राइखस्ताग (जर्मन संसद) के चुनाव में जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवारों को वोट दिए, जो किसी हद तक कम्युनिस्टों को ५९,००,००० वोट मिलने का कारण है (१९३० की अपेक्षा १३,००,००० वोट अधिक)।

थेलमान क्रान्तिकारी मजदूरों और मेहनतकश किसानों के बीच सम्बन्धों को सुदृढ बनाने के लिए प्रयत्नशील थे। वह मजदूर वर्ग के साथियों विशेष रूप से किसानों के शामिल हुए बिना फासिस्ट-विरोधी संयुक्त मोर्चे के कायम होने की बात सोच भी नही सकते थे। जर्मन किसान समुदाय ने थेलमान को अपने हितों का उत्कट समर्थक समझा।

१९२९ के आर्थिक संकट के साथ जर्मनी के किसानों की स्थिति काफी ख़राब हो जाने के कारण जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने "किसानों की सहायता का कार्यक्रम" तैयार और प्रकाशित किया, जिसे सर्वप्रथम १९३१ की मई में थेलमान ने ओल्देनबुर्ग में हुई किसानों की एक विराट सभा में पढ़कर सुनाया और श्रोताओं ने बड़े उत्साह से उसका अनुमोदन किया। उन्होंने किसानों के बारे मे जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ सदस्यों के संकीर्णतावादी दृष्टिकोण और किसानों के प्रश्न के अवसरवादी न्युनानुमान के विरोध में यह नारा दिया: "मजदूरों और किसानो की दोस्ती को सुदृढ़ करो।"

इस कार्यक्रम से ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी के काम को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। १९३१ के दौरान कई जिलों मे इसकी भावना से पोषित किसान समितियो का आन्दोलन शुरू हुआ। थेलमान ने ग़रीब किसानों में अत्यंत लोकप्रिय मेहनतकश किसान संघ का गठन किया।

किसानों ने थेलमान की सेवाओं को बहुत महत्वपूर्ण माना। १९३२ के राष्ट्रपति के चुनाव में किसानों की कई सभाओं, सम्मेलनो और

कांग्रेसों ने उनकी उम्मेदवारी का समर्थन किया। १९३२ में १० से १७ जुलाई तक अखिल जर्मन स्तर पर कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा मनाये गए फासिस्ट-विरोधी सप्ताह में किसानों ने सक्रिय भाग लिया। नाज़ी शासन के समय फासिस्ट-विरोधियों को अक्सर गांवों में शरण मिलती थी।

थेलमान के सुझाव पर १९३० में "जर्मन जनता की राष्ट्रीय और सामाजिक मुक्ति कार्यक्रम" के प्रकाशन ने फ़ासिस्ट-विरोधी संयुक्त मोर्चे के लिए आबादी के व्यापक तबकों का समर्थन प्राप्त करने में बड़ी भूमिका अदा की। कार्यक्रम में देश के फ़ासिस्टीकरण की ओर संकेत किया गया था और राष्ट्रवादी-समाजवादी (नाज़ी) पार्टी की लफ़्फ़ाज़ी की भर्त्सना की गई थी, जिसे इसमें "जन-विरोधी, मज़दूर-विरोधी, समाजवाद-विरोधी पार्टी, मेहनतकश लोगों के शोषण और गुलामी के लिए घोर प्रतिक्रिया की पार्टी" बताया गया था। कार्यक्रम में फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध तथा जनवादी जर्मनी की स्थापना के लिए राष्ट्रव्यापी संघर्ष का आह्वान किया गया था।

हिटलर की तानाशाही कायम हो जाने के पहले जब अधिकाधिक स्पष्ट रूप में यह प्रकट हो गया कि इजारेदार पूंजी ने फासिस्ट संगठनों के ज़रिये जर्मनी में सभी जनवादी स्वतंत्रताओं और अधिकारों को ख़त्म करने तथा नये विश्वयुद्ध की तैयारी करने का निर्णय कर लिया है, तो थेलमान ने युद्ध और फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी संघर्ष संगठित करने पर विशेष रूप से ज़ोर दिया। मेहनतकश जन समुदाय ने उनके इस नारे को अपना लिया: "हिटलर—युद्ध का प्रतीक है।"

थेलमान के नेतृत्व में कम्युनिस्ट पार्टी ने नाज़ियों के सत्तारूढ़ होने के ठीक पहले बड़े पैमाने के कई फासिस्ट-विरोधी कार्यों को सम्पन्न किया। कम्युनिस्टों ने फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष-संघ संगठित किया था, जिसके सदस्यों की संख्या १९३२ में १ लाख से अधिक हो गई थी। १९३१ और १९३२ मे भूख और फासिस्टवाद के विरुद्ध कई कांग्रेसें और सम्मेलन हुए। १९३२ के उत्तरार्ध के दो महीनों में कम्युनिस्टों के नेतृत्व मे ९०० से अधिक हड़तालें तथा अनेक फासिस्ट-विरोधी सभाएं और प्रदर्शन हुए।

थेलमान केवल जुझारू और संयुक्त जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के नेता और निर्माता ही नहीं थे, बल्कि वह एक उत्कट अंतर्राष्ट्रीयतावादी और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट तथा मजदूर आन्दोलन के एक प्रमुख नेता भी थे।

१९२४–१९२८ में थेलमान कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्य-समिति के उम्मेदवार सदस्य थे और १९२८ से १९४३ तक इसके एक सदस्य रहे। उन्होंने ट्रेड-यूनियन इंटरनेशनल को सुदृढ बनाने की दिशा में बहुत प्रयास किया, जो अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा एकता का द्योतक था।

उन्होंने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के सैद्धान्तिक विरोधियों के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारों की विशुद्धता तथा विजय के लिए दृढ़ता के साथ निडर होकर संघर्ष किया। सच्ची लेनिनवादी सिद्धांतनिष्ठा और दृढ़ता के साथ उन्होंने जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी और विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन में "दक्षिणपंथियों", "वामपंथियों" और "घोर वामपंथी" अवसरवादियों, मार्क्सवाद-लेनिनवाद को भ्रष्ट करने और झुठलानेवालों के विरुद्ध तीव्र संघर्ष को जारी रखा।

थेलमान ने सर्वहारा क्रांति के सदर-मुकाम के रूप मे कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्य-समिति की प्रमुख भूमिका को नगण्य बनाने के दूसरे देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के अलग-अलग फूटपरस्तों के प्रयासों का सख्त विरोध किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में सबसे शक्तिशाली और सर्वाधिक अनुभवी पार्टी के रूप में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का दृढ़ता के साथ समर्थन किया।

थेलमान एक उत्कट क्रान्तिकारी, प्रतिभाशाली संगठक और विलक्षण राजनीतिक नेता थे। साथ ही वह एक विशिष्ट मार्क्सवादी सिद्धान्तकार भी थे, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन की रणनीति और कार्यनीति सम्बन्धी मुख्य समस्याओं के निपटारे में बहुत कुछ किया। तीस साल पहले उन्होंने जो अनेक सैद्धान्तिक प्रस्थापनाएं प्रस्तुत की थी, उनका महत्त्व अथवा उपयुक्तता आज भी समाप्त नहीं हुई है। उन्होंने ज़ोर दिया कि जिस मुख्य असंगति से दुनिया विदीर्ण है, वह पूंजीवाद और समाजवाद के बीच अन्तर्विरोध है। उन्होंने कहा, "समाजवादी अर्थव्यवस्था के निर्माण मे सारी दुनिया के मजदूर सर्वाधिक रुचि लेते है। आर्थिक मोर्चे की हर बड़ी सफलता से सम्पूर्ण विश्व के मजदूरों के सम्मुख अर्थव्यवस्था की पूंजीवादी प्रणाली की तुलना में समाजवादी प्रणाली की श्रेष्ठता का नया प्रमाण प्रस्तुत होता जाता है। यही विश्व ऐतिहासिक महत्त्व का प्रश्न अन्तिम विश्लेषण मे हमारे और पूंजीपति वर्ग के बीच संघर्ष के नतीजे का निर्णय करेगा..." जर्मनी सहित अन्य देशों मे समाजवाद की विजय

में उनका विश्वास अटल था। उन्होंने कहा था, "अटूट साहस और वीरभाव से पूरित, उत्कट सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद से पोषित हम सत्यनिष्ठा के साथ अपनी ओर से सोवियत संघ के साथ-साथ ऐसे नये शक्तिशाली राज्यों के उदय होने का पथ प्रशस्त करने का व्रत लेते हैं, जो शान्ति के दुर्ग बन जायेंगे और अपनी राष्ट्रीय सीमाओं के अन्तर्गत समाजवाद के निर्माण का समय सन्निकट लायेंगे।"

आज सोवियत संघ के अलावा कई राज्य समाजवादी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, और उनमे एक जर्मन जनवादी जनतंत्र भी है। समाजवादी देश आर्थिक निर्माण द्वारा विश्व विकास पर अपना क्रान्तिकारी प्रभाव डाल रहे हैं। समाजवादी प्रणाली मानवीय प्रगति के निर्णायक कारक के रूप मे प्रादुर्भूत हुई है।

एर्नस्ट थेलमान राष्ट्रों के मुक्ति-संघर्ष पर दुनिया के मजदूरो के क्रान्तिकारी कार्यकलाप से अलग-थलग विचार करने के सख्त विरोधी थे। उन्होंने कहा था, "हम जानते हैं कि मुक्ति-संघर्ष के सभी प्रश्नों पर केवल राष्ट्रीय दृष्टिकोण से नही, बल्कि विश्व अर्थतंत्र और विश्व राजनीति की बुनियादी समस्याओं को दृष्टि में रखते हुए विचार करना चाहिए।"

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि सर्वहारा क्रांति पर हमला करने में साम्राज्यवाद कहीं कोई भी कसर नही रहने देता है थेलमान कहते थे, "विरोधी शक्तियों की उस प्रणाली का विरोध हम कैसे करेंगे?" और उन्होंने ख़ुद इस सवाल का उत्तर इस रूप में दिया, "हम सोवियत संघ, पूंजीवादी देशो के सर्वहारा वर्ग संघर्ष और औपनिवेशिक मुक्ति युद्धों के तिहरे मोर्चे से इसका विरोध करेंगे।" उनकी निगाह में इन तीन महान समसामयिक शक्तियों के अन्त.सम्बन्ध तथा संयुक्त कारवाई मे साम्राज्यवाद के विरुद्ध मजदूरों के संघर्ष की सफलता की गारंटी है।

एर्नस्ट थेलमान एक उत्कट सैन्यवाद-विरोधी, युद्ध के विरुद्ध अपने क्रान्तिकारी संघर्ष में सारी दुनिया के मेहनतकश लोगों की बन्धुत्वपूर्ण एकता के हिमायती थे। उनकी पहलक़दमी पर जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी ने १९३१ और १९३२ में देश की सीमाओं पर जर्मनी, फ़ांस, डेनमार्क, हालैण्ड और पोलैंड के मजदूरो की युद्ध-विरोधी सभाओं को आयोजित किया था। १९३२ के अक्तूबर में वह पेरिस गए। मोरीस थोरे और उन्होंने १५ हजार फ़ांसीसी मजदूरों की एक सभा मे भाषण दिये। थेलमान ने जर्मन और

फ़ांसीसी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में उनसे जर्मनी के मजदूरों का साथ देने का अनुरोध किया। उनकी पहलक़दमी पर १६३३ की जनवरी में एसेन में एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें पश्चिमी यूरोपीय कम्युनिस्ट पार्टियों और युवा कम्युनिस्ट लीगों के प्रतिनिधियों ने युद्ध और फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध जर्मनी, फ़्रांस, बेल्जियम, ब्रिटेन और अन्य देशों के मेहनतकश लोगों की संयुक्त कारंवाई के बारे में एक घोषणापत्र स्वीकार किया।

अपने देश के एक उत्कट देशभक्त थेलमान सोवियत संघ के भी एक बड़े दोस्त थे और उन्होंने बड़ी उत्सुकता के साथ सोवियत संघ मे समाजवादी निर्माण की सफलताओं और उसकी शान्तिपूर्ण नीति को प्रचारित करके लोकप्रिय बनाया। उन्होंने अपने सहकर्मी कम्युनिस्टों और जर्मन सर्वहारा मे सोवियत जनता के साथ दोस्ती की भावना को प्रोत्साहन प्रदान किया। उन्होंने कहा, "रूसी मजदूरों और किसानों के साथ जर्मन मजदूरों और किसानों के बन्धुत्वपूर्ण जुझारू संश्रय का निर्माण करना और विश्व पूंजीपति वर्ग के विरुद्ध इसे शक्तिशाली दुर्ग के रूप में परिवर्तित कर देना—यही है वह कार्यभार जिसे हमने अपने लिए निर्धारित किया है।"

जर्मनी के आकाश में फ़ासिस्टवाद के काले बादल अनिष्टकारी रूप में छाते जा रहे थे। जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी ने नाज़ियों को सत्ता हथियाने से रोकने के लिए बहुत कड़ा संघर्ष किया। इसने फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा क़ायम करने के लिए कई बार सामाजिक-जनवादी पार्टी से अपीलें की, परन्तु जर्मन सामाजिक-जनवादियों के दक्षिणपथी नेताओं ने इसकी अपीलों की अवहेलना की।

३० जनवरी, १६३३ को, जिस दिन हिटलरी तानाशाही क़ायम हुई, थेलमान ने पुनः जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के नाम पर जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी और ट्रेड-यूनियनों से फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध हड़ताल की घोषणा करने का अनुरोध किया। परन्तु जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी और ट्रेड-यूनियनों के दक्षिणपंथी नेताओं ने इस सुझाव को ठुकरा दिया और इस प्रकार उन्होंने अपने देश में फ़ासिस्ट तानाशाही की स्थापना का पथ प्रशस्त किया।

मजदूर वर्ग और देश की सभी जनवादी ताकतों, विशेष रूप से जर्मन मजदूर वर्ग के हरावल—कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध देशभर में भीषण

दमनचक्र शुरू हो गया। नाज़ियों ने हज़ारों कम्युनिस्टों को गिरफ़्तार कर लिया। जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी के अखबारों और सभाओं पर रोक लगा दी गई, राइखस्ताग में कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों को उनकी सीटों से वंचित कर दिया गया। २७ फरवरी, १९३३ को हिटलर के पिछलग्गुओं ने कम्युनिस्टों को अपराधी ठहराने और उनके विरुद्ध दमन को तेज़ करने के खास उद्देश्य से राइखस्ताग भवन में आग लगा दी। पार्टी गुप्त रूप से काम करने को विवश हो गई। गैरकानूनी घोषित कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं को ढूंढ़ निकालने के लिए फासिस्ट पुलिस के सैकड़ों गुप्तचरों को लगा दिया गया। थेलमान जहां छिपे थे, उस स्थान का पता लग गया और ३ मार्च, १९३३ को वह बर्लिन के शर्लोतेनबुर्ग हल्के में गिरफ़्तार कर लिये गए।

थेलमान के जीवन का दुःखजनक काल शुरू हुआ, जो फासिस्ट कालकोठरियों और नज़रबन्दी शिविरों मे गुज़रा। डर के मारे नाज़ी ख़ुफ़िया पुलिस ने अपने बहुत ही ख़तरनाक बन्दी के कारावास-स्थान को जनता से गुप्त रखा। बर्लिन के मोआबित जेल में उन्हे तनहाई की दशा में रखा गया और बहुत सख़्ती के साथ उन्हें सभी अन्य बन्दियों से पृथक रखा जाता था। किसी को भी उनसे मिलने की इजाज़त नही थी और उन्हें धीरे-धीरे भूख से मार डालने के लिए बहुत ही कम खाना दिया जाता था। गिरफ़्तारी के बहुत दिनों बाद उनकी निष्ठाशील पत्नी और जुझारू सहयोगी रोज़ा थेलमान को उनसे भेंट करने की इजाज़त दी गयी।

राइखस्ताग में आग लगा देने के बारे में लाइप्ज़िग मुकदमे की पूर्ण विफलता और गेओर्गी दिमित्रोव तथा उनके साथियों के अभियोग से बरी हो जाने के बाद फासिस्ट जल्लादों ने जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के नेता पर अपना गुस्सा उतारने का फैसला किया। फ़ासिस्ट गुट के एक सरगना ने कहा, "थेलमान के मामले मे हम लाइप्ज़िग मुकदमे की भूलों को नही दुहरायेंगे।"

जनता की निगाहों मे अपने को "न्यायोचित" सिद्ध करने के लिए नाज़ी ख़ुफ़िया पुलिस थेलमान के विरुद्ध मामले की नाटकीय सुनवाई की तैयारिया कर रही थी। हिटलरपंथियों ने थेलमान के विरुद्ध हथियारों तथा विस्फोटक पदार्थों को जमा करने और आतंकपूर्ण कार्रवाइया तथा सशस्त्र विद्रोह संगठित करने की कोशिशें करने का अभियोग "सिद्ध करने", के लिए पुलिस के अनेक दलालो तथा गुर्गों का सहयोग प्राप्त किया। नाज़ी

समाचारपत्रों ने थेलमान और कम्युनिस्ट पार्टी को कलंकित करने के लिए निन्दात्मक झूठी खबरें फैलायी। इस बीच नाजी जल्लाद शारीरिक यंत्रणा तथा दमन और अपमान के घोरतम पाशविक तरीकों को अपनाकर उनकी संकल्पशक्ति को तोड़ने तथा जिन "अपराधों" में उन्होंने कभी कोई भाग नही लिया था, उन्हें स्वीकार कराने और अपने साथियों के प्रति विश्वासघात के लिए विवश कराने की कोशिशें कर रहे थे। उन्हे बुरी तरह पीटा गया, सम्मोहन मे लाकर उनसे मनमानी बात कहलाने का कुचक्र रचा गया, बुरी तरह अपमानित किया गया और ब्लैकमेल किया गया। उनके विरुद्ध सभी प्रकार की उत्तेजनामूलक कार्रवाइया की गई, उदाहरणार्थ—गेस्टापो ने गद्दार और पुलिस के दलाल कैट्नर को उनके सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया। जब उन्होंने गेस्टापो को कोई भी सूचना देने से इनकार कर दिया तो लोहे की छड़ों से उन्हें पीटा गया तथा उनके हाथ पैरों में बेड़ी डालकर उन्हें कालकोठरी में झोंक दिया गया, जहां दो पहरेदार सदैव उनपर निगाह रखते थे। लेकिन इस सब के बावजूद इस महान क्रान्तिकारी योद्धा का साहस भंग नही हुआ।

परन्तु इन अमानुपिक यंत्रणाओं से उनका स्वास्थ्य जरूर नष्ट हो गया। अपनी पत्नी को एक पत्र में उन्होंने लिखा, "यहां हाल ही में मैंने जो-जो वर्दाश्त किया है, उसके फलस्वरूप मेरा स्वास्थ्य बहुत ही खराब हो गया है।"

अन्ततः जब रोजा थेलमान को एक गेस्टापो पहरेदार की रखवाली मे एर्नस्ट से भेंट करने की इजाजत मिली तो उसके बाद उन्होने अपनी बेटी को इस मुलाकात का विवरण इन शब्दों मे दिया: "दरवाजा खुला और एस० एस० हत्यारे तुम्हारे पिता को अन्दर लाये। वह ठीक से चल भी नही पाते थे। उनके मुंह में दांत नही बचे थे। उनका चेहरा सूजा हुआ था। मार खाते-खाते उनका रंग काला पड़ गया था। वह बैठ भी नही पाते थे..."

इस खबर से सारी दुनिया को बहुत ही क्लेश पहुचा कि थेलमान को नाजी लोग शारीरिक यंत्रणाएं दे रहे है। सभी देशों के लोग जर्मन कम्युनिस्टो के नेता की रक्षा के लिए उठ खड़े हुए। थेलमान रक्षा-समिति की स्थापना, जर्मन सरकार के नाम विरोधपत्र, मास्को, पेरिस, प्राग, लन्दन, न्यूयार्क और अन्य अनेक नगरों की सड़कों पर सर्वहारा भाईचारे के प्रदर्शनों से

नाज़ी अत्याचारों के विरुद्ध करोड़ों-करोड़ लोगों के क्रोध की भावना प्रकट हुई। थेलमान का नाम हिटलर की ख़ूनी तानाशाही के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बन गया। प्रमुख यूरोपीय और अमरीकी बुद्धिजीवियों ने थेलमान की प्राणरक्षा के लिए अपनी आवाज बुलन्द की। रोमां रोलां ने "कम्युनिज्म और एर्नस्ट थेलमान की रक्षा!" का नारा लगाया। अन्य अनेक लेखकों — आरी बारबूस, थ्योडोर ड्राइज़र, मार्टिन एन्डर्सन नेक्से, हेनरिख़ मान्न आदि — ने थेलमान की रिहाई की मांग की। मक्सिम गोर्की ने कहा, "वह समय आयेगा जब एक ही लौ में सभी... लोगों के हृदय की ज्वाला भडक उठेगी और वह फासिस्टवाद के इस सड़े-गले नासूर को जड़ से मिटा देगी... फासिस्टवाद की क़ब्र खोदनेवाले अथक थेलमान और उनके बहादुर साथी ज़िन्दाबाद!"

महीने पर महीने और साल पर साल गुजरते गए, परन्तु फिर भी फ़ासिस्ट क़ानूनी "विशेषज्ञ" थेलमान के विरुद्ध मामले को न गढ सके — उनके कार्यकलाप में कोई भी बात उन्हे अभियोग मे फसाने लायक नहीं थी। फासिस्टों द्वारा थेलमान के बचाव के लिए नियुक्त वकील फ़्रेडरिक रेत्तेर ने भी दुनिया को यही बताया। थेलमान के विरुद्ध झूठे "अभियोग-पत्र" की जानकारी प्राप्त कर लेने और सर्वहारा नेता से अपनी निजी बातचीत के बाद रेत्तर इस नाजी अपराध मे शामिल नही हुए और इस कारण अपने साथ सरकारी अभियोग-पत्र लिए वह देश से भाग गए।

थेलमान की रिहाई के लिए व्यापक जन समुदाय का शक्तिशाली आन्दोलन सारी दुनिया में फैल गया। इसके तथा लाइप्ज़िग मुकदमे की भांति एक दूसरी विफलता के भय से नाज़ियों ने थेलमान को अदालत के सम्मुख प्रस्तुत करने का विचार त्याग दिया। थेलमान की रक्षा के लिए बर्लिन मे खुली कार्रवाई को रोकने के लिए उन्होंने अपने इस बन्दी को मोआबित जेल से हनोवर के जेलखाने में ले जाकर बन्द कर दिया।

इस प्रकार थेलमान को बिना मुकदमा चलाये और दूसरे नगर की जेल मे डालकर नाजी अत्याचारियों ने इस कम्युनिस्ट नेता को *जनता से पूर्णतया अलग-थलग करने तथा फासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष* को ठप्प कर देने की आशा की। किंतु उनकी आशाओं पर पानी फिर गया। जर्मनी के कम्युनिस्ट नाजी आतंक और दमन से भयभीत नही हुए; उन्होने गैरकानूनी परिस्थितियों मे फासिस्ट जुल्मों के विरुद्ध अपना निर्भय संग्राम जारी रखा। पार्टी का नेतृत्व थेलमान के सच्चे साथी विल्हेल्म पीक

8—3010

वाल्तेर उलब्रिख़्त, व० फ्लोरिन आदि के हाथ में था। देशभर मे सैकड़ो गैरकानूनी पार्टी इकाइया गुप्त रूप से काम करती रही।

नाजियो ने जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के प्रायः आधे सदस्यों को जेल अथवा नजरबन्द शिविरों मे झोंक दिया था। कुछ कम्युनिस्टो को जर्मनी छोड़ना और देश के बाहर रहकर फासिस्टवाद के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखना पडा। नाजियों ने पार्टी के ३५ हजार सदस्यों की हत्या कर दी। एर्नस्ट थेलमान की भांति उन सभी ने जीवन के अन्तिम क्षण तक नाज़ी अत्याचारों को बड़ी दृढ़ता के साथ बर्दाश्त किया। उन्हे जिस कठिन अग्नि-परीक्षा से होकर गुज़रना पड़ा, उसके बावजूद हृदय में अपने आदर्श के प्रति गर्वपूर्ण विश्वास और होंठों पर हत्यारो के लिए अभिशाप के साथ उन्होंने अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

सोवियत संघ पर फ़ासिस्ट जर्मनी के विश्वासघातपूर्ण हमले के शीघ्र ही बाद गेस्टापो जेलर उपहासपूर्ण ढंग से उन्हें यह बताने आये कि कुछ ही दिनो मे फ़ासिस्ट मास्को मे होगे। थेलमान ने इन नराधमों को यह उत्तर दिया, "सोवियत संघ मे सम्पूर्ण फ़ासिस्ट फौज की कब्र खुद जायेगी।" जेलरो के हंसने पर उन्होने आगे यह और जोड दिया, "तुम्हारे तडित-गति-युद्ध का अन्त ख़ुद तुम्हारे विनाश मे होगा।"

उनका कथन बिल्कुल ठीक था। सोवियत फौज ने फ़ासिस्ट नरपशु की रीढ़ ही तोड़ दी। प्रतिदण्ड के भय से फ़ासिस्टों ने घोर अपराध किया। १८ अगस्त, १९४४ को थेलमान की बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गयी और बुख़ेनवाल्द नजरबन्द शिविर मे उनकी लाश जला दी गई। थेलमान की हत्या करने के बाद दुनिया के सम्मुख अपना अपराध प्रकट करते नाजियों को भय लगा। कही १४ सितम्बर, १९४४ को जाकर उन्होंने अपनी मनगढंत यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि ब्रिटिश और अमरीकी विमानों की बम-वर्षा के फलस्वरूप २८ अगस्त को राइख़स्ताग के भूतपूर्व सदस्य ब्रेतशाइद (सामाजिक-जनवादी) और थेलमान मारे गए।

जर्मन राष्ट्र के इस उत्कट देशभक्त ने जिन आदर्शों के लिए संघर्ष किया और अपना प्राण होम दिया, वे उसके देश में सफल हो गये हैं। मजदूरों और किसानों के समाजवादी राज्य, जर्मन जनवादी जनतंत्र और जिस मज़दूर वर्ग की एकता के लिए थेलमान ने संघर्ष किया, उसे क़ायम करनेवाली जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी मे उन के आदर्शों ने मूर्त रूप ग्रहण कर लिया है।

प्रगतिशील मानवजाति एर्नस्ट थेलमान को केवल जर्मनी की वस्तुस्थिति पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को लागू करनेवाले जर्मन मजदूर वर्ग के नेता के रूप में ही नही, बल्कि क्रान्ति के एक वीर सैनिक, एक महान फासिस्ट-विरोधी और एक पुरजोश अंतर्राष्ट्रीयतावादी के रूप में भी स्मरण करती है। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के एक प्रमुख नेता, एर्नस्ट थेलमान ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की विशुद्धता और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन की सुदृढ एकता के लिए लेनिनवादी उच्च सिद्धान्तप्रियता के साथ सघर्ष किया और इसी एकता को उन्होंने सर्वहारा क्रान्ति की विजय की धरोहर माना।

जिस ध्येय के लिए एर्नस्ट थेलमान ने प्राणोत्सर्ग किया, उसे आगे बढाते हुए जर्मनी के मेहनतकश लोग उनकी पुण्य स्मृति के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते है। यह ध्येय जर्मन जनवादी जनतन्न में मूर्त रूप ग्रहण कर रहा है, जहा जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी समाजवादी समाज के निर्माण का दिशा-निर्देशन कर रही है। जर्मन सघात्मक गणराज्य मे नाज़ियो के शासन-काल की भाति गैरकानूनी स्थिति मे पडी जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी इस ध्येय का समर्थन करती है। १६६३ मे हुई जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की काग्रेस में केन्द्रीय समिति के प्रथम सेक्रेटरी माक्स राइमान ने घोषणा की थी कि जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी अपने सदस्यों और संघात्मक गणराज्य के मजदूर वर्ग में सोवियत संघ और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति मैत्री की भावना भरकर एर्नस्ट थेलमान की भावना मे काम करती रहेगी।

पश्चिमी जर्मनी के सैन्यवादियों और प्रतिशोधवादियों के लिए थेलमान की स्मृति अप्रिय है। जिस चीज़ से भी चाहे जितने धुंधले रूप मे उनका दीप्तिमान जीवन अभिव्यक्त होता है, उसे वे मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। नाज़ियों की पराजय के बाद थेलमान के सम्मान मे हेम्बर्ग की जिस सड़क का नाम "थेलमान मार्ग" रखा गया था, १६५६ मे उन्होंने उसका नाम बदल दिया।

परन्तु, पश्चिमी जर्मनी के प्रतिक्रियावादी चाहे जितनी भी कोशिशें करें, वे मेहनतकश लोगों के स्मृति-पटल पर अंकित थेलमान के चित्र को नही मिटा सकते। उनकी पुण्य स्मृति सभी ईमानदार जर्मनों से फासिस्टवाद के फिर से सिर उठाने का प्रतिरोध करने का आह्वान करती है।

जर्मन जनता और उसके साथ ही सारी दुनिया के स्त्री-पुरुष महान कम्युनिस्ट तथा क्रान्ति के सैनिक एर्नस्ट थेलमान की स्मृति को संजोये हुए हैं।

सेन कातायामा

"क्रान्ति और कम्युनिज्म के लिए अपने को समर्पित कर देना यही है मेरे जीवन का अर्थ . . . यदि मैं कम्युनिज्म के ध्येय के लिए काम नहीं कर सकता, तो मैं जीवित भी नहीं रहना चाहता।"

सेन कातायामा

रूसी-जापानी युद्ध अपनी चरम सीमा पर था। जापानी जनरल नोगी की सेना ने पोर्ट-आर्थर को घेर लिया था और वह इस गढ़ पर धावा बोलने ही वाली थी। रूसी जनरल कुरोपाटकिन लाओयांग में निर्णायक लड़ाई के लिए अपनी फ़ौजें जमा कर रहा था। दोनों देशों में आबादी के अधिक पिछड़े

हुए तबकों में सैन्यवादी प्रचार के कारण अंधराष्ट्रवाद की भावनाएं पैदा की जा रही थीं।

१४ अगस्त, १६०४ को हालैण्ड की राजधानी अमस्टर्डम में दूसरे इंटरनेशनल की छठी कांग्रेस हुई। उद्‌घाटन समारोह के बाद अध्यक्ष ने प्रतिनिधियों का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया कि एक-दूसरे के विरुद्ध युद्धरत देशों के समाजवादी रूस के गे० व० प्लेखानोव और जापान के सेन कातायामा उपाध्यक्ष चुने गये हैं। प्लेखानोव और कातायामा उठे तथा रूसी और जापानी मजदूरों की दोस्ती के प्रमाण के रूप में उन्होंने हाथ मिलाये। श्रोताओं की तूफानी करतलध्वनि गूंज उठी। जब प्लेखानोव और कातायामा अपनी-अपनी सीटों की ओर मुड़े, तो करतलध्वनि जारी रही और उन्होंने दुबारा हाथ मिलाये। प्रतिनिधियों की जोरों की जयध्वनि के बीच प्लेखानोव ने जापानी प्रतिनिधि को गले से लगा लिया और उनको चूम लिया।

उस दिन कातायामा ने कांग्रेस में पुरजोश सैन्यवाद-विरोधी भाषण दिया। क्लारा जेटकिन ने जर्मन में और रोज़ा लुक्जेमबुर्ग ने फ़्रांसीसी में इसका अनुवाद किया। पूंजीवादी व्यवस्था तथा जापानी और ज़ारशाही सरकारों की अपराधमूलक युद्ध-नीति की शिकार दोनों देशों की साधारण जनता के प्रति गहरी सहानुभूति अभिव्यक्त करनेवाले कांग्रेस के प्रस्ताव को तैयार करते समय इस भाषण को आधार बनाया गया। अमस्टर्डम में सर्वहारा एकता के इस प्रदर्शन का ज़बरदस्त अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव पड़ा। सेन कातायामा का नाम यूरोपीय अख़बारों के प्रथम पृष्ठों पर प्रकाशित हुआ।

दूसरे इंटरनेशनल की कांग्रेस में इस लाक्षणिक हाथ मिलाने से जापान में हलचल पैदा हो गई। प्रगतिशील "हाइमिन शिम्बून" (सार्वजनिक पत्र) ने लिखा, "हमारे पाठक इससे सहमत होंगे कि यह हाथ का मिलाना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। विश्व समाजवादी आन्दोलन के इतिहास में इसका गौरवपूर्ण उल्लेख होगा, क्योंकि यह कोरी ऐसी बात नहीं है कि किसी कातायामा ने किसी प्लेखानोव से हाथ मिलाये हैं, बल्कि जापान और रूस की समाजवादी पार्टियों ने अपने प्रतिनिधियों के ज़रिये हाथ मिलाये हैं।"

यह वह अखबार था, जिसने शुरू से ही युद्ध के विरुद्ध सुदृढ़ रुख़ अपनाया था और १३ मार्च, १६०४ को अपने संयुक्त शत्रु के विरुद्ध संघर्ष में जापानी और रूसी सर्वहाराओं के पारस्परिक हितों पर जोर देते हु..

युद्ध का संयुक्त विरोध करने की अपील करते हुए "रूस की समाजवादी पार्टी के नाम" एक घोषणापत्र प्रकाशित किया था। इस घोषणापत्र में कहा गया था कि "हम समाजवादी नसली, क्षेत्रीय अथवा जातीय भेद नही मानते। हम सभी साथी, भाई और बहनें है और हमारे पास एक-दूसरे से लड़ने का कोई कारण नही है। आपका शत्रु जापानी जनता नही, बल्कि जापानी सैन्यवाद और तथाकथित देशप्रेम है। और इसी प्रकार हमारा दुश्मन रूसी जनता नही, बल्कि रूसी सैन्यवाद और तथाकथित देशप्रेम है।"

अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा एकता के पर्व, १९०४ के मई दिवस के अवसर पर "ईस्क्रा" ने इसका उत्तर प्रकाशित किया। इसमें कहा गया था, "यह घोषणापत्र ऐतिहासिक महत्त्व की दस्तावेज़ है। यदि हम रूसी सामाजिक-जनवादी इसे अच्छी तरह महसूस करते हैं कि युद्ध-काल में हमारे सम्मुख कैसी कठिनाइयां प्रस्तुत है... तो हमें इसे भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे जापानी साथियों की स्थिति हमसे भी अधिक विषम है, जिन्होंने ऐसे समय हमारी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया है, जब राष्ट्रीय भावनाएं पराकाष्ठा पर है। दोनों देशो के अंधराष्ट्रवादी उन्माद और शोरगुल के बीच उनकी वाणी उस बेहतर दुनिया की घोषणा के रूप में प्रतीत होती है, जिसका अस्तित्व इस समय केवल वर्ग-चेतन सर्वहारा के दिमाग मे है, परन्तु कल यही वास्तविकता का रूप ग्रहण कर लेगा।" "हाइमिन शिम्बून" ने "ईस्क्रा" का पूरा उत्तर प्रकाशित किया।

इस प्रकार करीब ६० वर्ष पहले ही रूस और जापान के सर्वहाराओं के बीच भाईचारे का सम्बन्ध स्थापित हो विकसित होने लगा था और जापानी मजदूर वर्ग की पवित्र अंतर्राष्ट्रीय परम्पराओं ने अपनी जड़ जमा ली थी।

प्रारम्भिक काल

जापान के सबसे बड़े द्वीप होंशू के दक्षिणी भाग में हादेकी नामक पहाड़ी गांव मे (मीमासाका जिला) ३ दिसम्बर, १८५९ को किसान यूनीहेई कोयो के घर दूसरा लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम उन्होंने गूगानारो रखा। जापानी प्रथा के अनुसार छोटे लड़के पिता की सम्पत्ति उत्तराधिकार में नहीं पाते। इसलिए मा ने, इसे जानते हुए कि उसका परिवार बिना

वारिस के है, यह इच्छा प्रकट की कि बच्चे का नाम उसके अपने विवाहपूर्व नाम पर याबूकी* रखा जाये।

जब सूगातारो चार साल के थे, उनके पिता ने भिक्षु हो जाने का व्रत ग्रहण कर लिया। उनका पालन-पोषण करने का काम उनके न्यायप्रिय और विवेकशील परदादा कोचीजाईमोन ने लिया, जिन्होंने ग्राम मुखिया के रूप में ६० साल से अधिक समय तक बडे साहस के साथ किसानों के हितों की रक्षा की थी और इस कारण वे इनका बड़ा सम्मान करते थे। लड़के पर अपने प्रपितामह का बडा असर पड़ा।

सूगातारो का बचपन तोकूगावा सामंती शासन के अंतर्गत व्यतीत हुआ। कम उम्र से ही बालक ने अन्याय, निर्दयता और उत्पीडन को देखा और अनुभव किया। १८६८, १८६६ और १८७३ मे उसने अपने और पड़ोसी गावों के किसानों को स्थानीय अधिकारियो के दुर्व्यवहार से आवेश मे आकर अपने उत्पीड़कों के खिलाफ़ उठ खड़े होते देखा। सूगातारो के बड़े भाई और चाचा ने १८७३ के किसान विद्रोह मे भाग लिया। उनके भाई ने प्राय: एक साल की जेल की सजा काटी। बचपन के ये चित्र बालक के स्मृति-पटल पर अंकित हो गए और इनसे उसका दृष्टिकोण प्रभावित हुआ।

जब वह सात साल के थे, तभी उनकी परम्परागत शिक्षा शुरू हुई। स्थानीय शीनतो मन्दिरों के पुजारियों ने उन्हें लिखना और पुरानी पुस्तकों को पढना सिखाया। समझ में न आनेवाली इन पाठ्यपुस्तको को रटने से बालक मे अरुचि पैदा हो गई और उसने अपनी पढ़ाई मे बहुत कम प्रगति की।

कुछ साल बाद, हाल ही मे खुले पास के यूरोपीय ढग के प्राइमरी स्कूल में अपना नाम लिखाने मे जब उसे सफलता मिल गई, तो सभी विषयो की पुस्तको को वह इस प्रकार तन्मय होकर पढ़ने लगा कि शीघ्र ही अपनी कक्षा का सर्वोत्कृष्ट विद्यार्थी हो गया। परन्तु १०० दिन स्कूल

---

*अनिवार्य फौजी भर्ती से बचाने के लिए सूगातारो याबूकी को १८७८ में कानूनी तौर पर गोद ले लिया गया और वह पड़ोसी कामीमे गांव के एक संतानहीन किसान ईकूतारो कातायामा के वारिस हो गए। बाद में, १८६५ में उन्होंने अपना पहला नाम बदल कर सेन कर दिया।–सं०

जाने के बाद ही उसे अपनी पढाई बन्द करनी पड़ी ; उसके भाई को सरकार विरोधी गतिविधि मे भाग लेने के अपराध में जेल की सजा हो गई थी और मा को उसकी सहायता की जरूरत थी। बालक को स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने की जो प्रबल आकांक्षा पैदा हो गई थी, वह बनी रही। सुबह से रात तक खेती के कठिन काम में लगे रहने के बावजूद उन्होंने आश्चर्यजनक दृढ़ता और इतने अच्छे नतीजे के साथ अपनी स्वशिक्षा जारी रखी कि १८७७ की पतझड़ मे यूगे बस्ती के प्राइमरी स्कूल के शिक्षक ने उन्हे प्रारम्भिक कक्षाओं को पढाने के लिए अपने सहायक के रूप मे रख लिया। अगले साल, अपने जीवन मे पहली बार अपना घर छोड़कर, उन्होने एक दूसरे स्कूल मे इसी प्रकार की नौकरी स्वीकार कर ली। अब वह पूर्णतया खुद अपने सहारे थे। अपने प्रशिक्षण की कमी दूर करने के खयाल से उन्होंने क्रमबद्ध अध्ययन करने का निर्णय किया और १८८० में ओकायामा के शिक्षक ट्रेनिंग स्कूल में दाखिल हो गए। यहां वह अच्छे भोजन की माग को लेकर छात्रों की हड़ताल में शामिल हुए। यह सामूहिक कार्रवाई का उनका प्रथम अनुभव साबित हुआ।

ट्रेनिंग स्कूल में एक साल पढने के बाद युवा कातायामा ने काम और अधिक ज्ञान दोनों की खोज में टोकियो जाने का निश्चय किया। परिस्थिति बहुत विषम थी। सबसे पहले उन्होंने "सेकिबुनशा" मुद्रणालय मे अप्रेंटिस कम्पोजीटर के रूप में काम किया, कम्पोजीटर का काम सीखा और बाद में दूसरे काम किए। तीन साल तक, प्रायः भूखे रहकर, महीने में केवल दो दिन विश्राम करके प्रति दिन दस घंटे तक परिश्रम करते हुए वह शाम और रात को पढ़ने-लिखने में लगे रहे और उन्होंने विद्या के अकदम भिन्न-भिन्न क्षेत्रों मे लगन एवं दृढता के साथ प्रवेश किया।

यही वह समय था, जब सेन कातायामा ने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध और जापानी जनता के सुखद भविष्य के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता को अधिकाधिक महसूस किया। उन्हे मेइजी* क्रान्ति के महान नेताओं के आदर्श से प्रेरणा प्राप्त हुई थी, जिनकी जीवन-गाथा का अध्ययन उन्होने अपने शिक्षक र० ओका की ऐतिहासिक पुस्तकों में किया था। कातायामा ने अपनी जीवनी में लिखा, "वर्तमान सामाजिक

---

*१८६७–१८६८ की अपूर्ण पूजीवादी क्रान्ति।–सं०

व्यवस्था के खिलाफ विरोध की भावना मेरे मन में जागृत हुई। जिस प्रकार क्रान्ति-काल के लोगो ने तोकूगावा की निरंकुशता को बुरा माना, उसी प्रकार सरकार की आक्रामकता के ख़िलाफ़ मेरे मन मे क्रोध की भावना पैदा हुई... इसके अलावा मैं क्रान्तिकारी कार्य करने का सपना देखने लगा। मैं क्रान्तिकारी युग के रूमानी खयालों के साथ बह गया। इसके नेता आत्मबलिदान और पराक्रम के प्रभावपूर्ण परिवेश मे मानो जीकर पुनः मेरे सामने खड़े हो गए और उन्हे आदर्श रूप में परिणत करते हुए मुझे इस बात से वडी निराशा हुई कि उनकी तुलना में सत्तारूढ नौकरशाही गुट कितना ओछा है।"

अपनी शिक्षा जारी रखने और भावी संघर्ष के लिए अपने को अच्छी तरह तैयार करने की आशा से १८८४ के नवम्बर में सेन कातायामा अमरीका रवाना हो गए। वह जब वहां पहुंचे तो उनके पास एक पैसा भी नही था, और बारह साल से अधिक समय तक उन्होंने हर प्रकार का काम किया—धोबी, चौकीदार, बर्तन साफ करनेवाला, खेत-मजदूर, रसोइया, कम्पोजीटर का काम। रंग-भेद के कट्टर पोषकों के कारण इस "पीले उत्प्रवासी" को वहां रहते समय बेकारी, भूख और अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ा। स्वयं पूजीवादी शोषण और रंग-भेद की विभीपिका का अनुभव करके वह आजीवन अमरीकी नीग्रो के दोस्त और समर्थक बने रहे।

अपनी दृढ़ संकल्पशक्ति के कारण सेन कातायामा ने अनेक कठिनाइयों को पार किया।

१८६२ में उन्होंने ग्रिनेल कालेज से बी० ए० और उसके वाद एम० ए० की उपाधि प्राप्त की। मजदूरों की किस्मत को सुधारने के लिए संघर्ष के तरीको पर विचार करते हुए उन्होंने सामाजिक समस्याओं के गहरे अध्ययन में दिलचस्पी ली। १८६४ के वसंत में छात्रों की एक टोली के साथ वह इंगलैण्ड गए और वहा अपने तीन महीने के निवास के दौरान उन्होंने ब्रिटिश मजदूर आन्दोलन की बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त की और टाम मान्न, जान वर्नस और कैर हार्डी सहित इस आन्दोलन के नेताओं से भेंट की। वह और टाम मान्न पक्के दोस्त वने रहे।

अमरीका वापस लौटने के बाद आगे शिक्षा जारी रखने के लिए जो भी काम मिल सका, सेन कातायामा स्वीकार करते गये।

सेन कातायामा संयुक्त राज्य अमरीका में

१८९५ मे उन्होंने येल विश्वविद्यालय मे अपना अध्ययन पूरा किया, जहा, उनके ही शब्दों मे, उन्होंने एकमात्र सामाजिक समस्याओ के अध्ययन में अपने को संलग्न रखा। अन्ततः, १८९६ मे वह जापान वापस लौट आये।

जापानी मजदूर और कम्युनिस्ट आन्दोलन के संगठक तथा नेता

उस समय जापानी उद्योग का तीव्र गति से विकास हो रहा था। मजदूरों की संख्या मे वृद्धि होने के साथ ही प्रथम मजदूर संगठनों का जन्म हो रहा था, लेकिन उनके नेताओं के राजनीतिक विचार अक्सर बहुत ही अस्पष्ट होते थे।

कातायामा ने समाजविज्ञान-सम्बन्धी समस्याओं और अपने दृष्टिकोणों के लिए दूसरे देशों के मजदूरों के संघर्ष के बारे मे कई लेख लिखकर अपने देश में अपना राजनीतिक कार्य शुरू किया। १८९७ की गर्मी में इंग्लैण्ड के डाक्टर डी० सी० ग्रीन की सहायता से टोकियो में उन्होंने "किंग्सले-कान" (किंग्सले हॉल) नामक शैक्षिक संस्था स्थापित की। डा० ग्रीन इसे ईसाई धर्मार्थ शैक्षिक संस्था बनाना चाहते थे और कातायामा, जिनके कुछ भ्रम अभी बने हुए थे, उनके साथ काम करने पर तैयार हो गये। शीघ्र ही उन्हे विश्वास हो गया कि इस प्रकार के [illegible] से मजदूरों की दुर्दशा का अन्त न होगा। जब उनके और ग्रीन के बीच मतभेद पैदा हुए, तो ग्रीन ने "किंग्सले-कान" को आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया। बाद मे कातायामा ने लिखा, "मैं संकट का [illegible], [illegible] बहुत पैसे कमा पाता था, [illegible] [illegible]

भी स्थापना की गई। इन सभी बहुमुखी कार्यों का मार्ग-निर्देशन कातायामा करते थे। परन्तु उनका अधिक ध्यान कोईचिकावा के गोला-बारूद के कारखाने, आकावाने आयुधागार और नौसेना यार्ड जैसे पास-पड़ोस के कारखानों के मजदूरों के शैक्षिक काम की ओर लगा रहा।

१८९७ मे हड़तालों की लहर से जापान हिल उठा। मजदूर सगठित होने तथा अपनी ट्रेड-यूनियनें कायम करने लगे। १८९८ की जुलाई मे सेन कातायामा, फूसातारो ताकानो आदि ने "ट्रेड-यूनियन संवर्धन सगठन" कायम किया। मजदूरों से सगठित हो जाने का आह्वान करते हुए कातायामा और उनके साथियो ने औद्योगिक नगरों का दौरा किया। उन्हे काफी सफलता मिली। १ दिसम्बर, १८९७ को एक हजार से अधिक सदस्यो के साथ लोहा मजदूर यूनियन कायम हुई। इसी अवसर पर बड़ी सार्वजनिक सभा हुई तथा "रोदो सेकाई" (मजदूर जगत) का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ, जो लोहा मजदूर यूनियन और "ट्रेड-यूनियन संवर्धन संगठन" का मुखपत्र हो गया। सेन कातायामा जापान के मजदूरों के इस प्रथम मुद्रित अख़बार के सम्पादक थे। इसमें एक पृष्ठ में अंग्रेजी मे मजदूरों की खबरें दी जाती थी, जिससे "रोदो सेकाई" बाहरी दुनिया के लिए जापान के मजदूर आन्दोलन के बारे में सूचना पाने का बहुमूल्य स्रोत बन गया।

वास्तव मे पहले भी जनसाधारण को संगठित करने के प्रयास किये गये थे। जनता की आज़ादी और जनवादी अधिकारों के लिये पूंजीवादी उदारपंथी आन्दोलन के वामपथी नेताओ ने ये प्रयास किये थे। परन्तु केवल सेन कातायामा ने ही मजदूर वर्ग के नेतृत्व में श्रमिकों के संगठनों को क़ायम करने पर जोर दिया।

कातायामा ने सामाजिक समस्याओं का अपना गहन अध्ययन जारी रखा। इस बात का पूर्ण विश्वास हो जाने पर कि समाजवाद एकमात्र सही शिक्षा है, वह १८९८ में "समाजवाद-सम्बन्धी अध्ययन सोसाइटी" के एक संगठक हो गये।

१९०० में "समाजवादी संगठन" कायम किया गया, जिसमें कातायामा का कार्य प्रमुख था। इसने मजदूरो की कई रैलिया और सभाएं आयोजित की और समाजवादी विचारों के प्रसार मे बहुत योगदान करके जापान में सामाजिक-जनवादी पार्टी की स्थापना का पथ प्रशस्त किया।

कातायामा द्वारा सम्पादित अखबार "रोदो सेकाई" समाजवादी विचारों का प्रचार करने लगा। १६०० में मई दिवस के अवसर पर इसमे "सामाजिक सुधार और शान्ति" शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ। मार्च मे "रीकूगो ज़ासशी" (दुनिया) नामक एक प्रगतिशील पत्रिका ने सेन कातायामा का "'पूंजी' और उसके लेखक कार्ल मार्क्स" लेख प्रकाशित किया। ठीक उसी समय श्रम और पूजी के बीच अनिवार्य सघर्ष की भविष्यवाणी करने तथा जापान में सामाजिक-जनवादी पार्टी सगठित करने के महत्त्व पर ज़ोर देते हुए कातायामा ने "मेरी दृष्टि मे समाजवाद" नामक पुस्तिका लिखी।

१८६० मे शाही जापानी ससद के हुए पहले चुनाव में मताधिकार सम्बन्धी शर्तों और अन्य प्रतिबन्धों के कारण आबादी मे मतदाताओ की संख्या एक प्रतिशत से अधिक नही थी, और इस परिस्थिति के फलस्वरूप सार्विक मताधिकार का व्यापक आन्दोलन शुरू हुआ। कातायामा ने इस आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया और १८६६ मे वह सार्विक मताधिकार संघर्ष यूनियन के सेक्रेटरी चुने गये।

एक किसान के लड़के, जो एक सामती गाव मे पैदा हुए, सर्वहारा पात मे शामिल होकर और पूंजीवादी शोषण और नसलवाद की सम्पूर्ण निर्ममता को बर्दाश्त करनेवाले कातायामा पिछली सदी के अन्त मे दीर्घकाल के प्रयास के बाद जापानी मज़दूर आन्दोलन के एक विख्यात नेता और समाजवादी विचारो के प्रचारक के रूप मे उभरे। अपने कार्यों से उन्होंने विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की: १६०० में पेरिस मे हुई दूसरे इंटरनेशनल की कांग्रेस ने उनकी अनुपस्थिति में उन्हे अपनी कार्य-समिति के ब्यूरो का सदस्य चुना।

१६०१ की मई में सेन कातायामा ने जापान की सामाजिक-जनवादी पार्टी को कायम करने के पहले प्रयास में भाग लिया। यद्यपि इसका कार्यक्रम बहुत ही सीमित था ("क़ानूनी सीमा के अन्तर्गत संघर्ष"), परन्तु फिर भी पार्टी पर तत्काल प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

१६०३ और १६०४ मे सेन कातायामा ने उस समय जापान मे सभी प्रगतिशील सामाजिक विचारो का केन्द्र-बिन्दु "हाइमिन शिम्बून" नामक अख़बार मे लेख लिखे। उस समय जापानी साम्राज्यवाद ज़ारशाही रूस के विरुद्ध युद्ध की तैयारिया कर रहा था और तभी सेन कातायामा तथा उनके साथियों ने जापानी जनता को यह विश्वास दिलाने के लिये प्रचारात्मक

दौरे किये कि इस प्रकार के युद्ध से कष्ट, मौत और विनाश के अलावा और कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। अमस्टर्डम में हुई दूसरे इंटरनेशनल की कांग्रेस में भाग लेने के बाद वापस आकर कातायामा ने अपनी युद्ध-विरोधी सरगर्मियों को बहुत बढ़ा दिया।

रूसी-जापानी युद्ध के कारण मजदूरों की स्थिति इतनी खराब हो गई कि कई इलाकों में विद्रोह की आग फैल गई। निस्सन्देह, इन्हें १६०५ की रूसी क्रान्ति से प्रेरणा प्राप्त हुई थी। इन सभी बातों से मजदूरों की एक पार्टी संगठित करने की बहुत ही जरूरत महसूस की गई। १६०६ की फरवरी में सेन कातायामा के सहयोग से जापान की समाजवादी पार्टी कायम की गई। इसने मुख्यत १६०१ में विघटित सामाजिक-जनवादी पार्टी के सीमित कार्यक्रम को बरकरार रखा। कातायामा इस नयी पार्टी की केन्द्रीय कार्य-समिति के सदस्य चुने गये।

१६०७ के जून से १६११ के अगस्त तक सेन कातायामा समाजवादी विचारों का प्रचार करनेवाले साप्ताहिक अखबार "शकाई शिम्बून" के सम्पादक थे। मजदूरों के निर्मम शोषण और उत्पीड़न के ठोस उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस अखबार ने मजदूरों में वर्ग-चेतना पैदा करने और समाज की तत्कालीन व्यवस्था को बदलने के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता समझाते हुए उन्हें ट्रेड-यूनियनों और राजनीतिक पार्टी मे शामिल होने पर जोर दिया। केवल एक ही वर्ष मे—१६०७ के जून से १६०८ के जून तक—इस पत्र में कातायामा के २१ लेख प्रकाशित हुए। उसी काल में इस अखबार की ओर से टोकियो मे ७८ सभाएं आयोजित की गई और इसके स्टाफ के सदस्यों ने सभाओं मे भाषण देते हुए विभिन्न प्रदेशों मे १५० बार दौरे किये और कातायामा प्रायः सदैव उनके साथ जाते रहे।

जब समाजवादी पार्टी में सुधारवादी और अराजकतावादी-संघाधिपत्यवादी प्रवृत्तिया उभरी, तो सेन कातायामा ने आन्दोलन के लिये इनसे प्रस्तुत होनेवाले खतरे को महसूस कर लिया। उन्होंने जनसाधारण में राजनीतिक तथा संगठनात्मक काम और उसके दैनिक हितों के लिये संघर्ष के महत्त्व को कम आकने और "पूंजीपति वर्ग को मिटाने के लिये प्रत्यक्ष संघर्ष" के प्रसंग मे "फ़ौरी आम हड़ताल" और "संसदीय चुनावों का बहिष्कार" सम्बन्धी दुस्साहसिक नारों के लिये कोतोकू की आलोचना की।

मज़दूर और समाजवादी आन्दोलन की बढ़ती हुई लहर से आतंकित प्रतिक्रिया ने हमला शुरू कर दिया। सम्राट की हत्या करने के झूठे अभियोग मे १६१० मे जिन लोगो पर मुकदमा चलाया गया था, उनमे से १२ प्रतिवादियों को मृत्युदंड दिया गया, जिनमे कोतोकू और उनकी पत्नी लेखिका सुनीको अबे भी शामिल थे। मज़दूरों के संगठनों पर बड़ी निर्ममता के साथ हमले होने लगे। देश में एकमात्र समाजवादी अखबार "शकाई शिम्बून" बच गया था, जो साप्ताहिक की जगह अब मासिक पत्र हो गया था और इसमें वैज्ञानिक समाजवाद पर कातायामा के लेख प्रकाशित होते रहे। कोतोकू की मौत के बाद प्रकाशित कृति "मसीहा की अस्वीकृति" की लम्बी समालोचना प्रकाशित करने के कारण १६११ के मार्च में "शकाई शिम्बून" के सम्पादक के नाते कातायामा की सख्त भर्त्सना की गई और अखबार को बंद करना पड़ा।

परन्तु कातायामा तो एक अडिग योद्धा थे, जो न तो आतंक और न दमन से भयभीत हो सकते थे। १६११ के अंत मे उन्होंने टोकियो के ट्राम मज़दूरो की हड़ताल कराई, जिन्होने नये साल के अवसर पर बोनस की मांग की थी। १ जनवरी, १६१२ को टोकियो की सड़कों पर एक भी ट्राम चलती हुई नहीं दिखाई पड़ी। कई दिन तक चलनेवाली इस हड़ताल में ६ हज़ार मज़दूर शामिल थे। इस हड़ताल के सभी संगठकों को गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हे अदालत के सम्मुख पेश किया गया। क्रोध में आग बबूला होकर अभियोक्ता ने यह कहते हुए कि सेन कातायामा "भेड़ की खाल ओढ़े शेर" के समान खतरनाक है, उन्हें बहुत ही सख्त सजा देने की मांग की।

सेन कातायामा और उनके ६० साथियों को कारावास दण्ड मिला। जेल में कातायामा ने ६ महीने तक तनहाई की सज़ा काटी और वह अग्नि-परीक्षा का समय था। बाद मे उन्होंने उसे स्मरण करते हुए लिखा, "जेल में मैंने कई दु:खजनक क्षण व्यतीत किये। काफी रात गुज़र जाने के बाद वार्डर एक कैदी को शारीरिक यंत्रणा देनेवाले कमरे में ढकेल ले जाते और उसे बास की छड़ी अथवा कोड़ो से पीटते। शुरू मे वह ज़ोरों से चीख़ उठता, परन्तु कुछ क्षण बाद उसकी चीख़ मन्द पड़ती जाती और फिर मुश्किल से ही सुनाई पड़ती थी..." जेल में कातायामा मार्क्स की "पूंजी" पढ़ते रहे और अपनी जीवनी लिखनी शुरू की, जिसे बाद में (१६३०-१६३१) उन्होंने सुधारा और उसमें कुछ नये अश जोड़े।

जेल से रिहा होने के बाद कातायामा पर वस्तुतः सभी प्रकार के राजनीतिक और साहित्यिक कार्य करने की रोक लगा दी गई। उन्होंने बाद मे लिखा, "मुझे सर्वाधिक खतरनाक व्यक्ति समझा गया। हर समय मुझपर निगाह रखी जाती थी, जिससे मजदूर आन्दोलन मे भाग लेना मेरे लिये सर्वथा असंभव हो गया।" वह जानते थे कि उन्हे किसी भी क्षण फिर गिरफ्तार कर लिया जा सकता है और जेल में ही उनकी हत्या की जा सकती है। १९१४ मे अनिच्छापूर्वक पुनः वह विदेश चले गये।

विदेश मे रहते समय उन्होंने जापान के समाजवादी और मजदूर आन्दोलन से घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखा। अमरीका में वह जापानी समुदाय मे बहुत ही सक्रिय रहे, समाजवादी दल संगठित किया और १९१९ के मध्य तक "हाइमिन" नामक पत्र जापानी और अंग्रेजी में न्यूयार्क से प्रकाशित करते रहे।

सेन कातायामा ने रूसी उत्प्रवासियों से भी घनिष्ठ सम्पर्क क़ायम रखा। उन्होंने उनसे ज़िम्मरवाल्ड और किएन्थाल में हुए सम्मेलनों के बारे मे जानकारी प्राप्त की। इन सम्मेलनों के निर्णयों से प्रभावित होकर उन्होंने व्यापक युद्ध-विरोधी प्रचार किया और साथ ही वह अमरीका के वामपंथी समाजवादी आन्दोलन मे सक्रिय रहे। कम्युनिस्ट इटरनेशनल के कायम हो जाने के बाद वह बड़े उत्साह के साथ इसके काम मे जुट गये और अमरीका, मेक्सिको तथा कनाडा की कम्युनिस्ट पार्टियों को कायम करने मे सहायता प्रदान की।

कातायामा के देहावसान पर शोक प्रकट करते हुए कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्य-समिति के अध्यक्ष-मण्डल ने लिखा: "जिस देश के राज्यतंत्रवादी गिरोह, जमीन्दार और पूंजीपति तथाकथित राष्ट्रीय हितों के नाम पर सतत मज़दूरों के साथ अत्याचार करते रहते हैं, उसी देश के सपूत सेन कातायामा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के अडिग और निस्स्वार्थ योद्धा रहे हैं... भाग्य ने उन्हे जहा भी पहुचा दिया, उन्होंने तत्काल जनसाधारण को पूंजी के लिये घोर नफरत और सभी सर्वहाराओं की अन्तर्राष्ट्रीय एकता का सन्देश देना शुरू कर दिया।"

सेन कातायामा ने बड़े उत्साह के साथ महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का स्वागत किया।

उनके अखबार "हाइमिन" ने रूसी क्रान्ति का समर्थन किया और बाद में दृढ़ता के साथ सोवियत सुदूर पूर्व मे विदेशी हस्तक्षेप की भर्त्सना की। महान अक्तूबर क्रान्ति के अनुभव का अध्ययन करने और इसका प्रसार करने को उत्सुक कातायामा ने लेनिन की पुस्तक "राज्य और क्रान्ति" का जापानी भाषा मे अनुवाद किया।

१४ दिसम्बर, १६२१ को वह सोवियत सघ पहुंचे और यहा उन्हे अपने उत्साहपूर्ण कार्य के लिये पर्याप्त अवसर सुलभ हुआ। पांच दिन बाद, १६ दिसम्बर को उन्होंने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की ओर से रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के ११वें अखिल रूसी सम्मेलन का अभिवादन किया। और उसके बाद शीघ्र ही १६२२ की जनवरी में उन्होंने जापान की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति तथा मजदूर आन्दोलन के विकास पर सुदूर पूर्व के कम्युनिस्ट और क्रान्तिकारी संगठनों की प्रथम कांग्रेस मे भाषण दिया।

कातायामा ने अक्तूबर क्रान्ति के महत प्रभाव का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इसके प्रत्यक्ष प्रभाव के फलस्वरूप १६१८ के अगस्त और सितम्बर मे "चावल विप्लव" जैसे जापानी मजदूरों, किसानों और शहरों मे रहनेवाले गरीबों के सामूहिक विद्रोह फूट पड़े, जिनमे करीब एक करोड़ लोगों ने भाग लिया था।

उन्होंने इस पर जोर दिया कि इस कांग्रेस में अपने प्रतिनिधि-मण्डलों को भेजनेवाले कोरिया, मंगोलिया, जावा और जापान के सर्वहाराओं ने यह महसूस कर लिया है कि एक नये साम्राज्यवादी युद्ध में एक-दूसरे को मिटाना कितनी बड़ी मूर्खता होगी।

सेन कातायामा ने सोवियत सुदूर पूर्व मे हस्तक्षेप में भाग लेनेवाले जापानी सैनिको के बीच युद्ध-विरोधी प्रचार को बहुत महत्त्व प्रदान किया। जापानी समाजवादियो द्वारा पूरी शक्ति से समर्थित इस प्रचार से व्यावहारिक नतीजे हासिल हुए। १६२० के शुरू में ही व्लादीवोस्तोक के निकट पूरी जापानी कम्पनी ने अफसरों के आदेशों की अवहेलना की। सैनिकों ने अपने कन्धे के फ़ीतों को फाड़कर फेंक दिया और उनकी जगह लाल फीते लगा लिये। इस कारण उन्हे बख़्तरबन्द जहाज़ "मोकासा" पर बलात चढ़ाकर बीच सागर में गोली से उड़ा दिया गया। दूसरे क्षेत्रों में भी जापानी सैनिको का लाल फौज के पक्ष मे हो जाना कोई असामान्य बात नही थी।

१६२२ की मई और जून मे कातायामा ने साइबेरिया का दौरा किया

और उसके दौरान उन्होंने चिता नामक नगर में एक सप्ताह ठहरकर परचे लिखे, जिनमें उन्होंने जापानी सैनिकों से सोवियत रूस के मजदूरों और किसानों के विरुद्ध लड़ाई बन्द करने और वापस लौटने की अपील की थी। सरल भाषा में लिखे गये इन पुरजोश परचों का सैनिकों के दिल पर असर पड़ा और निस्सन्देह इनसे जापानी हस्तक्षेपकारी सेना के सैनिकों में असंतोष भड़काने में सहायता मिली।

अक्तूबर क्रान्ति से जापान मे समाजवादी आन्दोलन के विकास को शक्तिशाली प्रेरणा प्राप्त हुई। अनेक कम्युनिस्ट मण्डलियां अस्तित्व में आ गई। इन्हीं मण्डलियों को मिलाकर १५ जुलाई, १६२२ को गुप्त रूप से टोकियो में हुई उद्घाटन कांग्रेस मे जापान की कम्युनिस्ट पार्टी कायम की गई। सेन कातायामा जापानी कम्युनिस्ट पार्टी के एक संगठक तथा इसके मान्य नेता थे। अपने जीवन के अन्तिम समय तक कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्य-समिति में उन्होंने जापानी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधित्व किया।

अपनी मातृभूमि से दूर रहते हुए भी सेन कातायामा ने जापानी श्रमिक जनता के जीवन और संघर्ष से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध कायम रखा। वह जापान से प्राप्त होनेवाली पत्र-पत्रिकाओं तथा चिट्ठियों को बहुत ही सावधानी से पढा करते थे; आनेवाले साथियो से लम्बी बातचीत किया करते थे। पूर्व के मेहनतकशों के कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय के जापानी विभाग के छात्रों के बीच उन्होने महत्त्वपूर्ण शैक्षिक कार्य किया और अमरीका तथा अन्य देशों में रहनेवाले जापानियों से सम्पर्क स्थापित किया।

कातायामा के लेख और पत्र जापान की कम्युनिस्ट पार्टी के गैरक़ानूनी अख़बार "सेक्की" (लाल निशान) में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहे। १६३२ के अगस्त में इस पत्र में प्रकाशित अपने एक अन्तिम पत्र में उन्होंने लिखा था: "मैं एक दिन भी उत्पीड़ितों और भाग्यहीनों के जापान को विस्मृत नही करता। आप कम्युनिस्ट पार्टी, सर्वहारा की एकमात्र पार्टी, जो जमीन्दारों और पूजीपतियों के शासन को उखाड़ फेंकने तथा सोवियत जापान का निर्माण करने के लिये पूरा प्रयास कर रही है, के नेतृत्व में जो संघर्ष कर रहे हैं, उसे मैं कभी भी अपनी आखों से ओझल नहीं करता।"

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल मे काम करते हुए सेन कातायामा ने अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर और कम्युनिस्ट आन्दोलन के प्रगतिशील अनुभव तथा इसके साथ ही

सेन कातायामा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की छठी कांग्रेस में

जापानी सर्वहारा के संघर्ष की क्रान्तिकारी परम्पराओं और सबकों का सूक्ष्म अध्ययन किया और जापान की कम्युनिस्ट पार्टी को सुदृढ़ बनाने में उस अनुभव का उपयोग किया। वह अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के सम्मुख प्रस्तुत आम कार्यभार से जापानी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यभारों का तालमेल बिठाने में दक्ष थे। वह जापानी मजदूरों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों को बढाते हुए मार्क्सवादी-लेनिनवादी पथ पर जापानी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकलाप को दिन-प्रति-दिन निदेशित करते रहे। जापान के सम्बन्ध में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की सभी महत्त्वपूर्ण दस्तावेजें उनके प्रत्यक्ष सहयोग से तैयार की जाती थी। "सेक्की" ने उनको ठीक ही "जापान के मजदूर और समाजवादी आन्दोलन का जनक" कहा था।

युद्ध और फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध अदम्य योद्धा

१९२२ के नवम्बर में सेन कातायामा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्य-समिति और उसके बाद इसके अध्यक्ष-मण्डल मे चुने गये, जिस पद पर वह अपनी मृत्यु के दिन तक बने रहे। इसके साथ-साथ वह ट्रेड-यूनियन

इंटरनेशनल और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सहायता संगठन में बड़ा काम भी करते रहे। उपनिवेशवाद के घोर विरोधी होने के नाते वह अपना खास ध्यान एशियाई जनता के राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुक्ति-संघर्ष पर देते थे। १६२१ में लिखित उनके लेख "जापान और भावी सामाजिक क्रान्ति" के निम्नांकित शब्द आज सच्ची भविष्यवाणी के रूप में गूंज रहे हैं:

"जापानी साम्राज्यवाद के ध्वस्त होने से चीनी और कोरियाई सर्वहाराओं को ही नहीं, बल्कि जापानी सर्वहारा को भी लाभ पहुंचेगा। और ब्रिटिश उपनिवेशों में साम्राज्यवाद का उन्मूलन काफ़ी बड़ी क़ौमों और जातियों के हित मे होगा। मेक्सिको के रहनेवालों, नीग्रो, क्यूबा, हैटी, सन डोमिन्गो, फिलिपाइन और मध्य अमरीका के निवासियों की स्वतंत्रता और सुखी जीवन अमरीकी साम्राज्यवाद के ध्वस्त होने पर निर्भर है।"

२५ जून, १६२४ को कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की पांचवीं कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए कातायामा ने शासक, औपनिवेशिक और अधीन देशों के सर्वहाराओं का साम्राज्यवाद के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा कायम करने की आवश्यकता पर जोर दिया। १६२८ मे उन्होंने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की छठी कांग्रेस में चीनी क्रान्ति, औपनिवेशिक प्रश्न और अमरीका मे नीग्रो लोगों की स्थिति पर भाषण दिया।

कातायामा आजीवन साम्राज्यवादी युद्धों, सैन्यवाद और फ़ासिस्टवाद के कट्टर विरोधी रहे। १६०४ और १६०५ तथा प्रथम साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान उनके युद्ध-विरोधी प्रबल प्रचार का ऊपर उल्लेख हो चुका है।

१६२७ में वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये साम्राज्यवाद-विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष लीग के संस्थापकों में एक थे और इस लीग की ब्रसेल्स कांग्रेस मे उपस्थित थे। अपने स्वरूप और गठन की दृष्टि से यह कांग्रेस अपूर्व थी। यह दुनिया की प्रायः सभी जातियो, सभी श्रेणियो और सर्वाधिक विविध राजनीतिक और धार्मिक प्रवृत्तियो का प्रतिनिधित्व करनेवाली कांग्रेस थी।

विभिन्न देशों के प्रतिनिधियो को साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और युद्ध के विरुद्ध संघर्ष करने के संयुक्त ध्येय ने एकता के सूत्र मे आबद्ध किया था। प्रतिनिधियों ने अधीन देशों के लोगो और सर्वोपरि नीग्रो आबादी के बर्बर शोषण और उत्पीड़न के बारे में बताया।

कातायामा ने फ़ासिस्टवाद और सैन्यवाद के विरुद्ध दृढ़ संघर्ष किया। उन्होंने साहस के साथ दुनिया के सम्मुख जापानी सैन्यवादियों की साजिशों का भण्डाफोड़ किया, जो मंचूरिया पर कब्ज़ा करने के बाद चीन के दूसरे भागों पर टूट पड़े थे और सोवियत संघ पर हमले की तैयारियां कर रहे थे।

१६३२ में अमस्टर्डम में हुई अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध-विरोधी कांग्रेस में उन्होंने कहा, "हमें साम्राज्यवादी युद्ध के ख़िलाफ क्रान्तिकारी युद्ध की घोषणा करनी चाहिये और मजदूरों तथा किसानों से सोवियत संघ की सगठित रूप से सहायता और रक्षा करने की अपील करनी चाहिये... अन्त में मैं २८ वर्ष पहले अमस्टर्डम मे ही ग्रहण किये गये उस पावन व्रत को पूरा करने पर संतोष प्रकट करना चाहता हूं, जब मैंने सर्वहारा वर्ग की अन्तर्राष्ट्रीय एकता के लिये संघर्ष करने की प्रतिज्ञा की थी। उसी दिन से जापानी कम्युनिस्टों और क्रान्तिकारी मजदूरों के साथ मैं जापान के साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष करता रहा हूं। आज मैं विश्व सर्वहारा के पितृदेश सोवियत संघ की रक्षा के लिये जापानी साम्राज्यवाद के ख़िलाफ लड़ने का नया व्रत ग्रहण करता हूं। इस कांग्रेस के मंच से मैं सारी दुनिया के सर्वहाराओं से इसी प्रकार संघर्ष करने का अनुरोध करता हूं... हमें सोवियत संघ की रक्षा के लिये सारी दुनिया के क्रान्तिकारी सर्वहाराओं को शक्तिशाली दस्तों में संगठित करना चाहिये..."

अमस्टर्डम में हुई युद्ध-विरोधी कांग्रेस में सेन कातायामा के पुरजोश सम्बोधन और पेरिस तथा अन्य यूरोपीय नगरों की युद्ध-विरोधी रैलियों में उनके भाषणों का दुनिया के प्रगतिशील लोगो पर बड़ा असर पड़ा।

१६३३ मे सेन कातायामा ने आरी बार्बूस और रोमां रोलां से फासिस्टवाद और प्रतिक्रिया के हमले के विरुद्ध सभी देशों में व्यापक आन्दोलन शुरू करने की अपील की। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक इस संघर्ष को जारी रखा। उनके अंतिम शब्द थे, "वे धूर्तता से भरी कपटपूर्ण चाले चल रहे हैं... हमें फ़ासिस्टवाद के विरुद्ध... गद्दारों के विरुद्ध और विश्वासघातियों के विरुद्ध... संघर्ष करना चाहिये।"

लेनिन के शिष्य और सच्चे अनुयायी

लेनिन की कृतियों के अध्ययन और विश्व सर्वहारा के नेता के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क का सेन कातायामा के जीवन और कार्य पर गहरा असर पड़ा।

सुदूर पूर्व के राष्ट्रों के कम्युनिस्ट और क्रान्तिकारी संगठनों की प्रथम कांग्रेस के समय १९२२ के शुरू में ब्लादीमिर इल्यीच लेनिन के साथ अपनी भेंट का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा था : "साथी लेनिन ने बारी-बारी से प्रत्येक देश के प्रतिनिधियों से उनके अपने-अपने देश के मजदूर आन्दोलन से सम्बन्धित समस्याओं तथा इसके साथ ही सम्पूर्ण सुदूर पूर्व की समस्याओं पर बातचीत की। उन्होंने सुदूर पूर्व के देशों की क्रान्तिकारी शक्तियों को एकजुट करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और व्यक्तिगत रूप से मुझसे कहा कि वह कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की तीसरी कांग्रेस में पढ़े गये मेरे लेख से पूर्णतया सहमत हैं, जो बाद में "कम्युनिस्ट इंटरनेशनल" पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। उस लेख में मैंने यह विचार प्रकट किया था कि सुदूर पूर्व के क्रान्तिकारी मजदूरों को जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा क़ायम करना चाहिये।"

सेन कातायामा ने जापान की कम्युनिस्ट पार्टी को सही रास्ते पर अग्रसर करने के लिए अपने देश की परिस्थितियों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का रचनात्मक ढंग से उपयोग करने में बड़ा योगदान दिया। उन्होंने संकीर्णतावाद, जड़सूत्रवाद और फ़ूकूमोतो और उनके अनुयायियों के वामपंथी अवसरवाद के विरुद्ध अथक संघर्ष किया। वह यामाकावा और उनके अनुयायियों के दक्षिणपंथी अवसरवाद का पर्दाफ़ाश करने में दृढ़ और अविचल थे। उनकी विशद कृति "जापान में मार्क्सवाद के प्रादुर्भाव और विकास का प्रश्न" जापानी मार्क्सवादी-लेनिनवादी साहित्य का गौरवग्रन्थ मानी जाती है, जिसका आज भी महत्त्व समाप्त नहीं हुआ है। उन्होंने जापानी और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के विविध पहलुओं से सम्बन्धित ७०० से अधिक लेख और पुस्तकें लिखी हैं।

सोवियत संघ के सच्चे मित्र, सेन कातायामा ने सोवियत और जापानी जनता के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध और चतुर्मुखी सहयोग विकसित करने के लिये पूरा प्रयास किया। उन्होंने सैन्यवाद और युद्ध के ख़िलाफ़ जापानी मजदूरों के संघर्ष के बारे में सोवियत लोगों को बताया और अपनी जनता

के जीवन के बारे में उसे जानकारी प्रदान की। उन्होंने अनेक सोवियत नगरों मे सभाओं मे भाषण दिये और श्रोताओं ने उनके पुरजोश भाषणों का सदैव खूब स्वागत किया।

सेन कातायामा से परिचित सभी लोगों पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा। ओ० व० कूसीनेन* ने अपने संस्मरण में लिखा था, "उनके साथ काम करनेवाले सभी लोग ध्येय के प्रति उनकी निष्ठा और कार्य-क्षमता, उनकी विनम्रता और दूसरों का बहुत ही लिहाज करने की उनकी भावना तथा उनके निजी मधुर स्वभाव से प्रभावित हुए।"

उनकी पुत्री यामू कातायामा ने लिखा है, "पिताजी बहुत सख़्ती से नियमित जीवन व्यतीत करते थे। वह सुबह आठ बजे उठ जाते थे, नाश्ते के बाद अख़बार पढ़ते थे और नौ बजे टाइपराइटर पर अपने लेखादि टाइप करने बैठ जाते थे। दस अथवा ग्यारह बजे आफ़िस रवाना हो जाते थे और यदि बैठकों के कारण न रुकना पड़ता तो करीब छः बजे शाम को घर वापस आ जाते और रात का भोजन करने के बाद पुनः अपने लिखने-पढ़ने के काम में लग जाते थे... रात मे कभी-कभी टाइपराइटर की आवाज गायब हो जाती—वह कुर्सी पर बैठे-बैठे सो जाते। परन्तु दस या पन्द्रह मिनट बाद पुनः टाइपराइटर की आवाज सुनाई पड़ने लगती। पिता जी बड़ी दृढता के साथ अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार प्रतिदिन इसी प्रकार काम करते रहते थे, जिससे मुवाजनों को भी उनकी कार्यक्षमता पर आश्चर्य होता था।

"दीर्घकाल के कठिन परिश्रम और सतत अध्ययन से उनके चरित्र की अडिगता तथा कम्युनिज्म के महान् ध्येय में उनकी गहरी आस्था दृढ हो गई। अपने क्रान्तिकारी कार्यों तथा लोगों के साथ अपने सम्बन्धों मे वह एक उच्च सिद्धान्तप्रिय और बहुत ही सच्चे, सरल, दूसरो का लिहाज रखनेवाले और विनयशील व्यक्ति थे।

"पिताजी अपने सहकर्मियो की सहायता करते, जीवन के बारे में अपने ज्ञान और अनुभव बताते हुए उन्हें उदारतापूर्वक अपना समय देते थे।"

---

*विख्यात सोवियत और कम्युनिस्ट पार्टी के नेता।—सं०

५ नवम्बर, १६३३ को मास्को में सेन कातायामा का निधन हो गया। उनका भस्म-कलश लाल चौक मे, क्रेमलिन दीवाल मे प्रतिष्ठित किया गया। उनके देहावसान के दूसरे दिन "प्राव्दा" ने उन्हें अर्पित अनेक श्रद्धांजलियां प्रकाशित की। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्य-समिति के अध्यक्ष-मण्डल ने उनके निधन पर शोक प्रकट करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि सेन कातायामा "अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा क्रान्ति के एक अडिग योद्धा, एक पूर्ण निष्ठावान वोल्शेविक थे, वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनका दीर्घ जीवन सारी दुनिया के मज़दूरों और उत्पीड़ित लोगों के ध्येय के लिये दृढ़, निस्स्वार्थ सर्वहारा सघर्ष के लिए, पूंजीवाद के ख़ूनी उत्पीड़न से मानवजाति की मुक्ति के लिये, कम्युनिज़म के लिये समर्पित था।"

जब कातायामा की मृत्यु की ख़बर जापान पहुंची, तो ग़ैरक़ानूनी "सेक्की" अख़बार ने ५ दिसम्बर, १६३३ को विशेषांक प्रकाशित किया।

जापानी साम्राज्यवाद-विरोधी लीग और अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर सहायता संगठन की जापानी शाखा के साथ मिलकर कम्युनिस्ट पार्टी ने गुप्त रूप से टोकियो, ओसाका, कोबे, नागोया और अन्य नगरो मे उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये सभाएं आयोजित की। इन सभाओं में शोक-प्रस्ताव पास किये गये और कातायामा के सम्बन्धियो को संवेदना के सन्देश भेजे गये।

प्रतिक्रिया के घोर अन्धकारपूर्ण समय में १६४३ में सेन कातायामा के दोस्तों ने गुप्त रूप से टोकियो के आओयामा कब्रिस्तान में, जहा इस प्रख्यात जापानी क्रान्तिकारी की पत्नी और सम्बन्धियों को दफनाया गया था, उनकी प्रतीकात्मक कब्र पर एक स्मारक खड़ा किया।

हर साल कातायामा की बरसी और १५ मार्च को भी (१६२८ मे जापानी कम्युनिस्टों की सामूहिक गिरफ़्तारियों का दिन) इस स्मारक पर ताजे फूल चढ़ाये जाते हैं।

३ दिसम्बर, १६५६ को जापान, सोवियत संघ और अन्य देशों में व्यापक रूप से सेन कातायामा की जन्मशती मनाई गई। मास्को और टोकियो मे स्मारक-सभाएं हुईं और जापानी तथा रूसी में उनकी पुस्तकों के जयंती संस्करण प्रकाशित हुए।

जापान की कम्युनिस्ट पार्टी के लिये सेन कातायामा के कार्यों के महत्त्व का उल्लेख करते हुए जापानी क्रान्तिकारी आन्दोलन के अनुभवी नेता और जापानी संसद के सदस्य ईयोशीयो शीगा ने कहा : "कातायामा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचारों के प्रतीक थे। उनकी परम्पराएं जापानी कम्युनिस्ट पार्टी की सर्वाधिक मूल्यवान क्रान्तिकारी परम्पराए हैं।"

जापान के जनसाधारण और दूसरे देशों के मजदूरों के साथ सोवियत जनता जापानी जनता के श्रेष्ठ सपूत, साथी सेन कातायामा की दीप्तिमान स्मृति को संजोये हुए है और उन्हें जापानी सर्वहारा के महान शिक्षक तथा संगठक, अविचल अन्तर्राष्ट्रीयतावादी और सोवियत संघ के सच्चे दोस्त तथा युद्ध और फ़ासिस्टवाद के ख़िलाफ संघर्ष के अडिग योद्धा के रूप मे याद करती है।

विलफ़िदो श्रल्वारेज़

९ जून, १९६३ को भोर में परागुए की राजधानी आसुंसिओन के एक उपनगर में गोलियों और हथगोलों की आवाज़ सुनकर वहां के निवासियों की नींद टूट गई। गुमारानी मार्ग पर घनी झाड़ियों से ढके एक छोटे घर के हाते में ज़ोरों की लड़ाई हो रही थी।

किसी ने घर के पास पुलिस की कारें आ आकर रुकना और उनसे सिपाहियों को बाहर निकलते देखा। गोलियों का चलना बन्द होने के बाद पुलिस ने आस-पड़ोस की तलाशी ली और फिर अपनी कारों

में बैठकर तेज़ी से वहां से चली गई, जिनके पीछे-पीछे दो एंम्बुलैंस कारें भी जाती हुई दिखाई पड़ी।

उस रात गुआरानी मार्ग पर क्या घटना घटी, इस बारे में तुरंत मालूम नहीं हुआ। अख़बारों ने राजबन्दियो के साथ अपने नृशंस व्यवहार के लिए कुख्यात एक पुलिस अधिकारी मुस्तफा अब्दाला की लाश के दफनाये जाने के बारे में ही सवाद प्रकाशित किया। इस खबर में बताया गया था कि "अज्ञात व्यक्तियो ने अब्दाला की हत्या कर दी।"

जनता के गुस्से के डर से अमरीकी इजारेदारियों के किराये के टट्टू स्ट्रोस्नर की सरकार लोगो को अपनी "विजय" की सूचना देने मे हिचकी और उसने इस तथ्य को छिपाया कि परागुए की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता, केन्द्रीय समिति के सचिवालय के सदस्य विलफ़िदो अल्वारेज उस रात घनी झाड़ियों से ढंके घर में मार डाले गये थे। कई दिन बाद कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा घरों की दीवालों पर चिपकाये गये परचो से ही जनता को इस शोकजनक घटना की सूचना मिल पाई।

तानाशाही जुए के नीचे

१९६३ के जून मे उस रात आसूंसिओन में जो दुःखजनक काण्ड हुआ, वह परागुए में कई वर्षों से जारी बर्बर फासिस्ट आतंक के फलस्वरूप होनेवाले इस प्रकार के उनेक दु.खजनक काण्डों मे से ही एक था।

मूल रेड इण्डियन आबादी की भाषा को अपनानेवाले तथा उसके नाम पर गुआरानी के नाम से पुकारे जानेवाले परागुए के निवासियों को अमरीकी इजारेदारियां जिस प्रकार लूटती है, उनका शोषण और दमन करती हैं, वैसा अत्याचार शायद ही कही होता हो। इसके साथ ही, इस समय दुनिया में जो कर्मठ लोग हैं, उनमे वे भी सबसे पराक्रमी और बहादुर लोगों में हैं। इन लोगों के हृदय में स्वतंत्रता की भावना प्रदीप्त ज्योति की भांति दहकती रहती है और उनका पूरा इतिहास अपने उत्पीड़कों के विरुद्ध संघर्ष में असाधारण दृढता तथा वीरता का जीता जागता उदाहरण है। आइए, परागुए के इतिहास की कुछ उल्लेखनीय घटनाओं को याद करें। १८११ में राजनीतिक स्वतंत्रता की घोषणा के बाद अपने पड़ोसी देशों के

विपरीत परागुई गणतंत्र ने स्वतंत्र और बन्धनमुक्त गृह तथा विदेश नीति का अनुसरण किया। इस नीति का अच्छा नतीजा निकला और लैटिन अमरीकी देशों मे आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से परागुए एक अत्यंत विकसित राज्य हो गया, जिसकी आबादी का जीवन-स्तर पड़ोसी देशों की तुलना मे अधिक ऊंचा था। ब्राज़िल, अर्जेंटाइन और ऊरुगुए की प्रतिक्रियावादी सरकारों ने इसे "बुरा नमूना" माना और १८६५ में परागुए के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और अन्ततः इस देश को स्वाधीनता से वंचित कर दिया तथा उसके काफी भूक्षेत्रों को हड़प लिया। परन्तु वे ऐसा पांच वर्ष के कठोर युद्ध के बाद ही कर सके, जिसमें परागुए के पुरुषों की आबादी का करीब ६० प्रतिशत युद्ध-भूमि मे खेत रहा अथवा पंगु हो गया। सिएरा कोरा की लड़ाई के नाम से विख्यात, एक अन्तिम निर्णायक मुठभेड़ मे फौजो की कमान निजी रूप से अपने हाथ में लेनेवाले गणतंत्र के राष्ट्रपति फ़्रांसिस्को सोलानो लोपेज़ सहित दो संयुक्त परागुए की फ़ौजों के सभी सैनिक और अफसर रणक्षेत्र में खेत रहे। इन बहादुर सैनिको ने परागुए के अतीत की शानदार परम्पराओं को कायम रखते हुए मृत्यु का सामना किया।

वर्तमान काल में परागुए की जनता को दुर्दशा को महसूस करने के लिए केवल इसी तथ्य को ध्यान में रखना पर्याप्त होगा कि उसके जीवन का आर्थिक, राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक प्रत्येक क्षेत्र विदेशी, मुख्यतः उत्तर अमरीकी कम्पनियों के प्रभुत्व में है। इस देश में सभी प्रकार के अमरीकी मिशन और एजेन्सिया कार्यरत है। परागुए की कठपुतली सरकार अमरीकी सरकार के सकेत पर दासवत नाचती है। दीर्घकाल से देश के प्राकृतिक साधनों की लूट के कारण यहां के अधिकाश निवासी घोर गरीबी की स्थिति में है। परागुए के लोग वस्तुतः मिटते जा रहे है और भुखमरी इसका कारण है। मृत्यु से बचने के लिए बहुत-से लोग अपने देश से अन्यत्र चले जाते है। पिछले पंद्रह साल से अधिक समय से यहां की आबादी की संख्या प्रायः उतनी ही रही है; अनुमानित सख्या १६ लाख है। दूसरी तरफ, ५ से ६ लाख तक परागुए भी पडोसी देशों में रह रहे है। इस प्रकार परागुए के एक चौथाई निवासी अपनी मातृभूमि को छोड़ देने के लिए विवश कर दिये गये हैं, और यह संख्या स्वतः चकित करनेवाली है।

अपने स्वतंत्रताप्रेमी पूर्वजों की स्मृति के प्रति सत्यनिष्ठ परागुए की जनता उत्पीड़न से अपनी मुक्ति के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष करती रही है। द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत मे हिटलरी आक्रमणकारियों के विरुद्ध सोवियत सेना की विजयों से परागुए के क्रान्तिकारी आन्दोलन को नई शक्ति प्राप्त हुई। चार महीने तक देश में ज़ोरों से गृहयुद्ध होता रहा। इसका अन्त जनवादी शक्तियों के निर्मम दमन के साथ हुआ। किन्तु बाद के वर्षों मे नये विद्रोह होते रहे और १९५९ से १९६१ के बीच देशभर मे छापामार आन्दोलन फैल गया। गरीबी से ग्रस्त जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष ने तानाशाही शासन की नींव हिला दी है, परन्तु अभी उत्पीड़न से जनता को मुक्ति नही मिल पाई है। तानाशाह स्ट्रोस्नर और उसके प्रधान सहायक गृहमंत्री एदगर इंसफ़ान ने परागुए मे जो शासन क़ायम कर रखा है, उसकी तुलना केवल फ़ाको और सालाज़ार के शासन से की जा सकती है।

परागुए में सरकार का समर्थन करनेवाली एकमात्र तथाकथित "कोलोरेडो पार्टी" के एक गुट को कानूनी हैसियत प्राप्त है, जिसका नेतृत्व अमरीकी साम्राज्यवादियों की सांठगांठ से काम करनेवाले बड़े ज़मीन्दार और पूंजीपति करते है। कम्युनिस्ट पार्टी की बात तो छोड़िए, अन्य सभी राजनीतिक पार्टियां, पूंजीवादी पार्टिया भी (लिबेरी और फ़रवरीपंथी) गुप्त रूप से काम करती है। परागुए के अख़बार अमरीकी संवाद-समितियों द्वारा प्रेपित संवादों, सामाजिक ख़बरों, "कोलोरेडो पार्टी" गुट द्वारा आयोजित सम्मेलनो और रैलियो की रिपोर्टों, चर्च मे होनेवाली प्रार्थनाओं की सूचनाओं तथा कई पृष्ठो में बड़े-बड़े विज्ञापनों को ही प्रकाशित करते है।

परागुए मे बहुत बड़ी संख्या मे पुलिस और फौजी चौकियो का जाल फैला हुआ है। चाको के रेगिस्तानी क्षेत्र और राजधानी से दूर अन्य अस्वास्थ्यकर इलाकों मे जगह-जगह कंटीले तारों से घिरे नजरबन्द शिविर और बैरके दिखाई पड़ती है, जेलो की उदास दीवारें इस चित्र की मनहूसियत को पूरा कर देती है। पिछले १६ साल से परागुए मे मार्शल ला लागू है। इसके नगरों और गांवों में केवल दिन मे ही जीवन के चिन्ह दिखाई पडते है। शाम को सडके सुनसान हो जाती हैं और निवासियों को अपने घरों से बाहर निकलने की मनाही है। ठीक इसी समय पुलिस की ज्यादती शुरू हो जाती है। घरों पर छापे मारे जाते है

और लोगों को जेलों में ठूस दिया जाता है और अक्सर बिना तफ़तीश अथवा मुकदमा चलाये उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता है। अपने देश तथा दीर्घकाल से उत्पीडित जनता की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करनेवाले हजारों देशभक्त वर्षों से जेलों में यातनाएं भोग रहे हैं। और कौन इसे बता सकता है कि कितने निष्ठावान योद्धा यातनाओं के शिकार हो गए अथवा जेलों के अस्पतालों के वार्डों में गुम कर दिये गए? दीर्घकाल तक पाशविक दुर्व्यवहार और अपमान के बाद अक्सर क़ैदियों को, विशेष रूप से महिला बन्दियों को रात के समय सीमा पर पहुंचाकर जबरन पड़ोसी राज्यों में खदेड दिया जाता है। छापामार योद्धाओं को मिटाने का एक नया तरीक़ा उन्हें बोरों मे बन्द करके विमानों से नीचे गिराना अथवा पाराना नदी के गहरे पानी में नौकाओं से फेंक देना है और इस प्रकार उनकी हत्या के सभी चिन्हों पर आवरण डाल दिया जाता है।

परन्तु परागुए की जनता की जुझारू भावना को किसी भी अत्याचार से कुंठित नही किया जा सकता। छिटपुट उभार की जगह मजदूरों और किसानों ने शक्तिशाली संगठित प्रतिरोध का रास्ता अख़्तियार कर लिया है। इसका श्रेय जनता के सपूतों, कम्युनिस्टों, साथी विलफ़्रिदो अल्वारेज जैसे व्यक्तियों को है, जिनकी ८ जून, १९६३ की रात को पाशविक हत्या कर दी गई थी।

एक आदर्श जीवन की स्मरणीय घटनाएं

गुप्त रूप से काम करनेवाले इस कम्युनिस्ट कार्यकर्ता, श्रेष्ठ, निर्भय और निस्स्वार्थ योद्धा के जीवन और कार्यों के बारे में बहुत कम बातें ज्ञात हैं। विलफ़्रिदो अल्वारेज का कोई जीवन-वृत्तान्त अभी तक नहीं लिखा गया है। परन्तु उनके साथियों से बातचीत करके उनके जीवन के बारे में कुछ तथ्यों को बताना संभव हो गया है।

विलफ़्रिदो अल्वारेज का जन्म १९२४ में हुआ था। उनके मा-बाप गरीब थे और बचपन से ही विलफ़्रिदो को अभाव तथा कगाली का सामना करना पड़ा था। शिक्षा प्राप्त करने की उनकी बड़ी ख़्वाहिश थी, परन्तु सारी कोशिशों के बावजूद वह मुनीमी की शिक्षा ही प्राप्त कर सके और इस पेशे को भी वास्तव में कभी अपनाया नही। परागुए

के प्रतिक्रियावादी शासन के विरुद्ध नफ़रत की भावना के फलस्वरूप २० वर्ष की उम्र में ही उन्होंने उस रास्ते को अपना लिया, जिसे उन्होने अपने लिए एकमात्र ठीक रास्ता समझा और अपनी जनता के सुख के संघर्ष में अपने जीवन को समर्पित कर दिया।

वह क्रांतिकारी काम में पूर्णतया संलग्न हो गये। प्रचार और संगठन की अच्छी योग्यता होने के कारण वह आसूसिओन के प्रगतिशील छात्र समुदाय के नेता हो गए। १९४५ मे विलफ़िदो परागुए के कम्युनिस्ट युवा संघ के घनिष्ठ सम्पर्क मे आये और उन्होंने महसूस किया कि युवा कम्युनिस्टों की पांतों मे ही उनके लिए उपयुक्त स्थान है। एक साल बाद वह संघ की केन्द्रीय समिति में चुने गए। १९४७ के गृहयुद्ध में विलफ़िदो सक्रिय थे। जब सशस्त्र लोक फौजें तानाशाह मोरिनिगो की फौजों द्वारा अधिकृत राजधानी की ओर, जिनकी पांतों मे कम्युनिस्ट पार्टी के अनेक सदस्य शामिल थे, बढ़ी, तो जनवादी सेना को सहायता प्रदान करने के लिए विलफ़िदो अल्वारेज़ ने शत्रु के पृष्ठ भाग में युवकों को गतिमान किया।

जिस समय गृहयुद्ध अपनी चरम सीमा पर था, उसी समय विलफ़िदो अल्वारेज़ गिरफ़्तार कर लिये गये। अन्य कई क्रान्तिकारियों की भांति उन्होने भी कारावास के समय का अपने शैक्षिक स्तर में सुधार करने तथा मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का अध्ययन करने में सदुपयोग किया। उन्होंने जेल की कोठरी मे अपने साथ रहनेवाले कैदियों को भी लिखना-पढ़ना सिखाया। वे मजदूर और किसान थे, जो उन्हीं की भांति गृहयुद्ध मे लड़ चुके थे। विलफ़िदो ने उन्हे मार्क्सवाद-लेनिनवाद की बुनियादी बातों को समझाने का पूरा प्रयास किया। इसी समय वह अनुपस्थित होते हुए भी कम्युनिस्ट युवा संघ के सेक्रेटरी चुने गये और उसके कुछ समय बाद परागुए की कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गए। १९४९ मे हुई परागुए की कम्युनिस्ट पार्टी की दूसरी कांग्रेस ने इस अच्छी तरह परखे हुए योद्धा को केन्द्रीय समिति का सदस्य चुना। १९५३ में केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने इन्हें केन्द्रीय समिति के राजनीतिक व्यूरो का उम्मीदवार और बाद में उसका सदस्य चुना। १९५७ में साथी अल्वारेज़ केन्द्रीय समिति के सचिवमण्डल के सदस्य हो गए।

१९५८ के अगस्त–सितम्बर में वृहत हड़ताल की तैयारी के समय परागुए की जनता के एक सपूत, केन्द्रीय समिति के दूसरे सेक्रेटरी, साथी

अंतोनियो मैदानो गिरफ़्तार कर लिये गए। उनकी गिरफ़्तारी के बाद पार्टी ने देश के भीतर पार्टी के काम का दायित्व विलफ़िदो अल्वारेज को सौंपा, और १९६०–१९६१ के छापामार युद्ध के दौरान उन्होंने सम्मानपूर्वक इस जिम्मेदारी को पूरा किया।

विलफ़िदो अल्वारेज़ मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उत्कट प्रचारक थे और अपने भाषणों और लेखों में उन्होंने उस शिक्षा की शुद्धता का दृढ़ता से समर्थन किया। कम्युनिज्म के ध्येय में उनके गहरे विश्वास, उनकी सिद्धांतनिष्ठा और साधारण व्यक्ति के प्रति भ्रातृभाव से उनके अनेक अनुयायी हो गए। लोग उन्हें अपना सच्चा दोस्त और साथी समझकर उनकी ओर आकृष्ट हुए। विलफ़िदो के पथ-प्रदर्शन में पार्टी के कई युवा सदस्यों में नेतृत्व के गुण विकसित हुए, जो इस समय पार्टी के मुख्य कार्यों के इंचार्ज हैं और अपने प्रचार द्वारा संघर्ष में अधिकाधिक मजदूरों, किसानों और छात्रों को एकजुट करते जा रहे हैं।

गुप्त रूप से पार्टी का काम करते समय, विलफ़िदो अल्वारेज़ ने दो बार विदेश-यात्रा की। अक्तूबर क्रान्ति की ४०वीं वर्षगांठ सम्बन्धी समारोह में शामिल होने के लिए वह सोवियत संघ आये और समाजवाद के देश में उन्होंने जो कुछ देखा, उससे उन्हें बहुत ही प्रेरणा प्राप्त हुई। उस वर्ष १९५७ में उन्होंने कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों के मास्को सम्मेलन में भाग लिया। बड़े उत्साह और प्रेम के साथ कम्युनिज्म के निर्माण में संलग्न सोवियत देश की उपलब्धियों को अपने साथियों को बताते हुए विलफ़िदो अल्वारेज ने सोवियत संघ की अपनी यात्रा की रिपोर्ट उनके सम्मुख प्रस्तुत की। विलफ़िदो अल्वारेज़ सोवियत जनता के सच्चे दोस्त थे।

पार्टी में विलफ़िदो के जिम्मे महत्वपूर्ण काम सौंपा जाता था, जिसके लिए प्रतिभा और साहस अपेक्षित था। निश्चय ही वह सदा पार्टी के विश्वासपात्र रहे। परागुए की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की कार्यक्रम सम्बन्धी दस्तावेजों की तैयारी में सहायता प्रदान करते समय मजदूरों, किसानों और बुद्धिजीवियों के व्यापक तबकों के बीच काम करने से उन्हें जो अनुभव प्राप्त हुआ था, वह उपयोगी सिद्ध हुआ।

हमें परागुए के इस प्रमुख क्रान्तिकारी के सम्बन्धियों—उनकी पत्नी, जो

पक्की कम्युनिस्ट है और जिन्हें वह स्नेह से न्योन्यो के नाम से पुकारा करते थे, १९४७ के गृहयुद्ध के योद्धा और उसमे अशक्त हो गए उनके अनुभवी भाई फ़ासिस्को, और उनकी बहनों तथा उनके मा-बाप, जिन्हें विलफ़िदो बहुत मानते थे–के बारे मे भी बताया गया।

अपनी मृत्यु की दु:खजनक रात को अपने साथियो की गुप्त बैठक करने के लिए साथी विलफ़िदो निश्चित स्थान पर पहुचे। पार्टी के गुप्त कार्य के १६ वर्षों के दौरान विलफ़िदो ऐसी अनेक बैठको मे भाग ले चुके थे। यह विशेष बैठक स्वतंत्रता के कठिन सघर्ष और इसके भावी विकास के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करने के लिए बुलाई गई थी। जब बैठक प्राय समाप्त हो गई थी तभी पहरे पर तैनात साथी ने खतरे की चेतावनी दी। विलफ़िदो ने खिड़की से बाहर झाका और तनी हुई राइफिलो को लिए पुलिस दल को घर के निकट पहुचते देखा। आत्मसमर्पण न करने तथा उन सभी कागज़ो को, जिनके पुलिस के हाथ मे पड जाने से पार्टी को नुकसान पहुंच सकता था, नष्ट कर देने का तुरत निर्णय किया गया।

जिस क्षण पुलिस ने गोली-वर्षा शुरू की, विलफ़िदो ने अपने साथियो को अपनी रक्षा करने का आदेश दिया। थोड़े से बहादुर कम्युनिस्ट, अपने विरुद्ध चढ आये उन्मत्त नरपशुओ के हाथो गिरफ्तार होने की जगह मौत ग आलिंगन करना श्रेयस्कर समझकर, मोर्चे पर डटे रहे। अपने प्रधान अब्दाला के नेतृत्व मे क्रोधोन्मत्त पुलिस घर मे घुस गई। इसी क्षण विलफ़िदो ने अपनी गोली उस पर चला दी और पुलिस प्रधान का काम तमाम कर दिया। घबराहट मे गोली चलाते हुए अपने प्रधान की लाश को लिये पुलिस शीघ्रता से पीछे हट गई। इस मुठभेड मे विलफ़िदो के हाथ और पैर मे गहरी चोट लग गई। क्षणभर मे उन्होंने अपने साथियो को बचाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। एक गुप्त रास्ता था और उन्होंने अपने साथियों को उससे होकर शीघ्र भाग जाने का आदेश दिया। विलफ़िदो हिल नही सकते थे, परन्तु अपनी वजह से वह एक भी क्षण का विलम्ब नही लगाना चाहते थे। विदा कहने का भी समय नही था। आदेश का पालन करते हुए उनके साथी मैदान से हट गये। आध घंटे मे ही दो और पुलिस दल वहा पहुच गये। पुलिस के इस पूरे गिरोह के विरुद्ध घायल योद्धा का असम संघर्ष शुरू हो गया। जब तक संभव हुआ, विलफ़िदो ने शत्रु का डटकर सामना किया। साथियों के भाग जाने के लिए आवश्यक बहुमूल्य

समय मिल गया। विलफ़िदो यह सोचकर ख़ुश थे कि उनके साथी अब खतरे से बाहर हैं और यह कि जिस ध्येय के लिए वह अपना जीवन न्योछावर कर रहे थे, उसके लिए वे संघर्ष करते रहेंगे।

उन्होंने अपने शिथिल पड़ते हाथ से किसी प्रकार अपने ही खून से दीवाल पर लिखा. "कम्युनिज्म जिन्दाबाद! जनवादी क्रान्ति ज़िन्दाबाद! तानाशाही मुर्दाबाद!"

काफी खून बह जाने के कारण विलफ़िदो बेहोश होकर गिर पड़े। क्रोधोन्मत्त कुत्तों की भांति पुलिस के सिपाही उन पर टूट पड़े और उन्होंने अपने चाकुओं से उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

* * *

वह शोक-प्रस्ताव हमारे सम्मुख है, जिसमें परागुए की कम्युनिस्ट पार्टी ने दिवंगत विलफ़िदो अल्वारेज़ को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी। इसमें कहा गया है: "हत्यारों और देश के गद्दारों की स्ट्रोस्नर तानाशाही के विरुद्ध अदम्य संघर्ष मे जनवादियों, देशभक्तों और परागुए की सम्पूर्ण जनता के लिए साथी अल्वारेज़ की वीरता, दृढ़ता, ईमानदारी और फ़ौलादी संकल्प ज्वलन्त आदर्श है।"

इस उत्कट देशभक्त की घृणित हत्या से परागुए और सारी दुनिया में आक्रोश की भावना पैदा हो गई। उरुगुएइ पत्र «El Popular» और अर्जेंटाइनी पत्र «Nuestra Palabra» तथा अन्य प्रकाशनों में साम्राज्यवाद के घिनौने दलालों स्ट्रोस्नर और इंसफ़ान गुट के हत्यारों की निन्दा की गयी।

अपने कुत्सित कृत्य पर आवरण डालने के लिए परागुए पुलिस ने यह अफ़वाह फैलाई कि विलफ़िदो ने आत्महत्या की थी। परागुए की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने शोक-प्रस्ताव में इस झूठ का भण्डाफोड़ किया। इसमें कहा गया था कि "अपने जीवन की अन्तिम सांस तक शत्रु से लड़ते हुए वह एक कम्युनिस्ट की मौत मरे।"

विलफ़िदो की हत्या परागुए के कम्युनिस्टों और देश के अन्य सभी जनवादियों को पूर्णतया खत्म कर देने की स्ट्रोस्नर और उसके किराये के टट्टुओं की साजिश का अंग ही है। १९६३ के जून के अन्त में पुलिस के

दलालों ने ग्रासूसिग्रोन की एक भीड़-भाड़ भरी सड़क पर परागुए के कम्युनिस्ट युवक सघ के एक नेता कार्लोस रिवास की दिन दहाड़े हत्या कर दी।

देश की जेलों की कालकोठरियों मे कई वर्षों से यातनाएं भोगनेवाले परागुए मुक्ति ग्रान्दोलन के ग्रंतोनियो मैंदानो, ग्रनानियास मैंदानो, जुलियो रोजस जैसे प्रमुख नेताग्रों ग्रौर ग्रनेक ग्रन्य देशभक्तो का जीवन घातक खतरे में हैं। सच बात तो यह है कि ग्रत्याचार ग्रौर उत्पीड़न का विरोध करने का साहस करनेवाले सारे परागुए के सभी लोगो का जीवन ख़तरे मे है। उन लोगो के विरुद्ध पाशविक ग्रत्याचार किया जाता है, जिनका एकमात्र गुनाह स्वतंत्र होने की ग्राकांक्षा है। परन्तु फिर भी स्वतन्त्रता का ग्रान्दोलन ज़ोर कम हुए बिना चला जा रहा है। परागुए की जनता जानती है कि वह ग्रपने संघर्ष मे ग्रकेली नही हैं। दुनिया के सभी सदभावनापूर्ण लोगो की सहानुभूति ग्रौर समर्थन उनके साथ है। चिरकाल से उत्पीड़ित गुग्रारानी राष्ट्र हथियार नही डालेगा। गुग्रारानी जनता के सपूत विलफ़्रिदो ग्रल्वारेज़ ने ग्रपने ग्रादर्शमय जीवन के ग्रन्तिम क्षणों में ग्रपने ख़ून से जो नारे ग्रंकित किए, वह उन्हीं ग्राह्वानो के ग्रनुरूप काम करेगा।

क्रिसांतो इवांगेलिस्ता

फिलिपाइनी कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक क्रिसातो इवागेलिस्ता का जन्म १८८८ मे एक किसान परिवार में हुआ था और वह बचपन से ही एक पददलित पराधीन देश के गरीब और उत्पीडित लोगों की दुर्दशा को जानते थे।

धन्धे मे एक मुद्रक, युवा इवागेलिस्ता फिलिपाइनी मजदूर आन्दोलन मे सक्रिय हो गए, प्रेस मजदूर यूनियन के सदस्य हुए और बाद मे इसके जनरल सेक्रेटरी चुन लिये गए, जो शीघ्र उनके नेतृत्व मे एक जुझारू ट्रेड-यूनियन हो गई।

पूंजीवादी-सुधारपंथी राष्ट्रवादी पार्टी के सदस्य की हैसियत से इवांगेलिस्ता राजनीति में शामिल हुए। फिलिपाइन की ट्रेड-यूनियनों के प्रथम संगठन – १६१३ में स्थापित मजदूर कांग्रेस–पर इसी पार्टी का नियंत्रण था। इवांगेलिस्ता ने ख्याति अर्जित की और १६१६ में मजदूर कांग्रेस की कार्य-समिति में चुन लिये गये।

उस समय फिलिपाइन का ट्रेड-यूनियन आन्दोलन निस्सन्देह इसके सुधारवादी नेताओं के प्रभाव मे था। मजदूरों से अपने वर्गगत हितों के लिए संघर्ष करने की जगह वे धार्मिक नैतिकता तथा "श्रम और पूंजी के बीच एकता" का उपदेश दिया करते थे। यद्यपि मजदूर कांग्रेस मे प्रेस मजदूर यूनियन का विशिष्ट स्थान था, परन्तु इसके नेता इवांगेलिस्ता अभी भी राष्ट्रवादी पार्टी के प्रभाव मे थे, जो मानती थी कि अमरीकी अधिकारियों से समझौता वार्ता के जरिये फिलिपाइन को स्वतंत्रता प्राप्त हो जायेगी। १६१६ मे इवांगेलिस्ता उस "स्वाधीनता प्रतिनिधिमण्डल" के सदस्य थे, जो वाशिंगटन गया था और जिसने फिलिपाइन को स्वतंत्रता "प्रदान करने" के लिए फिलिपाइनी विधान सभा की ओर से अमरीकी कांग्रेस से अपील की थी। अपनी अमरीकी यात्रा से उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि स्वतंत्र फिलिपाइनी राज्य का विचार ही अमरीकी कांग्रेस के लिए बहुत ही अरुचिकर है। उन्होंने महसूस कर लिया कि यह आशा करना भी बिल्कुल बेकार है कि अमरीकी साम्राज्यवादी स्वेच्छा से फिलिपाइन पर अपने प्रभुत्व का परित्याग कर देंगे।

अमरीका मे अपने निवास के समय इवांगेलिस्ता अमरीकी ट्रेड-यूनियन नेताओ के सम्पर्क मे आये। उन्होने उन्हे मार्क्सवाद की बेहतर समझदारी प्राप्त करने मे सहायता पहुचाई और रूसी सर्वहारा वर्ग की महान विजय के बारे मे उन्हें अधिक बाते बताई, जिसने अपने निरंकुश शासकों का तख्ता उलट दिया था और समाजवादी क्रान्ति की थी।

अपनी जनता के सुखी जीवन और अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के संघर्ष के बारे मे पूर्णतया नये विचारो से भरकर इवांगेलिस्ता स्वदेश वापस लौटे।

जब मनीला के अखबारो मे फिलिपाइन की जनता की राष्ट्रीय मर्यादा पर चोट पहुंचानेवाले लेखों के प्रकाशन के विरुद्ध प्रेस मजदूर यूनियन ने अपनी आवाज बुलन्द की तो १६२० में उन्होंने फिलिपाइनी मजदूर आन्दोलन के इतिहास में सबसे प्रथम राजनीतिक हड़ताल का नेतृत्व किया।

राष्ट्रवादी पार्टी की सुधारवादी नीति से सहमत होने मे अब असमर्थ इवांगेलिस्ता उससे अलग हो गए। १९२४ में उन्होंने समान विचार के व्यक्तियों के साथ मज़दूर पार्टी संगठित की।

प्रगतिशील फिलिपाइनी बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि अंतोनियो ग्रोरा, ग्रामीण शिक्षक और किसानों के नेता जुग्रान फ़ेलेग्रो और इवांगेलिस्ता के नेतृत्व में नयी पार्टी फिलिपाइनी जनता की फ़ौरी और पूर्ण स्वतंत्रता, जनता की सरकार कायम करने, सरकार द्वारा बड़ी जोतों की खरीद और उसके बाद काश्तकारों और खेत-मजदूरों के हाथ उचित दर पर उनकी बिक्री और मातृभाषा में शिक्षा के कार्यक्रम के साथ आगे आई।

संगठनात्मक कमजोरी के बावजूद मजदूर पार्टी ने फिलिपाइनी मज़दूर आन्दोलन मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की और इसके नेताओं ने सर्वहारा वर्ग के बीच वैज्ञानिक समाजवाद के विचारों को फैलाने मे सहायता प्रदान की। १९२५ की फरवरी में हुई दूसरी कांग्रेस में मज़दूर पार्टी ने विधान सभा के चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों को नामजद करने का निर्णय किया।

मज़दूर पार्टी के कायम हो जाने के बाद शीघ्र ही केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी की हैसियत से इवांगेलिस्ता ने मज़दूर काग्रेस के सुधारपंथी नेताओं के विरुद्ध साहसपूर्ण और निर्णायक संघर्ष शुरू किया। उन्होंने ट्रेड-यूनियनों के काफी सदस्यो को मजदूर पार्टी के पक्ष में करने में सफलता प्राप्त की। १९२६ मे वह मज़दूर कांग्रेस के सेक्रेटरी और बाद में इसके उपाध्यक्ष चुने गए।

१९२७ के जून में इवांगेलिस्ता और उनके साथियो ने महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की: मजदूर काग्रेस सुदूर पूर्व के देशों के क्रान्तिकारी ट्रेड-यूनियन केन्द्र, ट्रेड-यूनियनों के सर्व प्रशांत महासागरीय सचिवालय से सम्बद्ध हो गई।

१९२८ के मार्च में इवागेलिस्ता ने सोवियत संघ मे हुई ट्रेड-यूनियन इंटरनेशनल की चौथी कांग्रेस मे फिलिपाइनी ट्रेड-यूनियन प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। उनके भाषण से विश्व ट्रेड-यूनियन आन्दोलन के प्रतिनिधियों को फिलिपाइनी सर्वहारा के जीवन और संघर्ष के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। काग्रेस ने इवांगेलिस्ता को इंटरनेशनल की केन्द्रीय परिषद का एक सदस्य चुना।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो जाने के फलस्वरूप फ़िलिपाइनी सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक चेतना विकसित हुई

और दूसरे देशों के अधिक प्रौढ़ मजदूर संगठनों के संगठनात्मक तथा कार्यनीतिक अनुभव से फिलिपाइनी ट्रेड-यूनियनों को लाभ उठाने की सुविधा प्राप्त हुई। मजदूर पार्टी के नेतृत्व में औद्योगिक आधार पर ट्रेड-यूनियनों का पुनर्गठन किया गया।

इवांगेलिस्ता ने फ़िलिपाइनी मजदूर वर्ग की एकता को सुदृढ़ करने का बहुत प्रयास किया। १९२७ में मजदूर कांग्रेस की सदस्य-संख्या बढ़कर ८१,००० हो गई। राजनीतिक दृष्टि से ट्रेड-यूनियने अधिक प्रभावकारी हो गईं। १९२८ के दिसम्बर में मनीला और अन्य नगरों की सिगरेट फ़ैक्टरियो मे बड़ी हड़ताल शुरू हुई। इवागेलिस्ता के नेतृत्व मे हड़तालियो ने तम्बाकू मजदूरों की ट्रेड-यूनियनों के नेताओ को दिये गए कारावास दण्ड के ख़िलाफ सरकार से विरोध किया।

मजदूर आन्दोलन में क्रान्तिकारी पक्ष के बढ़ते हुए प्रभाव से मजदूर कांग्रेस के सुधारपंथी नेता आतंकित हो गए। १९२९ की मई में कांग्रेस मे फूट डालने में उन्हे सफलता मिल गई। उसके बाद प्रगतिशील ट्रेड-यूनियनो ने ४५,००० से अधिक सदस्योवाला सर्वहारा सघ कायम किया। इस नये राष्ट्रीय ट्रेड-यूनियन संगठन की पहली कांग्रेस में इवागेलिस्ता जनरल सेक्रेटरी और अतोनियो ओरा अध्यक्ष चुने गए।

सर्वहारा संघ ने राष्ट्रीय आज़ादी, अपने वर्गगत हितों के लिए फिलिपाइनी मजदूरो के संघर्ष का नेतृत्व किया। अपने मुख्य संगठनात्मक कार्यो के अलावा इवांगेलिस्ता ने वैज्ञानिक समाजवाद के प्रचार के लिए भी समय निकाला। १९२९ मे उन्होंने मनीला विश्वविद्यालय के छात्रो के सम्मुख सोवियत सघ के बारे मे तीन भाषण दिए।

इवांगेलिस्ता के राजनीतिक कार्य से अमरीकी उपनिवेशवादियो और उनके फ़िलिपाइनी पिछलग्गुओं के मन मे शत्रुता की भावना पैदा हुई। प्रतिक्रियावादियो ने समाचारपत्रों मे मजदूर आन्दोलन के नेताओ के विरुद्ध विद्वेषपूर्ण लांछन सहित उन्हें बदनाम करने के लिए कोई बात उठा न रखी। १९२९ के अन्त में पांगासिनान प्रदेश मे जहां किसांतो इवांगेलिस्ता किसानों की सभा मे भाषण देने गए थे, उनकी हत्या करने की कोशिश की गई।

मजदूर कांग्रेस मे फूट पड़ जाने के बाद इवागेलिस्ता और मजदूर पार्टी के अन्य नेताओं ने किसान समुदाय मे अपने राजनीतिक प्रचार को तीव्र

कर दिया। इसके फलस्वरूप राष्ट्रीय किसान संगठन सर्वहारा संघ से सम्बद्ध हो गया। इवांगेलिस्ता ने किसान संगठनों की बड़ी सहायता की। मजदूर पार्टी से किसान आन्दोलन के कई प्रमुख नेता उभरे, जिन्होंने अपने देश को आजाद करने में उल्लेखनीय भूमिका अदा की।

राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के विकास और मजदूरों की बढ़ती हुई वर्ग-चेतना के फलस्वरूप फिलिपाइन्स में कम्युनिस्ट पार्टी को संगठित करने का प्रश्न प्रस्तुत हो गया। मजदूर पार्टी में संगठित मजदूरों, किसानों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के श्रेष्ठ प्रतिनिधि भावी कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्र बन गए। ७ नवम्बर, १९३० को अक्तूबर क्रान्ति की १३वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए मनीला में आयोजित सभा में फिलिपाइनी कम्युनिस्ट पार्टी कायम की गई। इवांगेलिस्ता ने भाषण देते हुए रूसी क्रान्ति के विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डाला और फिलिपाइन्स तथा अन्य पराधीन देशों के लोगों से अपनी पूर्ण आजादी के लिए संघर्ष करने की अपील की। वह नवगठित कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक ब्यूरो और केन्द्रीय समिति के जनरल सेक्रेटरी चुने गए।

कम्युनिस्ट पार्टी की लोकप्रियता बहुत तेजी से बढ़ी। १९३१ में मनीला के उपनगरों में कम्युनिस्टों द्वारा आयोजित मई दिवस प्रदर्शन में हजारों लोग शामिल हुए। बहुत ही जोशीले भाषण में इवांगेलिस्ता ने अपने उत्पीड़कों के विरुद्ध अधिक दृढ़ता के साथ संघर्ष करने के लिए फिलिपाइनी जनता का आह्वान किया। अमरीकी अधिकारियों ने प्रदर्शन को भंग करने के लिए पुलिस और दमकल भेजे। कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष अंतोनियो ओरा और केन्द्रीय समिति के जनरल सेक्रेटरी क्रिसातो इवांगेलिस्ता सहित पार्टी के सक्रिय सदस्यों और नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया।

कम्युनिस्ट पार्टी के दोनों नेताओं के विरुद्ध "विद्रोह भड़काने" का अभियोग लगाया गया और वे अपने ख़िलाफ मामले की सुनवाई की प्रतीक्षा करने लगे। उपनिवेशवादियों को यह बात बहुत नरम प्रतीत हुई, क्योंकि कुछ ही दिनों बाद अंतोनियो की हत्या कर दी गई और पुलिस ने इस सम्बन्ध में यह कह दिया कि उनकी मृत्यु एक जेल से दूसरी जेल में ले जाते समय मोटर दुर्घटना में हो गई।

१९३१ में कम्युनिस्ट पार्टी गैरकानूनी घोषित कर दी गई और इसकी केन्द्रीय समिति के १३ सदस्यों को जेल में झोंक दिया गया। १९३३ के

दिसम्बर मे कम्युनिस्ट पार्टी के १६ नेताओं पर मुकदमा चलाकर इवागेलिस्ता को दो साल का कारावास और आठ साल का निर्वासन दण्ड दिया गया।

गुप्त रूप से काम करने की विषम परिस्थितियो मे फिलिपाइनी कम्युनिस्टों ने अपनी बिखरी हुई क्रान्तिकारी शक्तियों को एकजुट करने की पूरी कोशिश की। १९३३ में कानूनी समाजवादी पार्टी संगठित की गई। १९०२ मे एक अमरीकी फौजी अदालत द्वारा मृत्यु दण्ड पाये परन्तु बाद में माफ कर दिये गए पेद्रो आबद सातोस इसके अध्यक्ष थे। वह फिलिपाइनी-सोवियत मैत्री सोसाइटी के भी अध्यक्ष और अक्तूबर क्रान्ति के महान आदर्शो के एक उत्कट प्रचारक थे।

कम्युनिस्ट पार्टी और ट्रेड-यूनियनों के विरुद्ध प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयों के फलस्वरूप अमरीका-विरोधी प्रदर्शनों का तांता लग गया। मजदूर आन्दोलन के दबाव से देश के शासक १९३६ मे इवागेलिस्ता और उनके साथियों को रिहा करने को विवश हो गए। कम्युनिस्ट पार्टी को पुनः कानूनी तौर पर काम करने की अनुमति मिल गई।

१९३८ के अक्तूबर मे फ़िलिपाइन के मजदूर आन्दोलन [illegible] महत्व की घटना—फिलिपाइन की कम्युनिस्ट और [illegible] का एक कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में [illegible]। [illegible] इवागेलिस्ता पार्टी के अध्यक्ष, सातोस उपाध्यक्ष और [illegible] जनरल सेक्रेटरी चुने गए। १९३८ से १९४१ की [illegible] पार्टी ने मजदूरों और किसानो के कई सार्वजनिक [illegible] के बीच अपने प्रभाव को फैलाया और सुदृढ़ [illegible]।

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जब [illegible] हमले का खतरा प्रस्तुत हुआ, तो [illegible] करने के लिए पार्टी को तैयार [illegible] जापानियों ने फिलिपाइन्स पर [illegible] के नेताओ ने आक्रमणकारियों [illegible] अनेक भागों में छापामार [illegible]

फिलिपाइन पर [illegible] रूप से कार्य [illegible] २४ जनवरी, १९[illegible]

की केन्द्रीय समिति की टोह लग गई और उन्होंने इवांगेलिस्ता तथा सातोस को गिरफ़्तार कर लिया।

यह जानते हुए कि इन दोनों क्रान्तिकारियों का जनता में बड़ा सम्मान है, जापानी आक्रमणकारियों ने उन्हें अपने कठपुतली प्रशासन के साथ सहयोग करने के लिए फुसलाने की कोशिश की। परन्तु किसी भी प्रकार की धमकियों, प्रलोभनों अथवा यंत्रणाओं से इन कम्युनिस्टों को देशद्रोही नहीं बनाया जा सका। अमानुषिक यंत्रणाओं के फलस्वरूप जेल की कालकोठरी में क्रिसांतो इवांगेलिस्ता की मृत्यु हो गई। उनके साथी सातोस को एक साल से अधिक ऐसी अमानवीय परिस्थितियों में जेल में रखा गया कि उनका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया कि रिहाई के कुछ महीने बाद ही उनका देहावसान हो गया।

कम्युनिस्ट पार्टी के इन दो प्रमुख नेताओं की मृत्यु से फिलिपाइनी देशभक्तों को गहरा आघात लगा। उनके साथी मारियानो बालगोस, मातेओ देल कास्तिल्यो, कास्त्रो अलेक्जांद्रिनो, जुआन फेलेओ, विसेंते लावा और दूसरों ने कम्युनिस्ट पार्टी, जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे और हुक्बालाहाप छापामार सेना का नेतृत्व संभाला। १९४४ की पतझड़ में हुक्बालाहाप में कई हज़ार सशस्त्र सैनिक थे। कम्युनिज्म के उच्च आदर्शों और अपनी जनता के सुख के लिए अपना जीवन न्योछावर करनेवाले योद्धाओं के लिए यह जन सेना श्रेष्ठ स्मारक थी।

१९४४ में फिलिपाइनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा हुक्बालाहाप का राजनीतिक प्रधान नियुक्त किये जाने पर मारियानो बालगोस अपने भाषणों और निजी उदाहरण से इसके सैनिकों और कमाडरों को प्रोत्साहित करते हुए उनके बीच अपना सारा समय लगाने लगे।

१९४५ के शुरू में अमरीकी फौजें फिलिपाइनी द्वीप समूह में उतरीं। हुक्बालाहाप ने देश के मुक्ति-संघर्ष में ख्याति अर्जित की थी। फिलिपाइनी जनसाधारण के राजनीतिक उभार से अमरीकी साम्राज्यवादी आतंकित हो गए। १९४५ की फ़रवरी के अंत में जनरल मैक आर्थर के प्रतिगुप्तचर विभाग ने हुक्बालाहाप के नेताओं को गिरफ्तार करके छापामार सेना को खत्म करने की कोशिश की।

फिलिपाइनी इतिहास के इसी संकटपूर्ण समय में कम्युनिस्ट पार्टी ने मारियानो बालगोस को हुक्बालाहाप का प्रधान सेनापति नियुक्त किया।

मारियानो बालगोस

उन्होंने पीछे से अमरीकी सेना के प्रहार से बचने के लिए छापामार दस्तों को मध्य लुसोन मे ले जाकर तैनात करने के दायित्वपूर्ण कार्यभार को बहुत ही प्रशंसनीय ढंग से पूरा किया।

मनीला की मुक्ति के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व ग्रहण करने के लिए बालगोस को फिलिपाइनी [illegible]। बालगोस ने नये ट्रेड-यूनियन सगठन—मजदूर संगठनों की कांग्रेस—की स्थापना में अपनी संगठनात्मक योग्यता और अनुभव का उपयोग किया।

जापानी आक्रमणकारियों से फ़िलिपाइन की मुक्ति के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने शान्तिपूर्ण तरीक़ों से देश को शान्ति की दिशा में [illegible] करने का

रास्ता अपनाया। १९४५ की जुलाई में एक जनवादी संश्रय कायम हुआ। इसमे कम्युनिस्ट पार्टी, हुक्बालाहाप, राष्ट्रीय किसान सगठन, मजदूर सगठनो की काग्रेस तथा कई प्रगतिशील पूंजीवादी संगठन शामिल थे। जनवादी संश्रय ने पूर्ण स्वाधीनता, कृषि सुधारों के कार्यान्वयन और अधिकार सम्बन्धी घोषणापत्र के पालन के लिए आन्दोलन शुरू किया। जनवादी सश्रय की कार्य-समिति में बालगोस ने मजदूर संगठनों की काग्रेस का प्रतिनिधित्व किया।

४ जुलाई, १९४६ को जनसाधारण के दवाव से विवश होकर अमरीकी साम्राज्यवादियों को फिलिपाइन को स्वतंत्रता प्रदान करनी पडी। परन्तु अमरीका की कृपा से सत्तारूढ़ होनेवाली रोक्सस सरकार ने जनता की क्रान्तिकारी शक्तियो को ध्वस्त करने का वादा किया। प्रतिक्रियावादियों ने कम्युनिस्ट पार्टी और इसकी जुझारू शक्ति—हुक्बालाहाप सेना—के विरुद्ध मुख्य रूप से प्रहार किया। १९४६ और १९४७ में लुसोन द्वीप के उन क्षेत्रो मे, जहां किसान आन्दोलन विशेष रूप से शक्तिशाली था, सरकारी फौजें और पुलिस व्यापक दण्डात्मक अभियानों मे सलग्न रही।

१९४८ की मई मे फिलिपाइनी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी की हैसियत से काम करते हुए मारियानो बालगोस ने सशस्त्र संघर्ष के शान्तिपूर्ण निवटारे के लिए पूरा प्रयास किया। १९४८ की जुलाई मे क्षमादान और सामाजिक सुधारों के कार्यान्वयन की शर्तों के आधार पर सरकार से युद्ध विराम समझौता करने में कम्युनिस्ट पार्टी को सफलता प्राप्त हुई। परन्तु सरकार को जो शर्तें पूरी करनी थी, उनका उसने पालन नही किया और १९४८ के अगस्त मे सरकारी फौजों और छापामार दस्तों के बीच पुनः लडाई शुरू हो गई।

इस परिस्थिति को देखते हुए कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रतिक्रियावादी सरकार का तख़्ता उलटने, पूर्ण स्वाधीनता और पूर्ण जनवाद का नारा लगाया।

१९४८ के अक्तूबर मे कम्युनिस्ट पार्टी गैरकानूनी घोषित कर दी गई। अगले साल भारी कठिनाइयों के बावजूद मारियानो बालगोस मजदूर सगठनों की काग्रेस के उपाध्यक्ष की हैसियत से कानूनी काम में सलग्न रहे।

मजदूर आन्दोलन में कम्युनिस्ट प्रभाव को मिटाने का प्रयास करते हुए प्रतिक्रियावादियों ने कम्युनिस्ट विरोधी उग्र भावनाएं उकसानी शुरू की। "फिलिपाइन-विरोधी" कार्यों की जाच के लिए एक समिति नियुक्त

की गई। इस समिति ने देश मे मजदूर वर्ग की हरावल, कम्युनिस्ट पार्टी को अपना पहला शिकार बनाया।

अपने इस राजनीतिक शिकार का प्रारभ इस समिति ने दिसबर, १९४८ मे मारियानो बालगोस के नाम सम्मन जारी करने के साथ शुरू किया। अखबारो के लिए पहले से तैयार वक्तव्य फिलिपाइनी प्रतिक्रियावादियो के सम्मुख हाजिर हुए। इस वक्तव्य मे उन्होंने फिलिपाइनी सत्तारूढ़ गुट द्वारा अनुसरित नीति के जन-विरोधी स्वरुप का भण्डाफोड किया। उन्होने घोषणा की कि वह इसी शर्त पर समिति के प्रश्नो का उत्तर देंगे कि उन्हे सार्वजनिक रूप से अपना वक्तव्य देने की इजाजत दी जाये।

मारियानो बालगोस ने कम्युनिस्ट पार्टी की नीति का सार्वजनिक प्रतिपादन करने और मार्क्सवादी विचारो के प्रचार के इस अवसर का पूरा उपयोग किया। उन्होने इस बात पर जोर दिया कि कम्युनिस्ट पार्टी साम्राज्यवादी और सामंती शोषण के विरुद्ध है और पूर्ण स्वाधीनता, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का विकास और कृषि सुधारो का कार्यान्वियन इसके लक्ष्य है।

बालगोस ने बिल्कुल साफ कहा कि फिलिपाइनी कम्युनिस्ट सोवियत सघ के विरुद्ध सरकार के युद्ध-सम्बन्धी किसी भी दुस्साहसिक काम का विरोध करेगे। बालगोस ने कहा, "हम सोवियत संघ का समर्थन करेगे क्योकि हम रूस को विश्व जनवाद का नेता और शान्ति के लिए सघर्ष करनेवाला तथा सारी दुनिया के साधारण लोगो के हितों का पोषक समझते हैं। यह सोचना बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है कि सोवियत सघ कभी भी युद्ध शुरू करने के लिए पहलकदमी करेगा।"

कम्युनिस्ट पार्टी के घोर उत्पीड़न के उस वातावरण मे कानूनी तौर मे काम जारी रखना बालगोस के लिए अधिकाधिक कठिन हो गया। अन्ततः, १९४९ के दिसम्बर में गिरफ़्तारी का खतरा पैदा हो जाने पर वह मनीला से जन छापामार सेना के युद्ध-क्षेत्र में चले गये, जो १९५० के बाद से मुक्ति-सेना कहलाने लगी।

गुप्त रूप से काम करनेवाली केन्द्रीय समिति ने लुसोन द्वीप के दक्षिण में और फिर दक्षिण-पूर्वी भाग मे बड़ी छापामार फौज की कमान बालगोस को सौपी। उन्होंने यहा अपनी सगठनात्मक और फ़ौजी प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट परिचय दिया। अपने "फ़ौलादी" ("बाकाल") कमाण्डर ने, जैसा कि

बालगोस कहे जाते थे, पूर्ण विश्वास करते हुए लुसोन के किसान सामूहिक रूप से अपने देश की स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल हो गए।

१९५० में मुक्ति-सेना ने कई बड़ी विजयें प्राप्त कीं। आधुनिक अमरीकी हथियारों से लैस सरकारी फौजों की नृशंस कार्रवाइयों से १९५४ में यह सेना तितर-बितर होने तथा पीछे हटकर पहाड़ियों और जंगलों में चले जाने को विवश हुई।

बड़ी संख्या के दुश्मन के साथ असम लड़ाइयों में छापामार सेना को भारी क्षति उठानी पड़ी। कम्युनिस्ट पार्टी के भूतपूर्व जनरल सेक्रेटरी ग्विल्येर्मो कापादोसिया सहित इसके कई नेताओं ने वीर-गति प्राप्त की।

छापामारों की पांतों में उनके बहादुर कमांडर "बाकाल" ने अन्त तक युद्ध किया। १८ नवम्बर, १९५४ को वह रणक्षेत्र में खेत रहे। फ़िलिपाइनी जनता के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के इतिहास में बहादुर देशभक्त तथा मनीला के मजदूरों के बहुत ही प्रिय नेता मारियानो बालगोस का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

मार्सेल काशेन

फ्रांसीसी सर्वहारा वर्ग के इतिहास में महत्वपूर्ण सिद्ध होनेवाली फ्रांसीसी समाजवादी पार्टी की अठारहवीं कांग्रेस २५ दिसम्बर, १९२० को फ्रांस के प्राचीन नगर टूर्स में शुरू हुई।

कांग्रेस के लिए नगर के एक हाल में शीघ्रता से तैयारियां की गयीं। व्यवस्था बहुत सादी थी: लकड़ी के खुरदुरे तख्तों से मंच तैयार किया गया था, इस अवसर के लिए किराये पर ली गई लोहे की फ़ोल्डिंग मेजें और कुर्सियां लगा दी गई थीं, जोरेस के चित्र और दो नारे अंकित थे: "मेहनतकशों की मुक्ति स्वयं मेहनतकशों का काम है!" और "दुनिया के मजदूरो, एक हो!"

४,५७५ वोटों सहित २८५ प्रतिनिधि एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करनेवाले थे—कम्युनिस्ट (तीसरे) इंटरनेशनल के साथ फ्रांसीसी समाजवादी पार्टी की सम्बद्धता। इस सवाल पर उनका क्या निर्णय होगा, यह वास्तव मे पहले से ही ज्ञात था। १६२० की फरवरी मे समाजवादी पार्टी अपनी स्ट्रासबर्ग कांग्रेस मे ही दिवालिये दूसरे इंटरनेशनल से सम्बन्ध तोडने का निर्णय कर चुकी थी। और कांग्रेस के वाद स्थानीय पार्टी संगठनों की बैठको ने प्रकट किया कि समाजवादी पार्टी के अधिकांश सदस्य मज़दूरों के वास्तविक क्रांतिकारी, मार्क्सवादी अंतर्राष्ट्रीय सघ के रूप में तीसरे इटरनेशनल से सम्बद्ध हो जाना पसन्द करते है।

टूर्स में जिस प्रश्न को लेकर प्रतिनिधियों में बेचैनी व्याप्त थी, वह यह था कि ब्लूम, रेनोदिल, सेम्बा और उनके अनुयायियों का अल्पसंख्यक समाजवादी समुदाय क्या रख अपनायेगा। पार्टी जनवाद के सिद्धान्त और मजदूर वर्ग के हितों को देखते हुए यह अपेक्षा थी कि वे पार्टी की इच्छा को स्वीकार करे। सवाल यह था कि क्या वे पार्टी, मज़दूरों के हितो और समाजवाद के सर्वोच्च हितो की उपेक्षा करेगे और समाजवादी पातों मे फूट डालेगे?

निर्णायक बहस शुरू होने के पूर्व पार्टी-शाखाओं—नोर्द, पास-द-कले, बौश-दू-रोन, सेन और शेर प्रादेशिक संघो के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। अधिकांश ने तीसरे इंटरनेशनल से सम्बद्ध हो जाने का समर्थन किया, अथवा, जैसा कि उन्होंने कहा "हम काशेन के प्रस्ताव का समर्थन करते है।"

बहुत ही तनातनी के उन दिनो मे प्रतिनिधियों का ध्यान अक्सर उस व्यक्ति पर टिक जाता था, जिसने प्रस्ताव का मसौदा तैयार किया था, जो तीसरे इटरनेशनल से सम्बद्ध हो जाने का समर्थन करनेवाले समाजवादी बहुमत का एक नेता था। काली मूछ और गहरी, सदय आखो वाला मझोले कद का यह व्यक्ति उनके लिए सुपरिचित था। जोरेस के निकटतम सहयोगी मार्सेल काशेन को पार्टी के सभी साधारण सदस्यों, इसके क्रियाशील कार्यकर्ताओं और फ्रांस के सभी प्रगतिशील मजदूरों की श्रद्धा और स्नेह प्राप्त था। नये रूस की यात्रा करनेवाले चन्द फ्रांसीसी समाजवादियों मे वे भी एक थे और उन्होंने दो बार वहां की यात्रा की थी और बोल्शेविको के मेहमान के रूप मे उन्हे लेनिन से बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त

हो चुका था। प्रतिनिधि सर्वाधिक उत्सुकता और दिलचस्पी के साथ काशेन के भाषण को सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

कठिनाइयो से जूझनेवाले, सत्यनिष्ठ एवं वीरतापूर्ण जीवन व्यतीत करनेवाले, पचास वर्षीय काशेन दृढ़ता तथा विश्वास के साथ कदम उठाते हुए मंच पर गये। जिस समय वह भाषण दे रहे थे, हाल मे सन्नाटा छाया हुआ था और प्रतिनिधि उनके इस प्रसिद्ध भाषण के ओजस्वी और जोशीले शब्दों को ध्यानमग्न सुन रहे थे।

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल मे शामिल होने के लिए उनकी जोरदार अपील का प्रतिनिधियो ने तुमुल हर्षध्वनि और तालियो की गड़गडाहट से समर्थन किया। उनके विरोधियों ने बाद में उनके भाषण के प्रभाव को कम करने का निष्फल प्रयास किया; उन्होने कांग्रेस को दक्षिण पक्ष की ओर मोड़ने की निष्फल कोशिश की। अब अधिकांश प्रतिनिधि मार्क्सवाद और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के महान आदर्शो को विस्मृत कर देनेवाले पाल फ़ोर, लियों ब्लूम और दूसरे दक्षिणपंथियों के विरुद्ध हो गए। वोट के नतीजों से फ़ासीसी समाजवादियों के भारी बहुमत की वास्तविक मनोभावना की पुष्टि हो गई: तीसरे इंटरनेशनल से सम्बद्ध हो जाने के पक्ष में तीन हज़ार से अधिक वोट पड़े। उसी दिन, २६ दिसम्बर, १६२० को फ़ासीसी कम्युनिस्ट पार्टी, फ़ांसीसी मज़दूरों की महान पार्टी और अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के यशस्वी दस्ते की स्थापना हुई। और मज़दूरों के ध्येय के लिए लड़नेवाले अन्य सुदृढ जुझारुओं के साथ मार्सेल काशेन ने फ़्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में हाथ बंटाया।

मज़दूर आन्दोलन में प्रवेश

जब पेरिस कम्यून के योद्धाओं और शहीदों के वीरतापूर्ण कार्य से दुनिया हिल उठी थी, उस समय मार्सेल काशेन डेढ साल के थे। महान अक्तूबर क्रान्ति की ४०वी वर्षगाठ मनाते हुए जब पेरिस की एक सभा में उन्होंने अपना अन्तिम जोशीला भाषण दिया तो वह ८६ वर्ष के होनेवाले थे।

काशेन २० सितम्बर, १८६६ को ब्रिटनी के पेम्पोल नामक नगर में पैदा हुए थे। अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक उन्होंने अपने नगर के रहनेवालों से सम्पर्क कायम रखा और उनसे मिलने जाया करते थे।

ब्रिटनी के किसानों, नाविकों और मछुओं से वह उनकी मातृभाषा में बातचीत करते थे, जो उन्हें बड़ी श्रद्धा से "पापा मार्सेल" कहा करते थे।

लोग मजदूर आन्दोलन मे भिन्न-भिन्न रास्तो से होकर आते हैं। मार्सेल काशेन अपने ही ढंग से इस आन्दोलन मे शामिल हुए। बात १८६१ की है। जैसा कि वह स्वयं बाद में कहा करते थे, उस साल के शुरू तक राजनीति उनके दिमाग से दूर रही। उस समय वह बोर्डो विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के एक सुयोग्य और होनहार विद्यार्थी थे। परन्तु जब उत्तरी फ़ांस के एक छोटे नगर फुर्मी में सूती मिल मजदूरों के मई दिवस सम्बन्धी शान्तिपूर्ण प्रदर्शन पर सरकारी फौजों द्वारा गोली-वर्षा के ख़ूनी अत्याचार की सूचना उन्हें मिली, तो अधिकाश ईमानदार फ़ांसीसियों की भांति इससे उन्हें आत्मिक क्लेश पहुंचा। बोर्डो में इसके विरोध में एक सभा हुई। पेरिस कम्यून में भाग लेनेवाले एक वयोवृद्ध व्यक्ति और एक प्रमुख फ़ांसीसी समाजवादी जूल गेद ने इस सभा को सम्बोधित किया।

मार्सेल काशेन इसके पहले कभी भी किसी राजनीतिक सभा में शामिल नही हुए थे। इस बार क्रोध की भावना, सत्य को जानने की इच्छा और बुराई के विरुद्ध संघर्ष करने के विचार से वह इस सभा मे शामिल हुए। इसका उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसके बाद वह बिलकुल बदल गए। काशेन उस घटना को याद करके बाद में कहा करते थे कि "उस दिन के बाद से जीवन के बारे में मेरे विचार सर्वथा बदल गए और मैं तत्काल समाजवाद के संघर्ष मे खिंच आया।"

१८६१ के अंत में जूल गेद और पाल लफ़ार्ग के नेतृत्व मे गठित फ़ांसीसी मजदूर पार्टी मे मार्सेल काशेन शामिल हो गए और शीघ्र ही इसके एक सक्रिय सदस्य हो गए। किसानों की समस्याओं पर विचार करने के लिए १८६२ के सितम्बर में मार्सेल्स में इस पार्टी की कांग्रेस हुई। काशेन ने ब्रिटनी के किसानो की स्थिति के बारे में कांग्रेस के नेताओ को एक पत्र भेजा था। ग्रामीण सर्वहारा के हितों के संघर्ष में यह उनका प्रथम योगदान था।

विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त करने के बाद काशेन ने कई वर्ष तक दर्शनशास्त्र की शिक्षा प्रदान की।

दसवीं दशाब्दी के अंत में मजदूर पार्टी की एक शाखा के यह सेक्रेटरी, बाद में "समाजवादी समस्याएं" और "जीराड समाजवादी" नामक

अखबारों के सम्पादक तथा अन्त में जीराड प्रात के संघीय पार्टी संगठन के सेक्रेटरी और बोर्डो के उप-नगरपाल हो गए।

१९०४ के अगस्त में जीरांड के मजदूरों ने अमस्टर्डम मे हुई दूसरे इटरनेशनल की काग्रेस मे इन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा, जहा अतर्राष्ट्रीय समाजवादी आन्दोलन के रोजा लुक्जेमबुर्ग, क्लारा जेटकिन, बेबेल और प्लेखानोव जैसे विख्यात नेताओं से वह पहली बार मिले।

१९०५ के अप्रैल मे पेरिस मे हुई फ़ासीसी समाजवादियों की काग्रेस मे उन्होंने जीराड प्रात का प्रतिनिधित्व किया। इस काग्रेस मे सयुक्त समाजवादी पार्टी कायम की गई, जिसमे उन्होंने बाद में प्रमुख भूमिका अदा की। अगले साल जब बेजीये मे समाजवादी सार्वजनिक सभा आयोजित की गई, तो जूल गेद ने अपनी जगह उनसे भाषण देने को कहा। गेद की सिफारिश पर इसी साल मार्सेल काशेन ने पार्टी का प्रचार कार्य अपने हाथ में ले लिया और अगले ६ साल तक वह इस काम के सम्बन्ध में फ़ास में व्यापक रूप से यात्राएं करते रहे, समाजवादी सभाओं का आयोजन करते रहे और हज़ारो लोगों के सम्पर्क में आते रहे तथा उनसे बातचीत करते रहे।

१९१२ में वह पेरिस म्युनिसिपल कौसिल और सेन प्रादेशिक कौसिल में चुने गए। वह श्रमिक तथा नगर परिवहन मज़दूर संगठन पर विशेष ध्यान देते हुए पेरिस के मज़दूरों की स्थिति को सुधारने मे अब अपनी पूरी शक्ति लगाने लगे। उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी और पेरिस के परिवहन मजदूरों ने शीघ्र ही उनसे अपनी यूनियन का अध्यक्ष-पद ग्रहण करने का अनुरोध किया, जिसमें इसके नेताओं के आपसी कलह के कारण फूट पड़ गई थी। उन्होंने इस पद को स्वीकार कर लिया और बहुत कम समय में इसकी पांतो मे पुनः एकता स्थापित करने मे सफल हो गए। अपने अन्य अनेक कार्यो के बावजूद वह ६ साल तक फ़ांसीसी परिवहन मज़दूर यूनियन के अध्यक्ष-पद पर बने रहे और उन्होंने बड़े साहस के साथ इसके सदस्यों के हितो की रक्षा की। प्रथम विश्वयुद्ध की बहुत ही तेज़ी के समय, १९१६ मे ट्राम मजदूरों की हड़ताल शुरू हो जाने पर काशेन हड़तालियों की पत्नियों के एक प्रतिनिधिमण्डल को गृहमंत्रालय ले गए और उन्होंने सरकार को मजदूरों की पगार बढाने के लिए विवश कर दिया।

उस समय काशेन ने लगातार पार्टी के एक नेता, प्रचारक और क्रान्तिकारी का कठिन, अविश्रान्त जीवन व्यतीत किया।

11*

१६१२ में पाल लफार्ग की मृत्यु के बाद काशेन «L'Humanité» के सम्पादक हो गए। १६१३ मे उन्होने फ़ासीसी समाजवादी युवक लीग की उद्घाटन काग्रेस की अध्यक्षता की और उसी साल बैसेल में हुई दूसरे इटरनेशनल की प्रसिद्ध कांग्रेस मे भाग लिया, जिसने सभी समाजवादियों से युद्ध को छिड़ने से रोकने की अपील की और सत्यनिष्ठा के साथ यह घोषणा की कि एक-दूसरे को गोली मारना मजदूर अपराध समझते हैं। परन्तु जब विश्वयुद्ध छिड़ गया तो इन संकल्पों को भुला दिया गया। लेनिन की पार्टी ही सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद और शान्ति के ध्येय के प्रति निष्ठावान बनी रही।

१६१४ के वसत मे पेरिस के मजदूरों ने काशेन को प्रतिनिधि-सभा मे चुना और उस समय से वह लगातार इसके सदस्य निर्वाचित होते रहे। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में फ़ांसीसी प्रतिनिधियों में सबसे वयोवृद्ध होने के कारण वह प्रतिनिधि-सभा के अधिवेशनों का उद्घाटन किया करते थे।

... १६१४ की अशांत गरमी आई। ३१ जुलाई को विश्वासघातपूर्ण ढंग से जोरेस की हत्या कर दी गई, जिन्हें काशेन बहुत सम्मान की दृष्टि से देखते थे, गोकि वह उनके विचारों से पूर्णतया सहमत नहीं थे।

"जोरेस की हत्या कर दी गई है!" काशेन ने लिखा, "जोरेस ने शान्ति के लिए अपने को न्योछावर कर दिया! युद्ध अब छिड़ने ही वाला है!"

सचमुच फ़ास में, सारी दुनिया मे युद्ध छिड़ने ही वाला था। अग्निपरीक्षा का समय उपस्थित होनेवाला था और दुनिया को हिला देनेवाली घटनाएं घटनेवाली थी।

विजयी क्रान्ति के देश की पहली यात्रा

प्रथम विश्वयुद्ध पिछले तीन साल से तेज़ी से चल रहा था। वह लाखो जानों, बरबाद शहरो और गावों की बलि ले चुका था। ऐसा प्रतीत होता था मानो युद्ध के पागलपन का कोई ही अन्त नही है। १६१६ के अगस्त में फ़ांसीसी समाजवादी पार्टी ने अपनी एक काग्रेस आयोजित की। जब काशेन ने इस काग्रेस में कहा कि इस युद्ध से रूस मे अनिवार्यतः शान्ति

होगी तो लोग मन ही मन मुस्करा पड़े। १६१७ की फरवरी में फ़ास के लोगों को यह स्फूर्तिदायक ख़बर मिली कि रूसी जनता ने जारशाही शासन का तख़्ता उलट दिया है और उसकी जगह अस्थाई पूंजीवादी सरकार का शासन कायम हो गया है, जिसका प्रभाव क्रान्तिकारी मजदूरों और सैनिकों द्वारा स्थापित सोवियतों की तुलना मे कही कम है।

फ़ांसीसी प्रतिनिधि-सभा ने विदेशी मामलों सम्बन्धी अपनी समिति के किन्ही सदस्यों को रूस भेजने और क्रान्ति-सम्बन्धी ख़बरो की सत्यता की जांच करने का निर्देश दिया। युद्ध के समय यह कठिन कार्य मार्सेल काशेन और दो अन्य प्रतिनिधियों मारिस मुते और एर्नेस्त लाफो को सौंपा गया।

१६१७ के मार्च के अत मे वे रूस की अपनी इस लम्बी और खतरनाक यात्रा पर रवाना हुए। सबसे पहले वे एबार्डिन गए और उसके बाद बार्गेन तथा स्टाकहोम होते हुए उस नदी के तट पर पहुंचे, जो स्वीडन और फिनलैण्ड के बीच सीमा-रेखा की द्योतक है। प्रतिनिधियों ने वर्फ जमी नदी को पैदल ही पार किया। पुराने समाजवादी योद्धा काशेन ने जब टोर्नियो के रेलवे स्टेशन पर लाल झण्डा फहराता हुआ देखा तो उनकी आंखों मे हर्ष से आसू उमड़ आये।

पेत्रोग्राद, मास्को, मीन्स्क और प्स्कोव की यात्रा करते तथा मजदूरों, किसानो और क्रान्तिकारी सोवियतों के सदस्यो से बातचीत करते हुए काशेन ने रूस में एक महीना व्यतीत किया। विद्रोही जनता की वास्तविक मनोभावना और जरूरतों को समझने का प्रयास करते हुए क्रान्तिकारी रूस के जीवन के प्रत्येक पहलू मे उन्होंने गहरी अभिरुचि प्रकट की। वह मई दिवस के प्रदर्शन के समय मास्को में उपस्थित थे और उन्होंने अपनी आखों से एक महान राष्ट्र के शक्तिशाली उभार को देखा था। फ़ासीसी समाजवादी नेता रूसी सेना के सैनिकों और अफसरों से बातचीत करने के लिए मोर्चे पर भी गए। एक जनरल ने स्पष्टतः उन्हें बताया कि रूसी सैनिक को लड़ने के लिए मोर्चे पर रोकना अब संभव नही है। एक फौजी मीटिंग मे काशेन ने सैनिकों को यह घोषित करते हुए सुना कि वे व्यर्थ ही अपना खून बहाना नहीं चाहते।

फ्रांसीसी मजदूरों के इस प्रतिनिधि को साफ-साफ ज्ञात हो गया कि रूस के लोग शान्ति चाहते हैं। केवल केरेन्स्की सरकार और इसका समर्थन करनेवाले दल युद्ध को जारी रखना चाहते थे। परन्तु यह सब कुछ बेकार

था, वे भ्रातृघातक साम्राज्यवादी युद्ध में लड़ते रहने के लिए लोगों को उत्प्रेरित न कर सके और न ही क्रांति का विजयपूर्ण फैलाव रोक सके।

मार्सेल काशेन ने जनता पर बोल्शेविकों के बढ़ते हुए प्रभाव को महसूस किया। लेनिन रूस वापस आ गये थे। वह जनता को समाजवादी क्रान्ति की ओर ले जा रहे थे, जो १९१७ के नवम्बर में विजयी हुई। क्रान्ति की, रूसी कम्युनिस्टों की पहली आज्ञप्ति शान्ति-सम्बन्धी आज्ञप्ति थी। और इसके बाद बोल्शेविकों ने कारखाने मजदूरो के हाथ में सौंप दिये और जमीन किसानों को दे दी।

पेरिस कम्यून के वीर जो कार्य नही कर पाये थे, उसे अक्तूबर क्रांति ने पूरा कर दिया।

फ़ांस वापस लौटने पर काशेन ने रूस में जो कुछ देखा था, उसे समाजवादी पार्टी को बताया। बड़े उत्साह से उन्होंने रूसी क्रान्ति के समर्थन पर ज़ोर दिया। «L'Humanité» मे उन्होने अपने एक लेख में लिखा:

"तीन साल से फ़ांस ज़ारशाही रूस का साथी था। क्या वह अब रूसी क्रान्ति के साथ ईमानदारी से सहयोग करने से इनकार करेगा? फ़ांसीसी जनतन्त्रवादियो और समाजवादियों के लिए उत्तर के इस महान जनतंत्र मे विश्वास करना उनके अपने राष्ट्रीय हित में है। हमारा कर्तव्य स्पष्ट है। इस बड़े विश्वव्यापी संघर्ष में हम रूसी क्रांति के पक्ष में हैं। हम क्रांतिकारी फ़ांस के नाम पर इस क्रांति के साथ हैं!"

लेनिन से अविस्मरणीय मुलाक़ातें

मार्सेल काशेन ने स्वतंत्र, क्रान्तिकारी और सुखी फ़्रांस के नाम पर, समाजवाद के नाम पर नवोदित सोवियत जनतंत्र के समर्थन की अपील की। फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के जो सदस्य मार्क्सवाद के प्रति निष्ठावान बने रहे, उनकी निगाह में मार्सेल काशेन की प्रतिष्ठा इससे और बढ गई। १९१८ के अक्तूबर में हुई पार्टी की काग्रेस मे रूसी क्रान्ति के प्रति घृणा की भावना रखनेवाले रेनोदिल को हटाकर उनकी जगह काशेन «L'Humanité» के राजनीतिक निदेशक नियुक्त किये गए।

१९२० में समाजवादी पार्टी की स्ट्रासबर्ग काग्रेस में, जिसमें दूसरे

इंटरनेशनल से सम्बन्ध खत्म करने का प्रस्ताव पास हुआ था, मार्सेल काशेन से पुनः इस बार पार्टी के तत्कालीन सेक्रेटरी फ़ोसार के साथ रूस जाने और बोल्शेविकों से तीसरे (कम्युनिस्ट) इंटरनेशनल में फ्रासीसी समाजवादी पार्टी के शामिल होने की शर्तों पर विचार करने का अनुरोध किया गया।

एक बार पुनः वह और उनके साथी सुरग बिछे सागर से होते हुए जहाज द्वारा स्टेटिन से हेल्सिंगफोर्स और वहा से रेवेल (ताल्लिन) पहुंचे। रेवेल से ट्रेन द्वारा पेत्रोग्राद जाते हुए प्रतिनिधिगण मास्को पहुंचे।

१९२० के जून मे काशेन बोल्शोई थियेटर मे मास्को सोवियत की एक बैठक में शामिल हुए। वक्ताओं ने नवोदित सोवियत जनतंत्र को कुचलने के प्रयास में साम्राज्यवादी राष्ट्रों का साथ देने के लिए फ़ांस की कड़ी निन्दा की। परन्तु भर्त्सना पूजीवादी फ़ांस की ही थी। जब मार्सेल काशेन मंच पर भाषण करने आये, तो सभी श्रोता उनके सम्मान मे उठ गए और उन्होंने मजदूरों के फ़ास, क्रान्तिकारी रूस के समर्थन की हिमायत करनेवाले मैत्रीपूर्ण फ़ांस के प्रतिनिधि के रूप मे उनका अभिवादन किया।

उसके बाद शीघ्र ही कम्युनिस्ट इटरनेशनल की कार्य-समिति की बैठक में, जिसमें भाग लेने के लिए काशेन निमत्रित थे, लेनिन से बातचीत करने का उन्हें पहला मौका मिला। लेनिन ने सहज भाव से कहा, "मैं तो आप से भेंट करने की बाट ही जोह रहा था।" लेनिन ने अतिथि के साथ फ़ांस और फ़ासीसी समाजवादी पार्टी की स्थिति और जिन शर्तो पर फ़ासीसी समाजवादी पार्टी तीसरे इंटरनेशनल मे शामिल हो सकती थी, उनपर लम्बी बातचीत की।

लेनिन ने कहा कि क्रान्ति अब होगी या बाद में, इस प्रश्न को पूछना निरर्थक है। अब हमारा मुख्य कार्यभार सभी देशों के अग्रणी सर्वहाराओं को प्रशिक्षित करना है ताकि घटनाएं उन्हे अचानक न घबड़ा दें, ताकि उपयुक्त अवसर आने पर वे इन घटनाओ पर अपना नियंत्रण क़ायम कर सके।

लेनिन के साथ बातचीत का काशेन पर अविस्मरणीय प्रभाव पड़ा। वह फ़ासीसी समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधि की हैसियत से कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से अपनी पार्टी के सम्बद्ध होने की शर्तें जानने के लिए रूस आये थे। उन्होंने अब महसूस किया कि उनका कार्यभार इसी से पूरा नही

हो जाता और लेनिन से वातचीत के वाद उन्होंने वोट देने के अधिकार के बिना एक प्रतिनिधि की हैसियत से कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस में शामिल होने की अनुमति प्राप्त करने का अनुरोध करते हुए फ़ासीसी समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय परिषद को तार भेजा। उन्हे इसका अनुकूल उत्तर प्राप्त हुआ।

कांग्रेस शुरू होने में अभी तीन सप्ताह थे और उन्होंने इस समय का रूस की यात्रा करने में सदुपयोग किया। जुलाई के शुरू में वह ट्रेन द्वारा नीज्नी नोवगोरोद गए। वहां जहाज पर सवार होकर वह वोल्गा नदी के निम्न भाग की ओर काज़ान गए तथा वहां से लेनिन के जन्मस्थान सिमबीर्स्क और वहां से सामारा और सारातोव गए। वहां से ट्रेन द्वारा ताम्बोव गए, और फिर रूस के शस्त्रास्त्र उद्योग के केन्द्र तूला और इसके बाद क्रान्तिकारी परम्पराओं के लिए प्रख्यात नगर इवानोवो-वोज़्नेसेन्स्क पहुंचे, जहां उन्होंने सूती मिलों के मजदूरों से मुलाकात की।

काशेन ने रूस के प्रारम्भिक क्रान्तिकारी वर्षों की भव्य वास्तविकता की जानकारी प्राप्त करते हुए विशाल देश मे तीन हज़ार किलोमीटर से अधिक की यात्रा की। मार्सेल काशेन ने अपने अनुभव के बारे में जो तार पेरिस भेजा, उसमें उन्होंने कहा था कि "रूस का समस्त मजदूर वर्ग अपने ध्येय की विजय में गहरे विश्वास और अपनी जीत मे पूरा भरोसा रखता है... मेहनतकश लोग पिछले तीन साल से जिन भयकर कठिनाइयों का सामना करते आ रहे हैं, उन्होंने हमसे उनकी चर्चा की... वे ठंड और भूख से पीड़ित हैं। एंटेंट की सरकारों ने उन्हें घोर ग़रीबी की स्थिति में पहुंचा दिया है। रूस के मजदूर हमसे पूछते हैं कि फ़्रांसीसी सर्वहारा सहित पश्चिमी देशों के सर्वहारा किस प्रकार तीन साल तक इस कुत्सित नीति को बर्दाश्त कर सके।"

१६२० की जुलाई में मार्सेल काशेन ने फ़ासीसी समाजवादी पार्टी के तीसरे इंटरनेशनल में शामिल होने की आवश्यकता पर दूसरा तार पेरिस भेजा।

फ़्रांस से आये रोस्यमेर, रैमों लेफ़ेव्र, वेर्जा और लेपती के साथ काशेन कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस मे शामिल हुए। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के नेताओं ने इंटरनेशनल में शामिल होने के बारे में मुख्य शर्तों को निर्धारित किया और उन्हें विचारार्थ प्रतिनिधियों के सम्मुख प्रस्तुत

किया। इस बात पर जोर दिया गया कि जहा ये सभी शर्तें सभी कम्युनिस्ट पार्टियों पर लागू होती हैं, वही जिन विशिष्ट परिस्थितियों में विभिन्न देशों के मजदूर अपना संघर्ष चलाने को विवश हैं, उन्हें दृष्टि में रखते हुए इन शर्तो मे छूट भी दी जायेगी।

फ़्रास रवाना होने के पहले काशेन ने लेनिन से दूसरी बार बातचीत की, जिन्होंने क्रेमलिन के अपने काम करने के साधारण कमरे मे उनसे भेंट की। लेनिन ने बड़े उत्साह के साथ फ़्रांसीसी नाविकों की चर्चा की, जिन्होंने काले सागर में साम्राज्यवादियों के विरुद्ध बगावत कर दी थी और क्रान्ति को कुचलने में हाथ बटाने से इनकार कर दिया था। उन्होंने काशेन को बताया कि सोवियत रूस के विरुद्ध पोलैण्ड के श्वेत गार्डो का समर्थन करनेवाली फ़्रासीसी सरकार वार्सा हथियार भेज रही है और उसने वहा जनरल वेर्गा और जनरल स्टाफ के अफ़सरों को भेजा है। लेनिन ने काशेन से डंकर्क के गोदी-मजदूरों के प्रति सोवियत रूस के मेहनतकश लोगो की कृतज्ञता प्रकट करने का अनुरोध किया, जिन्होने पोलैण्ड भेजे जानेवाले फ़ौजी सामान को जहाज पर लादने से इनकार कर दिया था। लेनिन ने कहा कि पोलैण्ड में साम्राज्यवादियों के ध्वस्त हो जाने के साथ ही आपेक्षिक शान्ति-काल क़ायम होगा और रूस की जनता अपने तबाह देश के पुनर्निर्माण तथा इसे अपराजेय बनाने में इस शान्ति का सदुपयोग करेगी। लेनिन ने यह कहते हुए कि "मुझे पूरा विश्वास है कि अपनी शक्ति और शानदार क्रान्तिकारी परम्पराओं के अनुरूप फ़्रासीसी सर्वहारा वर्ग एक सुदृढ़ कम्युनिस्ट पार्टी संगठित करेगा," विदाई के समय बड़ी सहृदयता के साथ काशेन से हाथ मिलाया।

काशेन ने जीवन भर फ़्रांसीसी मेहनतकश लोगों के इस महान दोस्त के विदाई के समय कहे गये इन सहृदय शब्दों को याद रखा।

कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना और विकास में योगदान

मार्सेल काशेन फ़्रास वापस लौटे और रूस के बारे में अपने अनुभव फ़्रासीसी मजदूरों को बताये। फ़्रांसीसी संयुक्त समाजवादी पार्टी के सचिवमंडल ने पेरिस सर्कस में एक सार्वजनिक सभा आयोजित की। जब काशेन वहां पहुचे, उस समय पेरिसवासियों की बड़ी भीड दरवाज़ो तक

ठसाठस भरी हुई थी। रूस का उनका आंखों देखा वर्णन सुनने के लिए हज़ारों व्यक्तियों ने किसी प्रकार हाल में घुसने की चेष्टा की। श्रोताओं में पुरुष और स्त्रिया, युवा मजदूर और पेरिस कम्यून के वयोवृद्ध सभी शामिल थे। उन्होंने चिल्लाकर उत्साह भरे स्वर में पूछा, "क्या आपने बोल्शेविकों को देखा है? वहां, रूस में क्या कुछ हो रहा है?" काशेन के उत्साहपूर्ण भाषण तुमुल हर्षध्वनि, भीड़ द्वारा तालियों की तूफ़ानी गड़गड़ाहट और "इंटरनेशनल" गान की ज़ोरों की गूंज से नवोदित सोवियत जनतन्त्र के लिए पेरिस के मजदूर वर्ग की हार्दिक सहानुभूति प्रकट हुई।

फ़्रांस के अन्य भागो में भी मार्सेल काशेन के भाषणों को सुनने के लिए इसी प्रकार उत्साह प्रकट किया गया। १९२० में अगस्त से दिसम्बर तक बीसियों सभाओं मे भाषण देते हुए उन्होंने लियों, मार्सेल्स, रूआ, हाव्र, बोर्डो और टूलूज की यात्राएं की और इन सभाओं में हज़ारों श्रोता जमा होते थे। कभी-कभी काशेन एक ही दिन में कई सभाओं मे भाषण देते थे और उसके बाद रात मे «L'Humanité» के लिए लेख लिखा करते थे।

काशेन और उनके साथियों के निर्भीक और दृढ रुख के फलस्वरूप, जिन्हें समाजवादियों के बहुमत का समर्थन प्राप्त था, टूर्स कांग्रेस में, जहा फ़्रासीसी कम्युनिस्ट पार्टी अस्तित्व में आई, वास्तविक मार्क्सवादी, अंतर्राष्ट्रीयतावादी और देशभक्त शक्तियों को विजय प्राप्त हुई। इसकी स्थापना फ़्रांसीसी मजदूर आन्दोलन के विकास और विश्व सर्वहारा पर अक्तूबर क्रान्ति के सबल प्रभाव की तर्कसगत परिणति थी।

नवस्थापित फ़्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रारम्भिक विकासक्रम निर्बाध नही था। पार्टी प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध अथक संघर्ष करने के लिए विवश थी, जिन्होंने कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ अपने तीव्र हमलो को बन्द नही किया था। पार्टी के अन्दरूनी शत्रुओं, गद्दारों और हर प्रकार के विश्वासघातियों के विरुद्ध संघर्ष करना ज़रूरी था, जिनमें पार्टी के भूतपूर्व सेक्रेटरी फ़्रोसार भी शामिल थे, जिन्होंने सर्वहारा वर्ग के ध्येय के साथ गद्दारी की थी और पूजीपति वर्ग के पक्ष मे हो गये थे। शुरू से ही फ़्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य मार्सेल काशेन ने पार्टी को सुदृढ़ बनाने तथा मार्क्सवाद, सर्वहारा

अंतर्राष्ट्रीयतावाद और देशप्रेम की भावना में इसके युवा सदस्यों को प्रशिक्षित करने के काम में अपनी सारी शक्ति और विलक्षण प्रतिभा लगा दी।

१९२३ के शुरू में ही कम्युनिस्ट पार्टी को गंभीर परीक्षा का सामना करना पड़ा। प्वाइकारे सरकार ने फ़ांसीसी साम्राज्यवादियों के प्रभुत्त्व और भारी मुनाफ़े को सुनिश्चित बनाने के लिए जर्मनी के औद्योगिक क्षेत्र – रूर – पर कब्ज़ा किया।

मार्सेल काशेन और फ़ांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य नेताओं ने साहसपूर्ण निर्णय द्वारा इस राजनीतिक चुनौती का सामना किया। जिस दिन फ़ांसीसी फ़ौजें एसेन में पहुंची, उसी दिन मार्सेल काशेन, गास्तोन मोंमौसो, पियेर सेमार, गाब्रियाल पेरी और रिशेत ने क्लारा ज़ेटकिन के साथ मिलकर वहा एक सार्वजनिक सभा आयोजित की और इस प्रकार उन्होने फ़ांस तथा जर्मनी के मज़दूरों की एकता प्रदर्शित की।

इस साहसपूर्ण कदम से साम्राज्यवादी आगबबूला हो उठे। काशेन और उनके साथी ज्योंही पेरिस वापस लौटे, त्योंही प्वाइंकारे सरकार ने राज्य की सुरक्षा के विरुद्ध साज़िश के अभियोग में उन्हे साते वन्दीगृह में झोंक दिया। फ़ांस और दूसरे देशों के सर्वहाराओं ने काशेन और उनके साथियो का पूरा समर्थन किया। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से कैदियों के लिए एक पत्र पहुंचा, जिसमे फ़ांसीसी और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन की महत्त्वपूर्ण सेवा के लिए उनकी कार्रवाई की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी थी और जिसमे लेनिन का मैत्रीपूर्ण संदेश भी था। पत्र में कहा गया था: "आप लोगो ने फ़ांसीसी सर्वहारा के सम्मान की रक्षा की है। सभी देशों के कम्युनिस्टों ने आप के साहसपूर्ण कार्य की सराहना की है। सारी दुनिया के अग्रणी मज़दूर अब आगे दिलचस्पी के साथ आपकी प्रत्येक कार्रवाई पर ध्यान देते रहेंगे।"

१९२५ में काशेन को दो साल की जेल की सज़ा दी गई – इस बार मोरक्को में फ़ांसीसी उपनिवेशवादियों के युद्ध के विरुद्ध प्रबल आवाज़ बुलन्द करने के "अपराध" के लिए उन्हें यह दण्ड दिया गया। इस युद्ध को समाप्त कराने के लिए जो संघर्ष-समिति बनी थी, उसके अध्यक्ष मोरीस थोरेज को भी इसी "अपराध" के लिए सज़ा दी गयी थी।

इस प्रकार के अथक संघर्ष और अपनी पांतों से हर प्रकार के अवसरवादियो को निकाल बाहर करने के फलस्वरूप फ़ांसीसी कम्युनिस्ट

मोरीस थोरेज़, पाल वाइया कौतूरियर, मार्सेल काशेन आदि पेर-लाशेज़ कब्रिस्तान में कम्यूनार्डों की भित्ति के पास। १६२६।

पार्टी विकसित और मजबूत होती गयी। और इसके साथ ही इसके योद्धा और नेता फौलादी संकल्प के बनते गए. मार्सेल काशेन, पाल वाइयां-कौतूरियर, गास्तोन मोंमौसो और फ़ांसीसी सर्वहारा के अधिक युवा नेता, जैसे मोरीस थोरेज़, वाल्देक रोशे, जाक दूक्लो और अनेक दूसरे नेता।

बहुत पुरानी दोस्ती और एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना से मार्सेल काशेन और मोरीस थोरेज़ मैत्री के सूत्र मे बंध गये थे। मोरीस थोरेज १६२४ में केन्द्रीय समिति के सदस्य और १६३० में फ़ांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी चुन लिये गये थे।

काशेन के दोस्तो मे फ़ांस के सास्कृतिक क्षेत्र के ये प्रख्यात व्यक्ति भी *शामिल थे — रोमा रोलां, ग्रोरी बारबूस, चित्रकार* पाल सिन्याक। एक योद्धा और चिन्तक, मार्सेल काशेन ने अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक विज्ञान, कला और साहित्य मे अपनी अभिरुचि बनाये रखी और उन्होंने खुद सास्कृतिक समस्याओ पर बहुत कुछ लिखा। उनके लेख और भाषण आशावादिता और जीवन के प्रति अनुराग की भावना से सराबोर थे।

एकता के लिए गृहयुद्ध के विरुद्ध संघर्ष

चौथे दशक में फ्रांस के सामने पुनः मुसीबतों का समय प्रस्तुत हुआ। जिस तरह हिटलरशाही ने जर्मनी में सत्ता-सूत्र पर कब्जा जमाया, उसी तरह फ्रांसीसी फासिस्टों ने भी सत्ता हथियाने की कोशिश की। देश का आकाश विपत्ति के काले बादलों से आच्छादित हो गया।

ऐसे नाजुक समय में मजदूरों तथा प्रगतिशील ताकतों की एकता की अपूर्व आवश्यकता थी। केवल इस एकता से फ्रांस की रक्षा हो सकती थी। फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने सभी जनवादियों और जनतंत्रवादियों, अपने देश की स्वतंत्रता और सम्मान की रक्षा की इच्छा रखनेवाले सभी लोगों में एकता कायम करने के आन्दोलन का नेतृत्व किया।

मार्सेल काशेन ने अपनी पूरी शक्ति से आजीवन मजदूर वर्ग की शक्तियों को एकजुट करने की दिशा में पूरा प्रयत्न किया। १६०५ में उन्होंने फ्रांसीसी समाजवादियों को एकजुट होने में सहायता प्रदान की और समाजवादी पार्टी कायम की। १६२० के ऐतिहासिक वर्ष में, जब फ्रांसीसी समाजवादी पार्टी तीसरे इंटरनेशनल में शामिल होने का निर्णय कर रही थी, उन्होंने अल्पसंख्यक गुट से एकता को बनाये रखने और फूट से पार्टी को बचाने का अनुरोध किया। १६३४ में उनकी उम्र ६५ साल की थी। वह अभी पूर्ण स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट थे। उनकी आश्चर्यजनक कार्यक्षमता और प्रभावशाली वक्ता के रूप में उनकी प्रतिभा अभी पूर्ववत बनी हुई थी। अनेक व्यक्ति उस काल के उनके जोशीले भाषणों को आज भी याद करते हैं। चौथे दशक में उन्होंने समाजवादियों और कम्युनिस्टों से प्रतिक्रिया और फासिस्टवाद के विरुद्ध अपनी शक्तियों को जुटाने का आह्वान किया।

१६३५ की गर्मी में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की सातवीं कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा, "हमें अब अपूर्व रूप में अधिक कर्मठता के साथ फासिस्टवाद के पथ को अवरुद्ध करना चाहिए... इस संघर्ष में हमें साथियों की जरूरत है। और जनवादी मोर्चा इसी प्रकार का साथी है।"

फ्रांसीसी सिनेट में चुने जानेवाले प्रथम कम्युनिस्ट मार्सेल काशेन ही थे। १६३५ में उनका यह चुनाव मानो १६३६ में जनवादी मोर्चे की विजय की शुरुआत थी।

जनवादी मोर्चे का प्रादुर्भाव फ्रांसीसी मेहनतकश लोगों की एक बड़े

मार्सेल काशेन कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की
सातवीं कांग्रेस में भाषण दे रहे हैं। १६३५।

विजय थी। यह समाजवादियों और अन्य जनवादियों के साथ संयुक्त कार्रवाई के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के संघर्ष की परिणति थी।

काशेन ने बार-बार युद्ध के सन्निकट होने की चेतावनी दी। उन्होंने «L'Humanité» के कालमों से, संसद में, अनेक सम्मेलनों और शान्ति सभाओं के मंच से लगातार युद्ध के ख़तरे की ओर ध्यान आकृष्ट किया और फ़ासिस्टवाद को छूट देने की नीति का विरोध किया। १६३७ में विश्व-शांति कांग्रेस में भाषण देते हुए उन्होंने कहा, "शान्ति की रक्षा हमारा संयुक्त लक्ष्य है–हम इसी बंधन से एक-दूसरे से बंधे हुए हैं और इस बंधन को अटूट रूप में क़ायम रखने के लिए हमें कोई भी प्रयास उठा नहीं रखना चाहिए।"

"शान्ति की रक्षा का बन्धन हमें एक-दूसरे से बांधे हुए है..." आज भी ये शब्द कितने उपयुक्त हैं!

किन्तु कम्युनिस्टों की अपीलों और उनके वीरतापूर्ण संघर्ष को समर्थन नहीं मिला और प्रतिक्रियावादी ताक़तें युद्ध शुरू कर देने में सफल हो गईं। म्यूनिख़ समझौते से द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए रास्ता खुल गया और फ़्रांस के प्रतिक्रियावादी शासकों ने हिटलर के प्रतिरोध की तैयारियां करने की

जगह फ़ांसीसी कम्युनिस्टों और देश के अन्य प्रगतिशील लोगों के विरुद्ध दमनकारी कार्रवाइयां शुरू की। लामबन्दी की घोषणा होने के पूर्व ही, १९३९ के सितम्बर में «L'Humanité» के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। उसी साल अक्तूबर में कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय मार्सेल काशेन की उम्र ७० वर्ष की थी, परन्तु वृद्धावस्था के बावजूद वह साहस के साथ उनके समर्थन के लिए आगे आये। संसद के अधिकारपत्र से वंचित कर दिये जाने पर वह अपने साथी कम्युनिस्टों का उत्साह बढ़ाने तथा उन्हें अपना समर्थन प्रदान करने के लिए अदालत में उपस्थित हुए। जिन कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों के विरुद्ध मामले चलाये गए, उनमें से एक फ्लोरिमां बोंत ने बाद में बताया कि जब काशेन अदालत के कमरे में प्रविष्ट हुए, तो सभी अभियुक्त उनके प्रति कृतज्ञता और सम्मान की भावना प्रकट करते हुए खड़े हो गये। बोंत ने लिखा, "उनके व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा प्रकट करके हम कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अटूट निष्ठा रखनेवाले, जीवन, उस जीवन के प्रति जो त्याग और तपस्या से परिपूरित था, अपनी श्रद्धा प्रकट करते थे, हम कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते थे, जिसका उन्होंने बड़ी योग्यता से प्रतिनिधित्व किया।"

जहां म्यूनिक समझौता करनेवालों ने फ़्रांस के साथ ग़द्दारी की, वहां फ़्रांसीसी कम्युनिस्टों और अन्य देशभक्तों ने इसकी रक्षा के लिए अपनी जान भी न्योछावर कर दी। अपनी जनता और अपने देश की आजादी और स्वाधीनता के संघर्ष में कम्युनिस्ट अगली पंक्ति में थे। १९४० की जुलाई के कठोर दिनों में «L'Humanité» के एक गैरकानूनी अंक में मोरीस थोरेज़ और जाक दूक्लो के हस्ताक्षर से प्रकाशित फ़्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के घोषणापत्र में कहा गया था, "फ़्रांस जैसा महान राष्ट्र कभी भी गुलामों का राष्ट्र नहीं होगा।" शत्रु के क़ब्ज़े के दुःखपूर्ण वर्षों में मार्सेल काशेन, जो उस समय सत्तर वर्ष से अधिक के थे, «L'Humanité» के पृष्ठों से हिटलरी आक्रमणकारियों का प्रतिरोध करने के लिए सभी फ़्रांसीसियों का आह्वान किया करते थे। १९४३ की जुलाई में उन्होंने कहा, "अपने देश की स्वतंत्रता के लिए सभी फ़्रांसीसियों को अवश्य ही लड़ना चाहिए। जहां तक हमारा सम्बन्ध है, हमने दृढ़ता और अविचल रूप से कम्युनिज़्म के प्रवर्तकों द्वारा निर्धारित रास्ते को ग्रहण कर लिया है। जीवन का अनुभव

यह सिद्ध करता है कि उत्पीड़ित मानवजाति की मुक्ति के लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है।"

फासिस्ट नराधमों का प्रतिरोध करने में फ़्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं की अपीलों से सभी फ़्रांसीसी देशभक्तों को प्रेरणा प्राप्त हुई। इसी कारण मृत्युदण्ड पाते समय गाब्रियाल पेरी ने अपने शिक्षक मार्सेल काशेन को याद किया, जिनके पावन जीवन के आदर्श से उन्हें मौत का निडरतापूर्वक सामना करने की शक्ति प्राप्त हुई।

काशेन के युद्धोत्तर लेख और भाषण भी पूर्ववत कम्युनिज्म की उच्च भावना और शांति तथा मानवजाति के सुख के लिए संघर्ष करने की अटूट संकल्पशक्ति से परिपूरित थे। उन्होंने एटलांटिक गुट के आक्रामक स्वरूप तथा फ़्रांसीसी शासकों और बोन के प्रतिशोधवादियों के बीच सांठगांठ का भण्डाफोड़ किया। उन्होंने औपनिवेशिक युद्धों और परमाणविक हथियारबन्दी की नीति की भर्त्सना की। ४ सितम्बर, १९४९ को «L'Humanité» सम्बन्धी एक उत्सव में भाषण देते हुए उन्होंने घोषणा की, "फ़्रांस की जनता सोवियत संघ के विरुद्ध कभी नहीं लड़ेगी। पेरिस और अन्यत्र शासन करनेवाले इस गंभीर चेतावनी को सुनें! वे फ़्रांसीसियों, हमें शिक्षा देनेवाले श्रद्धास्पद साथियों की आवाज को सुनें... हम जनवाद, प्रगति, अच्छे जीवन, और मानवजाति के सर्वाधिक बहुमूल्य वरदान—शान्ति—के लिए संघर्ष करने का व्रत ग्रहण कर रहे हैं।"

अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक काशेन ने औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने हिन्दचीन में शान्ति स्थापित करने और अल्जीरियाई जनता की आजादी और स्वाधीनता के पक्ष में निडर होकर भाषण दिए। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में भी वह पूर्ववत अधिकाधिक काम करते रहे। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि आंखों में सदय और उल्लासपूर्ण चमक लिये हुए इस मिलनसार अस्सीवर्षीय व्यक्ति का साहस किसी भी कठिनाई से भंग न होगा। अधिकाधिक काम करने की इच्छा से वह सुबह जल्दी उठते रहे। वह बुलवार प्वासोनियेर पर स्थित «L'Humanité» के कार्यालय में एक दिन भी जाने से नहीं रहे, जहां उन्होंने लगातार ४५ वर्ष काम किया और जिन में से ३९ वर्ष तक वह फ़्रांसीसी मजदूर वर्ग के यशस्वी समाचारपत्र के सम्पादक रहे।

उनके एक हमवतन ने बताया कि एक रोज रास्ते में उसकी भेंट "पापा

काशेन" में हो गई और सड़क पार कराने में उनने उनकी मदद करने की कोशिश की, जिसपर उसे उनकी यह स्नेहपूरित झिड़की सुनने को मिली है: "कोई ज़रूरत नहीं है, सचमुच कोई ज़रूरत नहीं है। यह क्यों समझते हो कि मैं बूढ़ा हो गया? यकीन करो, मैं अपने देश में भी समाजवाद की स्थापना होने तक जीवित रहूंगा।"

सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद और विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता के अथक पोषक काशेन ने प्रगतिशील शक्तियों की प्रत्येक सफलता, सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों की बढ़ती हुई शक्ति पर सदैव प्रसन्नता प्रकट की। रूसी क्रान्ति का स्वागत करनेवाले सबसे पहले फ़्रांसीसियों में वह भी एक थे और अपने जीवन के अन्त तक वह फ़्रांसीसी-सोवियत मैत्री के समर्थक बने रहे। फ़्रांस और सोवियत संघ के लोगों के बीच दोस्ती को सुदृढ़ बनाने की दिशा में उनके दीर्घकालीन निस्स्वार्थ कार्य को दृष्टि में रखते हुए १९५७ में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत ने उनकी ८८वीं वर्षगांठ पर उन्हें लेनिन पदक से विभूषित किया। जब काशेन को यह पदक प्रदान किया गया, तो उनकी आंखों से प्रेमाश्रु उमड़ पड़े और भावाभिभूत होकर उन्होंने कहा, "मैं १९१७ की क्रान्ति के अमर ध्येय के प्रति अपनी बढ़ती हुई श्रद्धा व्यक्त करना चाहता हूं। अपूर्व रूप से मुझे विश्वास है कि सारी दुनिया में इसकी विजय नज़दीक है। मुझे लेनिन को देखने और उनकी प्रतिभा को आंकने की ख़ुशी है, जिसने दुनिया का रूप ही बदल गया है।"

काशेन का यह वक्तव्य एक प्रकार से उनकी वसीयत है, उनके सम्पूर्ण जीवन का निचोड़ है। १२ फ़रवरी, १९५८ की रात में अठासी वर्ष की अवस्था में शुआज़ी-ले-रूआ में अपने छोटे मकान में मार्सेल काशेन का निधन हो गया। फ़्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने इस घर को काशेन स्मारक संग्रहालय बना दिया है।

अपने महान सपूत की शव-यात्रा में शामिल होने के लिए फ़्रांसीसी जनता उमड़ पड़ी। पेर-लाशेज़ क़ब्रिस्तान में कम्यूनार्डों की भित्ति के पास पाल वाइयां कौतूरियर, आंरी बारबूस, पियेर सेमार और फ़्रांस की स्वाधीनता तथा गौरव की रक्षा के लिए संघर्ष करनेवाले अन्य योद्धाओं की क़ब्रों के पास ही मार्सेल काशेन का शव दफ़ना दिया गया।

हर साल पेरिसवासी पेरिस कम्यून के योद्धाओं और उनके सुयोग्य वारिसों की पुण्य स्मृति के प्रति अपनी मूक श्रद्धांजलि अर्पित करने इस दीवार के पास आते हैं। फ़्रांस के मेहनतकश लोग हर वसंत में अमर जीवन के प्रतीक के रूप में उनकी क़ब्रों पर ताज़े फूल अर्पित करते हैं।

जूलियन लाहौत

बहुत ही शेरदिल जूलियन लाहौत एक छोटे-से देश के एक छोटे नगर के निवासी थे। यद्यपि बेल्जियम कोई बड़ा देश नहीं है, परन्तु यह अपने बड़े उद्योगों और जुझारू मजदूर वर्ग के कारण प्रसिद्ध है। जूलियन लाहौत का जन्म १८८४ में एक छोटे-से नगर सेरिंग में हुआ था, जिसने ब्रिटिश उद्योगपति काकरिल के भारी मशीन-निर्माण तथा इस्पात कारखानों के इर्द-गिर्द तेजी से अस्तित्व ग्रहण किया। इस समय यह देश के एक सबसे बड़े औद्योगिक केन्द्र लीएज का एक मजदूर उपनगर है।

पश्चिम से पूर्व तक सारे देश में औद्योगिक बेल्जियम की एक पतली पट्टी चली गई है। यहां खानों से कोयला खोदा जाता है और गलाकर

इस्पात तैयार किया जाता है। यह खनिकों, धातु-मजदूरों, मशीन-निर्माताओं और रसायनिकों का निवास-स्थल है, बेल्जियम के मज़दूर वर्ग का केन्द्र है। काली गर्द, कोयले के काले टीलो, कभी न बुझनेवाली धमन भट्ठियो, फैक्टरियों की धुग्रां उगलनेवाली काली चिमनियों, खनिको के काले चेहरो और काली बस्तियों के कारण इसे "काला देश" कहते हैं। अपनी गरम बाज़ारी के बहुत अल्पकाल मे यहां पास-पड़ोस के ज़िलो से किसान जमा होते हैं; मंदी और आर्थिक संकटों के समय यह गरीबी और निराशा का सर्वथा प्रतीक बन जाता है।

जूलियन लाहौत का जन्म मज़दूर परिवार में हुआ था। उनके पिता एक अनुभवी धातुकार ट्रेड-यूनियन आन्दोलन के एक प्रमुख कार्यकर्ता और स्थानीय समाजवादी लीग के प्रतिष्ठापक थे। यद्यपि मज़दूर प्रतिदिन १२ घंटे काम किया करते थे, परन्तु उन्हें बहुत ही कम मजदूरी दी जाती थी। श्रम संरक्षण की कोई व्यवस्था नही थी और न तो पर्याप्त श्रमिक कानून ही बने थे जिससे इस स्थिति में कोई अन्तर आता। पूंजीपति ट्रेड-यूनियनों में मज़दूरों के संगठित होने के अधिकार को स्वीकार नही करते थे। बड़ी नृशंसता के साथ हड़तालो को कुचल दिया जाता था।

लाहौत के जन्मस्थान सेरिंग में १८६९ मे हड़तालों को निर्ममतापूर्वक कुचलने का वर्णन कार्ल मार्क्स ने इस प्रकार किया है:

"सेरिंग में काकरिल के लौह कारख़ाने में धातुकर्मियों की पूर्णतः क़ानूनी हड़ताल ने इसलिए हलचल का रूप ग्रहण कर लिया कि जनता को उत्तेजित करने के लिए वहां घुड़सवार सैनिकों तथा राजनीतिक पुलिस का एक बडा दस्ता भेजा गया था। ९ से १२ अप्रैल तक इन बहादुर सैनिकों ने न केवल निरस्त्र मज़दूरो पर तेगों और सगीनों से प्रहार किया, बल्कि निर्दोष राहगीरों को भी अन्धाधुन्ध मौत के घाट उतार दिया और उन्हें घायल किया। वे जबरन घरों में घुस गए और यहां तक कि सेरिंग रेलवे स्टेशन पर घिरे हुए यात्रियों पर बारबार भीषण प्रहार करके भी उन्होंने पाशविक ढंग से अपना दिल बहलाया।"

मजदूर वर्ग के सभी परिवारों की भांति लाहौत परिवार भी अभावग्रस्त था। ट्रेड-यूनियन सम्बन्धी अपने कार्यों के कारण जूलियन के पिता अक्सर अपनी रोज़ी खो बैठते थे। उनकी मा घर का काम करने के कारण मज़दूरी नही कर पाती थी। प्राइमरी शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनका बेटा, जो

उस समय १४ वर्ष का था, कारख़ाने में काम करने गया। अपने पिता की भांति वह धातुकार हो गया।

१६०२ में, १८ साल के पूरे होते होते उन्होंने राजनीतिक हड़ताल में पहली बार भाग लिया और इसके एक नेता होने के कारण उन्हें काम से हटा दिया गया। इससे वह आतंकित नहीं हुए। मजदूरों को संगठित करने की आवश्यकता में उन्हें यकीन हो गया था और उन्होंने अपने को यूनियन को खड़ा करने के काम में पूर्णतया झोंक दिया। १६०५ में उन्होंने अपने साथियों के साथ लीएज धातुकार यूनियन क़ायम की, जो बेल्जियम की एक सर्वाधिक जुझारू यूनियन बन गई। उसके बाद शीघ्र ही वह इस यूनियन के प्रचार-सेक्रेटरी चुने गए। उस ज़माने में बेल्जियम की सभी यूनियनें मज़दूर पार्टी से सम्बद्ध थी।

तत्कालीन बेल्जियाई मजदूर पार्टी वास्तव मे एक अजीब-सी पार्टी थी। सर्वहारा समुदाय की पार्टी के रूप में १८८५ में स्थापित वह फिर उपभोक्ता और उत्पादक सहकारी समितियों, ट्रेड-यूनियनों, खेलकूद संगठनों, शैक्षिक संस्थाओं, सहायक कोषों, पेंशन कोषों, सांस्कृतिक संगठनों आदि के रूप में संगठित हो गयी थी। इन संगठनों के सदस्य अपने आप मजदूर पार्टी के सदस्य समझे जाते थे। इनमें से प्रत्येक संगठन का प्रायः अपना स्वतंत्र अस्तित्व था और अक्सर वह केवल औपचारिक रूप से पार्टी से सम्बद्ध था। इस प्रकार मजदूर पार्टी सर्वाधिक विविध सामाजिक श्रेणियों और विचारधारात्मक रुझानों के एकीकरण का प्रतिनिधित्व करती थी। धीरे-धीरे निम्नपूंजीवादी विचारधारा इस पर हावी हो गई और पार्टी में अवसरवादी तत्वों का प्रभाव बढ गया।

१९१३ के अप्रैल में आम राजनीतिक हड़ताल से सारा बेल्जियम हिल उठा। उदारपंथी पूंजीपति वर्ग और मेहनतकश जन समुदाय चाहता था कि मताधिकार पर लगे नियंत्रणों को हटा लिया जाये; उन्होंने साम्पत्तिक और शैक्षिक शर्तों को कम करने तथा अभिजात वर्ग और बड़े पूंजीपतियों को एकसाथ कई वोट देने के अधिकार तथा उनके अन्य विशेषाधिकारों के उन्मूलन की मांग की। सार्विक मताधिकार के संघर्ष में सर्वहारा वर्ग मुख्य क्रान्तिकारी कारक साबित हुआ। परन्तु मजदूर पार्टी विजयपूर्ण परिणति तक सर्वहाराओं का नेतृत्व करने में असमर्थ रही।

हड़ताल में भाग लेनेवाले ५ लाख बेल्जियाई मज़दूरों की एकता और

जुझारूपन के बावजूद इसकी परिणति समझौते मे हुई। सरकार ने मताधिकार सम्बन्धी सुधारों को निश्चित करने के लिए एक आयोग नियुक्त करने का वादा करने के अलावा और कोई माग मंजूर नही की।

लेनिन ने "बेल्जियाई हड़ताल के सबक" शीर्षक अपने लेख मे हड़ताल की आंशिक विफलता के दो मुख्य कारणों पर ज़ोर दिया: "पहला कारण— बेल्जियाई समाजवादियों के एक तबके, विशेष रूप से ससदवादियों मे अवसरवाद और सुधारवाद का पूरा प्रभाव है। उदारपंथियो के साथ गंठजोड करने मे अभ्यस्त ये संसदवादी जो कुछ भी करते हैं, उसके लिए अपने को उदारपंथियों पर अवलम्बित महसूस करते है...

"आंशिक विफलता का दूसरा कारण मजदूर सगठनों और बेल्जियम में पार्टी की कमज़ोरी है। बेल्जियम में मजदूर पार्टी राजनीतिक दृष्टि से असंगठित मज़दूरों, 'विशुद्ध' सहकारितावादियों, ट्रेड-यूनियनवालों आदि के साथ राजनीतिक दृष्टि से संगठित मजदूरों का संघ है। बेल्जियम में मजदूर वर्ग के आन्दोलन की यही सबसे बडी त्रुटि है..."

लीएज के मज़दूर हड़तालियों की अगली पातों मे थे। जहा तक लाहौत का सम्बन्ध था, वह तो पूरी तरह सघर्ष मे जुटे हुए थे, इसके नेताओं में एक थे। असफल हडताल की परिणति इसके सगठको की गिरफ़्तारी और उनके विरुद्ध मुकदमा चलाने में हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जूलियन एक बेल्जियाई तोपखाने के साथ रूस भेजे गये और वहा जर्मनी के ख़िलाफ लडे थे। वह क्रान्ति और मज़दूरों के राज्य की उत्पत्ति के प्रत्यक्षदर्शी थे। अक्तूबर क्रान्ति के विचारों ने अस्पष्ट खयालो के युवा ट्रेड-यूनियन नेता को एक पक्के क्रान्तिकारी और अंतर्राष्ट्रीयतावादी मे रूपान्तरित कर दिया। बेल्जियम लौटने के बाद लाहौत ने नवोदित समाजवादी रूस के पक्ष मे व्यापक आन्दोलन सगठित किया।

बेल्जियाई मजदूर पार्टी मे रूसी क्रान्ति को लेकर गरमागर्म बहस हुई। लाहौत ने मजदूरों से तीसरे इंटरनेशनल का पक्ष ग्रहण करने की अपील की।

१९२१ में कार्करिल के कारख़ाने के इस्पात-मज़दूरों ने सात महीने की हड़ताल की। उन्होंने मजदूरी गिराने का विरोध किया। उनके मालिको को आशा थी कि भूखग्रस्त होकर वे हडताल ख़त्म कर देंगे। जूलियन ने इस हड़ताल का नेतृत्व किया। उस समय तक वह जन समुदाय के प्रतिष्ठित

नेता हो गये थे। एक जोशपूर्ण सुवक्ता और प्रतिभाशाली संगठक, जनता के हितों के प्रति एकनिष्ठ, दृढ़ और आत्म-समर्पण को उद्यत योद्धा होने के नाते उन्हें न्यायतः बेल्जियाई मजदूरों का स्नेह प्राप्त था। उनका कद लम्बा और शरीर सुगठित था, उनके चेहरे से संकल्पशक्ति और तेज टपकता रहता था; अपने खुशदिल और निर्मल स्वभाव के कारण वह सदा अपने सहकर्मियों में आदरणीय बने रहे। उनकी उन्मुक्त मुस्कान से उनका चेहरा खिल जाता था और उनकी आंखों से उनके स्वभाव की सरलता और संवेदनशीलता टपकती थी। एक मजदूर परिवार में उनका पालन-पोषण होने तथा सदैव मेहनतकश लोगों के सम्पर्क में रहने के कारण वह अपने वर्गीय बन्धुओं की ज़रूरतों को महसूस करते थे, समझते थे। जहां भी कभी हड़ताल होती थी, वहां वह तत्काल पहुंच जाते थे। जब लोगों में उत्साह की भावना पैदा करने की आवश्यकता होती थी, जब उनकी शक्ति क्षीण होने लगती थी, तो उनमें शक्ति का संचार करने के लिए लाहौत ही उनके बीच भेजे जाते थे। वह पुनः उनमें भरोसा और विश्वास की भावना पैदा करते थे और यह बताते थे कि कहां उन्होंने भूलें की हैं। आज भी लीएज के वयोवृद्ध मजदूर पुलिस के साथ मुठभेड़ों और "शेर की भांति लड़नेवाले अपने जूलियन" को याद करते हैं। वह सदैव सबसे पहले अपने को लड़ाई में झोंक देते थे और सबसे बाद में संघर्ष स्थल से हटते थे। पत्रकार उन्हें "हड़तालों की प्रेरक शक्ति" कहते थे और मजदूर उन्हें प्रत्येक हड़ताल की जान मानते थे।

लाहौत की पीठ पीछे मालिकों से समझौता-वार्ता शुरू करके दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादियों ने १९२१ की हड़ताल के समय गद्दारी की। उन्होंने उनके विरुद्ध हड़ताल की ठीक से व्यवस्था न करने का आरोप लगाया और उनकी गिरफ़्तारी से फ़ायदा उठाकर उन्हें यूनियन से निकाल दिया। शीघ्र ही लाहौत और उनके साथी हड़तालियों ने धातुकारों की एक नयी यूनियन संगठित की। १९२३ मे वह बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए और एक साल बाद इसकी केन्द्रीय समिति और राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य चुन लिये गये। इसके साथ ही वह धातुकार यूनियन के सेक्रेटरी तथा ट्रेड-यूनियन इंटरनेशनल की कार्य-समिति के एक सदस्य थे। १९२५ में वह लीएज म्युनिसिपल परिषद के सदस्य निर्वाचित हुए और १९२६ में अपने नगर सेरिंग की नगरपालिका के सदस्य चुन लिये गए। १९३२ तक

वह नगरपालिका के सदस्य बने रहे, और उसी साल वह संसद सदस्य निर्वाचित हो गए। इसके बाद भी उन्होंने अपने नगर से घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखा।

१९३२ में औद्योगिक क्षेत्र के पश्चिमी भाग में "खनिको के स्थल" बारिनज में हड़ताल हुई।

अन्य पूंजीवादी देशों की भांति बेल्जियम के लिए भी १९३२ सकट का साल था। कोयले के लिए कोई मण्डी नही थी। खनिकों को जबरी छुट्टी दे दी गई। रोजगार कार्यालयों के सम्मुख बेकारो की सूची मे नाम लिखाने के लिए अन्तहीन लाइनों मे खनिक खड़े होने लगे। कोयला खानों के मालिकों ने काम के सप्ताह को घटाकर पहले पाच तथा फिर चार दिन का कर दिया। मजदूरी में भारी कटौती कर दी गई। ऐसी दशा मे अगले दिन से मजदूरी में और कटौती की सूचना असह्य हो उठी। १९ जून को वास्मेस में एक सभा आयोजित की गई। हजारों खनिको ने बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक और बेल्जियाई कम्युनिस्टों के मान्य नेता जोजेफ जैक्वेमोत और जूलियन लाहौत के भाषण सुने। कम्युनिस्टो ने हड़ताल का नेतृत्व किया। हड़ताल के लिए समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से खनिक वास्मेस से पास-पड़ोस के सभी नगरों मे चले गए। आन्दोलन ने जोर पकडा; ९ जुलाई को सम्पूर्ण बारिनज मे हड़ताल की लहर व्याप्त हो गई।

खानों के फाटकों पर खनिकों ने धरना दिया और प्रागणों में चौकन्ने खड़े रहे। धरना देनेवालों के लिए महिलाएं खाना लाती रहीं। उठ खड़े हुए गरीबो के दु.ख के प्रतीक लाल और काले झण्डों को लिये हुए प्रदर्शनकारी सड़कों से होकर गुजरते थे। क्रान्तिकारी गीत गूंजते रहते थे।

हड़ताल विफल हो गई और इसका नेतृत्व करनेवाले कम्युनिस्ट जुझारुओं को गिरफ्तार कर लिया गया तथा जेल में झोंक दिया गया। न्यायाधीशों ने हड़ताल के नेताओं को राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र करने का दोषी ठहराया। यह कम्युनिस्ट-विरोधी मुकदमा बड़े पैमाने के अत्याचारों के लिए बहाना मात्र था। बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक ब्यूरो के एकमात्र सदस्य जैक्वेमोत ही ऐसे थे, जिन्हे गिरफ्तार नही किया गया क्योंकि प्रतिक्रियावादी उन्हे उनकी ससदीय अलघनीयता से वंचित करने में असमर्थ थे; अन्य सभी सदस्यो को जेलों में झोंक दिया गया।

१९३२ मे लाहौत का संसदीय कार्य शुरू हुआ। उन्होंने संसद के मंच

में मेहनतकशों के महत्त्वपूर्ण हितों का समर्थन किया, फ़ासिस्टवाद और युद्ध के विरुद्ध सक्रिय संघर्ष का आह्वान किया और बेल्जियाई सरकार की म्यूनिक नीति का भण्डाफोड किया। संसद में रेक्सिस्टों अथवा बेल्जियाई फासिस्टों से झगड़ा करने के "अपराध" में १९३६ में उन्हें ६ महीने की जेल की सज़ा दी गई। अदालत से २५वीं बार उन्हें यह दण्ड मिला था।

इसके बाद फासिस्टवाद के विरुद्ध जनवाद का प्रथम युद्ध स्पेन में राष्ट्रीय क्रान्तिकारी युद्ध शुरू हुआ। लाहौत इससे अलग नहीं रह सके। उनके साथियों ने उन्हें स्पेन विदा किया। बेल्जियम वापस आने के बाद उन्होंने तीन स्पेनी अनाथों को गोद लिया।

१९३६ के जून में बेल्जियम में पुनः चुनाव हुए। कम्युनिस्ट पार्टी जनवादी कार्यक्रम के साथ चुनाव-संघर्ष में कूद पड़ी, जिसका मुख्य अंग था मजदूर वर्ग की संयुक्त कार्रवाई। चुनावों के बाद आम हड़ताल हुई, जिसमें मजदूरों को विजय मिली। अधिक मजदूरी और काम की बेहतर स्थितियों की मांगे मंजूर हो गईं। लाहौत भी हड़ताल के एक संगठक थे। लीएज के चुनावों में कम्युनिस्टों को बड़ी विजय प्राप्त हुई। लीएज के प्रान्तीय कौंसिल में नौ कम्युनिस्ट प्रतिनिधि चुन लिये गए (१९३२ में केवल तीन कम्युनिस्ट प्रतिनिधि थे)।

लीएज मजदूरों का नगर है। वृहत्तर लीएज की आबादी में खनिकों, धातुकारों, धमन भट्ठियों पर काम करनेवालों, रासायनिक कर्मियों, हथियार बनानेवालों और काचकर्मियों की संख्या सबसे अधिक है।

१९३६ की गरमी में, जब पड़ोसी जर्मनी में हिटलर ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी और फ्रांस में जनवादी मोर्चे को विजय प्राप्त हुई, प्रान्तीय कौंसिल में लीएज के मजदूरों को बहुमत प्राप्त हो गया था: समाजवादी और कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों की संख्या ४४ थी, जबकि प्रतिक्रियावादी जमातों के प्रतिनिधियों की संख्या ४२ थी (उदारपंथी—८, कैथोलिक—१२ और फ़ासिस्ट—२२)। फ़ासिस्ट ख़तरे की आसन्नता भाप कर कम्युनिस्टों और समाजवादियों ने अपनी शक्तियों को एकजुट करने और कौंसिल में पूर्ण दायित्व ग्रहण करने का निर्णय किया। उन्होंने समाजवादी और कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों का एक स्थायी दल बनाया, जिसने वस्तुतः नगर पर शासन किया। लाहौत इस दल की प्रेरक शक्ति थे।

कम्युनिस्टों और समाजवादियों द्वारा स्वीकृत संयुक्त कार्यक्रम में तीन मुख्य कार्यभार प्रस्तुत किये गये थे: शान्ति और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संघर्ष; फ़ासिस्टवाद और जनवाद के सभी शत्रुओं का प्रतिरोध तथा वैधानिक स्वतंत्रताओं की रक्षा और उनका विस्तार; मेहनतकश लोगों की बुनियादी मांगों की रक्षा। स्थायी दल ने मजदूरों की रहन-सहन की स्थितियों में सुधार के निमित्त प्रस्तावों के मसौदे तैयार किए, प्रान्तीय कौंसिल में उन्हें मंजूर करवाया और कार्यान्वित किया।

१९३६ की हड़ताल में विजय प्राप्त करने से मजदूरों को सवेतन छुट्टियों का अधिकार प्राप्त हुआ। चूंकि होटेल और जलपानगृह मजदूरों के लिए बहुत खर्चीले हैं, इसलिए इस अधिकार का उपयोग करना उनके लिए सदा आसान नहीं था। इसलिए लीएज प्रान्तीय कौंसिल ने एक विश्राम केन्द्र के निर्माण का निर्णय किया, जहां कोई भी अवकाश का समय व्यतीत करने के लिए कम खर्च पर कमरा और खाना तथा स्वास्थ्यप्रद खेलकूद और मनबहलाव की सुविधा प्राप्त कर सके। यह बड़ी परियोजना थी, जिस पर लाखों फ्रैंक खर्च बैठता, परन्तु इतने उत्साह के साथ इसका स्वागत किया गया कि यह जल्दी पूरी हो गई।

लीएज मे रिहायशी मकानों के निर्माण के लिए अधिक धन-राशि निर्धारित की गई। बेकारी को दूर करने के उद्देश्य से सड़कों, पुलों, जल सप्लाई प्रणालियों, स्कूलों, अस्पतालो और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण शुरू किया गया। बेकारी-भत्तों में २५ प्रतिशत की वृद्धि की गई। अशक्त खनिकों को मिलनेवाली आर्थिक सहायता बढ़ा दी गई। गरीबों की सवारी बाइसिकिल पर कर कम कर दिया गया और मोटरकार पर टैक्स बढ़ा दिया गया।

तकनीकी और चिकित्सा प्रशिक्षण स्कूलों के निर्माण और विस्तार के लिए धन-राशि की व्यवस्था की गई। तपेदिक और महिला सेहतगाहों की मरम्मत करवाई गई और उन्हे नये साज-सामान से सज्जित किया गया। अनाथालयों, संगीत महाविद्यालय, संग्रहालयों और पुस्तकालयों के लिए अधिक धन-राशि स्वीकृत की गई। प्रदर्शनिया आयोजित की गईं। छोटे और दरमियानी किसानों की हालतों मे सुधार के उद्देश्य से क़दम उठाने का निर्णय किया गया।

दिशा में विजयी आन्दोलन की गारंटी है। समाजवादी साथियो! जो बड़ा खतरा प्रस्तुत है, उससे हमारा कर्त्तव्य निर्धारित हो गया है ' एकता अथवा विनाश।" लाहौत और दूसरे नेताओं ने इस अपील पर हस्ताक्षर किए। परन्तु समाजवादियों ने इसको नामजूर कर दिया और इस प्रकार फासिस्टवाद के लिए द्वार उन्मुक्त हो गया।

लड़ाई शुरू हो गयी। बेल्जियाई प्रतिक्रियावादियों ने अपना आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। सरकार ने उन सभी सगठनों पर प्रतिवन्ध लगाने के लिए, जिनके कार्यकलाप को "राष्ट्रीय सस्थाओं का उलट-फेर" माना जा सकता था, "राष्ट्रीय सस्थाओं की रक्षा" के निमित्त एक बिल का मसौदा तैयार किया। इस नये कानून का उल्लंघन करनेवालों के विरुद्ध सर्वोच्च फ़ौजी न्यायालय द्वारा मामले की सुनवाई की व्यवस्था की गई थी। कम्युनिस्ट प्रतिनिधि लाहौत और उनके साथियो ने इस बिल का घोर विरोध किया। संसद को सम्बोधित करते हुए लाहौत ने इसके असवैधानिक स्वरूप का भण्डाफोड़ किया। उन्होंने कहा, "यह डाकुओं का कानून है। यह एकजुट होने के अधिकार और जनवादी स्वतंत्रताओं के अन्तिम अवशेषों को मिटाता है। यदि यह मंजूर हो जाता है, तो ट्रेड-यूनियनें, मजदूर पार्टी और अन्य जनवादी समूह इसके शिकार होंगे। आज कम्युनिस्टों के विरुद्ध और कल समाजवादियो तथा ट्रेड-यूनियनों के सदस्यो के विरुद्ध इसका इस्तेमाल किया जायेगा।" परन्तु समाजवादी प्रतिनिधियों के बहुमत ने इस बिल के पक्ष मे वोट दिया, जिसके आधार पर बाद में उन्हें खुद नजरबन्द शिविरों में सड़ना पड़ा।

हिटलरी दल-बादल बेल्जियम पर हमला कर घुस आये। कम्युनिस्ट पार्टी छिपकर काम करने लगी। १९४१ की मई मे लाहौत के निर्देश पर लीएज के एक लाख मजदूरों ने हड़ताल की। आक्रमणकारियों के विरुद्ध मजदूर वर्ग की वह प्रथम सामूहिक कारंवाई थी।

पार्टी ने मुक्ति-सघर्ष का नेतृत्व करने का काम लाहौत को सौपा। वह छापेमार टुकडियां गठित करते तथा उन्हें हथियारो से लैस करने के लिए तनमन से काम करते रहे, लेकिन गिरफ़्तारी के कारण यह कार्य ठप्प हो गया। २२ जून, १९४१ को गेस्टापो (नाज़ी ख़ुफिया पुलिस) ने लाहौत को पकड लिया और एक किले में इन्हे कैद कर दिया। उसके बाद

पूछताछ, यातना और दुर्व्यवहार की नौबत आयी। उनका जेलर जब चीख़ उठता कि "हम रूस को मिटा देंगे!" तो शान्ति के साथ वह उसे डपटते हुए उत्तर देते: "लाल सेना के पक्ष में न्याय है। वह निश्चय ही विजयी होगी।"

१९४१ के सितम्बर में लाहौत को जर्मनी भेज दिया गया, जहा उन्होंने न्यूनगाम्मे और बाद में माउथासन के मृत्युशिविरो मे चार साल काटे। वे भूख और यातना के चार वर्ष थे। फिर भी लाहौत के मन मे कभी भी भय और सन्देह की भावना नही पैदा हुई। वह असाधारण रूप से बहादुर और दृढ़ थे और उन्होंने कभी भी अपना मानसिक धैर्य नहीं खोया। उनके साथी उन्हे शक्ति का मूलाधार मानते थे; वे जानते थे कि वे सदैव उनकी सान्त्वना और सहायता पर भरोसा कर सकते थे।

... उन्होंने मृत्युशिविर से निकल भागने की योजना बनाई थी। सब तैयारी कर ली गई थी। लाहौत के साथी सुरक्षित बच निकले। लाहौत वहीं रह गए। पुनः उन्होने तनहाई की सजा और यातनाए भोगी। परन्तु उस व्यक्ति में अपने ध्येय के औचित्य मे विश्वास बना हुआ था, जिसे कोई भी जुल्म नहीं मिटा सकता था। मृत्युशिविर में उनके दोस्त एक पोलिश अफ़सर ने बाद में अपने अनुभव को याद करते हुए कहा: "ऐसा प्रतीत होता था मानो उनकी जेबें सूरज की गर्मी से भरी हुई थीं और वह अपने बन्दी साथियो को इस गर्मी का अंश प्रदान करते थे।"

जूलियन ने अपनी आशावादिता और प्रसन्नता का कभी भी परित्याग नही किया। वह सदैव प्रस्फुटित मुस्कान और अपनी चमकती आंखो मे सहृदयता की ज्योति के साथ अपने दोस्तों से मिला करते थे। वह केवल एक जनप्रिय नेता नही थे; वह ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें प्यार किये बिना लोग रह नही सकते थे। जिन्हें कभी भी उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन सभी ने अपने जीवन के अन्तिम समय तक उन्हे याद रखा। कोई भी उनकी आध्यात्मिक संवेदनशीलता, उनके विश्वासजन्य उत्साह, उनकी विलक्षण वक्तृत्वशक्ति और जीवन के प्रति उनके असीम प्यार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था।

हिटलरी जर्मनी के ध्वस्त हो जाने पर २२ अप्रैल, १९४५ को ही

लाहौत मृत्युशिविर से मुक्त हो पाये। सेरिंग में उनकी वापसी के अवसर पर उनके स्वागत मे विराट सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ।

१९४५ के अगस्त में लाहौत बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष चुने गए। वह ससद सदस्य की हैसियत से, जनता के प्रवक्ता के रूप में काम करते रहे।

युद्ध के पहले बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की सख्या दस हज़ार थी। युद्ध के दौरान इसके सदस्यों की संख्या काफी कम हो गई : ३,५०० कम्युनिस्टों को जेलों और नज़रबन्द शिविरो में ठूस दिया गया था ; दो हज़ार कम्युनिस्टों को मौत के घाट उतार दिया गया था। प्रत्येक पाच मे से एक कम्युनिस्ट को खतम कर दिया गया था। परन्तु कम्युनिस्टों ने न केवल अपना अस्तित्व कायम रखा, बल्कि अपने देश की मर्यादा और स्वतव्रता के संघर्ष में वे ही सर्वाधिक सक्रिय और निर्भय योद्धा थे।

युद्ध के बाद अगले पांच साल के दौरान बेल्जियाई मजदूर वर्ग ने जनवाद, रहन-सहन के स्तरों में सुधार के लिए और आक्रामक गुटों मे बेल्जियम के शामिल होने के विरुद्ध भीषण संघर्ष किया। कम्युनिस्ट इस संघर्ष की अग्रणी पांतों में थे, जिसने राजनीतिक हड़तालों की प्रबल लहर के साथ १९५० में अपने चरम-विन्दु पर पहुंचकर सारे देश को हिला दिया था।

१९४८ और १९४९ की मन्दी से पूंजीवादी देशों की अर्थव्यवस्था संकटग्रस्त हो गई। बेल्जियम में भी उत्पादन में गिरावट आ गई। अमरीकी "मार्शल योजना" के अंतर्गत पहले से ही सकुचित आन्तरिक मण्डी अमरीकी वस्तुओं से पट गई और इससे देश में आर्थिक संकट का प्रभाव अधिक तीव्र हो गया। कारखाने बन्द हो गए और बेकारी बहुत बढ़ गई। १९५० की जनवरी तक बेकारों की संख्या ३,४०,००० तक पहुंच गई थी। कीमते निरन्तर बढ़ती गईं। रोटी, मक्खन, गोश्त और मारगरीन बहुत महंगे हो गये थे। गैस, कोयला, बिजली, यातायात और किराये की दरें बहुत चढ़ गई थी।

१९४९ में बेल्जियम नाटो गुट में शामिल हो गया। फौजी व्यय में वृद्धि हो गई। सरकार ने बजट में घाटे की पूर्ति के लिए बेकारी-भत्ता और पेंशन की रकम में कटौती की और जनता पर लगे कई करों को

बढ़ा दिया।

अपने अधिकारों की रक्षा के लिए मेहनतकश लोग एकजुट हुए। उन्होंने महगाई को दृष्टि मे रखते हुए मजदूरी में वृद्धि, चालीस घण्टे का कार्य-सप्ताह लागू करने, अधिक पेंशन, बेहतर सामाजिक बीमा की व्यवस्था और सैनिक व्यय मे कटौती की मांग की।

बेल्जियाई इजारेदारियों ने देश पर अपना प्रभुत्व सुदृढ़ करने के लिए यथासंभव प्रयास किया। प्रतिक्रियावादियो ने युद्ध के दौरान हिटलर को सहायता पहुंचानेवाले तथा उसके साथ सहयोग करनेवाले नरेश लियोपोल्ड तृतीय को पुन: गद्दी पर बिठाने, देश पर फासिस्ट शासन थोपने और जन समुदाय के बढ़ते हुए प्रतिरोध को कुचलने का प्रयास किया।

युद्ध समाप्त होते ही बल्जियाई ससद ने नरेश लियोपोल्ड तृतीय को उसके वैधानिक अधिकारों से वंचित कर दिया, बिना विशेष अनुमति के उसके स्वदेश वापस आने पर रोक लगा दी और उसके भाई को राज्य का प्रतिशासक नियुक्त किया। परन्तु सत्तारूढ़ गुट ने लोकमत-संग्रह पर ज़ोर दिया।

लोकमत-सग्रह के ठीक पहले नरेश लियोपोल्ड के समर्थकों ने खुले रूप में हिंसात्मक कार्रवाइया की। उन्होंने कम्युनिस्ट और समाजवादी पार्टियों के मुख्य कार्यालयों तथा प्रगतिशील अखबारों के सम्पादकीय दफ़्तरों पर हमले किए। उनके सशस्त्र गिरोह प्रतिरोध-आन्दोलन के स्थानीय केन्द्रों को नष्ट कर देते और प्रगतिशील नेताओं की हत्याएं किया करते थे।

कारखानों, निर्माण-स्थलियों, गांवों, नगरों और कम्यूनों मे संयुक्त संघर्ष समितियां कायम हो गई। उन्होंने हड़तालों का नेतृत्व किया, धरना देनेवालों को तैनात किया, जनवादी सगठनो के मुख्य कार्यालयों की हिफाजत की। उन्होंने सभाओं और प्रदर्शनों का आयोजन किया और नरेश लियोपोल्ड तृतीय को पुनः सिहासनारूढ करने के विरुद्ध प्रचार आन्दोलन संगठित किया।

पहले लियोपोल्ड तृतीय की करनी से देश पर नाजी प्रभुत्व और वहा फ़ासिस्टवाद स्थापित हो गया था। लियोपोल्ड के सिंहासनारूढ हो जाने का भविष्य में अर्थ होता सैन्यवाद, जनवादियो के विरुद्ध प्रतिशोधमूलक कार्रवाइयां तथा बेकारी और गरीबी। मजदूर वर्ग, प्रगतिशील बुद्धिजीवियों और अभी कुछ ही समय पहले प्रतिरोध-आन्दोलन मे भाग लेनेवाले निम्न

तथा मध्यम पूंजीपति वर्ग के तबक़े ने लियोपोल्ड की फ़ासिस्ट समर्थक तानाशाही के विरुद्ध अखिल जनवादी संयुक्त मोर्चा क़ायम किया था। और लीएज संयुक्त संघर्ष समिति सर्वाधिक क्रियाशील थी।

१२ मार्च, १९५० को लोकमत-संग्रह हुआ। लियोपोल्ड तृतीय के पक्ष में ५८ प्रतिशत और उसकी वापसी के ख़िलाफ़ ४२ प्रतिशत वोट पड़े। लीएज, चार्लेरईज और वारिनज में दो-तिहाई मतदाताओं ने लियोपोल्ड के विरुद्ध वोट दिए। परन्तु अधिक पिछड़े हुए, कैथोलिक चर्च से प्रभावित मुख्य रूप से कृषक आबादी वाले फ्लेमिश प्रदेशों में नरेश के पक्ष में वोट पड़े।

लोकमत-संग्रह के बाद बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी ने सभी जनवादियों और शान्ति के समर्थकों से संघर्ष-सम्बन्धी एकता को सुदृढ़ करने और हड़ताल-आन्दोलन को फैलाने की अपील की। नरेश की वापसी के विरोध में २४ मार्च को सारे बेल्जियम में आम हड़ताल हुई। प्रदर्शनों और सभाओं में लियोपोल्ड के राजत्याग और रोज़ी तथा वेतन-वृद्धि की मांग करते हुए नारे लगाये गए। अप्रैल और मई में हड़तालें जारी रहीं। जनता के ग़ुस्से से भयभीत सरकार तत्काल नरेश को वापस बुलाने में हिचकी। ४ जुलाई को मध्यावधि चुनाव कराने का निर्णय किया गया।

इजारेदार पूंजीपति वर्ग, ज़मीन्दारों और सौदागरों के हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पादरियों तथा सत्तारूढ़ कैथोलिक पार्टी ने नरेश के पक्ष में और कम्युनिस्टों के विरुद्ध उग्र, प्रपंचपूर्ण प्रचार शुरू किया। धार्मिक भावनाओं को उभारते हुए प्रतिक्रियावादियों ने किसानों के बड़े तबक़े तथा कैथोलिक ट्रेड-यूनियनों से प्रभावित सर्वाधिक पिछड़े हुए मज़दूरों को अपने पक्ष में करने में सफलता प्राप्त कर ली। चुनावों में कैथोलिक पार्टी को तीन अधिक सीटें प्राप्त हो गईं और इस प्रकार संसद में उसका पूर्ण बहुमत सुनिश्चित हो गया।

कम्युनिस्टों ने विरोध में फ़ौरन आम हड़ताल करने पर ज़ोर दिया। समाजवादी पार्टी और बेल्जियाई आम श्रमिक संघ के नेता मौक़ा ताकते रहे।

२० जुलाई, १९५० को कैथोलिक संसद सदस्यों ने नरेश की वापसी के पक्ष में राय दी। कम्युनिस्ट, समाजवादी और उदारपंथी इसके विरोध में सदन से उठकर बाहर चले गए। २२ जुलाई को लियोपोल्ड तृतीय स्विटज़रलैण्ड से वापस आ गया। उस दिन लीएज के टाउन हाल पर शोकसूचक काला झण्डा फहराया गया। २४ जुलाई को जूलियन लाहौत को

बढ़ा दिया।

अपने अधिकारों की रक्षा के लिए मेहनतकश लोग एकजुट हुए। उन्होंने महगाई को दृष्टि मे रखते हुए मजदूरो में वृद्धि, चालीस घण्टे का कार्य-सप्ताह लागू करने, अधिक पेंशन, बेहतर सामाजिक बीमा की व्यवस्था और सैनिक व्यय मे कटौती की माग की।

बेल्जियाई इजारेदारियों ने देश पर अपना प्रभुत्व सुदृढ़ करने के लिए यथासभव प्रयास किया। प्रतिक्रियावादियों ने युद्ध के दौरान हिटलर को सहायता पहुंचानेवाले तथा उसके साथ सहयोग करनेवाले नरेश लियोपोल्ड तृतीय को पुनः गद्दी पर बिठाने, देश पर फासिस्ट शासन थोपने और जन समुदाय के बढते हुए प्रतिरोध को कुचलने का प्रयास किया।

युद्ध समाप्त होते ही बेल्जियाई संसद ने नरेश लियोपोल्ड तृतीय को उसके वैधानिक अधिकारों से वंचित कर दिया, बिना विशेष अनुमति के उसके स्वदेश वापस आने पर रोक लगा दी और उसके भाई को राज्य का प्रतिशासक नियुक्त किया। परन्तु सत्तारूढ़ गुट ने लोकमत-संग्रह पर जोर दिया।

लोकमत-संग्रह के ठीक पहले नरेश लियोपोल्ड के समर्थकों ने खुले रूप में हिंसात्मक कार्रवाइयां की। उन्होंने कम्युनिस्ट और समाजवादी पार्टियों के मुख्य कार्यालयों तथा प्रगतिशील अख़बारों के सम्पादकीय दफ़्तरों पर हमले किए। उनके सशस्त्र गिरोह प्रतिरोध-आन्दोलन के स्थानीय केन्द्रों को नष्ट कर देते और प्रगतिशील नेताओं की हत्याएं किया करते थे।

कारख़ानों, निर्माण-स्थलियों, गांवों, नगरों और कम्यूनों में संयुक्त संघर्ष समितिया कायम हो गई। उन्होंने हड़तालों का नेतृत्व किया, धरना देनेवालों को तैनात किया, जनवादी सगठनों के मुख्य कार्यालयों की हिफाजत की। उन्होंने सभाओं और प्रदर्शनों का आयोजन किया और नरेश लियोपोल्ड तृतीय को पुनः सिंहासनारूढ़ करने के विरुद्ध प्रचार आन्दोलन संगठित किया।

पहले लियोपोल्ड तृतीय की करनी से देश पर नाजी प्रभुत्व और वहां फासिस्टवाद स्थापित हो गया था। लियोपोल्ड के सिंहासनारूढ हो जाने का भविष्य मे अर्थ होता सैन्यवाद, जनवादियो के विरुद्ध प्रतिशोधमूलक कार्रवाइयां तथा बेकारी और गरीबी। मजदूर वर्ग, प्रगतिशील बुद्धिजीवियों और अभी कुछ ही समय पहले प्रतिरोध-आन्दोलन में भाग लेनेवाले निम्न

तथा मध्यम पूंजीपति वर्ग के तबके ने लियोपोल्ड की फासिस्ट समर्थक तानाशाही के विरुद्ध अखिल जनवादी संयुक्त मोर्चा कायम किया था। और लीएज संयुक्त संघर्ष समिति सर्वाधिक क्रियाशील थी।

१२ मार्च, १९५० को लोकमत-संग्रह हुआ। लियोपोल्ड तृतीय के पक्ष मे ५८ प्रतिशत और उसकी वापसी के खिलाफ ४२ प्रतिशत वोट पड़े। लीएज, चार्लेरई‌ज और वालिज मे दो-तिहाई मतदाताओं ने लियोपोल्ड के विरुद्ध वोट दिए। परन्तु अधिक पिछड़े हुए, कैथोलिक चर्च से प्रभावित मुख्य रूप से कृषक आबादी वाले फ्लेमिश प्रदेशों मे नरेश के पक्ष में वोट पड़े।

लोकमत-संग्रह के बाद बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी ने सभी जनवादियों और शान्ति के समर्थकों से संघर्ष-सम्बन्धी एकता को सुदृढ़ करने और हड़ताल-आन्दोलन को फैलाने की अपील की। नरेश की वापसी के विरोध में २४ मार्च को सारे बेल्जियम में आम हड़ताल हुई। प्रदर्शनो और सभाओं मे लियोपोल्ड के राजत्याग और रोजी तथा वेतन-वृद्धि की माग करते हुए नारे लगाये गए। अप्रैल और मई में हड़तालें जारी रहीं। जनता के गुस्से से भयभीत सरकार तत्काल नरेश को वापस बुलाने मे हिचकी। ४ जुलाई को मध्यावधि चुनाव कराने का निर्णय किया गया।

इजारेदार पूंजीपति वर्ग, जमीन्दारों और सौदागरों के हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पादरियों तथा सत्तारूढ़ कैथोलिक पार्टी ने नरेश के पक्ष में और कम्युनिस्टो के विरुद्ध उग्र, प्रपंचपूर्ण प्रचार शुरू किया। धार्मिक भावनाओं को उभारते हुए प्रतिक्रियावादियों ने किसानों के बड़े तबक़े तथा कैथोलिक ट्रेड-यूनियनों से प्रभावित सर्वाधिक पिछड़े हुए मजदूरों को अपने पक्ष में करने मे सफलता प्राप्त कर ली। चुनावों में कैथोलिक पार्टी को तीन अधिक सीटें प्राप्त हो गई और इस प्रकार संसद में उसका पूर्ण बहुमत सुनिश्चित हो गया।

कम्युनिस्टों ने विरोध मे फ़ौरन आम हड़ताल करने पर जोर दिया। समाजवादी पार्टी और बेल्जियाई आम श्रमिक संघ के नेता मौका ताकते रहे।

२० जुलाई, १९५० को कैथोलिक ससद सदस्यों ने नरेश की वापसी के पक्ष में राय दी। कम्युनिस्ट, समाजवादी और उदारपथी इसके विरोध में सदन से उठकर बाहर चले गए। २२ जुलाई को लियोपोल्ड तृतीय स्विटजरलैण्ड से वापस आ गया। उस दिन लीएज के टाउन हाल पर शोकसूचक काला झण्डा फहराया गया। २४ जुलाई को जूलियन लाहौत की

अध्यक्षता में बेल्जियाई कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक ब्यूरो की बैठक हुई। उन्होंने घोषणा की : "अब प्रश्न नरेश के राजत्याग की माग और उसे सदा के लिए देश से विदा हो जाने के लिए विवश करना है।"

सेरिंग में कम्युनिस्टों द्वारा आयोजित सभा में हज़ारों व्यक्ति उपस्थित थे जिसमें लाहौत ने जोशीला भाषण दिया। उन्होंने कहा : "यदि हम अपने देश को जोखिम में डालनेवाले भयानक खतरे से मुक्त करना चाहते है, तो हम सभी जनवादी शक्तियों की घनिष्ठतम एकता क़ायम करने में जरा भी समय नष्ट नही कर सकते।" २६ जुलाई को सयुक्त संघर्ष समिति के आह्वान पर लीएज मे नरेश-विरोधी प्रदर्शन में तीस हज़ार लोगों ने भाग लिया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने की कोशिश की और उनपर गोली-वर्षा की। अनेक व्यक्ति घायल हो गए। लीएज में घेरे की स्थिति की घोषणा कर दी गई। सशस्त्र पुलिस ने पुलों और राजपथों को घेर लिया। तोपों की खोलों को उतार दिया गया।

गृहमंत्री ने सभी सभाओं और प्रदर्शनों पर रोक लगा दी। ३० जुलाई को प्रतिबन्ध का उल्लंघन करते हुए लीएज के निकट सभा हुई। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर हो जाने का आदेश दिया। जब लोगों ने यह आदेश मानने से इनकार किया, तो पुलिस ने आसू-गैस छोड़ी और उनपर गोली-वर्षा की। चार व्यक्ति मारे गए और एक बुरी तरह घायल हो गया।

पुलिस की इस गोली-वर्षा से सारे देश में क्षोभ की भावना पैदा हो गई। ७ लाख से अधिक मजदूरों ने काम बन्द कर दिया और वे कारख़ानों तथा खानों से काम छोड़कर बाहर निकल आये। बेल्जियम के औद्योगिक ज़िलों में सत्ता वस्तुतः एकता समितियों के हाथ में थी। लीएज में सैनिक मजदूरों के पक्ष में हो गए और राजनीतिक पुलिस को सैनिकों की बैरकों को घेर लेना पड़ा।

१ अगस्त ब्रसेल्स की ओर राष्ट्रव्यापी अभियान की तिथि निश्चित की गई थी। सरकार ने सभी बड़े नगरों मे मार्शल-ला लागू कर दिया। जर्मनी से फ़ौजें बुलवा ली गई। इस अभियान को ग़ैरकानूनी घोषित कर दिया गया। परन्तु सरकार को झुकना पड़ा : इसकी तोपें और टैंक उसके काम नहीं आये। १ अगस्त को सरकार, समाजवादी पार्टी और बेल्जियाई आम श्रमिक संघ के प्रतिनिधियों ने नरेश लियोपोल्ड द्वारा अपने अधिकार राजकुमार बोदुएन को सौंप देने और राजकुमार के वयस्क होने पर

राजत्याग कर देने पर सहमति प्रकट की। व्यापक जन समुदाय इस समझौते से सतुष्ट नही हुग्रा। लोगो ने नरेश के तत्काल राजत्याग ग्रौर देश से इसके निष्कासन की माग की। शक्ति-संतुलन वामपथी गुट के पक्ष मे हो गया, जिसने ग्रब पहलकदमी की। उस परिस्थिति मे समझौता विश्वासघात के समान था। बेल्जियाई ग्राम श्रमिक संघ के नेताग्रों द्वारा हड़तालों ग्रौर प्रदर्शनो को वन्द करने की ग्रपील करने के बावजूद मज़दूरो ने ब्रसेल्स, लीएज ग्रौर ग्रन्य नगरों मे हड़तालें की। कम्युनिस्टों ने सघर्ष को जारी रखने पर जोर दिया, क्योकि यद्यपि लियोपोल्ड को गद्दी से हटा दिया गया था, परन्तु ग्रधिक मज़दूरी, ४० घटे का कार्य सप्ताह, ग्रधिक पेशन ग्रादि के बारे मे मेहनतकशों की बुनियादी मागें मंजूर नही की गई थी।

ग्रन्ततः, संसद मे बडे धूमधाम ग्रौर समारोह के साथ राजकुमार बोदुएन सिहासनारूढ हुए। प्रतिनिधियों ग्रौर दर्शको से सीटें भरी हुई थी। सदन के ग्रध्यक्ष ने राजकुमार से ग्रपने कर्त्तव्य को ग्रहण करने का ग्रनुरोध किया। उसी क्षण कोई चिल्ला उठा: "जनतंत्र जिन्दाबाद!" वह थे जूलियन लाहौत। उनकी इस कार्यवाही से लियोपोल्डपंथी वहुत नाराज हुए।

१८ ग्रगस्त, १९५० को रात को साढे नौ बजे सेरिंग के एक वहुत ही घनी ग्राबादी वाले इलाक़े मे लाहौत के घर के सामने भूरे रंग की एक कार ग्राकर खड़ी हो गई। दो युवक उस कार से वाहर ग्राये ग्रौर उन्होने लाहौत के फ़्लैट की घटी बजाई। उनकी पत्नी जेराल्दिन दरवाजे पर ग्राई। उन दोनों ने कहा, "क्या हम कामरेड लाहौत से भेंट कर सकते है? हम उनके लिए एक जरूरी ख़त लाये हैं।" लाहौत की पत्नी ने कहा, "कृपया ग्रन्दर ग्रा जाइए। वह घर पर ही है।" लाहौत खाना खा रहे थे; वह उठे ग्रौर दरवाज़े पर गए। गोलिया छूटने की दो ग्रावाज़े हुईं। विल्कुल पास से ही उन पर गोली चलाई गई ग्रौर वे उनके सिर में लगी। जब हत्यारे भागने के लिए ग्रपनी कार की ग्रोर दौड़े, तो उस समय उन्होंने दो गोलियां ग्रौर चलाईं ग्रौर लाहौत ग्रपनी पत्नी के पैरों के पास गिरकर वही ढेर हो गये।

हत्यारो का कभी कोई पता नही लगा। सन्देह मे पकड़े गए सभी रेक्सिस्ट निर्दोष घोषित कर दिये गए।

इस हत्या से सारे देश में क्षोभ की लहर व्याप्त हो गई। संसद में कम्युनिस्टों, समाजवादियों ग्रौर उदारपंथियो ने गृहमंत्री से जवाब-तलब

किया और तत्काल हत्या की जांच तथा हत्यारों को दण्डित करने पर जोर दिया।

लीएज प्रदेश के मेहनतकश लोगों ने लाहौत के शोक मे हड़ताल की घोषणा कर दी। समाजवादियों द्वारा नियंत्रित ग्राम श्रमिक संघ ने मजदूरो की पहलकदमी का समर्थन किया। अन्त्येष्ठि सस्कार के दिन चार्लेरईज़ और वारिनज के खनिकों ने हड़ताल की। श्रमिक बेल्जियम ने अपने दिवंगत बहादुर नेता को इस प्रकार अन्तिम विदाई दी ।

२२ अगस्त को लीएज में जीवन ठप्प हो गया। कारखाने की चिमनियो ने धुआं उगलना बन्द कर दिया, ट्रामों और बसो का चलना बन्द हो गया। जिस समय सेरिंग की सडकों पर शोक-मग्न लोगों की अनंत पातें दिखाई पडी, नगर मे पूर्ण शान्ति छायी हुई थी। मज़दूर और शिक्षक, खनिक और सिनेट के प्रतिनिधि, समाजवादी और कम्युनिस्ट, उदारपथी और कैथोलिक, वृद्ध और बच्चे साथ-साथ चल रहे थे। लाल झण्डों, फूलों, पुष्प-गुच्छो और हारो को लिये हुए लोगों की भीड़ देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो मनुष्यो का विशाल सागर उमड़ पडा है। लोग अपने नेता की अन्तिम यात्रा में उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। वे युद्ध के खतरे के खिलाफ शान्ति के नाम पर, हत्या और नजरबन्द शिविरों के विरुद्ध स्वतंत्रता के नाम पर, विदेशी गुलामी के विरुद्ध अपने देश की प्रतिष्ठा के नाम पर, शोषण के विरुद्ध मानवीय मर्यादा के नाम पर साथ-साथ चल रहे थे। वे दिवंगत व्यक्ति के आदेश को मन मे ग्रहण किये आगे बढ़ रहे थे: मनुष्य के कल्याण के लिए, जीवन के लिए, बच्चों के सुख के लिए मजदूरों, मेहनतकश जन समुदाय, जनवादियों की एकता को संजोये रहो।

लाहौत हमारे बीच नहीं रहे, परन्तु जिस सघर्ष के लिए उन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया, यह जारी है। १६६०–१६६१ की वृहत् आम हड़ताल के दौरान मज़दूर वर्ग ने अधिक दृढ़ता से अपनी पांतों मे एकजुटता कायम की। हड़ताल आन्दोलन का स्वरूप बदल गया। आर्थिक मांगों के लिए मजदूर आन्दोलन सरकार की सामाजिक नीति के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में परिणत हो गया। मेहनतकश जनता इजारेदारी-विरोधी आमूल सुधारों, उद्यमों में ट्रेड-यूनियनों के अधिकारों में विस्तार और राष्ट्रीयकरण की माग कर रही है। आन्दोलन फैल गया और इसने अभूतपूर्व व्यापकता ग्रहण कर ली। मजदूरों ने अपने देश के जनवादीकरण के लिए संघर्ष का

नेतृत्व किया। इंजीनियरों और तकनीशियनों, डाक्टरों और शिक्षकों, नागरिक सेवा के कर्मचारियों और किसानों की नयी टुकड़िया उनके साथ शामिल हो गई। शान्ति के संघर्ष ने सारे राष्ट्र को परिवेष्टित कर लिया। कम्युनिस्टो के प्रभाव को बल मिल रहा है।

राष्ट्र-सेनानी का निधन हो गया, लेकिन अपने वृद्ध जनों से शिक्षा प्राप्त अन्य योद्धा अब उनके रिक्त स्थान की पूर्ति करते हैं।

अजय कुमार घोष

१६२८ के नवम्बर मे लाहौर में सहायक पुलिस सुपरिनटेण्डेण्ट सैंडर्स मार डाला गया। कई महीने पश्चात, १६२६ के वसत में मजदूर विरोधी कानून पास होने के तत्काल बाद केन्द्रीय असेम्बली में बम-विस्फोट हुआ। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त घटनास्थल पर ही गिरफ़्तार कर लिये गए और उन्हें आजीवन सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया गया। उसके शीघ्र ही बाद पुलिस ने बम तैयार करने की एक फ़ैक्टरी का पता लगा लिया और कई अन्य गिरफ़्तारियां हुई। पजाब, बिहार और तत्कालीन संयुक्त प्रात (वर्तमान उत्तर प्रदेश) मे काम करनेवाले संगठन के कई नेता जेलों मे झोंक दिये गए।

१९२९ की जुलाई में उनके मामले की सुनवाई शुरू हुई और कई महीनो तक भारतीय जनता का ध्यान इसकी ओर लगा रहा।

उपनिवेशवादियो ने संगठन के नेता भगतसिंह के अलावा (जिन्हे पहले ही आजीवन सपरिश्रम कारावास दण्ड मिल चुका था) उनके १२ साथियों को दूसरे लाहौर षड्यंत्र केस के नाम से मशहूर मामले मे फंसाकर अदालत के कटघरे मे खड़ा किया था। इन बारह अभियोगियों में से एक थे बीस वर्षीय अजय कुमार घोष।

२० फरवरी, १९०९ को एक नदी के किनारे स्थित मिहिजाम नामक गांव मे डाक्टर शचीन्द्रनाथ घोष के परिवार में एक लडका पैदा हुआ। नदी के नाम पर इसका नाम अजय रखा गया। फिर परिवार कानपुर चला आया। अजय का शैशव और किशोरावस्था यही व्यतीत हुई; उनके जीवन के इस काल की और विस्तृत बातों की हमे जानकारी नही है। परन्तु हम जानते है कि पन्द्रह वर्ष की उम्र मे ही उन्होने क्रान्ति का सपना देखा था और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह संगठित करने की कोशिश करनेवाले १९१५–१९१६ के शहीदों के प्रति श्रद्धा की भावना प्रकट की थी। १९२३ मे ऐसे ही विचारों वाले युवक भगतसिंह से उनका परिचय हो गया था। उन्होंने भारत से ब्रिटिश आक्रमणकारियों को मार भगाने की आवश्यकता, जनता को जगाने और संघर्ष करने की अपनी इच्छा के बारे मे आपस मे विस्तार से बातचीत की। अजय और उनके साथियों ने एक व्यायामशाला खोली, जहां वे केवल व्यायाम में ही नही संलग्न रहे बल्कि उन्होंने अपने समर्थकों को भी भर्ती किया।

१९२६ में अजय घोष विश्वविद्यालय के रसायन-विभाग मे दाखिल होने इलाहाबाद गए। कई वर्ष बाद उन्होंने बी० एस० सी० की डिग्री प्राप्त की। १९२८ में उन्होंने उस समय हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन असोसिएशन के नेता भगतसिंह से पुनः भेंट की। यह गुप्त संगठन व्यक्तिगत और सामूहिक आतंकवादी कार्रवाइयों के ज़रिये हिन्दुस्तान को एक समाजवादी देश में परिवर्तित करने के ध्येय का समर्थन करता था। बाद में उन दिनों की बातों को याद करते हुए अजय घोष ने लिखा कि "हमें विश्वास था कि राष्ट्र को जगाने के लिए आतंकवाद – जनता के शत्रुओं के ख़िलाफ सशस्त्र कार्रवाई अपरिहार्य थी।"

१९२१–१९२२ के जन आन्दोलन के उभार के बाद जो ह्रास हुआ, उसके फलस्वरूप उसमें भाग लेनेवाले बहुतेरे लोग कुण्ठा और निराशा की भावना से ग्रस्त हो गए। राजनीतिक दृष्टि से उस समय सर्वाधिक प्रौढ़ राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग ने दोलायमानता और भीरुता प्रदर्शित की तथा स्वराज के लिए संघर्ष में अपने को अहिंसात्मक प्रतिरोध की कार्यनीति तक सीमित रखा। निर्णायक संघर्ष के इच्छुक उग्रवादी विचारों के युवक इससे संतुष्ट नहीं हुए। अजय घोष ने लिखा, "वर्तमान राष्ट्रीय नेताओं, उनकी वैधानिकता में हम अपना विश्वास खो चुके थे; भीतर से स्वराज प्राप्त करने के इनके नारे से हम ऊब गये थे। 'भय के शिकंजे' से जनता को मुक्त करना नितान्त आवश्यक था... जब सरकार के सर्वाधिक घृणास्पद अधिकारियों के विरुद्ध उपयुक्त स्थानों और उपयुक्त अवसरों पर हमारे क्रमिक प्रबल प्रहारों से स्फूर्तिशून्य शान्ति भंग हो जायेगी और जन आन्दोलन शुरू हो जायेगा, तो हम उस आन्दोलन के साथ अपने को सम्बद्ध कर लेंगे, इसकी सशस्त्र टुकड़ी बनकर काम करेंगे और इसे समाजवादी दिशा प्रदान करेंगे।" ऐसा था आतंकवादियों का कार्यक्रम और उन्होंने इसी के अनुरूप कार्य किया।

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन असोसिएशन के नेता गिरफ़्तारियों से ढीले नहीं पड़े। प्रायः इन सभी नेताओं ने अपूर्व दृढ़ता प्रकट की और मुकदमे की सुनवाई के दौरान अपने आचरण तथा अदालत में अपने बयानों से औपनिवेशिक सरकार, उसकी अदालत तथा नीति के प्रति अपनी घृणा जाहिर की। उन्होंने अपने राजनीतिक ध्येयों की पूर्ति में मुकदमे की सुनवाई का इस्तेमाल करने का पूरा प्रयास किया। उन्होंने राजबन्दियों को जेलों में अलग रखने तथा उन्हें बेहतर सुविधाएं प्रदान करने की मांग करते हुए भूख हड़ताल की घोषणा कर दी। पूरे देश पर इसका बहुत असर पड़ा। अजय घोष ने भूख हड़ताल का वर्णन इन शब्दों में किया : "दस दिन तक कोई बड़ी बात नहीं हुई। भूख बढ़ने के साथ-साथ शारीरिक कमज़ोरी बढ़ती गई। एक सप्ताह बाद कुछ लोग शैय्याग्रस्त हो गए और चूंकि मामले की सुनवाई जारी रही, इसलिए अदालत में बैठने का उनपर वास्तविक भार पड़ा... दस दिन बाद हमें बलात खिलाना शुरू किया गया। उस समय हम लोग तनहाई कोठरियों में बन्द थे..."

इन राजबन्दियों ने मुकदमे की सुनवाई समाप्त होने के पहले दो बार

और भूख हड़ताल की। अपमानजनक आदेशों को मानने से इनकार करने के फलस्वरूप पुलिस से मारपीट हुई और अदालत की कार्यवाही भी स्थगित कर दी गई। वाइसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी किया, जिसके अन्तर्गत बिना वकीलों, प्रतिपक्ष के गवाहो और यहां तक कि अदालत में अभियुक्तो की उपस्थिति के बिना ही लाहौर षड्यन्त्र केस की सुनवाई की व्यवस्था की गई थी।

१६३० के अक्तूबर मे सजा सुना दी गई। भगतसिह और दो अन्य अभियुक्तों को मौत की सजा दी गई तथा शेष को कालेपानी अथवा लम्बी अवधि का कारावास दण्ड दिया गया। सबूत के अभाव मे अजय घोष रिहा कर दिये गए।

अपने मित्रों की भवितव्यता पर वह बहुत ही दुःखी थे; वह भगतसिह और लाहौर षड्यंत्र केस के अन्य प्रतिवादियों को सदा बहुत ही स्नेह और प्रेम से याद किया करते थे।

जेल से रिहा होने के बाद अजय घोष कानपुर आ गए और वहां उन्होने ट्रेड-यूनियन के काम तथा अध्ययन मे अपना समय लगाया। इसी समय उन्होंने सरदेसाई को अपना नया दोस्त बनाया—यही वह प्रथम कम्युनिस्ट थे, जिनसे उनका परिचय हुआ। यदि पहले उन्हें संघर्ष के अपनाये गए तरीक़े के औचित्य के बारे मे कोई सशय था भी, तो अब वह समझने लगे कि केवल जन आन्दोलन के फलस्वरूप क्रान्तिकारी विद्रोह हो सकता है। यह विश्वास उनके मन में उस समय दृढ़ता से जम गया, जब पुनः गिरफ़्तार होने पर वह और सरदेसाई संयोग से जेल की एक ही कोठरी में कई सप्ताह तक एक साथ रहे।

कामरेड सरदेसाई से हुई अपनी बातचीत और मार्क्सवादी साहित्य के गंभीर अध्ययन से अजय घोष एक पक्के कम्युनिस्ट हो गए। क्रान्तिकारी-आतकवादी क्रान्तिकारी-मार्क्सवादी बन गया, उसका शेष जीवन मार्क्स और लेनिन के विचारों से प्रदीप्त रहा। १६३३ में, जेल से रिहा होने के बाद वह कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के और १६३६ मे इसके राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य चुन लिये गए।

१६३४ की जुलाई में कम्युनिस्ट पार्टी गैरकानूनी घोषित कर दी गई, और इसके नेताओं को अपनी पांतों का जुझारूपन कायम रखने के लिए उस सकटमय समय में वास्तविक कठोर श्रम करना पड़ा। एक मौक़े पर तो

अजय घोष गिरफ़्तार हो जाने से बाल बाल बचे। पार्टी-केन्द्र ने बीजापुर नगर में गिरफ़्तार किये गए एक कम्युनिस्ट के भाग निकालने की व्यवस्था करने का काम इन्हे सौंपा था। इन्होंने इस काम को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया और बिना किसी अधिक परेशानी के दोनों ट्रेन में सवार हो गए। अजय ने अपने को एक सरकारी अधिकारी और कैद से भाग निकले व्यक्ति ने अपने को उनके नौकर के रूप में प्रकट किया। हैदराबाद के निकट पुलिस के एक अधिकारी ने उनमें काफ़ी दिलचस्पी लेनी शुरू की। अजय घोष ने अपना मानसिक सतुलन नही खोया। उन्होंने आबकारी इंस्पेक्टर के रूप मे अपना परिचय दिया और इतनी अव्यग्रता तथा आत्मविश्वास से पेश आये कि पुलिस-अधिकारी के सन्देह दूर हो गए।

चौथे दशक के मध्य में कम्युनिस्ट पार्टी ने मेहनतकश लोगों के जन संगठनों में अपना व्यापक कार्य शुरू किया। भारतीय मज़दूरों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष तेज कर दिया।

१९३७ मे ६,५०,००० मज़दूरों ने हड़ताल की; कानपुर में कम्युनिस्टों के नेतृत्व मे ४० हजार सूती मिल-मजदूरो ने हड़ताल में भाग लिया।

१९३८ में जब "नेशनल फ़्रंट" नामक साप्ताहिक पत्र ने भारतीय समाज के प्रगतिशील तबक़ो में समाजवादी विचारो का प्रचार शुरू किया, तो अजय घोष इसके सम्पादकीय विभाग के एक सदस्य हो गए। इस साप्ताहिक के लिए लिखे गये उनके लेखों से प्रकट हो गया कि पार्टी को एक प्रतिभाशाली पत्रकार और मार्क्सवाद-लेनिनवाद का एक विलक्षण प्रचारक मिल गया था।

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी पुन: गुप्त रूप से काम करने को विवश हो गई और फिर महीनों गैरकानूनी परिस्थितियों के अन्तर्गत जीवन बिताना तथा काम करना पड़ा। परन्तु घोष "कम्युनिस्ट" नामक पत्र तथा पार्टी के अन्य प्रकाशनों के लिए लेख लिखते, पार्टी के काम का निर्देशन करते और दत्तचित्त होकर अध्ययन करते रहे। उनकी क्रियाशीलता तथा दृढ़ता से उनके साथी विस्मित हो जाते थे। अपनी आदतों में एक तपस्वी की भाति वह निजी आराम और वस्तुओं पर बहुत कम ध्यान देते थे और उन्हें यह सब कुछ कम महत्त्व की बातें प्रतीत होती थीं।

लाचारी की स्थिति में छिपकर रहने की यह अवधि अजय घोष के लिए बहुत कष्टदायक थी। कुछ समय बाद वह पार्टी का काम करने के लिए

उत्तर प्रदेश चले गए। १९४० मे ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने उनका पता लगा लिया और उन्हें गिरफ़्तार करके देवली नज़रबन्द शिविर में भेज दिया। वहा रहते समय राजबन्दियो के साथ होनेवाले दुर्व्यवहार के विरुद्ध उन्होंने लम्बे समय तक की भूख हड़ताल संगठित की।

अन्ततः लोकमन के दवाव के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने १९४२ में उन्हें रिहा कर दिया। दीर्घकाल तक जेल की सज़ा काटने के कारण उनका स्वास्थ्य विल्कुल खराव हो गया था। जव उनके दोस्तों को ज्ञात हुआ कि वह तपेदिक की वीमारी से ग्रस्त हो गये हैं, तो उन्होने उन्हे अस्पताल में भर्ती हो जाने के लिए राज़ी किया। परन्तु डाक्टरों की स्पष्ट आपत्ति के बावजूद कई महीने बाद वह अपना काम पुनः शुरू करने के लिए अस्पताल से वाहर आ गए।

१९४६ मे उपनिवेशवादियो ने देश के विभाजन की अपनी तैयारियों के एक अग के रूप में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच उपद्रवों को उकसाया और पंजाब में खूनी हत्याकाण्ड शुरू हो गए। पार्टी ने अजय घोष को वहां भेजा। वहां पहुंचते ही उन्होंने लोगों को यह समझाते हुए कि हत्याकाण्ड उपनिवेशवादियों की साज़िशों से हो रहे हैं, कि हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं और उन्हें एक दूसरे से घृणा करने का कोई कारण नहीं है, नगर-नगर तथा गाव-गांव गए। इसके साथ-साथ उन्होंने पंजाब के एक ही कम्युनिस्ट पार्टी संगठन में अलग-अलग पार्टी समूहों के विलयन-संबंधी काम का निदेशन किया था।

पंजाब में ही उनके निजी जीवन मे एक सुखद घटना घटी। लाहौर में ही, जिस नगर की उस समय की अन्य स्मृतियां उनके लिए अप्रिय थी, उन्होंने एक कम्युनिस्ट और महिला आन्दोलन की एक सक्रिय अभिप्रेरक लिट्टो राय से शादी की। लिट्टो जानती थी कि अजय के साथ शान्त विवाहित जीवन की आशा वह नही कर सकती। और वात ऐसी ही हुई—विवाह के कुछ ही महीने बाद उनके पति जेल में डाल दिये गए।

जेल के डाक्टर ने तसदीक किया कि सुकराती ललाटवाला लम्बा, दुवला-पतला राजबन्दी बहुत ही गम्भीर रूप से बीमार है। परन्तु बहुत अस्वस्थ हो जाने के बावजूद प्रतिदिन वह अपने सख़्त विस्तरे मे उठकर सारा दिन लिखते या पढ़ते रहते थे।

वह किस विषय पर लिखा करते थे? वह और उनके पक्ष के साथी देश मे पैदा हुई परिस्थिति से बहुत चिन्तित थे। बाहर से जो थोड़ी बहुत खबरें उन तक पहुंचती थी, उनसे वे जानते थे कि भारत के राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद पार्टी के सम्मुख प्रस्तुत नये कार्यनीतिक कार्यभार को सभी कम्युनिस्टों ने ठीक से नही समझा।

परिस्थिति जटिल थी। स्वाधीनता-आन्दोलन की बागडोर भारतीय राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के हाथ में थी। इस संघर्ष मे कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका जनता के हितों के सच्चे पोषक की भूमिका थी; इसके सदस्यों ने अपने को मुक्ति-संघर्ष के बहादुर और निस्स्वार्थ योद्धा प्रमाणित कर दिया था। परन्तु पार्टी के नेतृत्व मे मजदूर वर्ग आन्दोलन का सर्वाधिक वीरतापूर्ण सहभागी होते हुए भी इस संघर्ष का नेता नहीं था।

कम्युनिस्टों ने भारतीय क्रान्ति की तत्कालीन अवस्था मे, जिसका स्वरूप साम्राज्यवाद-विरोधी तथा सामंतवाद-विरोधी था, राष्ट्रीय पुनरुद्धार की जटिल समस्याओ के समाधान की दृष्टि से सभी देशप्रेमी शक्तियों की एकजुटता को महत्त्वपूर्ण समझा। परन्तु पार्टी के कुछ नेता इस सही कार्यनीतिक पथ से इस कारण भटक गए कि उन्होंने सोचा कि स्वाधीन भारत मे राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और उसकी पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने साम्राज्यवाद-विरोधी दृष्टिकोण का परित्याग कर दिया है और वह पूर्णतया साम्राज्यवादी शिविर में चली गई है। इस विचार के अनुरूप इन नेताओ ने १९४७ मे प्राप्त स्वाधीनता को "झूठी आजादी" बताया, लोक जनवाद के रूप में क्रान्ति की उस विशेष अवस्था की व्याख्या की और कहा कि मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय पूंजीवादी सरकार का तख़्ता उलटना है।

इस दृष्टिकोण के बारे में अजय का कहना था कि अगर पार्टी आगे बढ़ना चाहती है, तो उसे इस प्रकार के संकीर्णतावाद और दुस्साहसिकतावाद से मुक्त होना तथा अपने प्रभाव को बढा-चढ़ाकर आंकने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना पड़ेगा और सदा के लिए वास्तविक तथ्यों की जगह मार्क्सवाद-विरोधी, लेनिनवाद-विरोधी मनमाने विचारों को अपनाने की प्रवृत्ति दूर करनी होगी।

जब १९५० की जुलाई में अजय जेल से रिहा हुए, तो उनका स्वास्थ्य बहुत ही ख़राब था। उन्होंने अपने एक पत्र में अपनी अस्वस्थता का उल्लेख

करते हुए लिखा कि उन्हें सिरदर्द के साथ लगातार बुखार बना रहता है। उन्होंने कहा, "न मैं बैठ सकता हू, न लिख सकता हूं और यहा तक कि कुछ पढ भी नही सकता... डाक्टर ने इलाज कराने और काफ़ी आराम करने की सलाह दी..."

परन्तु अधिक समय तक आराम करना उनके स्वभाव के प्रतिकूल था। उन्होंने पुन. पार्टी की कार्यनीति सम्बन्धी भूलों को सुधारने और इसकी पातों को सुदृढ़ करने के संघर्ष मे अपने को झोंक दिया। एम० बी० घाटे और एस० ए० डागे के साथ भारत मे वर्गीय शक्तियों के संतुलन के बारे में मार्क्सवादी विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने राजनीतिक थीसिस तैयार की।

बीमारी और थकान की परवाह किये बिना सभाओं में भाषण देते, मजदूरो, किसानों और विद्यार्थियों से बातचीत करते हुए उन्होंने देश के एक भाग से दूसरे भाग का दौरा किया। अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता के फलस्वरूप भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की संगठनात्मक सुदृढ़ता कायम करने और इसे सही राजनीतिक पथ पर अग्रसर करने में उन्होंने प्रमुख भूमिका अदा की। वामपंथी संकीर्णतावादी झुकाव—उस समय भारत के मजदूर आन्दोलन के सम्मुख प्रस्तुत मुख्य ख़तरे—के विरुद्ध संघर्ष में उन्होंने अपने को एक प्रतिभाशाली सिद्धान्तकार और पार्टी-नेता के रूप मे सिद्ध किया, जो भारतीय वस्तुस्थिति को दृष्टि में रखते हुए मार्क्सवादी सिद्धान्त को सृजनात्मक ढंग से लागू कर सकता था।

१९५१ के अक्तूबर में अजय घोष भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के जनरल सेक्रेटरी चुने गए और अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक वे इस पद पर बने रहे।

छठें दशक के शुरू में उनके कई लेख प्रकाशित हुए: "संयुक्त जनवादी मोर्चे के लिए, लोक जनवादी सरकार के लिए संघर्ष में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी" (१९५१), "हमारी कुछ खास कमजोरियां" (१९५२), "भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के फ़ौरी कार्यभार" (१९५४), "राष्ट्रीय परिषद के निर्णयों के बारे में" (१९५५)। इन सभी लेखों मे राष्ट्र की देशभक्त शक्तियों को एकजुट करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया था। उन्होंने इस एकता के लिए सारे राष्ट्र का आह्वान किया: मज़दूरों, किमानों, बुद्धिजीवियों और देशप्रेम की भावना रखनेवाले पूंजीपतियों,

सभी जातीय समुदायों और सभी धर्मावलम्बियों, हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक देश की सम्पूर्ण जनता का आह्वान किया। ऐसी एकता उपनिवेशवाद और युद्ध के खतरे का उन्मूलन करने, घरेलू प्रतिक्रिया को हराने और प्रगतिशील सामाजिक सुधारों को कार्यान्वित करने, देश के जीवन के सभी क्षेत्रों में अमरीकी प्रभाव को फैलने से रोकने और सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के लिए व्यापक जन समुदाय की आकांक्षा पर आधारित है।

जनवादी आन्दोलन का स्तर, व्यापकता और सफलता इस बात पर निर्भर होगी कि प्रगति के ध्येय को प्राप्त करने में सक्षम व्यापक जन समुदाय और सभी वर्ग इसमें भाग लें। संयुक्त मोर्चे की प्रभावकारिता के लिए मुख्य और अपरिहार्य शर्त समाज के सर्वाधिक क्रान्तिकारी तथा सगठित सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व है।

अजय घोष मजदूर वर्ग के सर्वाधिक अविचल और जुझारू साथी किसानों के बीच पार्टी के काम को तेज करने पर लगातार ध्यान देते रहे। उन्होंने "किसान समुदाय की ओर ध्यान दो!" का नारा पार्टी को दिया।

"भारतीय पूंजीपति वर्ग के सम्बन्ध में" (१९५५) शीर्षक अपने लेख में अजय ने लिखा: "भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति-आन्दोलन के पूरे इतिहास ने साम्राज्यवाद और क्रान्ति के बीच इसकी दरमियानी हैसियत की... पुष्टि की है .. यह पूरा वर्ग स्वतंत्र पूंजीवादी विकास चाहता है।

"यह पूरा वर्ग इस पूंजीवादी विकास की योजना को इस प्रकार पूरा करना चाहता है: (क) साम्राज्यवाद की तुलना मे अपनी स्थिति को सुदृढ बनाकर, (ख) सामंतवाद पर अंकुश लगाकर, (ग) ब्रिटिश पूंजी से अपने सम्बन्धों को कायम रखकर और उसके साथ समझौता करके तथा साथ ही जमीदारों से संश्रय कायम करके, (घ) इस विकास का भार जन समुदाय पर डालकर। यही इस वर्ग की आम नीति है।"

उन्होंने कहा कि जब भारतीय पूंजीपति वर्ग सत्तारूढ है, तो इस स्थिति में अपने अधिकारों के संघर्ष मे मेहनतकश लोगों का इससे टकराव होता है। परन्तु शान्ति की रक्षा जैसे प्रश्न पर प्रगतिशील शक्तियां पूंजीपति वर्ग के साथ संयुक्त मोर्चा कायम करने पर सहमत हो सकती हैं।

अजय घोष की दृष्टि में संयुक्त कार्रवाई के लिए तैयारी का मतलब

से सम्बन्धित व्यय-भार को मेहनतकश लोगो पर थोपना चाहता है। इसलिए उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पूंजीपति वर्ग और बड़े जमींदारों के प्रमुत्व की जगह मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे मेहनतकश लोगो द्वारा सत्ता पर अधिकार कायम करने के बिना समाजवाद अकल्पनीय है। यही मार्क्सवादी धारणा सरकार के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी का रुख, इसके कार्यकलाप के जन-विरोधी प्रतिक्रियावादी पहलुओं के विरोध और इसके प्रगतिशील कार्यों के समर्थन का रुख निर्धारित करती है। जहां तक देश मे जन आन्दोलन के भावी विकास का सम्बन्ध था, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की छठी काग्रेस में इसके जनरल सेक्रेटरी ने कहा: "हमारे देश के लिए राष्ट्रीय जनवाद सही नारा है।"

पार्टी के जनरल सेक्रेटरी की हैसियत से अपने कार्यकलाप के प्रारम्भ से ही अजय घोष ने पार्टी की सगठनात्मक सुदृढ़ता और उसके सदस्यो के बीच सैद्धान्तिक काम मे सुधार को बहुत महत्त्व प्रदान किया। आजादी प्राप्त हो जाने के बाद जन समुदाय के बीच जिसने अपनी शक्ति और विदेशी जुए से मुक्ति के आनन्द का अनुभव किया, वामपंथी रुझान स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। प्रगति और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता के विचार जनता के व्यापक तबकों मे समा गये। पार्टी को जनवादी परिस्थितियों के अन्तर्गत कानूनी रीति से काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन सभी बातो से संगठनात्मक प्रश्न और भी अधिक तीव्र रूप मे सामने प्रस्तुत हो गया। अजय घोष ने कहा, "संघर्ष का रूप चाहे जो भी हो, यदि जन समुदाय का हरावल दस्ता बहुत ही केन्द्रीकृत रूप मे संगठित हो, तभी वह विजय की आशा कर सकता है।"

इसी कारण, १९५८ में अमृतसर मे हुई विशेष काग्रेस की भूमिका बहुत बड़ी थी, जिसने सगठनात्मक परिवर्तनों पर विचार करके पार्टी की नयी नियमावली स्वीकार की। संगठनात्मक परिवर्तन पार्टी के भीतर जनवाद को सुदृढ करने, इसके प्रमुख निकायों की सदस्य संख्या बढ़ाने और, सर्वोपरि, पार्टी को मजदूर वर्ग के जुझारू जन संगठन मे परिवर्तित करने की ओर लक्षित थे।

अजय घोष अक्सर इस पर ज़ोर दिया करते थे कि यदि पार्टी के सदस्य मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति निष्ठावान हों और सभी प्रकार के अवसरवाद का दृढ़ता से प्रतिरोध करें, अनुशासन को सुदृढ़ बनायें और अपनी एकता की रक्षा करे तभी उसे मजदूर वर्ग का सामूहिक, जुझारू संगठन बनाना संभव है।

अजय घोष अपने सभी व्यावहारिक और सैद्धान्तिक कार्यकलाप से एक अविचल अंतर्राष्ट्रीयतावादी के रूप में उभरकर सामने आये। उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रीय विचारों की भर्त्सना की "हम सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद की भावना और विचारों को एक सर्वाधिक मूल्यवान चीज मानते हैं, जिसे कम्युनिस्ट आन्दोलन ने मानवजाति को प्रदान किया है।" कम्युनिस्ट पार्टियों का सयुक्त ध्येय है—कम्युनिज्म की स्थापना, सयुक्त विचारधारा है—मार्क्सवाद-लेनिनवाद, सयुक्त फौरी कार्यभार है—विश्व-शान्ति, राष्ट्रों की स्वतंत्रता और समानता के लिए संघर्ष। घोष ने कहा, "मार्क्सवाद-लेनिनवाद ने सदा सिखाया है और हाल के वर्षो के अनुभव से पुनः इस बात की पुष्टि हो गई है कि कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता और सुदृढ़ता—हर देश के भीतर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर—बहुत ही महत्त्वपूर्ण कारक हैं।"

अजय घोष ने १९५७ और १९६० में मास्को में हुए बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के सम्मेलनों में भाग लिया और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वी, २१वी और २२वी कांग्रेसों मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया।

वह शुरू से ही सोवियत संघ के सच्चे दोस्त थे। [illegible] क्रांतिकारी युवाजन में व्याप्त मनोभावनाओं का वर्णन [illegible] लिखा, "अक्तूबर क्रान्ति की विजय, रूस में समाजवादी [illegible] की सुदृढ़ता और सबसे बढ़कर साम्राज्यवादी शक्तियों [illegible] संघ द्वारा .. एशियाई देशों को दी गई सहायता से... [illegible] राज्य और इसमे निहित विचारों तथा सिद्धान्तों [illegible] ध्यान आकृष्ट हुआ। जेल" (लाहौर जेल की [illegible]) "[illegible] स्वाध्याय और वाद-विवाद से सोवियत संघ [illegible] श्रद्धा [illegible] वह और गहरी हो गई और १९३० [illegible] के अवसर पर हमने सोवियत संघ की [illegible] शत्रुओ के खिलाफ सोवियत राज्य [illegible] देते हुए उसे बधाई का [illegible]

उन्होने बार-बार इस [illegible] देश भारतीय जनता के [illegible] उपनिवेशवाद की [illegible]

संघर्ष करना है, सोवियत संघ जैसे महान राज्य का साम्राज्यवाद-विरोधी रुख़ बड़े महत्त्व का है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वीं कांग्रेस में भाषण देते हुए उन्होंने कहा : "वह हर क़दम, जो सोवियत संघ को कम्युनिज़्म की ओर अग्रसर करता है, प्रतिक्रान्ति के निर्यात के लिए साम्राज्यवादी प्रयासों को विफल बनाने और जिन देशों ने विदेशी जुए को उतार फेंका है तथा अपनी अर्थव्यवस्था के नवनिर्माण की दिशा में प्रयत्नशील हैं, उन्हें सहायता और सहयोग प्रदान करने की उसकी क्षमता को भी बढ़ाता है। साथ ही कम्युनिज़्म के पथ पर सोवियत संघ की प्रगति से एशिया, अफ़्रीका और लैटिन अमरीका के देशों का राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन सुदृढ़ होता जाता है। पिछले कुछ वर्षों की घटनाओं से यह बात उल्लेखनीय रूप में प्रमाणित हो चुकी है।

"परन्तु एशिया और अफ्रीका के देशों के लिए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के मसौदे का महत्त्व केवल इसी पहलू तक सीमित नहीं है। इसका दूसरा और अधिक गहरा महत्त्व भी है।

"*एक समय का पिछड़ा हुआ रूस चार दशकों में ऐसे स्तर पर पहुंच गया*, जब विश्वास के साथ यह उद्घोषणा की जा सकती है कि सोवियत जनता की वर्तमान पीढ़ी कम्युनिस्ट व्यवस्था के अन्तर्गत जीवन व्यतीत करेगी। एशिया और अफ़्रीका के लोगों के विचारों पर इस अहम बात का गहरा प्रभाव पड़ेगा और इससे मूलभूत जनवादी सुधारों के लिए उनका संघर्ष सुदृढ़ होगा। इससे निश्चय ही वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद, समाजवाद की ओर आकृष्ट होंगे।"

अजय घोष लेनिन के निष्ठावान और पक्के अनुयायी थे। उन्होंने लिखा, "इस मूलभूत क्रान्तिकारी रूपान्तरण में किसी भी एक व्यक्ति ने उतना योगदान नहीं प्रस्तुत किया जितना लेनिन ने किया... अपनी अमर शिक्षा, अपने वृहत् संगठनात्मक और राजनीतिक कार्यकलाप से लेनिन अपने जीवन-काल में ही नये समाज के महानतम निर्माता बन गये, जिसकी उत्पत्ति के साथ मानवजाति के इतिहास के एक नये युग की शुरूआत हुई।" लेनिनवाद के प्रति निष्ठा और उस अमर शिक्षा की विशुद्धता के लिए संघर्ष को अजय घोष किसी भी सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी के अस्तित्व की अपरिहार्य शर्त मानते थे। वह सारी दुनिया के मजदूरों के नेता के रूप में ही नहीं, बल्कि एक मनुष्य के रूप में भी लेनिन के प्रति श्रद्धा की भावना

रखते थे।

अजय घोष की खुद अपनी विशेषता थी उद्देश्य के प्रति अपूर्व दृढता, भावना की अडिगता और ध्येय के लिए न्योछावार हो जाने की तत्परता। उनमे देशप्रेम की उत्कट भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। इन गुणों के कारण वह आशावादी, सहृदय और संवेदनशील व्यक्ति थे। वह साधारणतया मितभाषी और संयमी, परन्तु अपने मित्रों की मण्डली मे विनोदप्रिय भी थे, जो उन्हे एक दिलचस्प और बातचीत में निपुण व्यक्ति मानते थे। वह बडे स्वाध्यायी थे और जैसा कि उनकी पत्नी ने बताया है, "वह अत्युत्सुकतापूर्वक किताबें पढा करते थे।"

बच्चों के साथ खेलना ही घोष का सबसे बड़ा मनोरंजन था। उनकी पत्नी ने बताया, "बच्चों के बीच अजय बहुत खुश रहा करते थे, उनके बीच उनका झेंपूपन दूर हो जाता था। उनसे अनेकानेक कहानिया तथा निजी अनुभव की बाते सुनकर बहुतेरे किशोर पुलकित हो उठते थे। वह अक्सर कहा करते थे कि बच्चो के बिना जीवन सचमुच बहुत अपूर्ण है।"

* * *

१९६२ में भारत में, जहा तीसरा आम चुनाव हो रहा था, बडे राजनीतिक संघर्ष शुरू हो गए। प्रतिक्रिया खुलकर सामने आ गई थी। दक्षिण पक्ष की नयी पार्टी, स्वतंत्र पार्टी ने कम्युनिज़म-विरोधी फटे-पुराने निशान को उठा लिया था। कम्युनिस्ट पार्टी के लिए अन्ध घृणा के आधार पर हर प्रकार के प्रतिक्रियावादियों को एकता के सूत्र में आबद्ध करनेवाले गुट और समूह प्रकाश मे आए। पूजीपतियों और ज़मीन्दारों ने वोट प्राप्त करने के लिए अपनी शक्ति प्रदान करने के साथ अपार धन-राशि भी दी।

अजय घोष चुनाव संघर्ष की अवधि मे जन समुदाय के बीच पार्टी के प्रचार मे जुटे रहे। अपने ख़राब स्वास्थ्य और डाक्टरों की चेतावनी के बावजूद उन्होंने दक्षिणपंथी शक्तियों के गढ़ बिहार का दौरा किया। उनके जोशीले भाषणों को सुनने हज़ारों लोग सभाओं मे आया करते थे। सरकार-विरोधी मुख्य पार्टी के नेता के पुरजोश और प्रेरणाप्रद भाषणों को सुनते समय बिहार की जनता को यह ज्ञात नही था कि वह सख़्त बीमार है।

८ जनवरी को एक सभा में भाषण देने के बाद अजय एक बीमार दोस्त को देखने गए। अपने मित्र की हिम्मत बंधाने के लिए उन्होंने काफी

14—3040

हंसी-मज़ाक किया और विहार में पार्टी को सुदृढ़ बनाने की योजना पर विचार किया। तीन दिन बाद आधी रात को उन्हें दिल का दौरा पड़ा और दोस्त उन्हें इलाज के लिए दिल्ली के सेन उपचारगृह ले गए।

१३ जनवरी, १९६२ को तीसरे पहर ३।। बजे उनका देहावसान हो गया। भारतीय जनता के सुख के परम समर्थक, भारतीय मज़दूर वर्ग के महान नेता के जीवन का असामयिक अन्त हो गया।

भोर से ही लोगों की शोकाकुल भीड़—कारख़ानों के मज़दूर, दफ़्तरो के कर्मचारी, शिक्षक, छात्रगण और उनके साथ ही सुदूर गांवों के किसान—उस भवन की ओर जाने लगी, जो दिल्ली में कम्युनिस्ट पार्टी के संसदीय दल का कार्यालय था।

दिवंगत नेता के शव पर लाल फरहरा डाल दिया गया था और ताज़े फूलों के गुच्छो से वह ढक गया था। १० बजकर २० मिनट पर मौन शव-यात्रा शुरू हुई। शवयात्रा को श्मशान पर पहुंचने मे तीन घण्टे से अधिक समय लगा। यमुना नदी के तट पर तीसरे पहर दो बजे अजय घोष की अन्त्येष्टि-क्रिया हुई।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद ने जनता के नाम अपने सन्देश में कहा:

"कम्युनिस्ट पार्टी को अपूरणीय क्षति पहुंची है।

"अजय घोष के महान जीवन के आदर्श से प्रेरणा प्राप्त कर हमे घनिष्ठ रूप से एकजुट हो जाना चाहिए और जनता के ध्येय, कम्युनिज़्म की विजय के लिए और अधिक जोश तथा उत्साह के साथ काम करना चाहिए, जिस के लिए अजय घोष ने अपना जीवन न्योछावर कर दिया।

"हम अपने दिवंगत नेता के सम्मान मे लाल झण्डा झुकाते हैं।"

सारी दुनिया के कम्युनिस्टों को भारत के कम्युनिस्टों और मेहनतकश लोगों की भाति गहरा सदमा पहुचा। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अपने सवेदना-संदेश मे कहा: "कामरेड अजय घोष ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अविचल आधार पर सगठनात्मक और विचारधारात्मक रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को सुदृढ़ बनाने मे अपनी सारी शक्ति लगा दी। राष्ट्रीय परिषद के जनरल सेक्रेटरी की हैसियत से उनके नेतृत्व मे कम्युनिस्ट पार्टी ने महान सफलताएं प्राप्त कीं और वह देश के जीवन में एक प्रभावकारी राजनीतिक शक्ति तथा भारत के मज़दूर वर्ग और सभी प्रगतिशील ताक़तों का जुझारू हरावल दस्ता बन गई।"

रूबेन जरामिल्यो

१९६२ की मई के अन्त में मेक्सिको के मोरेलोस प्रदेश के एक थाने के सामने एक धूल-धूसरित लारी आ खडी हुई। ड्राइवर तेजी से सीधे थानेदार के आफिस में चला गया। हाफते हुए उसने उन्हे बताया कि क्सोचिकाल्को नामक इण्डियन बस्ती के ध्वंसावशेष से करीब आध किलोमीटर दूर कुवेर्नावाका जानेवाले राजमार्ग से लगे संकरे रास्ते पर चार पुरुषो और एक महिला की लाशें पड़ी हुई है। आसानी से यह शिनाख्त हो गई कि ये लाशें मेक्सिको के किसान नेता और कम्युनिस्ट रूबेन जरामिल्यो, उनकी पत्नी और पार्टी की सदस्या एपिफानिया और युवा कम्युनिस्ट

लीग के सदस्य, उनके तीन पुत्र रिकार्दो, फिलिमोन और एनरिके की हैं। टामीगन की गोलियो से उनके शरीर छलनी हो गये थे।

जमीन्दारों और स्थानीय सरदारो द्वारा किसानों के अधिकारों के लिये जुझारू योद्धाओं के विरुद्ध इस प्रकार के पैशाचिक प्रतिशोध मेक्सिको के निवासियों के लिये कोई नई बात नही थीं। काफी अर्से से मेक्सिको के ग्रामीण क्षेत्रो मे आतंक का वातावरण व्याप्त था। पूंजीवादी अख़बार इस अघोषित युद्ध का बहुत प्रचार नही करते। उन्होंने उक्त हत्याओं का कोई उल्लेख नही किया, इसी प्रकार उन्होंने प्वेब्लो और मिचोकान प्रदेशों के दो अन्य कृषक कम्युनिस्ट नेताओं—अतोनियो सिल्वा और अतोनियो हेरेरा—की हत्याओं की भी कोई चर्चा नही की। परन्तु जरामिल्यो की घृणित हत्या को छिपाना असभव था। ज़मीदारो और उनके राजनीतिक सरगनों के विरुद्ध, जो मेक्सिको की जनता के सुख के लिये लड़नेवाले अडिग योद्धा की हत्या के जिम्मेदार थे, घृणा और रोष पैदा करते हुए यह खबर दावाग्नि की भाति फैल गई। अपने देश के ठगे गये और ग़रीबी से ग्रस्त किसान समुदाय की चिरपोषित आकांक्षाओं के बहादुर समर्थक के रूप मे जरामिल्यो पूरे मेक्सिको मे विख्यात थे।

जमीन और स्वतंत्रता

रूबेन जरामिल्यो मेक्सिको प्रदेश की खनन बस्ती साक्वाल्पन मे १६०० मे पैदा हुए थे। कई साल बाद उनके मां-बाप अपनी क्रान्तिकारी परम्पराओ पर गर्व करनेवाले मेक्सिको के मध्यवर्ती प्रदेश मोरेलोस के त्लाक्विल्तेनानगो नामक गाव मे जाकर बस गये। मेक्सिको के इस छोटे पहाड़ी भाग के निवासियों की भावनाए सवप्रथम स्पेनी विजेताओं और उनके बाद स्थानीय जमीन्दारों के खिलाफ सदियों के तधर्ष में तपकर फौलादी हो गई थीं। पिछली सदी के शुरू मे मेक्सिको की स्वतत्रता और गुलामी से छुटकारा पाने के लिये संघर्ष करनेवाले राष्ट्रीय योद्धा जोसे मारिया मोरेलोस के सम्मान में इस भाग का नाम मोरेलोस पड़ गया।

मोरेलोस में ही मेक्सिको के किसान नेता एमिलयानो जापाता पैदा हुए थे और उन्होंने १६१०–१६१७ की क्रान्ति के दौरान पराक्रमपूर्ण कार्य

किये थे। क्रान्ति ने किसान युद्ध का रूप ग्रहण कर लिया था, जिसके फलस्वरूप दियास की ख़ूनी तानाशाही और जमीन्दारों, बैंकरो तथा विदेशी इजारेदारियों का घृणित शासन समाप्त हो गया। भूमिहीन और छोटे किसानों ने एक स्वेच्छाकृत सेना खडी की, अपने प्रतिभाशाली सेनानायको को तैनात किया, जिनमें एमिलयानो जापाता और फ्रासिस्को विल्या शामिल थे और उनकी कमान में सत्ता के लोभी पूजीपति वर्ग के विरुद्ध किसानों की फ़ौज ने सशस्त्र संघर्ष शुरू किया। जब रूबेन जरामिल्यो अभी किशोर ही थे तभी वह जापाता की स्वतत्रता की सेना के फरहरे तले खडे हो गये और उन्होंने किसानों के ध्येय का समर्थन किया। जापाता का नीति-मंत्र "जमीन और स्वतंत्रता" उनके भी पूरे जीवन का सिद्धान्त-वाक्य वन गया।

१९१०–१९१७ की क्रान्ति के समय मेक्सिको का मजदूर वर्ग संख्या की दृष्टि से छोटा और राजनीतिक दृष्टि से अप्रौढ था। उसकी अपनी कोई पार्टी नहीं थी और वह किसान समुदाय का नेतृत्व नही ग्रहण कर सकता था। इस प्रकार मेक्सिको की क्रान्ति के बाद राजनीतिक सत्ता पूंजीपति वर्ग के हाथ में चली गई, जिसने किसान आन्दोलन को ख़ून में डुबोने के लिये कोई कसर उठा न रखी। नये शासक खुली लड़ाई मे जिन्हें नही हरा सके, उन्हीं राष्ट्रीय योद्धाओं – जापाता और विल्या – की ज़रख़रीद ठगों ने हत्या कर दी।

यद्यपि १९१०–१९१७ की क्रान्ति के फलस्वरूप जनता का शासन नही स्थापित हुआ, परन्तु यह स्वतंत्रता, जनवाद और मुक्ति की दिशा में एक बड़े क़दम की द्योतक थी। सर्वप्रथम इससे जमीन्दारो के सामती विशेषाधिकार समाप्त हो गये, जो किसानों के साथ अब पशुओ जैसा व्यवहार नही कर सकते थे। दूसरे, पूजीवादी शासकों ने बड़े जमीन्दारों से जमीन लेकर उसे किसानों के बीच वितरित करने के लिये सुधार को लागू करने का वचन दिया। मज़दूरों को भी ट्रेड-यूनियने बनाने तथा हडताले करने का अधिकार प्राप्त हो गया।

मजदूरों और किसानों की इन उपलब्धियों को अभिव्यक्त करनेवाला नया संविधान १९१७ में लागू हुआ। इसने सार्विक मताधिकार घोषित किया और विदेशी इजारेदारियों द्वारा हडपे गये प्राकृतिक साधनों को पुनः राज्य के अधिकार में कर दिया। इस प्रकार की जनवादी उपलब्धियों मे

मजदूरों के संगठित होने के लिये अनुकूल परिस्थितियां पैदा हुईं और १६१६ मे मेक्सिको की कम्युनिस्ट पार्टी कायम की गई।

क्रान्ति के बाद हज़ारों अन्य जुझारुओं सहित रूबेन जरामिल्यो ने बन्दूक की जगह अब हल हाथ मे ले लिया। परन्तु ज्यों-ज्यों समय गुज़रता गया, त्यो-त्यों उन्होने तथा उनके साथी किसानों ने कटु अनुभव से यह समझ लिया कि जनवादी कानून तथा देश के नये शासकों द्वारा क्रांति के आदर्शों के प्रति प्रपचपूर्ण लगाव एक चीज़ है और वास्तविकता दूसरी ही बात है।

कृषि सुधार बहुत ही धीमी गति तथा अनुपयुक्त ढंग से लागू किया जा रहा था। एजिदो* प्रणाली के अन्तर्गत एकताबद्ध छोटे किसानों और खेत-मज़दूरो को जमीन के छोटे-छोटे बंजर और लगभग अकृष्य चक दिये गये। और वे इन टुकड़ों की जोताई-बोआई-करने में भी असमर्थ थे, क्योंकि बीज खरीदने के लिये उनके पास धन नही था और न तो उनके पास खेती के औजार और भारवाही पशु थे और न आबपाशी की सुविधाएं सुलभ थीं। भुखमरी से बचने के लिये उन्हे पुनः ज़मीन्दारो, जिनके विरुद्ध वे क्रान्ति में लड़ चुके थे, अथवा मुनाफ़ाख़ोरी या घूसख़ोरी के ज़रिये धन कमानेवाले नये धनिकों की चाकरी करनी पडी। और जहां लाखों किसानों को बिल्कुल कोई ज़मीन नहीं मिली, वही अनेक बड़ी ज़मीन्दारिया कायम रहीं; बहुधा एक ही ज़मीन्दार के कब्ज़े मे लाखों हेक्टर ज़मीन तक संकेद्रित थी।

किसान समुदाय मे असंतोष की भावना ज़ोर पकड़ती गई और तीसरे दशक के अन्त तथा चौथे दशक के शुरू में किसानों के विद्रोहों और खेत-मज़दूरो की हड़तालों से मेक्सिको का ग्रामीण अंचल हिल उठा। परन्तु जब राष्ट्रपति कार्देनास (१६३४–१६४०) के नेतृत्व मे प्रगतिशील सरकार सत्तारूढ़ हुई तो इसने बड़ी तत्परता के साथ कृषि सुधार को लागू करना शुरू किया। फलतः, १,८०,००,००० हेक्टर ज़मीन दस लाख किसान परिवारो में वितरित की गई। सभी पूर्ववर्ती सरकारों ने किसानो को कुल

---

*एजिदो – ग्रामीण सामुदायिक संस्था। जिन इलाकों में सम्बन्धी के पूंजीवादी स्वरूप अधिक प्रचलित थे, वहा एजिदो एक प्रकार की पूंजीवादी सहकारिता में विकसित हुई; देश के पिछड़े हुए इलाकों मे एजिदो प्रणाली ने आज तक बहुत प्राचीन लक्षणो को कायम रखा है।

जितनी जमीन दी थी, यह प्राय: उतनी जमीन के बराबर थी। परन्तु युद्ध के बाद किसानों में जमीन का वितरण प्राय: बन्द हो गया।* ज़मीन्दारों का एक नया समूह अस्तित्व में आ गया, जो मुख्यत: भूतपूर्व सरकारी अधिकारी थे और जिन्होंने बड़ी भूसम्पत्ति पर कब्जा कर लिया था। अमरीकी धनकुबेरो के ढाचे पर अपने जीवन को ढालने के लिये इनकी उत्सुकता के कारण लोग घृणा के साथ इन्हें "नाइलन भूस्वामी" कहने लगे थे।

किसान अब अदालतों के सम्मुख अपनी शिकायत प्रस्तुत करने की कोशिशें करने लगे और उन्हें आशा थी कि वे उनके हितों की रक्षा करेगी। परन्तु ज़मीन्दारों की सांठगांठ से न्यायाधीशों ने उनके विरुद्ध चलाये गये मुकदमों की सुनवाई वर्षों मुलतवी रखी।

रूबेन जरामिल्यो एक साधारण किसान थे, जिन्हे राजनीति के बारे में बहुत कम जानकारी थी। अधिकांश ग्रामीणों की भांति उन्होंने भी शासको के "क्रान्तिकारी" वादो में विश्वास किया।

परन्तु अब वह अनुभव करने लगे थे कि जब तक किसान संघर्ष नही करेंगे तब तक उन्हे ज़मीन नही प्राप्त होगी और देश के क़ानूनों की परवाह किये बिना पुराने और नये ज़मीदार उनका उत्पीड़न और शोषण करते रहेंगे। अपने साथी ग्रामीणों सहित रूबेन ने किसानों के अधिकारों के लिये संघर्ष शुरू किया। जनसाधारण के एक संगठक और नेता के रूप में उन्होंने अपनी असाधारण योग्यता प्रदर्शित की। किसान अपने हितों के लिये इस अडिग और निर्भय योद्धा में विश्वास करने और हर परिस्थिति में उनके पीछे चलने को प्रस्तुत हो गये। रूबेन जरामिल्यो द्वारा संगठित किसान प्रदर्शनों से मेक्सिको के प्रतिक्रियावादी गुस्से में आ गये। पूजीवादी अखबारों ने इस किसान नेता को बदनाम करने के लिये कोई बात उठा न रखी; उन्होंने उन्हें बिल्कुल लुटेरा बताकर उनके विरुद्ध प्रचार किया।

क्रांति के दौरान ही कृषक सेना की ज़ोरदार कार्रवाइयों की स्मृतियों से आज भी आतंकित मेक्सिको के पूंजीपतियों और ज़मीदारों ने किसान आन्दोलन के अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय और जुझारू नेताओं के विरुद्ध विद्वेष

---

*१९५८ में जब लोपेज़ मतेओस सरकार सत्तारूढ हो गई तो किसानों के बढते हुए विद्रोहों मे यह कृषि सुधारों को कुछ हद तक तेज़ी से लागू करने के लिए विवश हो गई।

प्रकट किया। रूबेन जरामिल्यो यह जानते थे कि जरखरीद हत्यारों के हाथों अथवा पुलिस के यंत्रणा-कक्षों मे दर्जनों किसान योद्धाओं की हत्याएं हो चुकी थी। अनेक बार उनके सम्मुख भी खतरा उपस्थित हो चुका था और प्राण-रक्षा के लिये उन्हें हाथ मे बन्दूक लेकर लड़ना पड़ा था।

धीरे-धीरे जरामिल्यो को यह बात समझ मे आ गई कि अलग-थलग विरोध करने के लिये बडे व्यक्तिगत त्याग जरूर अपेक्षित है, परन्तु इससे विजय नही प्राप्त होगी। वह समझ गए कि संयुक्त राजनीतिक संघर्ष के लिए किसानो को संगठित होना चाहिए। उनके अपने इलाके मोरेलोस मे किसान समुदाय के हितों की रक्षा करने में सक्षम कोई राजनीतिक पार्टी नही थी। मोरेलोस मे अधिकांश एजिदो पर राष्ट्रीय किसान संघ का नियंत्रण कायम था, जो जमीन्दारों और बड़े पूंजीपतियों की इच्छा का पालन करता था।

रूबेन जरामिल्यो ने अपने और पड़ोसी एजिदो के समर्थन से किसान समुदाय के हितों की रक्षा के लिए मोरेलोस किसान संघ संगठित किया। अधिकारियो के घोर विरोध के बावजूद अनेक ग्रामीण समुदाय इस संघ मे शामिल हो गए। प्रादेशिक गवर्नर के चुनावों के ठीक पहले, १९५२ में स्वतंत्र किसान संगठनों ने मोरेलोस किसान पार्टी क़ायम की। इसके प्रस्ताव पर जरामिल्यो ने गवर्नर का चुनाव लड़ा और वह बहुमत प्राप्त करके गवर्नर चुन लिये गए।

परन्तु सरकार ने इस इलाके में अपनी फ़ौजें भेजीं और मतदाताओं के निर्णय को ठुकराकर अपने पिछलग्गू को गवर्नर के पद पर बिठा दिया।

१९५४ मे जब खुफिया पुलिस ने उन्ही के समान किसानो के अधिकारों के लिए लड़नेवाले बहादुर योद्धा उनके भाई पोरफिरियो को गिरफ़्तार कर लिया, यंत्रणाएं दीं तथा उनकी हत्या कर दी तो जरामिल्यो को गहरी चोट पहुंची। पोरफिरियो ने हिदालगो प्रदेश मे जमीन्दारों की जमीन्दारियां जब्त करने के लिए किसानों के संघर्ष का नेतृत्व किया। शीघ्र ही दोस्तों ने रूबेन जरामिल्यो को ख़बर दी कि अधिकारी उनके नेतृत्व में चलनेवाले किसान आन्दोलन को कुचलने तथा उन्हें भी ख़त्म करने की साजिशें रच रहे हैं। उनके लिए केवल एक ही रास्ता खुला था। उन्होंने अपने साथियों को जमा किया और वह उनको साथ लेकर पहाड़ों मे चले गए। बकायदा युद्ध शुरू हो गया। जरामिल्यो के किसान योद्धाओं के विरुद्ध नियमित फ़ौजें

भेजी गईं। परन्तु अपने पथ-प्रदर्शक एमिलयानो ज़ापाता के नेतृत्व में लड़ते समय रूबेन जरामिल्यो को जो अनुभव प्राप्त हो चुका था, वह उनके बहुत काम आया। छापामार युद्ध-कौशल में दक्ष होने के कारण उन्होंने अपने किसान सैनिकों को सरकारी फौजी टुकड़ियों पर अचानक हमला करने, उन्हें ध्वस्त करने, भारी क्षति पहुंचाने, उनके हथियारों और सामान को क़ब्जे में कर लेने और नौ दो ग्यारह हो जाने की शिक्षा दी थी। स्थानीय आबादी के सहयोग से छापामार भाग निकलने में पूर्णतया सफल हो जाते थे।

१९५८ के अन्त में जब लोपेज मतेओस मेक्सिको के राष्ट्रपति हुए। उनकी सरकार ने विदेश नीति में कई प्रगतिशील क़दम उठाये। ब्राज़िल, बोलीविया, चिली और इक्वेडोर की सरकारों के साथ मेक्सिको की सरकार ने लैटिन अमरीका को परमाणु हथियारों से मुक्त क्षेत्र बनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मेक्सिको ने क्यूबा से राजनयिक सम्बन्ध भंग करने से इनकार कर दिया। मेक्सिको के प्रदेश में क्यूबाई प्रतिक्रान्तिकारियों की कार्रवाइयों पर रोक लगा दी गई। अमरीकी राज्यों के संगठन मे मेक्सिको के प्रतिनिधि ने अपने भाषण मे दूसरे देशों के आन्तरिक मामलो में अहस्तक्षेप के सिद्धान्त का समर्थन किया।

गृहनीति के सम्बन्ध मे नये राष्ट्रपति ने राजनीतिक जीवन में जनवादी परिवर्तन और स्वतंत्रतापूर्वक संगठित होने के लिए मजदूरों और किसानों के अधिकारों का सम्मान करने का वचन दिया। लोपेज़ मतेओस ने ज़मीन के लिए किसानों की मांगें पूरी करने का वादा किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति ने जरामिल्यो से भेंट करने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने बड़ी सहृदयता के साथ किसान नेता का स्वागत किया और शासन के विरुद्ध लड़ना बन्द करने का परामर्श देते हुए उन्होंने उन्हे गले भी लगा लिया। उन्होंने पूर्ण व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी देते हुए जरामिल्यो से अपने गांव वापस लौट जाने का अनुरोध किया।

स्वतंत्र किसान संगठन के लिये संघर्ष

जरामिल्यो ने अपनी सशस्त्र टुकडियों को भंग कर दिया, परन्तु किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष का परित्याग नही किया। मोरेलोस और अन्य प्रदेशों के किसान उन्हे अपना नेता मानते रहे। वे त्लाकिल्तेनानगो

गांव में उनके घर पर उनसे भेंट करने काफी दूर-दूर से ग्राया करते थे। वे उनकी सलाह और सहायता चाहते थे, जिसे जब भी संभव होता, उनकी ओर से अधिकारियों के साथ बीच-बचाव करके वह खुशी के साथ उन्हे प्रदान करते थे। १६६१ की मई मे मजदूरों के ग्रखबार «La Voc de Mexico» का एक संवाददाता उनका इंटरव्यू लेने उनके गांव त्लाकिल्तेनानगो गया, तो उसे उनके घर वापस लौटने तक दिन भर उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ी।

मेज की दूसरी ओर बैठे सजग, अधेड़ व्यक्ति की प्रारम्भिक टीकाओं से ही पत्रकार जान गया कि वह जनता के ध्येय के लिए लड़नेवाले एक अडिग योद्धा और राजनीतिक सूझबूझ के व्यक्ति है।

किसान नेता ने बड़े उत्साह के साथ क्यूबाई क्रान्ति की विजय का मूल्याकन करते हुए पत्रकार को क्यूबा के साथ भाईचारे की भावना प्रकट करने के लिए मोरेलोस मे हुई सभाओं के बारे मे बताया, जिनमें हजारों व्यक्ति शामिल हुए थे।

रूबेन ने कहा, "अनेक व्यक्तियों ने मेरे पास आकर कहा कि यदि अमरीकियों के विरुद्ध क्यूबाई क्रान्ति की रक्षा के लिए लडनेवालों की आवश्यकता हो तो वे भर्ती होने के लिए तैयार हैं। यह इसलिए कि क्यूबाई क्राति की उपलब्धि जमीन के पुनर्वितरण के हमारे क्रातिकारी नारे के अनुरूप ही थी। हमें अब तक जो कुछ मिला है, उससे अधिक क्यूबाई क्रान्ति ने क्यूबा के किसानों को प्रदान किया है। क्यूबाइयों को अपनी सरकार का समर्थन प्राप्त है, जो हमें सुलभ नही है।"

"क्या मेक्सिको में किसान क्रान्ति को पूरा करने के लिए कृषि सुधार कानून को लागू करना पर्याप्त नही होगा और क्या इससे किसानो की स्थिति में सुधार न होगा?" पत्रकार ने पूछा।

जरामिल्यो ने जोर देकर कहा, "नही, क्योंकि किसानों के बीच ज़मीन्दारों की ज़मीन के वितरण के मार्ग में दफ्तरी घिसघिस बहुत बड़ी बाधा है। किसानों को ज़मीन वापस करने की व्यवस्था को सुगम बनाने तथा इसे सुनिश्चित करने के लिए कि उन्हे पर्याप्त मात्रा में खेती योग्य चक दिये जायें, कृषि कानूनों में आमूल संशोधन की आवश्यकता है। कृषि कानूनों के अन्तर्गत एजिदो के हितों की रक्षा की गारंटी प्रदान करनी चाहिए और राजनीतिक कारणों से किसान संगठनों के मामलों मे हस्तक्षेप

करने पर प्रतिवन्ध लगाना चाहिए। किसानों को अविलम्ब अनुकूल शर्तों पर ऋण प्राप्त होना चाहिए।"

"आप क्या रास्ता सुझाते हैं?" संवाददाता ने पूछा।

"किसानों के हकों की रक्षा के लिए स्वतंत्र संगठन की स्थापना।"

इस इंटरव्यू के समय जरामिल्यो ने मोरेलोस के किसानों की दुर्दशा की विस्तार से चर्चा की और इसके साथ यह भी कहा कि अन्य कई दूसरे प्रदेशों में किसानों की दशा इससे भी अधिक खराब है। व्यापक रूप से प्रचारित पूंजीवादी कृषि सुधार लागू करने के बाद ५० साल से भी अधिक समय गुज़र चुका है, परन्तु इसके बावजूद ६,६०० बड़े ज़मीन्दारों के कब्ज़े में आज भी सबसे अधिक उपजाऊ ८,००,००,००० हेक्टर ज़मीन है, जबकि एजिदो के २० लाख परिवारों के स्वामित्व में आधी ही है और सो भी इसमें केवल ८० लाख हेक्टर खेती योग्य है और करीब ३० लाख किसानों के पास बिल्कुल ज़मीन नहीं है।

सातवे दशक के शुरू में ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ग संघर्ष चरम सीमा पर पहुंच गया। अनेक इलाकों मे किसानों के विद्रोह इतने भीषण रूप मे फूट पड़े कि इन्हें कुचलने के लिए सरकार को फौजों, टैंकों और विमानों का प्रयोग करना पड़ा। ग्रामीण सर्वहारा ने राजधानी तक जाने के लिए भूखों के जुलूस संगठित किए। सरकारी राष्ट्रीय किसान संघ से असम्बद्ध नया किसान संगठन कायम करने का आन्दोलन बहुत तेज़ी से विकसित हुआ। इस आन्दोलन में पूर्णतया संलग्न रूबेन जरामिल्यो नये सगठन की स्थापना के लिए किसानो की कांग्रेस आयोजित करने की तैयारी मे बहुत ही व्यस्त थे।

अपने दीर्घकाल के अनुभव से जरामिल्यो को पक्का विश्वास हो गया था कि अलग-थलग सघर्ष करने से किसान ज़मीन्दारों, स्थानीय सरदारों, बैंकों के अधिकारियों और सट्टेबाज़ों के शोषण से मुक्त नही होंगे। उन्होंने यह महसूस कर लिया कि मज़दूर वर्ग के नेतृत्व में मेहनतकशों के सभी तबकों के एकजुट होने पर ही यह ध्येय पूरा हो सकता है।

१९५२ मे पहली बार जरामिल्यो ने मेक्सिको की कम्युनिस्ट पार्टी से सम्पर्क स्थापित किया था और उसके बाद से वह उसके साथ घनिष्ठ सहयोग कायम रखते हुए अपना काम करते रहे। १९६१ में उन्होने कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने का महत्वपूर्ण निर्णय किया। मोरेलोस

प्रदेश में पार्टी की कोई शाखा न होने के कारण रूबेन जरामिल्यो वहां इसे गठित करने की कोशिश करने लगे। «La Voc de Mexico» ने लिखा, "अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में जरामिल्यो ने अपने को केवल किसानों के संघर्ष के ठोस रूपों को निर्धारित करने तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें यह समझाते रहे कि समाजवादी समाज की स्थापना से ही वे पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।"

मेक्सिको में अधिकांश लोग इसे जानते हैं कि अन्य प्रदेशों की अपेक्षा मोरेलोस में कृषि सुधार को प्रभावकारी रूप में लागू करने का कारण यह था कि वहां का किसान समुदाय अधिक जुझारू था, उसे जरामिल्यो जैसा नेता सुलभ था। इस प्रदेश के किसानों के बीच अधिकांश जमींदारियां वितरित की गई। इसके बावजूद मोरेलोस के आधे किसान भूमिहीन बने रहे। इसके प्रतिकूल अधिकारी चाहे जो कुछ कहें, मोरेलोस में अभी भी बड़ी-बड़ी जमींदारियां हैं, यद्यपि एक अथवा दूसरे रूप में उनपर छद्मावरण डाल दिया गया है। मिचापा, एल-गुवारिन और हुआक्सिन्तलान जैसे जिलों में जागीरों के अन्तर्गत कुल २७,००० हेक्टर जमीन है। १६२२ में और पुनः १६२६ में सरकार ने आज्ञा दी कि इन जागीरों को गांव की एजिदो के हवाले कर दिया जाये। परन्तु किसानों को वे नहीं मिलीं। वे प्रभावकारी और बेईमान राजनीतिज्ञों तथा धनिकों के गिरोह के हाथ लग गई, जिन्होंने स्थानीय अधिकारियों की सांठगांठ से गांव के मुखियों को इस आशय की दस्तावेज़ दे देने के लिए घूस दीं कि ये जमीनें एजिदो के हवाले कर दी गई हैं। कई साल तक किसानों ने इन जमीनों को पुनः प्राप्त करने की कोशिशें कीं, जो न्यायतः उन्हीं की थी, परन्तु स्थानीय सरदार नहीं झुके। अन्ततः किसानों का धैर्य जाता रहा।

१६६१ की फरवरी में जरामिल्यो ने किसानों के विद्रोह का नेतृत्व किया और तीन हज़ार किसानों ने मिचापा के खेतों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसके पश्चात जरामिल्यो कृषि विभाग (कृषि सुधार लागू करने के सरकारी दफ़्तर) के निदेशक से मिलने राजधानी गए। उन्होंने मिचापा, एल-गुवारिन और हुआक्सिन्तलान में पांच हज़ार भूमिहीन किसानों को नई एजिदो को कायम करने के लिए अनुमति प्रदान करने की मांग की। विभाग इसे अस्वीकार करने के लिए नियमानुकूल कारण नहीं प्रस्तुत कर सकता था। इसके निर्देशक रोबेर्तो बारिओस ने इस शर्त के साथ इस मांग को स्वीकार कर

लिया कि किसान क़ानून की सीमा के अन्दर रहें और सरकारी तौर पर उनके कब्ज़े मे कर देने तक वे ज़मीनों को खाली कर दें। किसानों ने इस वादे पर विश्वास करके ज़मीन ख़ाली कर दी।

परन्तु महीने पर महीने गुज़रते गए और कुछ नही किया गया। १९६२ में भी स्थानीय अधिकारियो ने साधिकार कहा कि विभाग से उन्हे किसानों को ज़मीन सौंप देने की हिदायत नही मिली है। इस प्रतीक्षा से आजिज आ जाने के बाद १९६२ के प्रारम्भ में पांच हज़ार किसानों ने उस ज़मीन को अपने क़ब्ज़े में ले लिया, जो गैरक़ानूनी रीति से उनसे ले ली गई थी और वे उस पर अपने लिए घर बनाने लगे। क्रोधित स्थानीय सरदार और ज़मीन्दार अपने संरक्षक, प्रदेश के गवर्नर, कर्नल अवेलार के पास पहुंचे। उसके आदेश से किसानों को अपनी ज़मीन से जबरन बेदखल कर दिया गया और उनके नव-निर्मित घर फूक दिये गए। इसके साथ ही ज़मीन्दारों ने यह झूठी अफवाह उड़ा दी कि जरामिल्यो ने "पुनः हथियार उठा लिया है" और उसकी गिरफ़्तारी का वारंट जारी हो गया है। बहादुर किसान नेता को पुन. छिप जाना पड़ा। अपने किसान साथियों को मुसीबत में छोड़ देने के लिए अनिच्छुक, उन्होंने राष्ट्रपति से मिलने और किसानों की मांगों तथा उनके अपूर्ण वादों की याद दिलाने का निर्णय किया। एक रोज, जिस समय मेक्सिको नगर के उपान्त में लोपेज़ मतेओस आनेवाले थे, रूबेन अपनी पत्नी सहित राजधानी गए। किन्तु राष्ट्रपति इतनी बड़ी संख्या मे पुलिस के गुप्तचरों से घिरे हुए थे कि रूबेन उनके निकट नही पहुंच सके। सौभाग्य से एपिफ़ानिया उन्हें नत्थी की हुई एक टीप के साथ फूलों का गुच्छा भेट कर सकने में सफल हो गईं। टीप में किसानों की मागों का उल्लेख किया गया था।

जमीन की जगह गोली

कई महीने और गुजर गए, परन्तु स्थानीय अधिकारियो ने फिर भी किसानों की मागें पूरी करने की कोई इच्छा प्रकट नही की। इसके विपरीत, रूबेन के नेतृत्व मे किसानों के साहसपूर्ण प्रतिरोध से वे अधिक चिढ़ गये।

स्थानीय प्रतिक्रियावादियों द्वारा रूबेन जरामिल्यो को मार डालने की

खुली धमकी देने के कारण वह अब अपने घर पर नहीं रह सके। १३ फरवरी, १९६२ को मोरेलोस के फौजी क्षेत्र का कमाडर जनरल पास्क्वाल कार्नेजो ब्रुन सशस्त्र रक्षक-दल के साथ मिचापा पहुंचा और यह घोषणा की कि वह जरामिल्यो से बातचीत करना चाहता है। यह बताने पर कि रूबेन कहीं बाहर गये हैं, जनरल ने चिल्लाकर कहा, "यह तो बहुत बुरा हुआ! यदि वह मौजूद होता, तो हम उसका काम तमाम कर देते!"

अपनी पत्नी को खेती के काम मे सहायता पहुंचाने के लिए रूबेन कभी-कभी छिपकर घर आ जाते थे। २३ मई को एक भेदिये ने घर पर उनकी उपस्थिति की सूचना पहुंचा दी। कुछ घंटों के बाद ही फौजी लारिया और जीपें उनके घर के सामने आकर खड़ी हो गई। सैनिकों और जासूसों ने रूबेन, उनकी पत्नी एपिफानिया और उनके बेटों को पकड़ लिया और घसीटकर उन्हे मोटरगाड़ी में झोंक दिया, और वे वहां से तुरंत रवाना हो गये। कुछ ही घण्टों के भीतर सड़क पर उनकी लाशें पाई गईं। निस्सन्देह, मेक्सिको के पूरे इतिहास में उनकी हत्या एक सबसे पैशाचिक अपराध है।

«La Voc de Mexico» ने अपने अग्रलेख में लिखा, "मेक्सिको की कम्युनिस्ट पार्टी का झण्डा शोक में झुका दिया गया है। युद्ध की प्रचण्ड ज्वाला मे एक और सैनिक खेत रहा। कम्युनिस्ट पार्टी मेक्सिको की जनता के प्रति सत्यनिष्ठा के साथ जिन आदर्शों के लिए रूबेन जरामिल्यो लड़े और शहीद हो गए उनकी विजयपूर्ण परिणति तक संघर्ष करते रहने की शपथ ग्रहण करती है।"

यद्यपि संगठनों और प्रमुख राजनीतिक एवं सार्वजनिक नेताओं ने जरामिल्यो की हत्या की जांच करने की माग की, परन्तु इस हत्या के एक भी अभियोगी को अदालत के सम्मुख पेश नही किया गया। वास्तविकता तो यह थी कि हत्यारों के गिरोह का नेतृत्व करनेवाले कप्तान जोज़े मार्तिनेज़ को ऊंचे पद पर तरक्की दे दी गई।

जरामिल्यो को रास्ते से हटा देने को जो इच्छुक थे, उन्होंने क्यों इतनी जल्दबाजी की, इसके निश्चित कारणों को जनवादी अखबारों ने प्रकट किया। स्वतंत्र किसान संगठन बनाने के व्यापक आन्दोलन की दिशा मे जनता के सुख के लिए संघर्ष करनेवाले अडिग और सत्यनिष्ठ योद्धा जरामिल्यो प्रतिक्रियावादियों के लिए बहुत ही खतरनाक नेता होते जा रहे

थे। अन्य धनवादी शक्तियों को जरामिल्यो के साथ मिलकर उनके नारों से राष्ट्रीय किसान संघ के जरिये किसान समुदाय पर [illegible] गुट के नियंत्रण के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया था।

इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी थे। जरामिल्यो की हत्या के लिए वे हल्के भी जिम्मेदार थे, जिनका माली लाभ दांव पर लगा हुआ था।

«Politica» नामक पत्रिका के अनुसार मेक्सिको के जलसाधन मंत्रालय ने मालवो-अमाकूजाक और सन-जेरोनिमो नदियों की घाटी में बड़े पैमाने की सिंचाई परियोजना शुरू करने की योजना तैयार की थी। इसके पूरा होने पर एल-गुवारिन और मिचापा की जमीन खेती योग्य हो जाती और उसकी क़ीमत बहुत बढ़ जाती। जब कृषि विभाग के निदेशक रोबेर्तो बारियोस ने जरामिल्यो को इन इलाकों में एजिदो संगठित करने की अनुमति दी थी, तो उन्हें इस परियोजना के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसकी सूचना मिलने पर वह जैसे चीख़ उठा: "मुझे क्या मालूम था कि हम इन लोगों को सचमुच सोने की खान ही देने जा रहे थे। ज़रा सोचिए तो उन्हें कितनी राजनीतिक शक्ति प्राप्त हो जाती!"

खेती योग्य हो जाने पर ४० करोड़ पेसो मूल्य की हो जानेवाली इन जमीनों पर क़ब्ज़ा करने के लिए अनेक लोभी हाथ उधर बढ़े। किसी प्रभावशाली व्यक्ति ने "जरामिल्यो से निपट लेने तक" इस परियोजना को स्थगित करने के लिए जलसाधन मंत्रालय को विवश किया।

घृणित हत्यारे अपना नृशंस कार्य कर बैठे। परन्तु जिनका इस ख़ूनी काण्ड में हाथ था, वे इस हत्या के नतीजों पर अधिक संतोष न कर सके।

जरामिल्यो की हत्या के कारण मेक्सिको के किसानों का विशाल समुदाय क्षुभित हो उठा और उनके गुस्से की कोई सीमा नहीं रही। यद्यपि त्लाकिल्तेनानगो जानेवाले सभी रास्तों को फ़ौज ने काट दिया था, परन्तु अपने नेता को अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने हज़ारों किसान वहां पहुंच गए, जिनकी लाश जापाता के आलीशान झण्डे से ढकी हुई थी। मोरेलोस और अन्य प्रदेशों के किसानों ने कहा, "बस, हो चुका! हम अपने अधिकारों को पैरों तले रौंदने और अपने नेताओं की हत्या नहीं होने देंगे!" मेक्सिको के सम्पूर्ण किसान समुदाय ने जरामिल्यो के नारे "किसानो, संगठित हो जाओ!" को अपना लिया। उनकी मृत्यु के बाद एक गाना

के भीतर ही, स्वतंत्र किसान संगठन खड़ा करने का जो प्रयास उन्होंने शुरू किया था, वह फलीभूत हो गया।

१९६३ की जनवरी के अन्त मे मेक्सिको में हुई कांग्रेस में स्वतंत्र किसान सगठन क़ायम हो गया, जिसके दस लाख सदस्य थे। इस नये जुझारू किसान सगठन का मुख्य उद्देश्य बुनियादी कृषि सुधार का प्रभावकारी कार्यान्वियन, ग्रामीण और शहरी मेहनतकश लोगों की एकजुटता तथा जनवाद और शान्ति के लिए सघर्ष करना था।

नीकोस बेलोयानिस

यूनान का इतिहास वीरता के विलक्षण उदाहरणों से भरा पड़ा है; उसके निष्ठावान सपूतों और सपुत्रियों ने अपने राष्ट्र की मर्यादा और सम्मान को बढ़ाया है।

स्वतंत्रताप्रेमी राष्ट्र के सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधियों, यूनान के कम्युनिस्टों ने यूनानियों के सुखद भविष्य के संघर्ष के शानदार इतिहास में सर्वाधिक प्रेरणाप्रद पृष्ठों का प्रणयन किया।

यूनान के शासकीय तत्त्व यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी को देशप्रेम की भावना से शून्य और यहा तक कि जासूसी संगठन के रूप में चित्रित करने का

घृणित प्रयास करते हैं। लेकिन देश के साधारण स्त्री-पुरुषों का मत इससे भिन्न है, जो यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी से बहुत ही गहरे बन्धनों से जुड़े हुए हैं। वे जानते हैं कि कम्युनिस्टों ने यूनानी मेहनतकश लोगों के लिए सुखी, शान्तिपूर्ण जीवन की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए कोई प्रयास उठा नही रखा है, यहां तक कि अपने जीवन को भी न्योछावर कर दिया है। वे जानते हैं कि उस महान ध्येय के लिए कम्युनिस्टों ने कितने बड़े त्याग किये हैं। जनता के कल्याण के लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले वीरों के प्रति वे बहुत ही गहरी श्रद्धा और सम्मान प्रकट करते हैं।

यूनानी जनता और यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के क्रान्तिकारी संघर्ष के शानदार इतिहास मे उत्कट क्रान्तिकारी और अपनी जनता के सुख और समृद्धि के प्रबल पोषक नीकोस बेलोयानिस का नाम सितारे की भांति जगमगाता है।

बेलोयानिस कौन थे? सैंतीस साल की उम्र में ही समाप्त हो जानेवाली उनकी जीवन-कथा क्या है? क्यों उनकी हत्या की गई?

जीवन-यात्रा की शुरूआत

पेलोपोनेसस के अमालियस नामक स्थान में एक शिल्पकार के परिवार मे २२ दिसम्बर, १९१५ को नीकोस बेलोयानिस का जन्म हुआ था।

उनके बचपन और किशोरावस्था का समय विख्यात पुरातन नगर ओलिम्पिया के निकट व्यतीत हुआ, जहां से ओलिम्पिक खेल शुरू हुए थे।

उन्होंने अमालियस के प्राइमरी स्कूल में शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद १९३२ मे हाई स्कूल की शिक्षा पूरी की।

उत्सुक और जिज्ञासु प्रवृत्ति के होने के कारण, वह युवावस्था मे ही प्रगतिशील विचारों मे दिलचस्पी लेने लगे। तीव्र इच्छा के साथ वह अध्ययन किया करते थे और अपने सहपाठियों के साथ अक्सर समाजवाद की समस्याओं पर विचार-विनिमय किया करते थे। उन्होंने छात्रों की दो हड़तालों मे सक्रिय भाग लिया।

१९३४ मे १९ वर्ष की अवस्था में उन्होंने एथेन्स विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और उसी साल वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। उस

के वाद से उनका जीवन पार्टी और जन कल्याण के लिए इसके संघर्ष के साथ सम्बद्ध रहा।

अठारह साल वाद, जब उन्हें मौत की सजा दे दी गई थी, तो अपनी तनहाई की कालकोठरी से उन्होंने लिखा: "जब मैं सत्रह साल का था, तभी मैंने समाजवाद के विचारों को अपना सिद्धान्त बना लिया था। उसके बाद से, इन बीस वर्षों मे मैंने जनवाद, अपने देश की स्वतन्त्रता और समृद्धि के लिए अपनी सारी शक्ति समर्पित कर दी है। इन्हीं आदर्शों के लिए, जो मेरे भी आदर्श हैं, प्रतिक्रियावादियों ने मुझे विश्वविद्यालय से निष्कासित और निर्वासित कर दिया था। मेताक्सस के शासन-काल मे मुझे जेल की लम्बी सजा काटनी पड़ी। मैंने ख़ुशहाली का जीवन अपनाने की बात छोड़ दी, जिसे मैं आसानी से अपना सकता था और अत्याचारों, कठिनाइयों तथा कष्टों के जीवन को बेहतर समझा।"

१६३५ मे वैलोयानिस अमालियस वापस आये और वहा पार्टी सगठन के सेक्रेटरी चुने गये।

नगर में शुरू हुई हड़तालों और नागरिक अधिकारों तथा मजदूरो की मांगों के लिए सार्वजनिक आन्दोलन को व्यापक बनाने में उनका प्रत्यक्ष हाथ था। युवा कम्युनिस्ट के स्फूर्तिदायक कार्यकलाप से जन समुदाय मे पार्टी के प्रभाव को सुदृढ़ करने तथा उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने मे बड़ी सहायता मिली।

१६३६ के मार्च में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और एक साल के लिए एक द्वीप पर निर्वासित किया गया। कुछ समय बाद यानी उसी साल की मई में अमालियस मे हड़तालों को संगठित करने के "अपराध" में उन्हे दो साल का कारावास दण्ड दिया गया। इसके साथ हीं उन पर विश्वविद्यालय में कभी भी अपना अध्ययन जारी रखने पर रोक लगा दी गई।

किन्तु इस सजा के विरुद्ध अपील की गई और उसी साल जून के अंत में वह अमालियस वापस लौट आये और फिर से पार्टी के सक्रिय काम में जुट गये।

उस समय कम्युनिस्टों के नेतृत्व में प्रगतिशील शक्तियां देश की स्वतन्त्रता, जनता के बुनियादी अधिकारो और शान्ति कायम रखने के लिए सुदृढ़ संघर्ष चला रही थी। हड़ताल आन्दोलन तथा मेहनतकश जनसाधारण की अन्य सरगर्मियों को संगठित करने, फ़ासिस्ट खतरे, युद्ध और प्रतिक्रियावादी

शासक तबकों की जन-विरोधी नीतियों का प्रतिरोध करने के लिए प्रगतिशील ताक़तो को सजग करने और जुटाने मे कम्युनिस्टों को काफ़ी सफलताए प्राप्त हुई।

इस बढ़ते हुए जनवादी आन्दोलन से देश के शासक आतंकित हो गए। ४ अगस्त, १६३६ को हुए फ़ासिस्ट विद्रोह के फलस्वरूप घोर प्रतिक्रियावादी और हिटलर के प्रशंसक जनरल मेताक्सस के नेतृत्व में देश में फौजी तानाशाही क़ायम हो गई।

मेताक्सस ने देश में घेरे की स्थिति की घोषणा कर दी, संसद स्थगित कर दी, जनवादी पार्टियों और वामपथी ट्रेड-यूनियनों को भंग कर दिया, प्रगतिशील अख़बारों पर रोक लगायी और हज़ारों फासिस्ट-विरोधियो तथा कम्युनिस्टों को बन्दी बना लिया अथवा निर्वासित कर दिया।

मेताक्सस के असाधारण कानून नं० ३७५ के अन्तर्गत शान्ति-काल मे भी फ़ौजी अदालत द्वारा नागरिकों के विरुद्ध मामले की सुनवाई और राजनीतिक विचारों के लिए मृत्युदण्ड देना संभव हो गया।

इस काले कानून के अन्तर्गत अनेक कम्युनिस्टो और जनवादियों को फांसी अथवा आजीवन कारावास की सजा दी गई। जंगली क़ानून के अनुसार यूनानी प्रतिरोध आन्दोलन के सैंकड़ो योद्धाओं को जेलों मे झोंक दिया गया।

यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी ने सर्वथा गुप्त परिस्थितियो मे फासिस्टवाद और युद्ध के बढ़ते हुए खतरे के विरुद्ध देश की सच्ची आज़ादी के लिए संघर्ष जारी रखा।

उस समय नीकोस बेलोयानिस पात्रस में पहले यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थानीय शाखा में और उसके बाद पार्टी के फौजी संगठन के सेक्रेटरी के रूप मे पार्टी के काम मे संलग्न थे, तभी १६३६ के दिसम्बर मे वह पुनः गिरफ़्तार कर लिये गए। मेताक्सस के नृशंस सैनिकों ने उन्हें मारा-पीटा और शारीरिक यंत्रणाएं पहुंचाईं, परन्तु उनसे कुछ भी स्वीकार कराने मे असफल रहे। बेलोयानिस ने अपने साथियों के नाम और ठौर-ठिकाने गुप्त रखे और जिस फ़ौजी संगठन का उन्होंने नेतृत्व किया था, वह काम करता रहा। चूंकि किसी बड़े मामले के लिए उनके विरुद्ध पर्याप्त सबूत जमा न हो सके, इसलिए तीन महीने की जेल की सज़ा और छः महीने का निर्वासन-दण्ड देकर पुलिस को उन्हें रिहा कर देना पड़ा।

१९३७ के जून में बेलोयानिस अपनी नज़रबन्दी के स्थान से भागकर पात्रस पहुंच गए। उन्होंने कुछ समय तक पार्टी की क्षेत्रीय समिति और फिर पात्रस की नगर समिति के सेक्रेटरी के रूप में काम किया।

मैं कम्युनिस्ट हूं

१९३८ की मई में बेलोयानिस तीसरी बार गिरफ्तार कर लिये गए। वह फिर जेल से निकल भागे, परन्तु मेताक्सस के जासूसों ने पुनः उन्हें बन्दी बना लिया। उनके विरुद्ध मामले की सुनवाई शुरू हुई।

बेलोयानिस के वकील ने न्यायालय मे प्रतिवादी की युवावस्था पर अपनी दलील आधारित की: युवक ने यह नही महसूस किया कि वह क्या कर रहा है, "दूसरों ने बहकाकर उसे इस काम में लगा रखा था..." आदि, आदि। परन्तु बेलोयानिस ने इस तर्क का त्याग करके साफ-साफ कहा कि वह कम्युनिस्ट हैं और सदैव अपने कम्युनिस्ट विचारों का समर्थन करते रहेगे।

उन्हें पांच साल की कैद और दो साल का निर्वासन-दण्ड मिला। इस बार उन्हे आइगिना द्वीप की एक ऐसी जेल मे कैद किया गया, जहां अन्य सैंकड़ों दण्डित कम्युनिस्ट अपनी सज़ा काट रहे थे। जेल में जो साथी उन्हे जानते थे, उन्होंने उनकी आशावादिता, दृढता और आत्मसंयम की सराहना की। वह सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे।

जेल मे सज़ा काटते समय बेलोयानिस के हाथ में रूसी भाषा में प्रकाशित इंजील की एक प्रति पड़ गई। एक साथी राजबन्दी ने, जिसे रूसी भाषा का थोड़ा-सा ज्ञान था, उन्हें रूसी वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त करने मे सहायता पहुंचाई। अपने पहरेदारों की ग़ैर-जानकारी मे, जिन्होंने भोलेपन में यह समझ लिया कि उन्होंने "धर्म को अपना लिया है", वह रूसी भाषा के अध्ययन में संलग्न रहे। केवल इंजील के सहारे बडे अध्यवसाय और धैर्य के साथ उन्होने उस देश की भाषा का ज्ञान प्राप्त किया, जिसे वह प्रेम करते थे और सम्पूर्ण मानवजाति की भावी आशा के रूप मे जिसकी सराहना किया करते थे।

शासक तबकों की जन-विरोधी नीतियों का प्रतिरोध करने के लिए प्रगतिशील ताक़तों को सजग करने और जुटाने में कम्युनिस्टों को काफ़ी सफलताए प्राप्त हुईं।

इस बढ़ते हुए जनवादी आन्दोलन से देश के शासक आतंकित हो गए। ४ अगस्त, १९३६ को हुए फ़ासिस्ट विद्रोह के फलस्वरूप घोर प्रतिक्रियावादी और हिटलर के प्रशसक जनरल मेताक्सस के नेतृत्व में देश में फ़ौजी तानाशाही कायम हो गई।

मेताक्सस ने देश में घेरे की स्थिति की घोषणा कर दी, संसद स्थगित कर दी, जनवादी पार्टियों और वामपंथी ट्रेड-यूनियनों को भंग कर दिया, प्रगतिशील अखबारों पर रोक लगायी और हज़ारों फ़ासिस्ट-विरोधियों तथा कम्युनिस्टों को बन्दी बना लिया अथवा निर्वासित कर दिया।

मेताक्सस के असाधारण क़ानून नं० ३७५ के अन्तर्गत शान्ति-काल में भी फौजी अदालत द्वारा नागरिकों के विरुद्ध मामले की सुनवाई और राजनीतिक विचारो के लिए मृत्युदण्ड देना संभव हो गया।

इस काले क़ानून के अन्तर्गत अनेक कम्युनिस्टों और जनवादियों को फासी अथवा आजीवन कारावास की सजा दी गई। जंगली कानून के अनुसार यूनानी प्रतिरोध आन्दोलन के सैकड़ों योद्धाओं को जेलों में झोंक दिया गया।

यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी ने सर्वथा गुप्त परिस्थितियों में फ़ासिस्टवाद और युद्ध के बढ़ते हुए खतरे के विरुद्ध देश की सच्ची आज़ादी के लिए संघर्ष जारी रखा।

उस समय नीकोस बेलोयानिस पात्रस मे पहले यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थानीय शाखा में और उसके बाद पार्टी के फौजी संगठन के सेक्रेटरी के रूप में पार्टी के काम में संलग्न थे, तभी १९३६ के दिसम्बर में वह पुनः गिरफ़्तार कर लिये गए। मेताक्सस के नृशंस सैनिकों ने उन्हे मारा-पीटा और शारीरिक यंत्रणाएं पहुंचाईं, परन्तु उनसे कुछ भी स्वीकार कराने मे असफल रहे। बेलोयानिस ने अपने साथियों के नाम और ठौर-ठिकाने गुप्त रखे और जिस फ़ौजी संगठन का उन्होंने नेतृत्व किया था, वह काम करता रहा। चूंकि किसी बड़े मामले के लिए उनके विरुद्ध पर्याप्त सबूत जमा न हो सके, इसलिए तीन महीने की जेल की सजा और छः महीने का निर्वासन-दण्ड देकर पुलिस को उन्हें रिहा कर देना पड़ा।

१६३७ के जून में बेलोयानिस अपनी नजरबन्दी के स्थान से भागकर पात्रस पहुंच गए। उन्होंने कुछ समय तक पार्टी की क्षेत्रीय समिति और फिर पात्रस की नगर समिति के सेक्रेटरी के रूप में काम किया।

मैं कम्युनिस्ट हूं

१६३८ की मई में बेलोयानिस तीसरी बार गिरफ्तार कर लिये गए। वह फिर जेल से निकल भागे, परन्तु मेताक्सस के जासूसों ने पुनः उन्हें वन्दी बना लिया। उनके विरुद्ध मामले की सुनवाई शुरू हुई।

बेलोयानिस के वकील ने न्यायालय मे प्रतिवादी की युवावस्थां पर अपनी दलील आधारित की: युवक ने यह नहीं महसूस किया कि वह क्या कर रहा है, "दूसरों ने बहकाकर उसे इस काम में लगा रखा था..." आदि, आदि। परन्तु बेलोयानिस ने इस तर्क का त्याग करके साफ-साफ कहा कि वह कम्युनिस्ट है और सदैव अपने कम्युनिस्ट विचारो का समर्थन करते रहेंगे।

उन्हें पाच साल की कैद और दो साल का निर्वासन-दण्ड मिला। इस वार उन्हें आइगिना द्वीप की एक ऐसी जेल मे कैद किया गया, जहां अन्य सैकड़ों दण्डित कम्युनिस्ट अपनी सज़ा काट रहे थे। जेल में जो साथी उन्हें जानते थे, उन्होंने उनकी आशावादिता, दृढता और आत्मसंयम की सराहना की। वह सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे।

जेल में सज़ा काटते समय बेलोयानिस के हाथ में रूसी भाषा मे प्रकाशित इंजील की एक प्रति पड़ गई। एक साथी राजबन्दी ने, जिसे रूसी भाषा का थोड़ा-सा ज्ञान था, उन्हें रूसी वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त करने मे सहायता पहुंचाई। अपने पहरेदारों की गैर-जानकारी में, जिन्होंने भोलेपन मे यह समझ लिया कि उन्होंने "धर्म को अपना लिया है", वह रूसी भाषा के अध्ययन मे संलग्न रहे। केवल इंजील के सहारे वड़े अध्यवसाय और धैर्य के साथ उन्होंने उस देश की भाषा का ज्ञान प्राप्त किया, जिसे वह प्रेम करते थे और सम्पूर्ण मानवजाति की भावी आशा के रूप में जिसकी सराहना किया करते थे।

१४ साल बाद, उस मुकदमे की सुनवाई के समय, जिसमें "जासूसी" के अपराध में उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया गया था, बचाव के अपने भाषण में उन्होंने कहा था. "हमारा यह विश्वास है कि यदि यूनान को नये युद्ध मे खीचा गया, तो इससे उसका विनाश हो जायेगा... अगले युद्ध में यूनान को निश्चय ही सोवियत सघ के विरोधी शिविर में नही होना चाहिए, जिससे कोई भी बात हमे अलग नही करती और जिसका अन्तिम विश्लेषण में यूनान अपनी स्वतंत्रता के लिए कृतज्ञ है।"

अक्रोपोलिस पर कुत्सित स्वस्तिक

इसी बीच यूनान पर प्रत्यक्ष फ़ासिस्ट हमले का ख़तरा सिर पर आ गया। यूनान को अपने प्रभाव-क्षेत्र में खीचने को कटिबद्ध नाज़ी जर्मनी ने उस देश पर बन्धनकारी समझौतों को थोपने और उसकी अर्थव्यवस्था की कई शाखाओं पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए फ़ासिस्ट-समर्थक मेतावसस सरकार का इस्तेमाल किया। हिटलरपंथियों ने अपने "सलाहकारो", गेस्टापो के दलालों और फासिस्ट साहित्य से देश को पाट दिया।

यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने यूनानी जनता को सिर पर मंडराते फासिस्ट आक्रमण की चेतावनी दी और देश की स्वाधीनता की रक्षा करने तथा नागरिकों के जनवादी अधिकारों को फिर कायम करने में सक्षम आम एतबार की सरकार की स्थापना के लिए प्रबल संघर्ष करने का अनुरोध किया।

दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर लोकमत के दबाव से झुककर यूनानी सरकार ने अपनी तटस्थता की घोषणा की। इसके बावजूद २८ अक्तूबर, १९४० को इतालवी फासिस्ट फ़ौज ने यूनान पर आक्रमण कर दिया। इस घटना से सारा देश हिल उठा। उस संकटपूर्ण समय में कम्युनिस्टों ने पुनः लोक हित के प्रति अपनी सर्वोच्च निष्ठा, अपनी देशभक्ति और अपने राष्ट्र के भविष्य के प्रति अपनी गहरी चिन्ता प्रदर्शित की। जेलों की कालकोठरियों में यातनाएं भोगते हुए कष्टमय जीवन व्यतीत करनेवाले कम्युनिस्टों ने मांग की कि उन्हें अविलम्ब मोर्चे पर, फासिस्टवाद के विरुद्ध लड़ने के लिए अग्रिम मोर्चे पर भेजा जाये।

इतालवी फ़ौज यूनानी प्रदेश के एक भाग पर ही कब्जा कर पायी, परन्तु कुछ ही दिनों में राष्ट्र की सभी देशभक्त ताक़तों के सहयोग से बहादुर यूनानी सेना ने प्रत्याक्रमण शुरू किया और आक्रमणकारियों को मार भगाया तथा अधिकृत अल्बानिया के प्रदेश तक उनका पीछा किया। मुसोलिनी की अहंकारी फौज की हार होने ही वाली थी।

यह देखते हुए कि यूनान मे मुसोलिनी के लिए युद्ध की स्थिति इतनी प्रतिकूल हो गयी है नाज़ी जर्मनी की फौजे उसकी सहायता को पहुंच गई। ६ अप्रैल, १६४१ को जर्मन फ़ासिस्ट नरपशुओं ने यूनान को पदाक्रान्त कर दिया। शान्तिपूर्ण नगर और गाव आग की लपटों मे स्वाहा हो गए और निर्दोष लोगों, वृद्ध जनों और कमज़ोरों, महिलाओं और बच्चों का खून वह उठा।

यूनान में जर्मन फासिस्ट आक्रमणकारियों को जनता के वीरतापूर्ण प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। परन्तु दोनों पक्षों मे कोई समानता नही थी। इससे भी बढ़कर बुरी बात यह थी कि यूनानी फौज के जरख़रीद जनरलों ने आत्मसमर्पण कर दिया और इस प्रकार आक्रमणकारियों को देश की राजधानी एथेनस तक सीधे पहुंच जाने का मौक़ा दे दिया। २ जून, १६४१ तक नाज़ियों ने द्वीपों सहित सम्पूर्ण यूनान को अपने कब्जे में कर लिया। नरेश और उसके मंत्री देश को छोड़कर मिस्र भाग गए।

एलास, आगे बढ़ो!

शासकीय गुट की ग़द्दारी के बावजूद यूनान के सभी ईमानदार लोग कम्युनिस्ट पार्टी के इर्द-गिर्द जमा हो गए और उन्होंने इसके नेतृत्व में न्याय, स्वतंत्रता और फासिस्टवाद के पंजे से देश को मुक्त करने के लिए संघर्ष किया। पार्टी ने छापेमार दस्तों और तोड-फोड करनेवाली टोलियों को संगठित करने में पहलकदमी की। जनता की ओर से इन बदला लेनेवालों ने शत्रु की जनशक्ति, फ़ौजी ट्रेनों, हथियारों और फौजी साज-सामान को नष्ट करते हुए उसपर ज़ोरदार प्रहार किए। ३० मई, १६४१ को रात मे मानोलिस ग्लेज़स नामक बहादुर यूनानी युवक ने (इस नाम को तब बहुत कम लोग जानते थे) अपने साथी अपोस्तोलस सांतस के साथ एक ऐतिहासिक

कार्य किया। आक्रमणकारियों ने अक्रोपोलिस पर जो कुत्सित फासिस्ट झण्डा फहरा दिया था, उसे उन्होंने उतार फेंका।

सोवियत जनता के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध ने यूनानी जनता के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की ज्वाला को फिर प्रज्वलित कर दिया। १९४१ की जुलाई में यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने देश के सभी प्रगतिशील तत्वों से फासिस्ट-विरोधी संयुक्त मोर्चे में शामिल होने और फासिस्ट आक्रमणकारियों के विरुद्ध राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध को फैलाने की अपील की।

१९४१ के सितम्बर में यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी ने सभी जनवादी और प्रगतिशील संगठनों तथा पार्टियों को शामिल कर एम्राम यानी राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा क़ायम किया।

१९४१ के दिसम्बर में एम्राम ने आक्रमणकारियों के विरुद्ध फौजी कारंवाई करनेवाले सभी छापेमार दस्तों को एक ही कमान के अन्तर्गत एक फौजी संगठन में मिला दिया और इस प्रकार यूनान की राष्ट्रीय मुक्ति सेना अथवा एलास का गठन हो गया।

निस्सन्देह, एम्राम और एलास की जान यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी ही थी। कम्युनिस्ट लगातार मोर्चे के सबसे खतरनाक और कठिन क्षेत्रों में लड़ रहे थे। जर्मन फासिस्टवाद के भीषण भूरे प्लेग को मिटाने के लिए केन्द्रीय और नियंत्रण समिति के अनेक सदस्यों सहित हज़ारों यूनानी कम्युनिस्टों ने अपने जीवन न्योछावर कर दिए।

जब फासिस्टों ने यूनान पर हमला किया, उस समय नीकोस बेलोयानिस जेल में थे। उन्हें एक जेल से दूसरी जेल में, आइगिना से, जहां उन्हें १९४२ तक नज़रबन्द रखा गया था, अक्रोनौपलिया और उसके बाद इटली तथा जर्मनी के नज़रबन्दी शिविरों मे रखा गया। १९४३ के सितम्बर में उनके दोस्तों ने एथेनस के जेल-अस्पताल "सोतिरीया" (मुक्ति) से, जहां वह बीमारी के कारण रखे गये थे, भाग निकलने मे सहायता पहुंचाई।

जेल से भागने के बाद वह तत्काल नाज़ी आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष में जुट गए। वह यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की पात्रस नगर शाखा के पहले अवर सेक्रेटरी और बाद मे प्रथम सेक्रेटरी तथा उसके साथ ही यूनानी छापेमार सैनिकों के तीसरे एलास डिवीजन के प्रधान बनाये

गए, जिसने पेलोपोनेसस क्षेत्र की अपनी फौजी कार्रवाइयों से सारी दुनिया मे ख्याति अर्जित की। उस समय तक हजारों की संख्या में सुप्रशिक्षित अफसरों और सैनिकों सहित **एलास** एक सुदृढ सेना हो गई थी। १९४३ की पतझड़ तक इसने दो-तिहाई यूनानी महाद्वीपीय भू-भाग को मुक्त कर लिया था और ग्यारह अथवा बारह फासिस्ट डिवीजनों को अपनी फौजी कार्रवाइयों में फंसा रखा था।

राष्ट्रव्यापी प्रतिरोध की विजयों से प्रतिक्रियावादी उत्प्रवासियों, पूंजीवादी थैलीशाहों और देश के अन्दरूनी फासिस्ट-समर्थक तत्त्वो में स्पष्ट भय और विरोध की भावना पैदा हुई। जिस समय **एलास** थेसालिया, रूमेलिया, मकदूनिया, हेपैरस और पेलोपोनेसस के मैदानों तथा ओलिम्पस और पीन्दस की पहाडियों मे आक्रमणकारियों के विरुद्ध घमासान लड़ाई कर रही थी, उस समय काहिरा मे आराम से रहनेवाले दुस्साहसिक उत्प्रवासियो को केवल अपनी सत्ता बनाये रखने की चिन्ता थी। नरेश जार्ज द्वितीय ने प्रतिरोध के नेताओं से नाजियों के विरुद्ध लडाई बन्द करने और "लोगों से अपने शांतिपूर्ण धन्धो में पुन: लग जाने" का अनुरोध किया। इसके साथ ही प्रतिक्रियावादी उत्प्रवासियों के राजनीतिक सरगनों ने आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष करने का बहाना लेकर यूनान के अन्दर फासिस्ट-समर्थक और राजतंत्रवादी कुत्सित तत्त्वो में से सभी तरह के जन-विरोधी संगठनों और सशस्त्र गिरोहों को कायम किया। इन संगठनों और गिरोहों ने बिना किसी अपवाद के राष्ट्रीय मुक्ति सेना (**एलास**) के विरुद्ध जर्मनों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग किया।

परन्तु **एलास**, जिसकी संख्या अब १,३०,००० तक पहुंच गयी थी और जिसे यूनानी जनता के भारी बहुमत का समर्थन प्राप्त था, विजय पर विजय प्राप्त कर रही थी और शत्रु के कब्जे से एक के बाद दूसरे नगर और प्रांत को मुक्त करती जा रही थी। जर्मनों से मुक्त किये गए प्रदेश में जन शासकीय निकाय कायम किये गए। १९४४ के मार्च में गठित राष्ट्रीय मुक्ति की राजनीतिक समिति ने अस्थाई जनवादी सरकार के अधिकारों को ग्रहण किया। १९४४ के अप्रैल मे सारे यूनान मे संसदीय चुनाव हुए थे। वास्तव में इसका अर्थ यह था कि देश में लोक जनवादी प्रणाली की राजनीतिक आधारशिला रख दी गई थी।

१९४४ की पतझड़ मे बाल्कन क्षेत्र मे सोवियत फौजों के सफल बढ़ाव

किया और जनता की सशस्त्र फ़ौजों को नष्ट करने तथा इस प्रकार उसे अपनी प्रतिरोधात्मक शक्ति से वंचित करने की पूरी कोशिश की।

यूनान को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के अधीन राज्य के रूप में परिवर्तित करने के विरुद्ध ३ दिसम्बर, १६४४ को ५ लाख लोगों के शान्तिपूर्ण प्रदर्शन पर एथेनस मे गोली-वर्षा की गई। दूसरे दिन, ४ दिसम्बर को पूर्व दिवस के प्रदर्शन में मारे गए लोगों की शव-यात्रा के समय एथेनसवासियों के शान्तिपूर्ण जुलूस पर फिर गोली-वर्षा की गई। इस उकसावे के जवाब में लोगों ने हथियार उठा लिए और उन्होंने पुलिस, राजनीतिक पुलिस और ब्रिटिश सेना द्वारा हथियारों से लैस घोर प्रतिक्रियावादी गिरोहों को भून डाला। जनवादी शक्तियों को कुचलने के लिए ब्रिटिश कमान ने टैंकों, विमानों और युद्धपोतों का इस्तेमाल किया। और इस प्रकार यूनान ने कष्ट तथा रक्तपात के जिस लम्बे समय को काटा था, नाज़ी आधिपत्य के समय जिन लाखों देशभक्तों को गोलियों से उडा दिया गया था, दारुण यंत्रणा देकर अथवा भूखों मार डाला गया था, उनके साथ ही अब "मित्र राष्ट्रों के इन उद्धारकों ने" सैंकड़ों फासिस्ट-विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया।

तैंतीस दिन तक **एलास** और जनता ने ब्रिटिश हस्तक्षेपकारियों और उनके पिछलगुओं का वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया। परन्तु, अन्त में शत्रुओं की तुलना में अपनी संख्या बहुत कम होने के कारण उन्होंने एथेनस का परित्याग कर दिया। ११ जनवरी, १६४५ को विराम-सधि हुई और १२ फ़रवरी को युद्धरत पक्षों के प्रतिनिधियों ने वार्किस सन्धि पर हस्ताक्षर किए, जिसके अन्तर्गत लड़ाइयों को फौरन वन्द करने, राजबन्दियों को क्षमादान प्रदान करने, राज्य की मशीनरी और सार्वजनिक जीवन का जनवादीकरण करने, सभी सशस्त्र दस्तों और गिरोहों को भंग करने, नयी सेना को संगठित करने और आम तथा स्वतंत्र चुनाव कराने की व्यवस्था की गई थी।

जनवादियों ने ईमानदारी से सन्धि की शर्तों का पालन किया और एलास की टुकड़िया भंग कर दी गईं तथा उनके हथियार अधिकारियों को दे दिये गए, परन्तु इसके प्रतिकूल प्रतिक्रियावादी सरकार ने बड़ी बेशर्मी के साथ इन शर्तों का उल्लंघन किया। ब्रिटिश हस्तक्षेपकारियों की सहायता के सहारे इसने न केवल आतंकवादियों और राजतंत्रवादियों के अनेक

और उसके फलस्वरूप जर्मनी वापस लौटने के रास्तों के कट जाने के भय से जर्मन फासिस्ट सेना तेजी से यूनान छोड़कर पीछे हट गई। १२ अक्तूबर, १९४४ को एथेनस मुक्त हो गया। लग रहा था कि जिस मुक्ति के लिए इतना खून बहाया गया था, वह अब सन्निकट थी।

परन्तु अपनी विजय के नतीजों का सुख उठाना यूनानी जनता के भाग्य मे नही बदा था। पहले से ही पलायित जर्मन फ़ासिस्ट आक्रमणकारियों को भगाने के बहाने नाज़ियों के स्थान पर ब्रिटिश अभियान फौज वहां पहुंच गई। इसके साथ ही राजतंत्रवादी सेना और प्रवासी सरकार भी वापस आ गई।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने दूरव्यापी लक्ष्यों को दृष्टि में रखकर अपनी सेना यूनान भेजी। वे यूनानी जनता के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को कुचलना, युद्ध-पूर्व शासन को पुनः कायम करना और इसके बाद यूनान को बाल्कन अंचल में अपना फ़ौजी और राजनीतिक अड्डा बना देना चाहते थे। ब्रिटिश फौजशाही की योजनाएं यूनानी प्रतिक्रिया के स्वार्थी हितों के सर्वथा अनुरूप थी।

ब्रिटिश शासकीय गुट ने यह महसूस किया कि यूनानी जनता के समर्थन और विश्वास से वंचित और ब्रिटिश संगीनों के बल पर स्थापित शासन बहुत दिनों तक क़ायम नही रह सकता। ब्रिटिश फौजी मिशन के प्रधान जनरल एड्डी को यह स्वीकार करना पड़ा कि "राजतंत्रवादियों और चौथी अगस्त सरकार (अर्थात्, मेताक्सस की तानाशाही) के समर्थकों का कोई राजनीतिक प्रभाव नहीं है और यूनानी जनता उनके नेताओं को नफरत की निगाह से देखती है।"

इसी कारण ब्रिटिश कमान ने प्रवासी सरकार और एआम के बीच हुए समझौते की उपेक्षा करते हुए एकांगी रूप से राष्ट्रीय मुक्ति सेना को निरस्त्र करने तथा इसके साथ ही राजतंत्रवादियो और फ़ासिस्टों की सशस्त्र फौजों को कायम रखने की कोशिश की।

परन्तु, एआम के नेताओं और एलास कमान ने प्रतिक्रिया की साजिश को भाप लिया और उन्होंने निरस्त्रीकरण आदेश को मानने से इनकार कर दिया। इस पर राजतन्त्रवादी-फासिस्ट फ़ौजों, "पुलिस बटालियनों" और नाज़ी फ़ौजों के भूतपूर्व सहयोगियों के सशस्त्र गिरोहों और गेस्टापो के चाटुकारों की सहायता से ब्रिटिश फ़ौजों ने एलास के विरुद्ध हमला शुरू

किया और जनता की सशस्त्र फ़ौजों को नष्ट करने तथा इस प्रकार उसे अपनी प्रतिरोधात्मक शक्ति से वंचित करने की पूरी कोशिश की।

यूनान को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के अधीन राज्य के रूप में परिवर्तित करने के विरुद्ध ३ दिसम्बर, १६४४ को ५ लाख लोगों के शान्तिपूर्ण प्रदर्शन पर एथेनस मे गोली-वर्षा की गई। दूसरे दिन, ४ दिसम्बर को पूर्व दिवस के प्रदर्शन में मारे गए लोगों की शव-यात्रा के समय एथेनसवासियो के शान्तिपूर्ण जुलूस पर फिर गोली-वर्षा की गई। इस उकसावे के जवाव में लोगों ने हथियार उठा लिए और उन्होंने पुलिस, राजनीतिक पुलिस और ब्रिटिश सेना द्वारा हथियारों से लैस घोर प्रतिक्रियावादी गिरोहों को भून डाला। जनवादी शक्तियों को कुचलने के लिए ब्रिटिश कमान ने टैंकों, विमानों और युद्धपोतों का इस्तेमाल किया। और इस प्रकार यूनान ने कष्ट तथा रक्तपात के जिस लम्बे समय को काटा था, नाज़ी आधिपत्य के समय जिन लाखों देशभक्तो को गोलियों से उड़ा दिया गया था, दारुण यन्त्रणा देकर अथवा भूखों मार डाला गया था, उनके साथ ही अब "मित्र राष्ट्रों के इन उद्धारकों ने" सैंकड़ों फासिस्ट-विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया।

तैंतीस दिन तक एलास और जनता ने ब्रिटिश हस्तक्षेपकारियों और उनके पिछलग्गुओं का वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया। परन्तु, अन्त मे शत्रुओं की तुलना में अपनी संख्या बहुत कम होने के कारण उन्होंने एथेनस का परित्याग कर दिया। ११ जनवरी, १६४५ को विराम-सधि हुई और १२ फरवरी को युद्धरत पक्षों के प्रतिनिधियों ने वार्किस सन्धि पर हस्ताक्षर किए, जिसके अन्तर्गत लड़ाइयों को फ़ौरन बन्द करने, राजवन्दियों को क्षमादान प्रदान करने, राज्य की मशीनरी और सार्वजनिक जीवन का जनवादीकरण करने, सभी सशस्त्र दस्तों और गिरोहो को भंग करने, नयी सेना को संगठित करने और आम तथा स्वतंत्र चुनाव कराने की व्यवस्था की गई थी।

जनवादियों ने ईमानदारी से सन्धि की शर्तों का पालन किया और एलास की टुकड़ियां भग कर दी गईं तथा उनके हथियार अधिकारियो को दे दिये गए, परन्तु इसके प्रतिकूल प्रतिक्रियावादी सरकार ने बड़ी बेशर्मी के साथ इन शर्तों का उल्लंघन किया। ब्रिटिश हस्तक्षेपकारियों की सहायता के सहारे इसने न केवल आतंकवादियों और राजतंत्रवादियों के अनेक

हथियारबन्द गिरोहों को भंग नही किया, बल्कि नये गिरोहों को भी खड़ा किया। सारे देश में आतंक की लहर व्याप्त हो गई। हजारों भूतपूर्व प्रतिरोधात्मक योद्धाओं, मुख्यतः कम्युनिस्टों और एआम तथा एलास के नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया गया।

यूनानी देशभक्तों के सम्मुख पहाड़ियों में चले जाने और अपने जीवन के लिए संघर्ष करने के अतिरिक्त कोई और विकल्प नही था। पहाडियों मे चले गए देशभक्तों के विरुद्ध प्रतिक्रिया की सशस्त्र फ़ौजों और ब्रिटिश हस्तक्षेपकारियों ने बडे पैमाने पर दण्डात्मक फ़ौजी कार्रवाई शुरु की, और इस प्रकार उन्होंने यूनानी जनता को खूनी गृहयुद्ध में खींचा।

सरकारी तथा हस्तक्षेपकारी फौजों की कार्रवाइयों के प्रत्युत्तर में १६४६ के अक्तूबर में देशभक्तों की छापेमार टुकडियों को यूनानी जनवादी सेना में पंक्तिबद्ध किया गया, जिसके निशान पर ये शब्द अंकित थे: "यूनान की "स्वतंत्रता, जनवाद और आजादी"।

प्रायः तीन साल तक यूनानी जनवादी सेना ने आधुनिक अमरीकी हथियारों से बेहद लैस बहुत अधिक संख्यावाली सरकारी सेना का वीरतापूर्ण प्रतिरोध किया और विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध आजादी और यूनान की राष्ट्रीय स्वाधीनता की रक्षा की।

छः साल बाद, अपने मुकदमे की सुनवाई के समय, नीकोस बेलोयानिस ने इस अवधि की यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की सरगर्मियो का वर्णन इन शब्दो में किया: "यूनानी जनवादी सेना का निर्माण और इसका सघर्ष उस शासन का तख्ता उलटने का प्रयास नही था, जो पहले से ही लडखडा रहा था... हम युद्ध नही चाहते थे। हम हिंसा और दबाव के विरुद्ध थे।"

रिहाई के बाद कम्युनिस्टों की सैद्धान्तिक शिक्षा के कार्यभार में अपनी सारी शक्ति, ज्ञान, अनुभव और असाधारण संगठनात्मक प्रतिभा लगाते हुए नीकोस बेलोयानिस ने यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की पेलोपोनेसस क्षेत्रीय समिति के शैक्षिक विभाग का मार्ग-निर्देशन किया। इसके साथ ही क्षेत्रीय पार्टी समिति के ब्यूरो के सदस्य होने के नाते वह जिला पार्टी सगठनों के पथ-प्रदर्शन के लिए भी जिम्मेदार थे।

१६४६ के दिसम्बर में बेलोयानिस यूनानी जनवादी सेना में शामिल हो गए और वह इसकी सर्वोच्च कमान के अन्तर्गत प्रचार तथा शिक्षा विभाग के प्रधान नियुक्त किये गए। बाद में वह इसके एक डिवीजन के

राजनीतिक कमिसार हो गए और गृहयुद्ध के शुरू से ग्राम्मस और विची की अन्तिम लड़ाइयों तक वह अपने सैनिकों के साथ लडे। १९४८ के अगस्त में कोलियो-कामिनिकस क्षेत्र की घमासान लडाई के दौरान वह घायल हो गए। परन्तु वह अपनी जगह से नही हटे और अपने साथी अफसरो तथा जवानों को अपनी वीरता के ज्वलन्त उदाहरण तथा शत्रु के प्रति तिरस्कार की भावना से प्रोत्साहित करते रहे।

नया अधिपति

१९४७ के शुरू मे ब्रिटिश सरकार को यूनान में अपनी नीति का दिवालियापन इतने स्पष्ट रूप में ज्ञात हो गया कि उसने यूनानी प्रतिक्रियावादियों को समर्थन प्रदान करने का काम अमरीकी साम्राज्यवादियों को सौप दिया। १२ मार्च, १९४७ को अमरीकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमन ने सरकारी तौर पर अमरीकी कांग्रेस के सम्मुख यूनान और तुर्की मे अमरीकी "हित" सम्बन्धी घोषणा की।

"ट्रूमन सिद्धान्त" में उद्घोषित नीति अन्य देशों के प्रसंग मे अमरीका की आक्रामक राजनीतिक प्रवृत्ति की स्पष्ट अभिव्यक्ति थी। इसका अभिप्राय यह था कि अमरीकी साम्राज्यवादी "अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म" का प्रतिरोध करने के नारे के साथ समाजवादी देशों के विरुद्ध बल-प्रयोग और "शीतयुद्ध" की नीति अपनाने जा रहे थे।

१९४७ के जून मे यूनान के लिए अमरीकी "आर्थिक सहायता" की शर्तों की व्याख्या करते हुए एथेनस मे एक यूनानी-अमरीकी समझौता हुआ। इस समझौते से यूनानी अर्थव्यवस्था और फ़ौजों की व्यवस्था में हस्तक्षेप करने और यहां तक कि यूनानी सरकार पर प्रत्यक्ष नियंत्रण कायम करने के लिए अमरीकी इजारेदारियो को पूरी छूट देते हुए यूनान मे उनकी गहरी घुस-पैठ का पथ प्रशस्त हो गया।

यूनान के आन्तरिक मामलों मे अमरीकी हस्तक्षेप के फलस्वरूप यूनानी जनवादियों के विरुद्ध और भी अत्याचार हुए। अल्पकाल मे ही १५ हज़ार से अधिक लोग बन्दी बना लिये गए। व्यापक पैमाने पर गिरफ्तारियों और "मृत्यु-द्वीपो" में निर्वासनों के शिकार केवल कम्युनिस्ट ही नही, बल्कि

सभी प्रगतिशील नागरिक हुए। १९४९ के अगस्त में प्रतिक्रिया ने यूनानी जनवादी सेना के विरुद्ध अपनी सारी सुलभ फ़ौजें झोंक दी और अमरीकियों की पूरी सांठगांठ से इसे हथियार डाल देने को विवश कर दिया। लेकिन गृहयुद्ध के समाप्त होने से यूनानी जनता के कष्टों का अंत नहीं हुआ। फ़ासिस्ट आक्रमण, ब्रिटिश तथा अमरीकी साम्राज्यवादियों के हस्तक्षेप और अमरीका की बहुप्रचारित "सहायता" से देश की अर्थव्यवस्था बिल्कुल ध्वस्त हो गई थी। वृहत सेना और हजारों की संख्या में पुलिस तथा राजनीतिक पुलिस के सिपाहियों के रख-रखाव पर होनेवाले खर्च के बोझ से देश कराह रहा था। सत्ता पर अधिकार जमा लेने के बाद यूनानी प्रतिक्रियावादियों ने जनता पर इतने जुल्म ढाये, जितने अत्याचार उसके साथ नाजी आक्रमण के दौरान भी नहीं हुए थे। आम क्षमादान की जगह, जिसका वचन दिया गया था, सरकार ने सैंकड़ों देशभक्तों को फांसी पर लटका दिया। उन हजारों व्यक्तियों को, जिन्होंने आक्रमणकारियों के विरुद्ध युद्ध किया था, अपने देश की आज़ादी और स्वतंत्रता की रक्षा की थी तथा शान्ति और जनवाद के लिए संघर्ष किया था, जेलों और नजरबन्द शिविरों में झोंक दिया गया अथवा निर्वासित कर दिया गया।

दूसरे विश्वयुद्ध को समाप्त हुए पच्चीस साल गुजर गये। इस दौरान यूनानी शासक गुट ने नाजी युद्ध-अपराधियों को क्षमा कर दिया है और उन्हें उनके गुनाहों से पूर्णतया बरी कर दिया है; परन्तु सरकार यूनानी प्रतिरोधात्मक युद्ध के बहादुरों को अभी तक राष्ट्र का शत्रु मानती है।

राजबन्दी, जिनमें अधिकांश कम्युनिस्ट–प्रतिरोध करनेवाले भूतपूर्व योद्धा हैं, यूनान की जेलों में अमानुषिक यंत्रणाएं भोग रहे हैं। उनमें से कुछ पिछले करीब ३० साल से, फासिस्ट तानाशाह मेताक्सस के शासनकाल से ही जेलों की कालकोठरियों में दुःखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

यूनानी प्रतिक्रियावादियों और उनके विदेशी संरक्षकों ने सर्वप्रथम जनवादी संगठनों को मिटाकर और उनके नेताओं, स्वतंत्रता के सर्वाधिक सुदृढ़ और अविचल समर्थकों–मुख्यतः कम्युनिस्टों की हत्या करके जनवादी आन्दोलन को कुचलना शुरू किया। रातों रात उनके विरुद्ध झूठे कल्पनातीत "अभियोग" गढ़े गये और पुलिस तथा खुफिया पुलिस के दलालों तथा गुर्गों ने मुकदमों की सुनवाई के समय झूठी गवाही देने के लिए अपने "साक्ष्यों" को रट लिया।

कम्युनिस्ट विरोधी उग्र वातावरण पैदा करने के उद्देश्य से जानबूझकर जो राजनीतिक उत्तेजना पैदा की गई, उसके प्रथम शिकार नीकोस बेलोयानिस और उनके साथी हुए।

उन भयानक दिनों में नीकोस बेलोयानिस, जो अब यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य थे, पूर्ववत् सघर्ष की अग्रिम पक्ति में अपने स्थान पर डटे रहे। व्यक्तिगत ख़तरों की चिन्ता किये विना, गुप्त काम की दिक्कतों को झेलते हुए वह जनवादी शक्तियों को एकजुट करने और शासकीय हलकों की प्रतिक्रियावादी नीति के विरुद्ध, यूनान के आन्तरिक मामलों में अमरीकी हस्तक्षेप के ख़िलाफ, स्वतंत्रता और जनवाद तथा शान्ति के लिए और अन्य विनाशकारी युद्ध के खतरे को दूर करने के संघर्ष के लिए उन्हें एकबद्ध करने मे उसी दृढ़ता और वीरता के साथ जुटे रहे।

यूनानी ख़ुफ़िया पुलिस ने उनके ठिकाने का पता लगा लिया और २० दिसम्बर, १९५० को एथेनस में बेलोयानिस को गिरफ़्तार कर लिया। उनकी पत्नी एल्ली इयोआनिदू और अन्य अनेक साथी भी उसी समय गिरफ़्तार कर लिये गए। नौ महीने तक दिन प्रतिदिन यूनानी ख़ुफिया पुलिस ने इस आशा से यूनानी देशभक्तों को मारा-पीटा तथा उन्हें तरह-तरह की शारीरिक यंत्रणाएं दीं कि उनसे पहले से तैयार अभियोगों को स्वीकार करवा लिया जायेगा और इस प्रकार झूठे जुर्म "सही" साबित हो जायेंगे, जिनमें यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को "षड्यंत्रकारी" तथा "राष्ट्र के शत्रु" ठहराया गया था। सरकार और ख़ुफ़िया पुलिस को यकीन था कि वे "अभियुक्तों" से झूठे अभियोगों का इकबाल करा लेंगी। परन्तु नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों के साहस और दृढ़ता से इस कुत्सित साजिश के रचनेवालों का कुचक्र विफल हो गया।

देशभक्तों द्वारा दोषारोपण

१९ अक्तूबर, १९५१ को तीसरे पहर पाच बजे नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों के विरुद्ध एथेनस की फौजी अदालत में मुकदमे की सुनवाई शुरू हुई।

९३ निर्दोष व्यक्ति कटघरे में खड़े थे। प्रधान न्यायाधीश की कुर्सी पर

घोर प्रतिक्रियावादी कर्नल स्तात्रोपौलस विराजमान था। ये व्यक्ति यूनान की आशा और अंतःकरण के प्रतीक थे, जब कि कर्नल स्तात्रोपौलस इसके अपमान, शासकीय गुट की ग़द्दारी का प्रतीक था।

२५ दिन तक यह मुकदमा सत्य और झूठ, प्रकाश और अन्धकार, जीवन और मृत्यु के बीच, एक ओर जनवाद, स्वतन्त्रता और शान्ति तथा दूसरी ओर प्रतिक्रिया की काली शक्तियों के बीच कटु मुकाबला बना रहा। शुरू से ही "अभियोग पक्ष के गवाहों" (जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इनमे से अधिकाश झूठी शहादत देने के लिए पहले से लिखा-पढ़ाकर तैयार किये गए पुलिस के दलाल थे) की झूठी गवाही से यह बिल्कुल जाहिर हो गया था कि प्रतिवादियो की कार्रवाइयों को नही, बल्कि उनके विचारों को निन्दनीय ठहराने और यूनानी राष्ट्र के विश्वासपात्र हरावाल, यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी को बदनाम करने के गन्दे उद्देश्य से इस झूठे मुकदमे को गढ़ा गया है। मामले की सुनवाई के समय पर्यवेक्षक के रूप मे फ़ौजी अदालत में उपस्थित प्रसिद्ध ब्रिटिश वकील लेफ़्लेर ने बाद में स्वीकार किया कि "इस अदालत में प्रतिवादियों की कार्रवाइयों की नही, बल्कि उनके विचार की सुनवाई हुई।"

नीकोस बेलोयानिस ने न्यायालय में अपना बयान देते हुए पुरजोश भाषण दिया। दुनिया के सभी भागो मे बेलोयानिस के शब्द गूंज उठे।

बेलोयानिस ने कहा, "यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य होने के कारण मेरे विरुद्ध यह मुकदमा चलाया जा रहा है। मुझ पर इसलिए मुकदमा चलाया जा रहा है, क्योंकि मेरी पार्टी शान्ति, स्वतंत्रता और मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही है। तुम मुझे दण्डित करके यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की इसी नीति की भर्त्सना करना चाहते हो।"

खचाखच भरी अदालत में लोगों ने बड़े ध्यान से उस व्यक्ति के निडर और जोशीले शब्दों को सुना, जिसके नाम ने इतिहास पर सदैव के लिए अपनी छाप छोड़ी है। वे ऐसे शब्द थे, जो न्यायाधीशों की कुर्सियों पर बैठे जल्लादो के सिरों पर भारी पत्थरो की भांति बरस रहे थे। यूनान के बहादुर सपूत बेलोयानिस ने न्यायालय मे हो रहे उस ख़ूनी प्रपंच के वास्तविक अभिप्राय का भण्डाफोड़ किया।

बेलोयानिस ने कहा, "एक राजनीतिक प्रणाली, एक राजनीतिक गिरोह यह कोशिश कर रहा है कि दूसरा दल ख़तरे के सम्मुख झुककर, अपने

विश्वासों को, अपने विचारों को त्याग दे... यदि मै अपने विचारों का परित्याग कर दूं तो वहुत सभव है मुझे सम्मानित कर निर्दोष बना दिया जायेगा... परन्तु मेरा जीवन यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास और कार्यकलाप का अंग है... दर्जनों बार मेरे सम्मुख यह विकल्प प्रस्तुत हो चुका है: अपने विश्वासों, अपने सिद्धात की वलि देकर जिन्दा रहना अथवा उनके प्रति सत्यनिष्ठ होकर जीवन को न्योछावर कर देना। मैंने सदैव दूसरे रास्ते को श्रेयस्कर माना है और आज भी मैं फिर उसीका वरण करता हूं।"

बेलोयानिस ने "अभियोग-पक्ष के गवाहों" के इस झूठे मनगढ़त अभियोग के परखचे उड़ा दिए कि यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी "बाहर से एक विदेशी शक्ति द्वारा निर्देशित शत्रुतापूर्ण कार्यकलाप" में संलग्न थी। उन्होंने कहा, "मार्क्स के जीवन-काल में केवल चन्द कम्युनिस्ट थे, इस समय समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत करीब ८० करोड़ लोग रहते हैं और कल भू-मण्डल के सभी भागों में समाजवाद फैल जायेगा। क्या विदेशी प्रभाव से इस प्रकार के व्यापक आन्दोलन का अस्तित्व में आना संभव है?" उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी के उत्कट देशभक्तिपूर्ण स्वरूप, जनता के सुख और उसकी जरूरतों की पूर्ति के लिए उसके अविराम संघर्ष का उल्लेख किया। कम्युनिस्टों ने यूनान की मुक्ति और स्वतंत्रता के लिए जो त्याग और बलिदान किये थे, उन्होंने उस पर पूर्ण प्रकाश डाला।

न्यायाधीश ने उनको बीच मे ही टोका, परन्तु उन्होंने अपना बयान इस प्रकार समाप्त किया: "यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी की जड़ जनता मे गहरी जमी हुई है। यह अविभाज्य सम्बन्धों से उसके साथ जुड़ी हुई है और फौजी अदालतों अथवा ताजीरी जत्थों मे उसे नष्ट नही किया जा सकता... तुम्हारे न्यायाधीश पूर्वाग्रही न्यायाधीश हैं, और इस कारण मैं तुमसे दया की भीख नही मागता। गर्व के साथ, शान्ति के साथ मैं तुम्हारे निर्णय को स्वीकार करूंगा और अपना सिर ऊंचा उठाये तुम्हारे वधिक दल के सम्मुख खड़ा हो जाऊंगा। मुझे और कुछ नही कहना है।"

मुख्य न्यायाधीश भभक उठा; बेलोयानिस शान्त भाव से अपनी सीट पर वापस चले गए। एक महिला प्रतिवादी अपने हाथ मे लाल फूल का गुच्छा लिये हुए थी, जिसे उसे ठीक उसी समय भेंट किया गया था और

उसने उस गुच्छे से एक फूल निकालकर उन्हें भेंट किया। उसे लेते समय उनका संजीदा और गंभीर मुख मुस्कराहट से खिल उठा।

१६ नवम्बर, १६५१ की सुबह फ़ौजी अदालत ने अपना भयानक फैसला सुना दिया। कुल पांच महिलाओं और सात पुरुषों को मौत की सज़ा दी गई थी।

महामहिम नरेश के नाम पर

इन बारह यूनानी देशभक्तों पर इस जुल्म से दुनिया भर में सभी ईमानदार लोगों के हृदय में आक्रोश और विरोध का तूफान उठ खड़ा हुआ। मामले की सुनवाई होते समय भी नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को बचाने के लिए सभी जगह सभाएं हुई। फ़ौजी अदालत के पास हज़ारों पत्र और तार पहुंचे, जिन मे जो भयानक अपराध वह करनेवाली थी, उसका बहुत जोरों से विरोध किया गया था।

फौजी अदालत द्वारा अपने फैसले की घोषणा कर देने के बाद अतर्राष्ट्रीय भाईचारे की ये भावनाएं अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई। सोवियत संघ के सुझाव पर बारह यूनानी देशभक्तों की प्राण-रक्षा का प्रश्न संयुक्त राष्ट्र महासभा के छठे अधिवेशन के सम्मुख रखा गया। सोवियत प्रतिनिधिमण्डल ने "१२ देशभक्तों के विरुद्ध १६ नवम्बर, १६५१ को एथेनस की फौजी अदालत द्वारा दी गई मौत की सजा को रद्द करने के निमित्त" महासभा के अध्यक्ष और यूनानी सरकार के प्रवक्ताओं के बीच समझौता-वार्ता के लिए विशेष प्रस्ताव पेश किया।

संयुक्त राज्य अमरीका के इशारे पर महासभा ने उस मानवतावादी सोवियत प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया। परन्तु फासिस्ट आतंक के पीडितों की ओर से चल रहे विश्वव्यापी आन्दोलन की यूनानी शासकीय गुट अवहेलना न कर सका। यूनानी प्रधानमंत्री प्लास्तिरस यह घोषित करने को विवश हुआ कि फौजी अदालत के निर्णय को कार्यान्वित नही किया जायेगा।

किन्तु बाद की घटनाओं से साबित हो गया कि प्लास्तिरस की घोषणा विश्व के जनवादी लोकमत को चकमा देने की केवल कोशिश थी। अमरीकियों के जोर देने पर यूनानी सरकार तत्काल कम्युनिस्टों के विरुद्ध एक अन्य

जाली मुकदमा चलाने के प्रपंच मे लग गई। इसने यह मिथ्या आरोप लगाया कि "एक कम्युनिस्ट षड्यंत्र" का पता लग गया है और कुछ "विदेशी दलालों' की 'मुजरिमाना सरगर्मियों" को रोकना है। नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को इस नये मामले मे फंसाया गया था।

नीकोस बेलोयानिस और २८ अन्य यूनानी देशभक्तों के विरुद्ध यह दूसरा झूठा मुकदमा पहले जाली मामले से कुछ ही भिन्न था। एकमात्र अन्तर यह था कि इस बार जनवादियों के विरुद्ध "जासूसी" को मुख्य अभियोग बना दिया गया था। प्रपंच और था, परन्तु उद्देश्य एक ही था: मौत की सजा पाये नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को प्लास्तिरस द्वारा क्षमादान के दिये गए वचन के अनुसार मुक्ति से वंचित करना, राजनीतिक अभियोग की जगह "जासूसी" का अभियोग लगाना और इस प्रकार उन्हे मृत्युदण्ड दे देने का "कानूनी" आधार प्रस्तुत करना।

मुक़दमे की सुनवाई के दौरान यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि खुफिया पुलिस ने "२९ व्यक्तियों के विरुद्ध मामला" शुरू से आख़िर तक गढा है।

वास्तव में अभियोगपत्र मे क्या कहा गया था?

इसमें *यह अभियोग लगाया गया था कि पुलिस ने यूनानी कम्युनिस्ट* पार्टी के "जासूसी जाल" का पता लगा लिया है, जिसके नेता नीकोस बेलोयानिस है, कि इसके हाथ मे एक गैरकानूनी रेडियो ट्रांसमीटर लग गया है, जिसका उपयोग मानो "गुप्त जासूसी केन्द्र" और यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के बीच सम्पर्क कायम रखने के लिए किया जाता था और यह कि गूढलेख पुलिस के हाथ मे आ गये है। प्रतिवादियों की ओर से "विदेशी केन्द्र" को भेजे गए कई जाली रेडियोग्राम और अन्य "काग़ज़ात" मुकदमे की सुनवाई के समय "मुख्य प्रमाण" के रूप मे प्रस्तुत किये गये। अनुभवहीन लोगों को भी यह साफ़-साफ ज्ञात हो गया कि सभी "प्रमाण" जाली है और यह कि यद्यपि प्रतिवादियों के खिलाफ "जासूसी" का अभियोग *लगाया गया* है, परन्तु *वास्तव मे पूर्ववत्* उनके विचारों और राजनीतिक विश्वास के विरुद्ध मामला चलाया जा रहा है। अपने अभियोग के समर्थन में अभियोग-पक्ष ने एक भी प्रामाणिक कागज नही प्रस्तुत किया। पुलिस ने जिस एकमात्र "गवाह" को "रंगे हाथो" पकड़ने की बात कही, वह खुफिया पुलिस का ही एक सक्रिय दलाल था।

अन्य तथाकथित गवाह भी पुलिस के दलाल थे। बेलोयानिस ने कहा कि "सभी गवाह पुलिस के नियमित कर्मचारी हैं। वे पिछले २५ वर्ष से हमारा पीछा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे बदला लेने के लिए यहां उपस्थित हैं।"

यद्यपि पुलिस ने बहुत कोशिश की परन्तु किसी ने यह विश्वास नहीं किया कि प्रतिवादी देश के विरुद्ध साजिश रचनेवाले "जासूस" हैं। प्रतिवादी बेलोयानिस, इयोआनिदू, गेओर्गीआदू, ग्रामेनस और अन्य साथियों की दृढ़ता और साहस के कारण, जिन्होंने हिम्मत के साथ इस अभियोग का खण्डन किया कि यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य जासूसी के काम में संलग्न थे, अभियोग सिद्ध करने के सभी प्रयास विफल हो गए।

मुकदमे की सुनवाई के समय बेलोयानिस ने असामान्य मानसिक संतुलन और धैर्य से काम लिया। उन्होंने अपने भाषण में कम्युनिस्टों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के घृणित अभियोगों की धज्जियां उड़ा दीं। उन्होंने घोषणा की कि "यूनानी प्रदेश पर बिखरी हुई क़ब्रों और बर्बादी का दोष पूर्णतया विदेशी साम्राज्यवादियों और उनके यूनानी पिछलग्गुओं पर है... हम उस सिद्धान्त की सत्यता पर विश्वास करते हैं, जो सर्वाधिक प्रगतिशील व्यक्तियों की प्रतिभा की देन है। और हमारे संघर्ष का ध्येय यूनान तथा शेष दुनिया के लिए इस सिद्धान्त को मूर्त रूप में परिवर्तित करना है... हम इस उद्देश्य से संघर्ष कर रहे हैं कि हमारे देश का भविष्य भूख अथवा युद्ध से उन्मुक्त सुखद तथा समृद्ध हो। यदि जरूरत हुई तो हम इस ध्येय के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देंगे।"

फ़ैसले पर विचार करने के लिए अदालत उठ गयी। कई घंटे बाद उसने अपना फ़ैसला सुनाया: "महामहिम नरेश के नाम पर..." नीकोस बेलोयानिस, एल्ली इयोआनिदू और उनके ६ साथियों को फिर मौत की सजा दी गई।

आख़िरी दम तक

सभी प्रगतिशील लोग बेलोयानिस तथा मौत की सज़ा पाये अन्य देशभक्तों को बचाने के लिए एकजुट हो गये। ट्रेड-यूनियनों, महिलाओं और युवकों के संगठनों तथा अन्य जनवादी संस्थाओं, सभी प्रकार की

अन्य तथाकथित गवाह भी पुलिस के दलाल थे। बेलोयानिस ने कहा कि "सभी गवाह पुलिस के नियमित कर्मचारी हैं। वे पिछले २५ वर्ष से हमारा पीछा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे बदला लेने के लिए यहां उपस्थित हैं।"

यद्यपि पुलिस ने बहुत कोशिश की परन्तु किसी ने यह विश्वास नहीं किया कि प्रतिवादी देश के विरुद्ध साजिश रचनेवाले "जासूस" हैं। प्रतिवादी बेलोयानिस, इयोआनिद्रू, गेओर्गीआद्र, ग्रामेनस और अन्य साथियों की दृढ़ता और साहस के कारण, जिन्होंने हिम्मत के साथ इस अभियोग का खण्डन किया कि यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य जासूसी के काम में संलग्न थे, अभियोग सिद्ध करने के सभी प्रयास विफल हो गए।

मुकदमे की सुनवाई के समय बेलोयानिस ने असामान्य मानसिक सतुलन और धैर्य से काम लिया। उन्होंने अपने भाषण में कम्युनिस्टों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के घृणित अभियोगों की धज्जियां उड़ा दीं। उन्होंने घोषणा की कि "यूनानी प्रदेश पर बिखरी हुई क़ब्रों और बर्बादी का दोष पूर्णतया विदेशी साम्राज्यवादियों और उनके यूनानी पिछलग्गुओं पर है... हम उस सिद्धान्त की सत्यता पर विश्वास करते हैं, जो सर्वाधिक प्रगतिशील व्यक्तियों की प्रतिभा की देन है। और हमारे संघर्ष का ध्येय यूनान तथा शेष दुनिया के लिए इस सिद्धान्त को मूर्त रूप में परिवर्तित करना है... हम इस उद्देश्य से संघर्ष कर रहे हैं कि हमारे देश का भविष्य भूख अथवा युद्ध से उन्मुक्त सुखद तथा समृद्ध हो। यदि जरूरत हुई तो हम इस ध्येय के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देंगे।"

फ़ैसले पर विचार करने के लिए अदालत उठ गयी। कई घंटे बाद उसने अपना फ़ैसला सुनाया: "महामहिम नरेश के नाम पर..." नीकोस बेलोयानिस, एल्ली इयोआनिद्रू और उनके ६ साथियों को फिर मौत की सज़ा दी गई।

आख़िरी दम तक

सभी प्रगतिशील लोग बेलोयानिस तथा मौत की सज़ा पाये अन्य देशभक्तों को बचाने के लिए एकजुट हो गये। ट्रेड-यूनियनों, महिलाओं और युवकों के संगठनों तथा अन्य जनवादी संस्थाओं, सभी प्रकार की

जाली मुकदमा चलाने के प्रपंच मे लग गई। इसने यह मिथ्या आरोप लगाया कि "एक कम्युनिस्ट षड्यंत्र" का पता लग गया है और कुछ "विदेशी दलालों' की 'मुजरिमाना सरगर्मियों" को रोकना है। नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को इस नये मामले मे फंसाया गया था।

नीकोस बेलोयानिस और २८ अन्य यूनानी देशभक्तों के विरुद्ध यह दूसरा झूठा मुकदमा पहले जाली मामले से कुछ ही भिन्न था। एकमात्र अन्तर यह था कि इस बार जनवादियो के विरुद्ध "जासूसी" को मुख्य अभियोग बना दिया गया था। प्रपंच और था, परन्तु उद्देश्य एक ही था: मौत की सजा पाये नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को प्लास्तिरस द्वारा क्षमादान के दिये गए वचन के अनुसार मुक्ति से वंचित करना, राजनीतिक अभियोग की जगह "जासूसी" का अभियोग लगाना और इस प्रकार उन्हे मृत्युदण्ड दे देने का "क़ानूनी" आधार प्रस्तुत करना।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि ख़ुफिया पुलिस ने "२९ व्यक्तियों के विरुद्ध मामला" शुरू से आख़िर तक गढ़ा है।

वास्तव में अभियोगपत्र मे क्या कहा गया था?

इसमे यह अभियोग लगाया गया था कि पुलिस ने यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के "जासूसी जाल" का पता लगा लिया है, जिसके नेता नीकोस बेलोयानिस हैं, कि इसके हाथ मे एक गैरक़ानूनी रेडियो ट्रांसमीटर लग गया है, जिसका उपयोग मानो "गुप्त जासूसी केन्द्र" और यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के बीच सम्पर्क कायम रखने के लिए किया जाता था और यह कि गूढलेख पुलिस के हाथ मे आ गये हैं। प्रतिवादियों की ओर से "विदेशी केन्द्र" को भेजे गए कई जाली रेडियोग्राम और अन्य "कागजात" मुकदमे की सुनवाई के समय "मुख्य प्रमाण" के रूप मे प्रस्तुत किये गये। अनुभवहीन लोगों को भी यह साफ-साफ़ ज्ञात हो गया कि सभी "प्रमाण" जाली हैं और यह कि यद्यपि प्रतिवादियों के खिलाफ "जासूसी" का अभियोग लगाया गया है, परन्तु वास्तव में पूर्ववत् उनके विचारों और राजनीतिक विश्वास के विरुद्ध मामला चलाया जा रहा है। अपने अभियोग के समर्थन में अभियोग-पक्ष ने एक भी प्रामाणिक काग़ज़ नहीं प्रस्तुत किया। पुलिस ने जिस एकमात्र "गवाह" को "रंगे हाथों" पकड़ने की बात कही, वह ख़ुफिया पुलिस का ही एक सक्रिय दलाल था।

अन्य तथाकथित गवाह भी पुलिस के दलाल थे। बेलोयानिस ने कहा कि "सभी गवाह पुलिस के नियमित कर्मचारी हैं। वे पिछले २५ वर्ष से हमारा पीछा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे बदला लेने के लिए यहां उपस्थित हैं।"

यद्यपि पुलिस ने बहुत कोशिश की परन्तु किसी ने यह विश्वास नहीं किया कि प्रतिवादी देश के विरुद्ध साजिश रचनेवाले "जासूस" हैं। प्रतिवादी बेलोयानिस, इयोम्रानिदू, गेम्रोर्गीम्रादू, ग्रामेनस और अन्य साथियों की दृढ़ता और साहस के कारण, जिन्होंने हिम्मत के साथ इस अभियोग का खण्डन किया कि यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य जासूसी के काम में संलग्न थे, अभियोग सिद्ध करने के सभी प्रयास विफल हो गए।

मुकदमे की सुनवाई के समय बेलोयानिस ने असामान्य मानसिक संतुलन और धैर्य से काम लिया। उन्होंने अपने भाषण में कम्युनिस्टों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के घृणित अभियोगों की धज्जियां उड़ा दीं। उन्होंने घोषणा की कि "यूनानी प्रदेश पर बिखरी हुई क़ब्रों और बर्बादी का दोष पूर्णतया विदेशी साम्राज्यवादियों और उनके यूनानी पिछलग्गुओं पर है... हम उस सिद्धान्त की सत्यता पर विश्वास करते हैं, जो सर्वाधिक प्रगतिशील व्यक्तियों की प्रतिभा की देन है। और हमारे संघर्ष का ध्येय यूनान तथा शेष दुनिया के लिए इस सिद्धान्त को मूर्त रूप में परिवर्तित करना है... हम इस उद्देश्य से संघर्ष कर रहे हैं कि हमारे देश का भविष्य भूख अथवा युद्ध से उन्मुक्त सुखद तथा समृद्ध हो। यदि जरूरत हुई तो हम इस ध्येय के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देंगे।"

फैसले पर विचार करने के लिए अदालत उठ गयी। कई घंटे बाद उसने अपना फैसला सुनाया: "महामहिम नरेश के नाम पर..." नीकोस बेलोयानिस, एल्ली इयोम्रानिदू और उनके ६ साथियों को फिर मौत की सजा दी गई।

आखिरी दम तक

सभी प्रगतिशील लोग बेलोयानिस तथा मौत की सजा पाये अन्य देशभक्तों को बचाने के लिए एकजुट हो गये। ट्रेड-यूनियनों, महिलाओं और युवकों के संगठनों तथा अन्य जनवादी संस्थाओं, सभी प्रकार की

जाली मुकदमा चलाने के प्रपंच मे लग गई। इसने यह मिथ्या आरोप लगाया कि "एक कम्युनिस्ट षड्यंत्र" का पता लग गया है और कुछ "विदेशी दलालों' की 'मुजरिमाना सरगर्मियो" को रोकना है। नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को इस नये मामले मे फंसाया गया था।

नीकोस बेलोयानिस और २८ *अन्य यूनानी देशभक्तों के विरुद्ध* यह दूसरा झूठा मुकदमा पहले जाली मामले से कुछ ही भिन्न था। एकमात्र अन्तर यह था कि इस बार जनवादियों के विरुद्ध "जासूसी" को मुख्य अभियोग बना दिया गया था। प्रपंच और था, परन्तु उद्देश्य एक ही था: मौत की सज़ा पाये नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों को प्लास्तिरस द्वारा क्षमादान के दिये गए वचन के अनुसार मुक्ति से वंचित करना, राजनीतिक अभियोग की जगह "जासूसी" का अभियोग लगाना और इस प्रकार उन्हें मृत्युदण्ड दे देने का "कानूनी" आधार प्रस्तुत करना।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि ख़ुफ़िया पुलिस ने "२९ *व्यक्तियों के विरुद्ध मामला*" शुरू से आख़िर तक गढ़ा है।

वास्तव मे अभियोगपत्र मे क्या कहा गया था?

इसमें यह अभियोग लगाया गया था कि पुलिस ने यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के "जासूसी जाल" का पता लगा लिया है, जिसके नेता नीकोस बेलोयानिस हैं, कि इसके हाथ मे एक गैरकानूनी रेडियो ट्रांसमीटर लग गया है, जिसका उपयोग मानो "गुप्त जासूसी केन्द्र" और यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के बीच सम्पर्क कायम रखने के लिए किया जाता था और यह कि गूढलेख पुलिस के हाथ मे आ गये हैं। प्रतिवादियों की ओर से "विदेशी केन्द्र" को भेजे गए कई जाली रेडियोग्राम और अन्य "कागज़ात" मुकदमे की सुनवाई के समय "मुख्य प्रमाण" के रूप में प्रस्तुत किये गये। अनुभवहीन लोगों को भी यह साफ-साफ ज्ञात हो गया कि सभी "प्रमाण" जाली हैं और यह कि यद्यपि प्रतिवादियों के ख़िलाफ "जासूसी" का अभियोग लगाया गया है, परन्तु वास्तव में पूर्ववत् उनके विचारों और राजनीतिक विश्वास के विरुद्ध मामला चलाया जा रहा है। अपने अभियोग के समर्थन में अभियोग-पक्ष ने एक भी प्रामाणिक कागज़ नही प्रस्तुत किया। पुलिस ने जिस एकमात्र "गवाह" को "रंगे हाथों" पकड़ने की बात कही, वह ख़ुफिया पुलिस का ही एक सक्रिय दलाल था।

अन्य तथाकथित गवाह भी पुलिस के दलाल थे। वेलोयानिस ने कहा कि "सभी गवाह पुलिस के नियमित कर्मचारी हैं। वे पिछले २५ वर्ष से हमारा पीछा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे बदला लेने के लिए यहा उपस्थित हैं।"

यद्यपि पुलिस ने बहुत कोशिश की परन्तु किसी ने यह विश्वास नही किया कि प्रतिवादी देश के विरुद्ध साजिश रचनेवाले "जासूस" हैं। प्रतिवादी बेलोयानिस, इयोआनिदू, गेओर्गीआदू, ग्रामेनस और अन्य साथियों की दृढता और साहस के कारण, जिन्होंने हिम्मत के साथ इस अभियोग का खण्डन किया कि यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य जासूसी के काम में सलग्न थे, अभियोग सिद्ध करने के सभी प्रयास विफल हो गए।

मुकदमे की सुनवाई के समय बेलोयानिस ने असामान्य मानसिक संतुलन और धैर्य से काम लिया। उन्होंने अपने भाषण में कम्युनिस्टों के विरुद्ध प्रतिक्रिया के घृणित अभियोगों की धज्जिया उड़ा दी। उन्होंने घोषणा की कि "यूनानी प्रदेश पर बिखरी हुई क़ब्रो और बर्बादी का दोष पूर्णतया विदेशी साम्राज्यवादियों और उनके यूनानी पिछलग्गुओं पर है... हम उस सिद्धान्त की सत्यता पर विश्वास करते हैं, जो सर्वाधिक प्रगतिशील व्यक्तियों की प्रतिभा की देन है। और हमारे सघर्ष का ध्येय यूनान तथा शेष दुनिया के लिए इस सिद्धान्त को मूर्त रूप में परिवर्तित करना है... हम इस उद्देश्य से सघर्ष कर रहे हैं कि हमारे देश का भविष्य भूख अथवा युद्ध से उन्मुक्त सुखद तथा समृद्ध हो। यदि जरूरत हुई तो हम इस ध्येय के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देंगे।"

फैसले पर विचार करने के लिए अदालत उठ गयी। कई घंटे बाद उसने अपना फैसला सुनाया: "महामहिम नरेश के नाम पर..." नीकोस बेलोयानिस, एल्ली इयोआनिदू और उनके ६ साथियों को फिर मौत की सज़ा दी गई।

आख़िरी दम तक

सभी प्रगतिशील लोग बेलोयानिस तथा मौत की सज़ा पाये अन्य देशभक्तों को बचाने के लिए एकजुट हो गये। ट्रेड-यूनियनों, महिलाओं और युवकों के संगठनों तथा अन्य जनवादी संस्थाओं, सभी प्रकार की

संस्थाओं और दलों, पादरियों, प्रमुख सामाजिक और राजनीतिक नेताओं, वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों ने प्रदालत के निर्णय का विरोध किया।

कालीथेई जेल की अपनी कालकोठरियों से नीकोस बेलोयानिस और उनके साथियों ने अपनी ओर से लिखा, "प्रिय, सच्चे दोस्तो! आप लोग हमारे लिए जो कुछ कर रहे हैं, उसे हम कभी विस्मृत नहीं करेंगे। मौत से हमें बचाने के लिए आपके पावन प्रयास से भूख और युद्ध के भय से मुक्त सुखद भविष्य के लिए मानव के संघर्ष के इतिहास मे एक शानदार पृष्ठ जुड़ जायेगा... *हम आख़िरी दम तक उन लोगों के प्रति असीम* कृतज्ञता का अनुभव करेंगे, जो हत्यारों के पंजों से हमें छुड़ाने के लिए इतनी सहृदयता से प्रयास करते रहे हैं।"

परन्तु मौत की सज़ा रोकी न जा सकी।

३० मार्च, १९५२ को रविवार के दिन भोर मे तीन बजे जेल के वार्डेन ने बेलोयानिस को जगाया; शाही कमिश्नर ने उन्हें, कालूमेनस, आरगिरियादिस और वास्तिस को सूचित किया कि उनकी अपील नामंजूर कर दी गई है और बेलोयानिस समझ गए कि अब यह उनके जीवन का अन्तिम क्षण है।

जेल के प्रांगण मे मौत की सजा पाये इन देशभक्तों की "सद्‌गति" के लिए प्रार्थना करने को पादरी उनके आने की प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु बेलोयानिस ने पापों की स्वीकृति और क्रास चूम लेने को अस्वीकार कर दिया। प्रागण से जाते समय वह जेल की खिड़कियों की ओर मुड़े और चिल्लाकर कहा, "साथियो! विदा!"

चारों बन्दियों को एक बन्द कार मे बिठाया गया। भोर में तीन बजकर बीस मिनट पर पुलिस की कारें जेल से बाहर निकलीं और तेज़ रफ़्तार से "बाकायदा" वध-स्थल गूदी मैदान की ओर चल दी। फ़ौजी पुलिस और ख़ुफ़िया पुलिस ने जेल, पूरे रास्ते और वध-स्थल को घेर रखा था।

'आल्लागी' नामक समाचारपत्र ने लिखा कि बेलोयानिस ने एक घडी के लिए भी ढाढ़स नही खोया। उन्होंने शान्त भाव से दण्डाज्ञा सुनी और आंखों पर पट्टी बंधवाने से इनकार कर दिया। उनके साथियो ने उन्ही के आदर्श का अनुकरण किया।

मोटरगाड़ियों की रोशनी मे चार बजकर ग्यारह मिनट पर यह दुखजनक

घटना घटी। प्राणघातक गोलियों के छूटने के पहले बेलोयानिस ने नारा लगाया: "यूनानी कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद!"

* * *

पुलिस दिन-रात कब्रगाह के पास पहरे पर तैनात थी। परन्तु फिर भी लाश को दफ़नाने के दूसरे ही दिन नीकोस बेलोयानिस की कब्र पर पुष्प हार चढ़ा दिया गया, जिसपर ये शब्द अंकित थे: "शान्तिपूर्वक विश्राम कीजिये—हम सतर्क हैं।"

बेलोयानिस के हत्यारों ने उनका प्राण ले लिया। परन्तु, यूनानी जनता के मानस-पटल पर से वे उनकी भव्य स्मृति को कभी नही मिटा पायेंगे, जिसके सुख के लिए वह आजीवन संघर्ष करते रहे और अन्त मे उन्होंने अपना प्राण तक न्योछावर कर दिया।

जाड़ा हो चाहे गरमी, उनकी सादी क़ब्र पर रक्त की बूदो की भाति लाल फूल पड़े रहते हैं। वे अपने वीर पुत्र के लिए यूनान की साधारण जनता की श्रद्धाजलि हैं, उसके नाम के अमिट तेज के द्योतक है।

जब अदालत में मौत का फ़ैसला सुनाया जा रहा था, उस समय नीकोस बेलोयानिस के हाथ मे जो लाल फूल था, वही अब अपनी मुक्ति और स्वतंत्रता, अपने चिर उत्पीड़ित देश के सुखद भविष्य के लिए संघर्षरत यूनानी जनता की लड़ाई का प्रतीक बन गया है।

जूलियन ग्रिमाऊ गार्शिया

६ नवम्बर, १९६२ को स्पेनी अख़बारों मे निम्नांकित सवाद प्रकाशित हुआ: "कल रात माड्रिड में स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य जूलियन ग्रिमाऊ गार्शिया की गिरफ्तारी हुई। तफ़तीश के समय उन्होंने बताया कि वह स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य हैं और स्पेन मे एक विशेष काम मे आये हैं। परन्तु अभी उनकी पूछताछ पूरी न हो पायी थी कि तभी वह बाहर बरामदे में भाग खड़े हुए (तीसरी मंजिल) और नीचे कूद पड़े। गिरते समय वह बुरी तरह घायल हो गये।"

जूलियन ग्रिमाऊ है कौन? कुछ समय पहले केवल कुछ लोग उनका नाम जानते थे। जो लोग उनके साथ काम करते थे और स्पेन मे सतत उनके सम्पर्क में रहते थे, वे भी केवल उनके छद्म नामों को ही जानते थे। उनके बीच वह् स्पेनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का प्रतिनिधित्व करते तथा उसकी इच्छाओं को व्यक्त करते थे। वे उन्हे स्पेनी कम्युनिस्टों की दैनदिन धैर्यपूर्ण और दृढ़ सरगर्मियो के संगठक और नेता के रूप में जानते थे, जो फ़्राको की सरकार के लिए बेचैनी पैदा करनेवाली हड़तालों, प्रदर्शनो, परचों और दीवालों तथा बाड़ो पर मोटे-मोटे अक्षरो मे अकित निम्नाकित शब्दो के रूप मे फूट पडती थी **"क्षमादान!", "फ्रांको मुर्दाबाद!", "स्वतंत्रता!"** स्पेन के कम्युनिस्ट अपने ऐसे प्रयासों से जनता की इस आशा को कायम रखे हुए हैं कि फ़ांको की नृशस तानाशाही की विभीषिका से स्पेन की धरती सदा ग्रस्त नही रहेगी।

तभी अचानक सारी दुनिया मे इस नाम की चर्चा गूज उठी और उससे सभी जगह करोड़ों-करोड़ लोगों के मन में जोश और उमंग की भावनाएं भर गईं। दोस्त ही नही शत्रुओ ने भी कम्युनिस्ट जूलियन ग्रिमाऊ गार्शिया के साहस और अटूट विश्वास के लिए उनके प्रति सम्मान की भावना प्रकट की।

फ्राको की पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये और पाशविक यातनाए दिये जाने के बाद भी उनका साहस भंग न हुआ; फौजी अदालत द्वारा मुकदमे की सुनवाई और गोली से उड़ा दिये जाने के बावजूद वह् स्पेनी जनता की दृष्टि में अमर है और सारी दुनिया के स्त्री और पुरुष एक वीर के नाते उनका मान करते हैं। कवियों ने उनके सम्मान मे कविताएं लिखी हैं और चित्रकारों ने उनके भव्य रूप को चित्रांकित करके उसे शाश्वत बना दिया है। उनके नाम पर शहरों की सड़कों और युवा पायनियर टुकड़ियों के नाम रखे गये हैं। स्पेनी जनता के मुक्ति-सघर्ष के इतिहास मे वह स्पेन के कम्युनिस्टों के साहस, सम्मान और मर्यादा के प्रतीक है। फासिस्टवाद की काली शक्तियों के विरुद्ध सघर्ष करनेवाले दिमित्रोव, थेलमान, ग्रामशी, बेलोयानिस जैसे वीरो और कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्य योद्धाओं की पांत मे उन्हें सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त है।

वर्षों पार्टी के गुप्त कार्यकर्त्ता के रूप में काम करते हुए, गोपनीय कार्य

के नियमों के प्रति सदैव सचेत रहने के कारण उन्होंने अपने विषय में कभी कोई ज्यादा चर्चा नही की। परन्तु हम जानते हैं कि १८ फरवरी, १९१२ को वह माड्रिड में पैदा हुये थे और नगर के मजदूर इलाके में अपने हजारों हमजोलियो से उनका बचपन कोई अधिक भिन्न नही था। उनके पिता 'इबेरो-अमरीकी प्रेस' में काम करते थे। उनके मा-बाप ने अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक किया। समय तेज़ी से गुज़रता गया और आखिर वह समय आया जब उन्हें स्नातकीय प्रमाणपत्र प्राप्त हो गया।

कम्पोजीटर के काम का कुछ प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जूलियन १४ वर्ष की उम्र मे «Ibero-American Publishing Plant» मे काम करने लगे। स्पेन की तूफानी घटनाओं के साथ उनके श्रमजीवी जीवन की शुरूआत हुई। प्रीमो द-रिवेरा की तानाशाही ध्वस्त हो गई; स्पेन मे क्रान्ति होने की स्थिति परिपक्व होती जा रही थी। विशेष रूप से युवक समुदाय मे जनवादी भावनाए परिव्याप्त थी। जूलियन सड़कों और कहवाघरो में हो रही जोरदार बहसे उत्साह के साथ सुनते और उत्सुकता के साथ अखबारों को पढ़ा करते थे। १२ दिसम्बर, १९३० को जाका नामक नगर में गैरिसन को राज्यतन्त्र के विरुद्ध विद्रोह के लिए उभारनेवाले और बाद में शाही अदालत की दंडाज्ञा से गोली से उड़ा दिये गए कप्तान गालान और एर्नान्देस के वीरतापूर्ण कार्यों से वह स्पन्दित हो उठे।

«Ibero-American Publishing Plant» जनतंत्रवादी पार्टियों के कार्यकलाप का केन्द्र था और अपने कई सहकर्मियों की भाति ग्रिमाऊ एक पक्के जनतंत्रवादी बन गए। जब वह बीस वर्ष के थे, तभी मेहनतकश जन समुदाय के क्रान्तिकारी सघर्ष के फलस्वरूप नरेश गद्दी से हटा दिये गए और पूजीवादी-जनवादी क्रान्ति सफल हो गई। वह भी उस जनसमूह मे शामिल थे, जिसने सरकारी इमारतो से ध्वस्त तानाशाही के झण्डे को फाड़कर फेंक दिया और जो क्रान्ति की विजय तथा जनतन्त्र की घोषणा से प्रमुदित हो उठा था।

जूलियन ने नवोदित जनतंत्र मे विश्वास किया और लाखों अन्य स्पेनवासियों की भाति इससे बड़ी आशाएं लगाई। इस बात से अनभिज्ञ कि स्थिति बदल जाने के बाद भी देश के जीवन में बुनियादी सामाजिक अथवा राजनीतिक परिवर्तन नही हुए हैं, कि किसान अभी भी जमीदारों

के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं, कि मजदूर आज भी भूखे हैं और सशस्त्र पुलिस बादशाही के जमाने की भाति इस समय भी जनता के प्रदर्शनों पर गोली-वर्षा कर रही है, उन्होने इसके प्रारम्भिक कदमों का स्वागत किया। उन्होंने जनतंत्रवादी पार्टियों के नेताओं के वायदों में यकीन किया और यह नही समझ सके कि हाल ही मे कानूनी घोषित कम्युनिस्ट पार्टी क्यों यह मत प्रकट कर रही थी कि क्रान्ति अभी पूरी नहीं हुई है।

बढ़ते हुए फ़ासिस्ट खतरे की पृष्ठभूमि मे जब प्रतिक्रिया ने १६३३ के नवम्बर में हुए चुनावों में विजय प्राप्त की तो वह क्रोध और आक्रोश में आ गए और संघर्ष करने को प्रस्तुत हो गए, परन्तु तो भी वह यह नही समझते थे कि जनतंत्र की रक्षा के लिए जनतंत्रवादी पार्टियों के नेताओं द्वारा सुझाये गये तरीकों के अलावा और रास्ते क्या हैं। १६३४ के अक्तूबर मे हुई आम हड़ताल और आस्तुरियाई खनिकों के विद्रोह तथा फौजशाही द्वारा उसके पाशविक दमन से उन्हे गहरा धक्का लगा। जब स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी के आह्वान पर जन मोर्चा कायम करने के लिए आन्दोलन शुरू हो गया तो बड़े उत्साह के साथ उन्होने इसका समर्थन किया।

१६३६ के शुरू में स्पेन की सभी जनतंत्रवादी पार्टियां जन मोर्चे में शामिल हो गई और १६ फरवरी को इसने स्पेनी संसद के चुनाव मे जबरदस्त विजय हासिल की। कारख़ानों के मज़दूरों और दफ़्तरी कर्मचारियों के बीच जन मोर्चे के उम्मीदवारों के समर्थन में प्रचार करते हुए ग्रिमाऊ चुनाव आन्दोलन में बहुत ही सक्रिय थे। फासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष मे भाग लेने से उनके पूरे भावी जीवन का पथ निर्धारित हो गया। यदि अभी तक वह कम्युनिस्टों को सन्देह की दृष्टि से देखते थे, तो फासिस्टवाद के विरुद्ध उनके साथ मिलकर लड़ते हुए उन्होंने यह अनुभव कर लिया कि कम्युनिस्ट पार्टी जनतंत्र की सबसे विश्वसनीय और अडिग समर्थक है। कम्युनिस्ट जो कुछ कहते थे उसे उन्होंने बड़े ध्यान से सुना, उनके मुखपत्र «Mundo Obrero» को पढना शुरू किया, उनके द्वारा आयोजित सभाओं मे भाग लेने लगे और मार्क्सवादी साहित्य से परिचित होने लगे।

बड़ी तेज़ी से उनका दृष्टिकोण बदल गया: उन्होंने अपनी अपरिपक्व धारणाओं को त्याग दिया और ज्यों-ज्यों वह कम्युनिस्टों के विचारों से अवगत होते गए त्यों-त्यों उनके जनतंत्रवादी विचार भी बदलते गए। उस उत्तेजनापूर्ण समय मे भी उन्होंने काफी अध्ययन किया, गोकि

उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारों को पुस्तकों की अपेक्षा जीवन से, फासिस्टवाद के विरुद्ध व्यावहारिक संघर्ष से अधिक ग्रहण किया। एक सर्वहारा क्रान्तिकारी के रूप में उनके विकास की प्रक्रिया को तीव्रतर बनाने के लिए केवल किसी सवेग की आवश्यकता थी।

१८ जुलाई, १९३६ को फासिस्ट विद्रोह का शुरू होना ही वह संवेग था, जो भीषण गृहयुद्ध मे और उसके बाद इटली तथा जर्मनी के हस्तक्षेप के फलस्वरूप स्पेनी जनता के राष्ट्रीय क्रान्तिकारी युद्ध में उभर कर सामने आया था।

जिन लोगों ने 'ला मोंताञ्या' सैनिक बैरको पर धावा मारा और राजधानी मे फासिस्ट विद्रोह को कुचल दिया, उनमे जूलियन ग्रिमाऊ भी शामिल थे। इस विद्रोह के फलस्वरूप जनतंत्र अपनी सशस्त्र फौजों और पुलिस दोनों से वंचित हो गया। ग्रिमाऊ और उन्ही की भांति सैकड़ों अन्य जनतंत्रपथी—कम्युनिस्ट और समाजवादी—जनता द्वारा गठित नूतन जनतांत्रिक पुलिस की पांतों में शामिल हो गए।

जब जनरल फ्रांको की फ़ौजें माड्रिड के निकट पहुंच गईं और जनतंत्र संकट मे पड गया, तो ग्रिमाऊ ने कम्युनिस्ट होने का महत्त्वपूर्ण निर्णय किया। जब फ्रांको की फ़ौजें नगर के प्रवेश-द्वारों पर टूट रही थी, माड्रिड की लड़ाई के उसी संकटग्रस्त समय १९३६ के अक्तूबर में ग्रिमाऊ ने स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होने के लिए अपना आवेदनपत्र दिया। उसके बाद निरन्तर उन्होंने अपने जीवन को पार्टी के साथ सम्बद्ध रखा और जिस उद्देश्य के लिए वह संघर्ष कर रही थी, उसमे अपनी सारी शक्ति लगा दी।

ज्योही माड्रिड में तनाव कम हुआ त्योंही ग्रिमाऊ को सरकार के नये केन्द्र वलेशिया भेजा गया। १९३७ के मध्य में उन्हें पुलिस के जांच-विभाग के प्रधान के पद पर काम करने के लिए बार्सेलोना भेजा गया।

बाद मे, जब फ्रांको की ख़ुफ़िया पुलिस ने ग्रिमाऊ को गिरफ़्तार किया तो उनके विरुद्ध लगाये गए अभियोगों मे एक यह था कि बार्सेलोना के पुलिस जाच-विभाग के प्रधान की हैसियत से उन्होंने पकड़े गए फासिस्टों को यातनाएं देने का आदेश दिया था और इस कारण वह बीसियों "निर्दोष" व्यक्तियों की हत्या के दोषी बताये गए। फ्रांको समर्थक स्पेनी अखबारों तथा इटालवी प्रतिक्रियावादी अखबार «Il Secolo» ने उनके "दोष" को

सिद्ध करने के विचार से सर्वथा झूठी बातें प्रकाशित की। इससे अधिक कुत्सित झूठी रिपोर्ट की कल्पना भी नही की जा सकती। स्पेन की जनता के लिए फ्राको के विद्रोह के दु.खजनक परिणामो को कौन नही जानता? मुठभेड़ों के दौरान दस लाख से अधिक स्पेनवासियों ने अपने जीवन से हाथ धोया। युद्ध के बाद फ्रांको के गिरोहों ने दो लाख से अधिक फ़ासिस्ट-विरोधियों को गोलियो से .उड़ा दिया अथवा यंत्रणाएं देकर मार डाला। हज़ारों देशभक्तो को फ़ाको के जेलो मे झोंक दिया गया, जहां आज तक उनके साथ अत्यंत पाशविक व्यवहार किया जा रहा है, उन्हे तरह-तरह की यंत्रणाए दी जाती हैं। दुनिया की जनता के नाम अपनी अपील में ओवियदो जेल के राजबन्दियों ने कहा: "अधिकाश कैदियों के शरीर पर पाशविक यंत्रणाओं के निशान हैं।"

शिष्ट और स्वभाव से सहृदय जूलियन ग्रिमाऊ ने अपने विरुद्ध लगाये गये "अपराधों" को कभी नही किया था और न वह कम्युनिस्ट होने के नाते ऐसे अपराध कर सकते थे।

उनके घनिष्ठ मित्र मानुएल उर्तादो द-मेन्दोज़ा ने, जो ग्रिमाऊ के जीवन के उस काल की बातों को जानते थे, बताया कि खुफिया पुलिस सम्बन्धी अपने काम मे उन्होंने अत्यंत मानवीय गुणों को प्रदर्शित किया। विवेकशील, गंभीर और अपने काम मे पूर्णतया निपुण होने के साथ-साथ वह मानवीय व्यक्तित्व के प्रति सम्मान की भावना से ओत-प्रोत थे। यह भी ज्ञात है कि १९३८ में जनतंत्र की सरकार ने मृत्यु-दण्ड समाप्त कर दिया था और फ़ांको से अपील की थी कि जिस प्रदेश पर उसकी फ़ौजों का क़ब्ज़ा है, वहा भी ऐसा ही किया जाये। उसने उत्तर देना भी उचित नही समझा। ग्रिमाऊ को मनगढ़ंत अपराधों का "दोषी" ठहराते हुए फ़ांको के अधिकारियों ने इस प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी को बदनाम करने तथा राजबन्दियों के प्रति हो रहे क्षमादान आन्दोलन को रोकने का कुचक्र रचा था।

१९३९ के शुरू मे जनतंत्र के लिए परिस्थिति बहुत चिन्तनीय प्रतीत होने लगी। फासिस्टों ने कातालोनिया मे मोर्चे को भग कर दिया। बार्सेलोना पर उनका कब्जा हो गया। हज़ारों शरणार्थियो और कातालोनियाई सेना के बचे-खुचे भाग के साथ ग्रिमाऊ सीमा पार कर फ़ास चले गए। स्पेनी जनतंत्र का गला घोंटने में मानवघाती फ़ाको, हिटलर

और मुसोलिनी को सहायता प्रदान करनेवाले फ्रांसीसी अधिकारियों ने जनतंत्र के इन शरणार्थियों और सैनिकों को शत्रु माना। उन लोगों को तुरंत कैद कर दिया गया और ग्रिमाऊ ने कई महीने नजरबन्दी शिविर मे गुजारे।

मार्च के अंत मे जनतत्र के दिन ख़त्म हुए। स्वदेश जाने का रास्ता बन्द हो गया। १९३९ के अन्त में हज़ारों स्पेनी उत्प्रवासियों के साथ वह फ्रांस से रवाना हो गए। पार्टी के निर्देश के अनुसार देश छोड़कर मध्य अमरीका जानेवाले कम्युनिस्टों के साथ काम करने के निमित्त वह कई महीने डोमिनिकन जनतत्र मे रहे और उसके वाद १९४० के सितम्बर मे क्यूबा चले गए।

जनतत्र खत्म हो गया था और स्पेन मे फासिस्टवाद स्थापित हो गया था। फासिस्टवाद की महामारी यूरोप मे फैल रही थी। परन्तु इसके विरुद्ध संघर्ष जारी था। ग्रिमाऊ ने पार्टी द्वारा प्रकाशित अखबारों का प्रचार किया और रेडियो मे काम किया। उन्होंने सारे क्यूबा में घूम-घूमकर संपर्क स्थापित किये और हताशग्रस्त लोगो की हिम्मत को बंधाया।

उसके वाद पार्टी के नेताओं ने ग्रिमाऊ को प्रचार के काम मे लगाया और उन्हें स्थानीय पार्टी इकाइयो को क्रियाशील बनाने के लिए जिम्मेदार वना दिया। उन्होंने गोपनीय कार्यपद्धति का पूरा अध्ययन किया और सभी दृष्टियों से पेशेवर पार्टी कार्यकर्ता की हैसियत प्राप्त कर ली।

उत्प्रवास के लम्बे समय के कारण उनका साहस न टूटा और न स्पेनी जनता और कम्युनिज्म के विचारों की विजय में ही उनका विश्वास कभी कम हुआ। वह बहुत उत्सुकता के साथ पढ़ते रहे और उन्होने मजदूर तथा कम्युनिस्ट आन्दोलन की समस्याओं का अध्ययन किया। वह बहुत ही परिश्रमी कार्यकर्ता थे; उनका अध्यवसाय वस्तुत: असाधारण था। ६ बजे सुबह उठ जाने के वाद भी रात को तीन बजे तक उन्हें काम में संलग्न देखा जा सकता था। अवकाश के समय और रविवार का अस्तित्व उनके लिए था ही नही।

स्पेनी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी स० कार्रिल्यो ने ग्रिमाऊ को इन शब्दो में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की: "... काम करने की असाधारण क्षमता, उनकी उदारता, अपनी निजी जरूरतों के प्रति उनकी

उदासीनता, ध्येय के प्रति निस्स्वार्थ निष्ठा, सरलता और विनम्रता तथा अपने व्यवहार मे दिखावे अथवा शेखी या आत्मतुष्टि की भावना से पूर्णतया मुक्त।" ग्रिमाऊ ने अपनी जरूरतों के बारे में कभी भी नही सोचा परन्तु एक जरूरतमन्द साथी की सहायता को सबसे पहले पहुंच जाते थे।' १९४७ में वह इन्ही गुणो के साथ फ़ास वापस लौटे।

वह स्वभाव से मिलनसार थे और मौक़ा मिलने पर दोस्तों के साथ थोडी शराब पी लेते, बिलियर्ड की बाजी खेल लेते, किसी साथी के हंसी पैदा करनेवाले व्यवहार पर कोई दिलचस्प जुमला कस देते, खिलखिला कर हंस पड़ते, कोई मज़ाक कर बैठते अथवा उल्लासपूर्ण ढंग से कोई गीत सुना देते। उन्हें जीवन के सभी पहलुओं से प्यार था, यद्यपि जहा तक उनके व्यक्तिगत जीवन का सम्बन्ध था, वह बहुत ही विनम्र और कुछ हद तक शर्मीले भी थे। पेरिस मे उनकी मुलाकात एक समाजवादी की पुत्री से हुई, जिन्हें फ़ाको के लुटेरों ने गोली से उड़ा दिया था। परन्तु उस युवती–अजेला–से वह दो वर्ष तक प्रणय-निवेदन न कर सके। १९५१ मे उनकी शादी हुई और बहुत जल्दी उनकी पत्नी दो पुत्रियो की मा बन गई। उन्होंने अपनी लड़कियो का नाम दोलोरेस और कार्मेन रखा। ग्रिमाऊ ने स्वभाव से ही पारिवारिक आदमी थे और अपने बच्चो को बहुत प्यार करते थे, परन्तु कभी भी काफी समय तक घर पर रहने की उन्हें सुविधा नही मिली।

फ़ास वापस आने के बाद वह पार्टी के काम मे जुट गए। केन्द्रीय समिति ने स्पेन मे छापामार आदोलन को संगठित करने का कठिन कार्यभार उन्हें सौंपा था, जिसके लिए धैर्य और सूझबूझ की बात तो जाने दीजिये, बहुत ही सजगता और सतर्कता अपेक्षित थी। उनकी जरा-सी चूक से छापामारों और फ़ास मे उनके साथियों को, जहा स्पेनी कम्युनिस्टों का कार्यकलाप गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था, बहुत भारी क्षति उठानी पड़ सकती थी।

१९४८ मे जब स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी कार्यनीति मे आमूल परिवर्तन करके छापामार संघर्ष को त्याग दिया तथा स्पेन के अन्दर फ़ाको-विरोधी जन आन्दोलन के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया, तो ग्रिमाऊ को पार्टी की केन्द्रीय समिति में काम दिया गया। परन्तु वह स्पेन

ग्रिमाऊ ने माड्रिड मे ग्राम-हड़ताल के लिए जोरों की तैयारिया शुरू कर दी। उन्होने केन्द्रीय समिति को लिखा, "आपको विश्वास करना चाहिए कि हम वर्तमान परिस्थिति का दायित्व पूर्णतया समझते हैं और कोई प्रयास उठा न रखेंगे तथा अपनी पूरी शक्ति लगा देगे।"

१९६२ की पतझड़ मे केन्द्रीय समिति ने हड़ताल के बाद, जिससे फासिस्ट शासन हिल उठा और अधिक गहरे सकट में ग्रस्त हो गया, ग्रिमाऊ को फ्रास जाकर कुछ विश्राम करने की सलाह दी। कई बार पहले की भाति इस बार भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने अपने देश की परिस्थिति को बहुत ही गभीर समझा और केन्द्रीय समिति से "आगे इस पर अधिक जोर न देने" का अनुरोध किया। यह बताने पर कि उनकी इच्छा को मान लिया गया है, उन्होने कहा: "मुझे खुशी है कि मेरी छुट्टी अधिक उपयुक्त क्षण तक स्थगित की जा रही है। इससे मेरे लिए कोई और बेहतर बात नही हो सकती। दुनिया और अपनी मातृभूमि के लिए ऐसे उद्विग्नकारी समय मे अपनी शक्तियों को कमजोर नही करना चाहिए।"

स्वदेश में अपनी जगह पर बने रहने का एक कारण केरिबियान सकट था। ग्रिमाऊ ने बडे जोश के साथ जनता को यह समझाने के लिए कम्युनिस्टों को एकजुट करने की भावना से काम किया कि क्यूबा के प्रति अमरीका की आक्रामक नीति शान्ति के ध्येय और स्पेन के भविष्य के लिए घातक खतरा है। आबादी के सभी तबको, सेना के अफसरों और सैनिकों और सुरक्षा फौजों से दृढता के साथ स्पेन मे अमरीकी फौजी अड्डों की स्थापना न होने देने और सरकार से तटस्थता की घोषणा कराने का अनुरोध करते हुए माड्रिड मे जगह-जगह परचे लग गए। उन्होंने केन्द्रीय समिति को सूचित किया, "अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की गभीरता और इससे अपने देश के लिए पैदा होनेवाले संभावित नतीजों के प्रति किसी ने अपनी आंखे नही मूद ली हैं। मेरे विचार से (पार्टी की सभी समितिया इससे सहमत हैं) विश्वयुद्ध के वास्तविक खतरे और इससे हमारे देश के लिए पैदा होनेवाले घातक परिणामों के बारे मे लोगों मे चेतना पैदा करने की दिशा मे हमने काफी प्रगति की है। हमने शान्ति के सघर्ष को प्राथमिकता प्रदान की है और हमे यही नीति जारी रखनी चाहिए।"

जब सोवियत संघ के प्रयास से परमाणविक युद्ध का खतरा दूर हो गया,

तो ग्रिमाऊ ने एक पत्र में अपनी पत्नी को गर्व के साथ लिखा कि सोवियत संघ की नीति ने दुनिया को विनाश से बचा लिया और "स्पेन में जनता की भावनाएं... अमरीकियों और सरकार के विरुद्ध तथा सोवियत संघ और क्यूबा के पक्ष में हैं।" अपनी पत्नी के नाम एक दूसरे पत्र में उन्होंने कहा: "मुझे ऐसा लगता है कि यद्यपि गंभीर और खतरनाक स्थिति दूर नहीं हुई है, परन्तु सोवियत संघ के स्थिर संयम के फलस्वरूप अब अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण पहले से काफ़ी अच्छा है।"

स्पेन से ग्रिमाऊ के न हटने का दूसरा कारण था अप्रैल और मई में हुई हड़तालों के बाद दमनचक्र का चलना, जिसके दौरान ख़ुफ़िया पुलिस ने सैकड़ों व्यक्तियों को गिरफ़्तार कर लिया। बिल्बाओ में पकड़े गए लोगों में केन्द्रीय समिति के सदस्य रामोन ओर्माज़ाबल भी शामिल थे। माड्रिड शाखा भी इस दमनचक्र से नहीं बची। इस कारण भी ग्रिमाऊ ने केन्द्रीय समिति से छुट्टी देने के प्रश्न पर ज़ोर न देने का अनुरोध किया और उस समय को अवकाश के लिए अनुपयुक्त समझा: पार्टी को कमजोर बनाने तथा भावी कार्रवाई को रोकने के उद्देश्य से जिन साथियों ने "अप्रैल और मई तथा बाद की घटनाओं में उल्लेखनीय कार्य किया है," उन सभी के पीछे पुलिस लगी हुई है। इस समय फ़्रांस जाना बहुत ही अनुपयुक्त कदम होता, क्योंकि इससे माड्रिड के कम्युनिस्टों के लिए परिस्थिति और अधिक विषम हो जायेगी।

ग्रिमाऊ नहीं जानते थे कि भेदिये लारा की सहायता से (जो माड्रिड के संगठन में घुस आया था) पुलिस उनके पीछे लगी हुई है। ८ नवम्बर, १९६२ को तीसरे पहर उन्हें एक साथी से मुलाकात करनी थी। रैमुंदो फ़ेर्नान्देस मार्ग पर उन्होंने बस पकड़ी। पुलिस के कई जासूस भी उनके साथ ही उस बस में सवार हो गए। ग्रिमाऊ समझ गए कि वे उनके पीछे लगे हुए हैं और उन्होंने तेज़ी से बस से बाहर जाने की कोशिश की, परन्तु समय हाथ से निकल चुका था। तीसरे पहर चार बजकर चालीस मिनट पर यह घटना घटी और अगले बीस मिनट में ग्रिमाऊ ला प्वेर्ता देल-सोल चौक में स्थित ख़ुफ़िया पुलिस के मुख्य कार्यालय पहुंचा दिए गए।

वहां ग्रिमाऊ से एक प्रश्नावली में पूछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर लिखने और बयान देने को कहा गया। इसे अच्छी तरह जानते हुए कि अब उनके भाग्य में क्या बदा है, उन्होंने कलम उठाया और लिखा:

"मैं, १८ फ़रवरी, १६११ को माड्रिड मे पैदा हुआ जूलियन ग्रिमाऊ गार्शिया, जिसके मां-बाप के नाम मारिया और एनरिको है, यह सूचित करता हूं कि मैं स्पेनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का सदस्य हूं और मैं एक कम्युनिस्ट की हैसियत से अपना फर्ज़ पूरा करने के लिए ही माड्रिड मे हूं।" इससे अधिक कोई और बयान देने से उन्होंने दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया।

उन्हें एक गैर-हवादार अन्धेरी कोठरी में डाल दिया गया, जहां उनके हाथों में हथकडी भी डाल दी गई। सारी धमकियों के बावजूद ख़ुफ़िया पुलिस को अपने सभी प्रश्नों का उत्तर "नही" के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। पुलिस गुस्से में आकर उन्हें मारने लगी। एक पुलिसमैन ने कहा कि वह डाक्टर है और पूछा, "दरअसल, तुम किस रूप में मुझसे मार खाना पसन्द करोगे—पुलिसमैन के या डाक्टर के? मेरी बात को ठीक मानो, यदि मैं एक डाक्टर के रूप में तुम्हें मारूंगा तो यह तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा।" काफी ख़ून बह जाने के कारण ग्रिमाऊ बेहोश हो गए।

उसके बाद उनके प्राय: निर्जीव शरीर को पुलिस तीसरी मंज़िल के एक कमरे मे उठा ले गई। उन्हे मृत समझकर, उन्होंने आत्महत्या का कपटपूर्ण प्रचार करने का निर्णय किया। उन्होंने खिड़की खोल दी और जिस समय हरकारे अपने अखबारों की ताज़ी प्रतियां लेने को जमा हो रहे थे, उसी समय सन रिकार्दो गली पर उन्हें नीचे फेंक दिया। उस समय पौने सात बजे थे। पुलिस ने इतनी जल्दबाज़ी मे यह काम किया कि वह ग्रिमाऊ की कलाई से हथकड़ी को हटाना भी भूल गई।

परन्तु इससे आशंकित होकर कि सत्य पूरे नगर मे फैल जायेगा, पुलिस ग्रिमाऊ को अस्पताल मे ले जाने को विवश हुई और ९ तथा पुन: १३ नवम्बर को डा० तेओदोरो देल्गादो द्वारा बहुत जटिल आपरेशन के फलस्वरूप वह मानो कब्र से जी उठे। परन्तु ज्योंही उनकी दशा कुछ सुधरी, त्योंही पुलिस उन्हें येसेरियास जेल अस्पताल उठा ले गई और एक बार फिर वह कर्नल आइमर की "सामाजिक-राजनीतिक ब्रिगेड" के नियंत्रण मे रख दिये गए।

पुलिस के इस पाशविक अपराध के विरुद्ध देश के भीतर और बाहर गुस्से की ऐसी तीव्र भावना पैदा हुई कि अधिकारियों को कोई बहाना

ढूंढ़ने के लिए विवश होना पडा। उन्होंने यह झूठी खबर फैलायी कि ख़ुफ़िया पुलिस के मुख्य कार्यालय पहुंचने पर उन्होंने आत्महत्या करने की कोशिश की।

सूचना मंत्रालय ने "जूलियन ग्रिमाऊ अथवा शहादत का प्रपंच रचने की उस्तादी" शीर्षक एक विशेष परिपत्र शीघ्रता से प्रकाशित किया, जिसे उसने माड्रिड स्थित सभी दूतावासों और कांसुलावासों में वितरित किया। इसने यह दिखाया कि ग्रिमाऊ को कभी भी यंत्रणाएं नही दी गईं और "कम्युनिस्ट अख़बारों द्वारा फैलाई गई खबरें तथ्यों के सर्वथा प्रतिकूल हैं।" फ़्रांको के अख़बारों ने उस खिडकी की भी तस्वीर प्रकाशित की, जिससे होकर ग्रिमाऊ के कूद जाने की झूठी रिपोर्ट फैलाई गयी थी।

उस मनगढंत रिपोर्ट का भण्डाफोड़ करते हुए स० कारिंल्यो ने कहा: "कमजोर शारीरिक गठन, परन्तु बडी आध्यात्मिक शक्ति और नैतिक क्षमतावाले व्यक्ति, ग्रिमाऊ से जो भी परिचित है, वे सभी इसे अच्छी तरह जानते हैं कि वह कभी भी आत्महत्या नही करेंगे... जूलियन ग्रिमाऊ एक आदर्श कम्युनिस्ट, एक बहादुर व्यक्ति है, उन लोगों मे से है, जिन्होंने अपना जीवन पार्टी के लिए समर्पित कर दिया है और जो निर्णायक क्षणों पर कभी भी बिना डिगे और बिना पीछे मुडे दिन-रात अथक रूप से काम करते रहते हैं। *अपने नाम की ढपली पीटे बिना और विशुद्ध ईमानदारी* तथा अपने वर्ग, अपनी जनता और अपनी पार्टी के प्रति अपने फ़र्ज़ को पूरा करने की भावना के अलावा किसी और पुरस्कार की आशा के बिना वे सब कुछ चुपचाप विनम्रता के साथ करते हैं।"

ओर्माज़ावल पेरिकास, इवारोला और मारिया दापेना के मामले में गवाह के रूप में हाज़िर होनेवाले फ़्रांसीसी पादरी ने जूलियन ग्रिमाऊ जैसे व्यक्तियों के बारे में ही यह कहा था, "इन वीर पुरुषों और वीरांगनाओं की तुलना प्रारम्भिक ईसाइयो से की जा सकती है।" इतालवी वकील फाउस्तो तार्जिताना ने, जिन्हे ग्रिमाऊ के मामले की सुनवाई के समय उपस्थित रहने की इजाज़त मिल गई थी, बाद में पत्रकारों को बताया, "मैंने जेल की उस खिड़की को देखा। उसमें छड़ें लगी हुई हैं और वह इतनी छोटी है कि उससे होकर बिल्ली ही बाहर कूद सकती है।"

विक्षतांग, परन्तु अटूट साहसवाले ग्रिमाऊ जेल के अस्पताल में पडे हुए थे। १९६३ के मार्च में माड्रिड की यात्रा करनेवाले अंग्रेज डाक्टर आरोन

रैंपापोर्ट ने वताया कि ग्रिमाऊ की दशा वहुत ही गभीर है। उन्होंने वताया कि ग्रिमाऊ एक भूत जैसे लगते हैं। उनके चेहरे का पूरा बायां भाग विकृत हो गया है ; चोट के फलस्वरूप कनपटी पर गहरा चिन्ह वन गया है और निश्चित रूप से इसका उनके दिमाग़ पर भी असर पड़ा है। ग्रिमाऊ आंशिक स्मृति-क्षय के शिकार जैसे लगे। अस्थि-भग के कारण उनके हाथों को लकवा मार गया है। "पंगु और दर्द से व्यथित उस क़ैदी को बारबार ख़ुफ़िया पुलिस के जुल्मों का सामना करना पड़ा। परन्तु ग्रिमाऊ ने न तो किसी का नाम वताया, न किसी की पहचान वताई।"

ठीक उसी समय फ़ाको की ख़ुफ़िया पुलिस के दफ़्तरों में एक अन्य साजिश रची गई। ग्रिमाऊ को अपराधी ठहराने अथवा राजनीतिक कार्यों के लिए उन्हे दण्डित करने के अपने प्रयासों में विफल हो जाने के बाद, फ़ाको और इस अपराध मे उसका साथ देनेवालो ने उन पर गृहयुद्ध के दौरान मानवता के विरुद्ध अपराध करने का अभियोग लगाया।

मुक़दमे की तैयारी करने, मामले के तथाकथित गवाहों की गवाही जमा करने, हर प्रकार की झूठी बातों और ग्रिमाऊ के "अपराध" के वारे में "प्रमाण" गढ़ने में फ़्रांको की ख़ुफ़िया पुलिस को पांच महीने लगे। वह जल्दी मे थी, क्योंकि उसे भय था कि कही बढ़ते हुए विश्वव्यापी विरोध-आन्दोलन के फलस्वरूप ग्रिमाऊ उसके पजे से मुक्त न हो जायें।

१८ अप्रैल, १९६३ को रेलाज मार्ग पर एक फौजी अदालत के सम्मुख ग्रिमाऊ को पेश किया गया। इसके बाद जो कुछ हुआ, वह न्याय का उपहास था। अभियोग पक्ष का कोई भी "गवाह" अदालत में "हाज़िर न हो सका"। मामले की पूरी सुनवाई के दौरान शान्त और गौरवपूर्ण ग्रिमाऊ को बराबर टोका गया और प्रश्न पूछने पर उत्तर केवल "हां" या "ना" मे देने को कहा गया। उनके इस वक्तव्य को कि उन्होंने "आत्महत्या करने की कोशिश नही की थी" उसी प्रकार उजड्डपन के साथ रद्द कर दिया गया, जिस प्रकार युद्ध के दौरान गिरफ़्तार किये गए फ़ैलेंजिस्टों (स्पेन की फ़ासिस्ट पार्टी के सदस्यों) को यंत्रणाएं देने और उनकी मौत का जिम्मेदार होने के अभियोगों के निश्चित खण्डन को रद्द कर दिया गया था।

मामले की यह सुनवाई कई रूपो में न्याय का उपहास थी। बाद में यह तथ्य प्रकट हुआ कि स्पेनी क़ानून के अनुसार फ़ौजी अदालत के एक सदस्य को इस अदालत मे बैठने का अधिकार ही नही था, क्योंकि उसने

कभी भी क़ानून की शिक्षा नही प्राप्त की थी। परन्तु एक कम्युनिस्ट के प्रसग में फ़ाको के न्याय को कानून की क्या परवाह थी? मुकदमे की सुनवाई के समय उपस्थित रहने के बाद इतालवी वकील फ़० तार्जिताना ने इसे "दुःखजनक प्रपंच" बताया।

ग्रिमाऊ ने अदालत के सम्मुख अपने अन्तिम बयान में कहा: "...मैं आप से कह चुका हूं कि मैं कम्युनिस्ट था, कम्युनिस्ट हूं और एक कम्युनिस्ट की हैसियत से मरूंगा। यह मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे देश को जिस विचारधारा की आवश्यकता है, ठीक वही मेरी विचारधारा है। मेरा विश्वास है केवल मेरी ही पार्टी जनता के हितों के प्रति समर्पित है।"

अपनी पत्नी अजेला को १२ अप्रैल के अपने पत्र मे उन्होंने लिखा: "जब फैसला सुना दिया जायेगा, तो मैं तुम्हे सूचित करूंगा... कृपया परेशान न हो और धैर्य बनाये रखने की कोशिश करो। मैं निर्भय होकर फ़ैसले का इतजार कर रहा हू—इससे भिन्न बात हो भी नही सकती थी... अपनी नन्ही बच्चियों को कुछ भी बताने की आवश्यकता नही है—समय आने पर उन्हें सब कुछ ज्ञात हो जायेगा। उन्हें खेलने-कूदने और खुश रहने दो।" ग्रिमाऊ जानते थे कि उन्हे मौत की सज़ा दी जायेगी, फिर भी उन्होंने अपने परिवार का ढाढ़स बधाने और उसे आशा प्रदान करने की कोशिश की।

ग्रिमाऊ की दृढ़ता ने उनके वकील कप्तान अलेजान्द्रो रेबोल्यो को भी आश्चर्यचकित कर दिया, जिन्होने अदालत से कहा कि वे जिन काल्पनिक अपराधों को ग्रिमाऊ के मत्थे मढना चाहते हैं, उनकी वजह से नहीं, बल्कि उनके राजनीतिक कार्यकलाप के कारण उनके विरुद्ध यह मामला चलाया जा रहा है।

मामले की सुनवाई समाप्त हो गयी थी। पुलिस उन्हें काराबाचेल जेल ले गई, जहां पहली बार उन्हे दूसरे कैदियों के साथ एक ही कोठरी में रखा गया। उनके साथियों ने उन्हें सांत्वना देने और कम कठोर सज़ा की मिलने की संभावना की बातों से प्रसन्न करने की कोशिश की। ग्रिमाऊ ने प्रतिवाद करते हुए कहा, "भ्रम में मत फंसिये, मुझे निश्चित रूप से गोली से उड़ा दिया जायेगा। मेरी तक़दीर का बहुत पहले ही फैसला हो चुका है। मैं फ़ांको का सबसे अंतिम शिकार हूंगा। परन्तु मेरा ख़ून व्यर्थ ही नही बहेगा। निस्सन्देह, इससे जनता से शासन का अलगाव बढ़ जायेगा और उसका

पतन तेज़ी से होगा। मैं आप लोगों से केवल यही कहना चाहता हूं कि आप अपनी एकता कायम रखें, सुदृढ रहें, यहा सघर्ष जारी रखे और जब आप जेल से रिहा हों, तो जिन बातों से आप में अलगाव की भावना पैदा हो, उनकी उपेक्षा करें और उस बात को ही प्राथमिकता प्रदान करे, जो हम सब को फ्रांको की तानाशाही को मिटाने के संघर्ष में एकजुट करती है।"

शाम को उन्हें बताया गया कि उन्हें मौत की सजा दी गई है। माड्रिड प्रदेश के जनरल गार्शिया वालिन्यो ने फैसले पर हस्ताक्षर किये थे और इसे रद्द करने का अधिकार केवल मंत्रिमण्डल को था।

इस ख़बर से कि ग्रिमाऊ को मृत्युदण्ड दिया गया है, सारी दुनिया मे आक्रोश की भावना पैदा हो गई। अनुचित सज़ा को रद्द करने की माग करते हुए सर्वत्र लोग विराट सभाओ और प्रदर्शनों में शामिल हुए। क्रुद्ध नागरिको ने दूसरे देशो में स्पेनी दूतावासों को घेर लिया। फ्राको का मुख्य कार्यालय उन विरोधसूचक प्रस्तावो, तारों और पत्रों से भर गया, जिनमें क्षमा प्रदान करने की माग की गई थी। बेल्जियम की रानी एलिजाबेथ, स्पेन के धर्माधिपति कार्निडल प्ले-इ-डेनियल, विश्वविख्यात वैज्ञानिकों और लेखकों तथा स्पेनी मंत्रिमण्डल के कई मंत्रियों ने भी फ़्रांको से लोकमत पर ध्यान देने तथा मृत्यु दण्ड को रद्द करने का अनुरोध किया।

१९ अप्रैल को सोवियत सरकार ने मौत की सज़ा रद्द करने और ग्रिमाऊ की प्राण-रक्षा करने की अपील करते हुए फ्राको को तार भेजा। उसने यह गहरा विश्वास प्रकट किया कि सभी देशों के लोगों के व्यापक तबके स्पेनी सरकार की ओर से इस प्रकार का मानवतावादी कदम उठाने का स्वागत करेंगे।

फ़्राको ने इन बेशुमार अपीलो पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह ग्रिमाऊ की हत्या करने पर उतारू था।

२० अप्रैल को भोर मे ग्रिमाऊ गोली से उडा दिये जाने के लिए जेल से ले जाये गये। ख़ुफिया पुलिस और फ़ौजी न्यायालय के सम्मुख जिस प्रकार उन्होंने साहस और दृढता का परिचय दिया था, ठीक उसी प्रकार उन्होने मृत्यु का भी सामना किया। वध-स्थल पर पहुंचने के बाद उन्होंने अपने जल्लादों से कहा: "पिछले २५ वर्ष से मैं कम्युनिस्ट रहा हू और आज मैं एक कम्युनिस्ट की हैसियत से मृत्यु का आलिंगन कर रहा हूं।" उन्होने पादरी की सेवाए लेने से इनकार कर दिया। जब एक सैनिक उनकी आखों

पर पट्टी बांधने के लिए आगे बढ़ा तो उन्होंने कहा: "मेरी आखो पर पट्टी मत बांधो। मैं कम्युनिस्ट हूं और मैंने सदैव निर्भयता के साथ मौत का सामना किया है। इस समय भी मैं भयभीत नहीं हूं। मेरे विरुद्ध झूठे अपराध लगाये गये हैं। मैंने कभी अपराध नहीं किया। मेरी हत्या केवल इस कारण की जा रही है कि मैंने जनता के हितों की रक्षा में अपने जीवन को समर्पित कर दिया था।"

ग्रिमाऊ के साहस से फैसले को अमल मे लाने के लिए नियुक्त सैनिक इतने भावाभिभूत हो गए कि वे भी हिचकिचा उठे और फ्राको की खुफिया पुलिस के एक लेफ्टिनेन्ट तथा इस वधिक दल के कमांडर को उन पर गोलिया चलानी पड़ी। जमीन पर गिरे उनके शरीर से प्राण निकलने तक लेफ्टिनेन्ट उनपर गोलियां चलाता रहा।

माड्रिड में हुई इस दुःखजनक घटना से सारी दुनिया को गहरा सदमा पहुंचा। दूसरे देशों में स्पेन के दूतावासों और कांसुलावासों के सम्मुख हजारों लोग जमा हो गए। लन्दन और पेरिस, रोम और कोपेनहेगन में स्पेनी दूतावासो के सामने सडकों की पटरियों पर फूलों का अम्बार लग गया—मृत व्यक्ति के प्रति जीवितों की अन्तिम श्रद्धाजलि। इटली में दस मिनट के लिए सारा काम रुक गया। सारी दुनिया के मेहनतकश लोगों ने अपना क्रोध प्रकट किया।

स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी स० कारिल्यो ने शोकोद्गार प्रकट करते हुए कहा, "क्रोधमिश्रित दु:ख के इस समय हम कम्युनिस्ट अपने प्रिय और आदर्श साथी जूलियन ग्रिमाऊ के लिए अपनी गहरी व्यथा प्रकट कर रहे हैं, जो हमारे बीच अब नही रहे। स्पेन की मुक्ति के लम्बे संघर्ष के दौरान धैर्य के साथ बर्दाश्त की गई अनेक बड़ी क्षतियो मे से यह एक ऐसी भारी क्षति है, जिस पर हमारी वेदना को कोई भी बात कम नही कर सकती... हम स्पेन में सर्वाधिक मानवतावादी और जनवादी व्यवस्था स्थापित करके इस अपराध का उत्तर देंगे, जो गृहयुद्ध के तनाव तथा निष्ठुर अत्याचार को समाप्त करेगी, वह ऐसी व्यवस्था होगी, जो किसी के धर्म और विश्वास की ओर ध्यान दिये बिना स्पेन के सभी निवासियों के जीने के अधिकार और स्वतन्त्रता को सुनिश्चित करेगी।"

ग्रिमाऊ को मौत के घाट उतार दिया गया, परन्तु फ़ाको को अपने

उद्देश्यों मे सफलता नही मिली। स्पेन के कम्युनिस्टों ने अपना साहस नही खोया। स्पेनी कम्युनिस्ट पार्टी की अध्यक्ष दोलोरेस इबारूरी ने कहा, "मौत के बाद जूलियन ग्रिमाऊ सघर्ष के प्रतीक बन गये है। वह आज भी हमारे बीच अपने विचारो और आदर्शों के रूप मे जीवित है; वह अमर है और कम्युनिज्म की ओर दृढता से अग्रसर भावी पीढ़ियों के मन में उनकी स्मृति सदैव ताज़ी बनी रहेगी। फ़ासिस्ट कानून के नाम पर ग्रिमाऊ की हत्या की गई। जनता के हित के लिए स्पेनी युवक समुदाय के उत्कृष्ट प्रतिनिधि कम्युनिस्ट पार्टी का अनुसरण कर रहे है और करते रहेंगे। वे ग्रिमाऊ की भाति, उन हजारो वीरों की भाति, जिन्होने दुनिया के सम्मुख क्रान्तिकारी संघर्ष का आदर्श प्रस्तुत कर दिया है और रण भूमि में अपराजेय खेत रहे योद्धाओं की भाति संघर्ष करते रहेगे।"

जूलियन ग्रिमाऊ की हत्या के विरोध में सारे स्पेन में आन्दोलन फैल गया। बर्बर अपराध की भर्त्सना करते हुए सैकड़ों पत्र और तार स्पेनी सरकार के पास भेजे गए। माड्रिड विश्वविद्यालय में फ़ाको-विरोधी प्रदर्शन हुआ। २ मई को बार्सेलोना मे हुए एक प्रदर्शन मे लोगों ने नारा लगाया "फ़ाको हत्यारा है!" सेवील्या की सडको पर मौन प्रदर्शनकारियों का जलूस निकला। माड्रिड, बार्सेलोना, बिल्बाओ, आस्तुरिया और अन्य नगरों के बीसियों उद्यमों मे मजदूरों ने एक मिनट मौन रहकर ग्रिमाऊ की स्मृति को श्रद्धाजलि अर्पित की। स्पेन के मेहनतकश लोग भय से नहीं, बल्कि क्रोध की भावना से ग्रस्त थे; आतंक और घबराहट से नही, बल्कि पहले की अपेक्षा अधिक जुझारू सघर्ष करने की दृढ़ भावना से भर गये थे।

अब हज़ारों की सख्या मे मजदूर, किसान, दफ़्तरी कर्मचारी और बुद्धिजीवी कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गए। दो फ़ासिस्ट-विरोधी युवकों ने, जो उस समय जेल मे थे, ग्रिमाऊ की पत्नी को लिखा: "हम कम्युनिस्ट नही थे। स्पेन को कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के लिए आवेदनपत्र देने के निमित्त निर्णय करने के लिए अभी अन्तिम प्रेरणा की आवश्यकता थी। जिस दिन हमें आपके पति जूलियन की दु:खजनक हत्या की सूचना दी गई, उसी दिन हम दोनों में से प्रत्येक ने पार्टी में उनका स्थान ग्रहण करने की आन्तरिक प्रेरणा महसूस की, क्योकि यही वास्तविक जन संगठन है और इसी कारण वह सर्वाधिक पाशविक उत्पीड़न का शिकार है।"

यहा तक कि फ़ाको की तानाशाही के प्रति अभी तक निष्ठावान स्पेनी भी घोर लज्जा की भावना दूर न कर सके। एक फ़ैलेंजिस्ट ने अजेला ग्रिमाऊ को लिखा: "अपने देश की सरकार की भाति आपको भी एक फ़ैलेंजिस्ट का इस प्रकार पत्र लिखना सभवत: आश्चर्यजनक प्रतीत होगा... परन्तु मुझे विश्वास है कि मेरी तरह ऐसे अनेक फैलेंजिस्ट है, जो इस मौके पर यह सोचते है कि वे इस कृत्य पर कैसे अपनी शर्म और दु ख छिपा पायेगे..." जूलियन ग्रिमाऊ के जीवन और पराक्रम से अनगिनत स्पेनवासी यह समझ गये है कि कम्युनिस्ट शब्द किस उज्ज्वल आदर्श का परिचायक है और कम्युनिस्ट पार्टी कैसी मिसाल प्रस्तुत करती है। जूलियन ग्रिमाऊ ने दुनिया को सच्ची वीरता की शिक्षा प्रदान की है।

विश्व शान्ति परिषद ने वीरता के उनके महान आदर्श को स्वीकार किया और राष्ट्रों के बीच समझ विकसित करने के ध्येय के प्रति उनके योगदान के लिए मौत के बाद जूलियन ग्रिमाऊ को जोलियो-क्यूरी स्वर्णपदक प्रदान कर उनका सम्मान किया।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विपय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे मे आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

प्रगति प्रकाशन,
२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

हमारे नये प्रकाशन

"समकालीनों की नजरों में मार्क्स और एंगेल्स (संस्मरण)

मार्क्स और एंगेल्स के बारे मे उनके संबंधियों, मित्रों और सहयोगियों द्वारा लिखे गये ये संस्मरण वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों के जीवन और कार्यो के सजीव चित्र उपस्थित करते हैं। पुस्तक मे लेनिन के "कार्ल मार्क्स" और "फ़्रेडरिक एंगेल्स" शीर्षक लेख भी शामिल है, जिनमें उन्होंने इन महान विचारकों की जीवनी तथा सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला है।

व्ला० इ० लेनिन। जीवन झांकी

यह पुस्तिका लेनिन के जीवन तथा कार्यकलापों के मुख्य-मुख्य चरणों और कम्युनिज़्म की दिशा में मानवता के पथ को आलोकित करनेवाले उनके विचारों का वर्णन करती है।

पुस्तिका मे लेनिन और उनके जीवन से संबंधित घटनाओं के कई चित्र भी दिये गये हैं।

यू० ज़ूकोव, आदि।

"तीसरी दुनिया। समस्याएं और संभावनाएं (राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की वर्तमान मंजिल)"

इस पुस्तक में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की मुख्य-मुख्य प्रवृत्तियों और विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

पूंजीवादी समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन से संबंधित मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांतों के आधार पर लेखकों ने वर्तमान राष्ट्रीय मुक्ति क्रांतियों के स्वरूप और प्रेरक शक्तियों का विवेचन और नवउपनिवेशवाद के हथकण्डों का पर्दाफ़ाश किया है।

पुस्तक में उन पूंजीवादी अवधारणाओं की सारहीनता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है, जो एशिया, अफ़्रीका और लैटिन अमरीका के नवस्वाधीन देशों द्वारा समाजवादी विकास के पथ पर अग्रसर होने की संभावना को नकारती हैं।